आँखिमे चित्र हो मैथिली केर

(आत्म कथा)

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (www.videha.co.in)

पेटारसँ



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950, शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओइ पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।

अनुक्रम

ऐ आत्मकथाक लेखन जारी अछि, अगिला खण्ड विदेह-ई-पत्रिका (www.videha.co.in) मे जखने आओत, ऐ पोथीकेँ अही लिंकपर अद्यतन कऽ देल जायत।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्म कथा)

(०)

आत्मकथासँ पहिने किछु दुटप्पी

किए लिखै छी? नेनहिसं स्वभाव प्रगट हुअ' लागल। हमरा खेल-कूदमे मोन नै लागल, फटक्का फ़ोड़ैमे मोन नै लागल। खेती-पथारीमे मोन नै लागल। कोनो व्यवसाय दिस ध्यान नै गेल। दोसर कोनो व्यसनसं आकर्षित नै भेलहु। ताम-झाम आ तडक-भड़कसं प्रभावित नै भेलहु। पढ़बामे मोन लागल,लिखबामे मोन लागल। अनका पढैत-पढैत अपनहुँ लिखबाक सिहंता भेल। तकर कामना केलहुँ। लीखब शुरू केलहुँ। लिखबाक अभ्यास केलहुँ। पढैत गेलहुँ।लिखैत गेलहुँ। लीखब आदति बनल। लीखब संस्कार बनल।लीखब हमर संस्कारमे शामिल अछि। लीखब हमर मजबूरी नै अछि। लीखब हमर पेशा नै अछि। लिखबामे आनंद अबैए, तें लीखै छी। जे स्वयं लिखैत छथि, हुनका एहि आनंदक अनुभव हेतनि। दोसर लेल ई आनंद महत्वहीन भ' सकैए। लीखब जीवनमे छोट-छोट वस्तुमे आनंदक अनुभव करबैत अछि। लिखबा काल आनंद, लीखब पूरा भेल त आनंद, कतहु छपि गेल त आनंद,कियो पढ़िक' प्रशंसा केलक त आनंद,आकाशवाणी बजौलक त आनंद, दूरदर्शन बजौलक त आनंद,कोनो मंच पर गेलहुँ त आनंद, लोक थपरी बजौलक त आनंद, पारिश्रमिक भेटल त आनंद, अपन लीखल दोसरक मूहें सुनलहुँ त आनंद। लीखब हमरा लेल सत्य अछि। सत्य वएह थीक जे काल्हियो छल, आइयो अछि आ काल्हियो रहत। किशोरावस्थामे लिखलहुँ, युबावस्थामे लिखलहुँ, एखनहुँ लीखि रहल छी, आगाँ सेहो लिखैत रहब। छात्र छलहुँ, तखनो लिखलहुँ। बेरोजगार रहलहुँ, तखनो लिखलहुँ।नोकरीमे रहलहुँ

तखनो लिखलहुँ, सेवानिवृतिक बादो लीखि रहल छी। लीखब हमर सत्य अछि। हमर लीखब हमर घोषणा थीक। घोषणा जे हम प्रेमक पक्षमे छी, हिंसाक विरोधमे छी। घोषणा जे हम इजोतक पक्षमे छी, अन्हारक विरोधमे छी।

गीत किए लिखै छी? एक लयमे चलैत अछि जीवन। जीवनमे लय नीक लगैत अछि। लेखनमे सेहो लय नीक लगैत अछि। ओकर सस्वर पाठ क' सकैत छी। गीत गाबि सकैत छी। आनो कियो अहाँक लिखल गाबि सकैए। ओकरा संगीतबद्ध कएल जा सकैए। गीत स्मरण राखब आसान होइत अछि। नेनहिसं स्त्रीगणक मूहें विभिन्न अवसर पर विभिन्न प्रकारक गीत सुनैत आएल छी। कोनो काज प्रारम्भ होइत अछि गीतसं आ ओकर समापन सेहो गीतसं होइत अछि। गीत नीक लागल। गीत लिखबाक सौख भेल। लिखब शुरू केलहु। गीत सुनैत रहलहुँ। गुनैत रहलहुँ । अभ्यास करैत रहलहुँ। गीत लिखाइत गेल।

गजल किए? रदीफ़, काफिया आ बहरक आकर्षणक कारणें गजलक संरचना अधिक आकर्षक होइत अछि। हिन्दीमे दुष्यंत कुमारक 'साये में धूप' पढलाक बाद मैथिलीमे गजल लिखबाक धुन सबार भेल। अभ्यास कर' लगलहुँ। मैथिलीमे लिखलहुँ, हिंदीमे लिखलहुँ। लिखैत गेलहुँ। पत्रिका सभमे छपबो कएल। मैथिलीमे गजलक लेल विशिष्ट साइट 'अनचिन्हार आखर'पर गजलक व्याकरणसं तीन साल पहिने परिचित भेलहुँ। हमर अधिकाँश गजल एहेन अछि जकरा गाबि सकैत छी। गजलक सस्वर पाठ हमरा नीक लगैए।

हमर तीर्थयात्रा-गीतसं गजल धरि

हम गीत लिखलहुँ।बहुत बेशी नै लिखलहुँ।किछुए कथा लिखलहुँ।एकटा एकांकी लिखलहुँ । एकटा नाटक लिखलहुँ। किछु कविता लिखलहुँ ।किछु दोहा लिखलहुँ। अंतमे किछु गजल

लिखलहुँ।

हमर एकटा गजलक एकटा शेर अछि :

प्रेमक दीप जरै छल जै ठाँ

सभकें तीर्थस्थान बुझलियै।

गीतसँ गजल धरिक यात्रामे हम जाहि-जाहि तीर्थसँ होइत आएल छी तकर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करबामे हमरा हर्ष भ' रहल अछि।

(१) हमर बाबा बाबाक नाम छलनि अनंत लाल ठाकुर।हुनका औपचारिक शिक्षा नै छलनि। मुदा, संस्कृतक बहुत रास श्लोक याद छलनि। रामायण, महाभारतक खिस्सा सभ याद छलनि। हमरा यदा-कदा सुनबैत छलाह। रातिमे सुतबासं पहिने हुनकासं ई गीत कतेक बेर सुनने छलहुँ :

---आजु नाथ एक व्रत महा सुख लागत हे।

---ब्याह चलल शिव शंकर----

अहिना भोरमे पराती-----

सखिरी,तीन देखन जात,

अरुण नयन विशाल मूरत, सुंदरी एक साथ।

(२) दाइ --- दाइ बात-बातमे लोकोक्तिक प्रयोग करैत छलीह,से हमरा बहुत नीक लगैत छल।ओ समूहमे जे गीत गबैत छलीह तकर शब्द बुझबामे नै अबैत छल मुदा, सुनबामे नीक लगैत छल।

(३) माए–माएकें गीतक संस्कार नैहरसं भेटल छलनि।विभिन्न अवसरपर स्त्रीगणक संग गीत गबैत छलीह। सपता विपताक कथा कहैत-कहैत आखिसं नोर बह' लगैत छलनि।

(४) पिता–पिता प्रेसमे कम्पोजीटरक काज केने छलाह। किताब

पढ़ब,कविता रटब,कोनो विषय पर चर्चा करबाक लेल प्रेरित करैत छलाह। हमरा बच्चामे सिखौने छलाह :

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे, आपुहि शीतल होय।

ओ जे चिट्ठी लिखैत छलाह, ओहिमे साहित्यक पुट रहैत छल।

(५) हमर आँगन,हमर टोल, हमर गाम : आंगनमे चारि घरबासी छलाह।आंगन आ टोल मिलाक' ककरो ओत' कोनो ने कोनो काज रहिते छलैक।तें अवसरक अनुसार स्त्रीगण सभ मिलि क' सोहर, लगनी,बटगवनी, खेलौना,डहकन,बारहमासा,विद्यापतिक गीत,महेशवाणी,उदासी,समदाउन आदि गबैत रहैत छलीह।विना कोनो वाद्य-यंत्र के एहि गीत सभमे अद्भुद आकर्षण रहैत छलैक।जमाए वा समधिक भोजन काल गीत होइ छल।गीत ख़तम भेल त भोजन करैवलाक हाथ रुकि जाइत छलनि। फेर गीत शुरू भेल त भोजन शुरू।टोलमे कीर्तन होइत छल। ओहिमे स्नेहलताक गीत गबैत जाइ छलहुँ : 'अपन किशोरीजीकें चरण दबेबै हे मिथिलेमे रह्बै, घरेमे हमरा चारू धाम हे मिथिलेमे रह्बै।'

'जखन राघव लला छथि सहाय, तखन परबाहे की'

टोलमे भैयाजीक कीर्तन कए बेर भेल। भैयाजी डबहारीक छलाह। ओ कीर्तनयुक्त कथा कहैत छलाह। कथा बहुत रोचक ढंगसं प्रस्तुत करैत छलाह।हुनका कथामे ककरो औंघी नै लगैत छलैक।बाबू शिव नंदन सिंह ओत' राम नवमी आ कृष्णाष्टमीक अवसर पर दरबारी दास आ नेबति दास अबैत छलाह। ई लोकनि बहुत नीक जकां विद्यापति, दिनकर,नेपाली आ मधुपजीक गीत गबैत छलाह।

'के पतिया लय जायत रे मोरा प्रियतम पास'

'मोरा रे अंगनमा चाननक गछिया, ताहि चढि कुड़रय काग रे'

'मानिनि, आब उचित नहि मान'

‘माधव, ई नहि उचित विचार’
‘बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे’
आदि गीत हिनका लोकनिक मूहें सुनबाक मधुर स्मृति अछि।
(६) मामा गाम : मामा गाममे रवि दिनक’ सांझमे रामचरित मानसक कीर्तनक रूपमे पाठ होइत छल। अष्टियाम अधिक काल होइत रहैत छल।तकर बाद विवाह कीर्तन होइत छल।हमर बड़का मामा जे मिडिल स्कूलमे प्रधानाध्यापक छलाह,विवाह कीर्तन कहैत छलाह। हमर ममियौत सभ आ टोलक लोक सभ पाछू-पाछू संग दैत छलखिन।मझिला मामा सेहो संग दैत छलखिन। छोटका मामा पढबामे तेज छलाह आ किछु भक्ति गीत सेहो लिखने छलाह जकरा अंतमे ‘दास महेंद्र’ लिखैत छलाह।हुनका देखि क’ हमरो होइत छल जे लोककें पढ़ाइक संग-संग गीत सेहो लीखक चाही।
(७) मधुपजी :हाई स्कूलमे पढल मधुपजीक कविता ‘घसल अठन्नी’बहुत प्रभावकारी छल। ‘ओ घसल अठन्नी बाजि उठल हम कत’ जाउ’ जखन-तखन मोन पड़ि जाइत छल।एखनो मोन पड़ैत अछि। मधुपजीक गीत नटुआ सबहक मूहें सुनबामे नीक लगैत छल। ओ फ़िल्मी धुनपर गीत सभ लीखि क’ ‘टटका जिलेबी’ आ ‘अपूर्व रसगुल्ला’नामक अठपेजी पुस्तिकामे कनिएँ पाइमे लोककें उपलब्ध करा दैत छलथिन।हुनकर प्रभाव पडल। हमहूँ अपन नाममे ‘अनिल’ उपनाम जोड़लहुँ।किछु गीत फ़िल्मी धुन पर लिखलहुँ।
(८) रवीन्द्रजी : यमसममे दुर्गापूजामे सभ साल तीन-चारि राति नाटक होइत छलैक।महेंद्र झाक घर यमसम छलनि। ओ दुर्गापूजामे अवश्य गाम अबैत छलाह।ओ नाटकक बीच-बीचमे आबि एक बेरमे रवी न्द्रजीक चारि-पांचटा गीत गाबिक’ लोक कें आनंदित क’ दैत छलाह।रवीन्द्रजीक आकर्षक शब्द आ महेन्द्रजीक सुन्दर स्वर श्रोताकें

आनंद-विभोर क' दैत छल। दूनू गोटे जखन संगे गबैत छलाह तखन जे आनंदक वर्षा होइत छल तकर वर्णन जतेक करब से कमे हएत। रवीन्द्रजीक बहुत रास गीत बहुत लोकप्रिय भेलनि। ओ मैथिली अकादमीमे छलाह त एकटा गोष्ठीमे राधा कृष्ण प्रकाशनक प्रतिनिधिसं परिचय करौलनि। ओ हमर टटका प्रकाशित पोथी 'तोरा अंगनामे'क २५ टा पोथीक आदेश पठा देलनि आ ओकर भुगतान सेहो आसानीसं प्राप्त भ' गेल।

हुनक निम्नलिखित गीत सभ हमरा बहुत नीक लगैत अछि :

'चारि पांती सुनू राम के नामसं
पत्र लिखलनि जे सीता धरा धामसं'
'कियो लिखि दे दू पांती सिपहिया के नाम'
'बाबा डंडोत बच्चा जय सियाराम'
और कतेक गीत।

हमर किछु रचना पर रवीन्द्रजीक गीतक प्रभाव देखल जा सकैछ, जेना ___

१.पटनाक मजा लीय' दिल्लीक मजा लीय'
बेकार छी अहाँ त बम्बइक मजा लीय'।
२.बुढ़बा मारल जेतै बेटाके बियाहमे।
३.अलख निरंजन भोला बाबू
जेबीमे छूरी, मुंह सियाराम
अरे राम राम राम।

(९) आर के रमण : 'रमण'जीकें आर के कॉलेज, मधुबनीमे विद्यापति पर्वमे सुनने छलहुँ।हुनक एकटा रचना बादमे सुनलहुँ 'अहाँ केर इजोरिया कहाँ हम मँगै छी, अन्हारोमे हमरो जीब' त दीय'। एहिसं प्रभावित भेलहुँ। हमर एकटा गीतक अंतिम पांती रहय 'दुःख केर ई राति बौआ बीतत अबस्से, असरा गरीबक भगवान रे ...'

एहि पांती पर रमणजी टिप्पणी देलनि :
'असरा गरीबक भगवान रे' के बदला ' जहिया तों हेबही जुआन रे ...' हमरा नीक लगैत।
ओ एक दिन दरभंगामे भेटलाह।कतहु जाइत रहथि। कहलनि, अहाँ हमरा 'मिथिला टाइम्स'लेल एकटा कविता लीखि क' केबारक नीचां द'क' रूममे खसा देब,तखन जाएब। हमरा कठिन लागल। हमरा संग छलाह कलिगामक मनोजजी। ओ कहलनि, आब त कहुना क' लीख'क देबाक कोशिश कर' पडत लहेरियासरायक एकटा रेस्टोरेंटमे बैसि क' चाहक चुस्कीक संग कविता लिखबाक सलाह देलनि। से संभव भेल।
'जकरे घाम तकरे रोटी' कविता 'मिथिला टाइम्स'मे प्रकाशित भेल। हम जखन अपन ई गीत देखैत छी त 'रमण'जी मोन पड़ि जाइत छथि : 'से फगुआ खेलायत कोना क' जकरा आंगन वसंत नहि आयल।'
(१०) हरिमोहन बाबू : 'चर्चरी'क कथा सभ पढ़ि क' कथा लिखबाक प्रेरणा भेटल। किछु कथा लिखलहुँ। हमर लिखल विनोद कथा 'मोने अछि एखन धरि सासुरक यात्रा' आकाशवाणी, पटनासं प्रसारित भेल। हरिमोहन बाबूक कथा पढलासं ई भेल जे मैथिली साहित्यसं सटि गेलहुँ ।'मिथिला मिहिर'क नियमित पाठक भ' गेलहुँ। हमर गीतक पहिल पोथी 'तोरा अंगनामे' छपल रहय त हुनक आशीर्वचन प्राप्त भेल।ओ कहने रहथि, अखबार देखैत रहब, लाइब्रेरी सभमे सप्लाइ हेतु स्वीकृतिक लेल पोथीक दू प्रतिक संग आवेदन पठा देबै। सएह केलहुँ। राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी संस्थान सिन्हा लाइब्रेरीक माध्यमसं ३४० पोथी ल' लेलक।पोथी छपयबामे जे खर्च भेल छल तकर अधिकांश भाग प्राप्त भ' गेल, से उत्साहवर्धक भेल।

(११) मनोज बाबू : मनोज बाबू कलिगामक छलाह।फिल्ममे काज करक हेतु बम्बईमे संघर्षरत छलाह।दूनू गोटेक सासुर एके गाममे छल। हुनकासं ओतहि भेंट भेल छल। हम मैथिलीमे लिखै छी, से हुनका नीक लगलनि। ओ हमरा कहलनि जे मैथिलीमे एहेन गीत लीखि सकैत छी त लिखू जेहेन मुकेश गबैत छथि आ जेहेन मो. रफी आ लता संगे गबैत छथि। हम निम्नलिखित गीतक रचना हुनके इच्छानुसार केलहुँ :

(१) कल्पनाक गगनमे मधुवन सजा रहल छी

दुनियामे जीबाक अछि तें मन लगा रहल छी।

(२) ---- अहाँ नीलगगनकेर चंदा, हम मृत्युभुवनक चकोर।

----- हम विरह्क राति अन्हरिया,पिया अहाँ वसंतक भोर।

(३)----लग आउ ने, हम नेहोरा करै छी।

----दूर जाउ ने, हम नेहोरा करै छी।

(३) चल हम बनि जाइ छी किसुन कन्हैया,तों बनि जो राधा।

(१२) शशिकांत-सुधाकांत : हिनका सभसं सकरीमे विद्यापति पर्वक अवसर पर भेंट भेल।हम एकटा रचनाक सस्वर पाठ केलहुँ :

'तीन कोटि मैथिल ताल ठोकि क' कहैए

ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए।'

हम जखन मंचसं बाहर एलहुँ त ई लोकनि सोझां एलाह, अपन परिचय देलनि। ओ सभ रवीन्द्रजीक लीखल गीत गबैत छलाह, कहलनि, ई गीत हमरा सभकें लीखि क' द दीय', हम सभ अभ्यास क'क' चेतना समितिक मंचपर और आनो मंच सभ पर एकर उपयोग करब।हम लीखि क' द' देलियनि।ओ सभ अभ्यास क'क' मंच सभ पर एकरा प्रस्तुत केलनि। प्रशंसा भेटलनि।फेर हमरा सं संपर्क

केलनि। हम दूटा और रचना देलियनि :

(क) पटनाक मजा लीय'

दिल्लीक मजा लीय'

बेकार छी अहाँ त बम्बइक मजा लीय'।

(ख) कक्का मारल गेला सौराठक मैदानमे,

पहिले कन्यादानमे।

इहो दूनू गीत हिनका सभकें उपयुक्त लगलनि।

हिनका सभसं संपर्क बढ़ैत गेल।हिनका सबहक मूहें कयटा हमर गीत लोकप्रिय भेल :

--------तोरा अंगनामे वसंत नेने आएब सजना।

--------बौआ दूनू हाथ जोड़ि करू ऐ माटिकें प्रणाम।

--------फगुआ आएल,फगुआ गेल,फगुआ चलिए गेल।

--------बौआ जुनि कान रे।

--------आएल केहेन समैया,यौ बाबू यौ भैया।

--------समधि एला बनि-ठनि क'

धोती-कुरता पहिरि क'

एला डहकन सून' बेटाके बियाहमे।

--------आँखिमे चित्र हो मैथिली केर

हृदयमे हो माटिक ममता

माएक सेवामे जीवन बिता दी

अछि बस इएह एकटा सिहंता।

----------मोन होइए अहाँकें देखिते रही

किछु बाजी अहाँ,हम सुनिते रही।

(१३) जीवकान्तजी : जीवकान्तजीक रचना मिथिला-मिहिरक लगभग सभ अंकमे रहैत छल। से कविता सभ शुरूमे हमरा आकर्षित नै

करैत छल। 'वस्तु'क कथा सभ हम दू दिनमे पढ़ि गेलहुँ। नीक लागल। आकृष्ट केलक। सबसँ बेशी नीक लागल 'नानी'।बादमे जखन 'तकैत अछि चिड़ै' प्रकाशित भेलनि त पढलहुँ।बहुत कविता नीक लागल। ओ हमर दीर्घ कविताक पांडुलिपि पढ़ि क' उत्साहवर्द्धक टिप्पणी सेहो पठौलनि। पत्राचार करबामे अद्वितीय छलाह। पत्रक माध्यमसं अपन सुझाव आ मैथिली जगतक सूचना प्रेषित करैत रहैत छलाह। हम नोकरीमे बिहारसं दूर गेलहुँ, मैथिलीक गतिविधिसं दूर भेलहुँ। हमर हिन्दीमे रचना बेशी हुअ' लागल, मैथिलीमे कम।मुदा जीवकान्तजी पत्रक माध्यमसं मैथिली दिस आकृष्ट करैत रहलाह, जाहिसं हम 'भारती-मंडन','कणामृत' आ 'आरम्भ'सं जुड़ल रहलहुँ आ एहि पत्रिका सभमे हमर रचनो छपल। वापस पटना एलापर सुझाव देने छलाह : गोष्ठी सभमे भाग लीय'। कियो बजाबय त जाउ, नहियों बजाबय तैयो जाउ।

(१४) यात्री-नागार्जुन : हाई स्कूलमे यात्रीजीक कविता पढने छलहुँ।बादमे हिनक उपन्यास 'पारो' पढ़लहुँ।एहिसं प्रभावित भेलहुँ। आकाशवाणी,पटनाक मैथिली कार्यक्रममे आ विद्यापति-पर्वक मंच पर हिनकासं कविता सुनलहुँ। हिनक बहुत हिंदी रचना सभ सेहो पढ़लहुँ।हिनक कवितामे विविधता आ नव-नव प्रयोग आकृष्ट केलक।

(१५) डा. गंगेश गुंजन :कॉलेजमे गेलाक बाद आकाशवाणी, पटनासं प्रसारित होइवला मैथिली कार्यक्रम ' भारती'सून' लगलहुँ। बहुत नीक लगैत छल।रवि दिन आ मंगल क' एहि कार्यक्रमक प्रतीक्षा करैत छलहुँ।गुंजनजी संचालित करैत छलाह।कार्यक्रम सुनैत-सुनैत मोनमे सपना सजौलहुँ, हमहूँ किछु एहेन लिखी जे आकाशवाणीसं प्रसारित भ' सकय। गद्य लिखबाक अभ्यास केलहुँ। तेसर प्रयासमे सफल भेलहुँ।नीक लागल।और लिखबाक लेल प्रोत्साहित भेलहुँ। दू सालक बाद फेर एकटा रचना 'भारती'कें प्रेषित केलहुँ। स्वीकृति आएल।

हम कृषि महाविद्यालय, ढोलीमे पढैत रही।हमरा बजाओल नै गेल रहय। ओ कथा हमर छात्रावासक जीवनसं सम्बंधित रहै, तें हमर किछु मित्र जोर केलनि जे हम अपने जा क' ई कथा पढ़ी। हमरो ई सलाह नीक लागल। जहिया प्रसारित होम'वला रहै, हम चल गेलहुँ पटना।गुंजनजी सं भेंट केलहुँ ।हुनका कहलियनि जे हम अपने कथाक पाठ कर' चाहैत छी। ओ एक बेर पढ़' कहलनि। कथा लेल दस मिनट समय निर्धारित छलैक।हम हबर-हबर पढ़' लगलहु त गुंजनजी कहलनि, हड़बड़ी करबाक काज नै छै, अहाँ स्थिरसं पढ़ू, एक-आध मिनट बेशीयो भ' जेतै त कोनो बात नै।हम तहिना पढलहुँ, ओ संतुष्ट भेलाह।कहलनि, कॉन्ट्रैक्टमे यात्रा-खर्च स्वीकृत नै अछि, तें, से त नै भेटत,मुदा आबि गेल छी त अहाँ पढ़ि सकैत छी, कार्यक्रमसं आधा घंटा पहिने आबि जाउ।हम पांच बजे पहुचलहुँ। हमर कथा प्रेम लता मिश्र 'प्रेम'क हाथमे छल।ओहो तखन 'भारती'मे योगदान करैत छलीह।प्रसारणक बाद जे टिप्पणी दूनू गोटे केलखिन से हमरा बड़ नीक लागल।एकटा नवविवाहित नवयुवकक मनोदशाक चित्रण छलैक ओहि कथामे।ई घटना हमरा लेल महत्वपूर्ण भेल। हम कथाक नाम रखने छलहु 'इंटरवल'। एकर अतिरिक्त कय ठाम अंग्रेजी शब्द सभ रहै।गुंजनजी सुधारि क' उपयुक्त मैथिली शब्द सभ लीखि देने छलखिन।कथाक शीर्षक 'धारक ओइ पार' क' देने छलखिन जे एकदम कथाक अनुकूल छलै।मतलब ई जे कथाकें प्रसारण योग्य बनेबाक लेल मेहनति कएल गेल छलै।से अनुभव करैत हमरा गुंजनजीक प्रति श्रद्धा बढल। हम भविष्यमे एहेन त्रुटिसं बचबाक लेल मोनमे निश्चय केलहुँ। गुंजनजीक उपन्यास 'पहिल लोक' हमरा बहुत नीक लागल। हुनकर गीत 'हमरा नहि सोर करू, हमर हाथ बाझल अछि, गामक सीमान जकां हमर मोन बाँटल अछि' हमरा बहुत

नीक लगैए।

(१६) छत्रानंद सिंह झा (बटुक भाइ): आकाशवाणी,पटनाक चौपाल कार्यक्रमक बटुक भाइक चहटगर गप सभकें नीक लगैत छलैक। ओ व्यस्त रहितो नव रचनाकारक लेल सहज आ सुलभ छलाह, सभकें हिनक स्नेह आ सहयोग भेटैत छलैक, से हमरो भेटैत आएल अछि। गीत-संग्रह 'तोरा अंगनामे' प्रकाशनक समय एकर भूमिका लिखबाक हमर अनुरोध ओ सहजतासं स्वीकार क'क' हमरा प्रोत्साहित केलनि। हिनक लीखल 'सुनू जानकी' हमरा बहुत नीक लागल।

(१७) डा.भीम नाथ झा : भीम भाइसं पहिल बेर राँटीमे एकटा गोष्ठीमे कविता सुनने छलहुँ जे नीक लागल छल।हिनकासं कविता सुनबाक आनंद हमरो प्रभावित केलक। भाइ मिथिला मिहिर'मे छलाह। हमर पोथी 'तोरा अंगनामे' छपि रहल छल।हम प्रूफ देखयबाक लेल मुसल्लहपुरसं अबैत छलहुँ। भाइ बहुत व्यस्त रहितो हमरा सहयोग दैत रहलाह,से हमरा आनंदित केलक। हिनक पोथी 'मन आंगनमे ठाढ़' बहुत नीक लागल।

(१८) उदय चन्द्र झा 'विनोद'जी : विनोदजीक गीत ' लोक एक्के छै सभ ठाँ, अनेक छैक गाम, अहाँ करबै जँ नीक त अबस्स लेत नाम' आ बहुत रास कविता हमरा नीक लगैत अछि। ओ 'माटि-पानि'मे सम्पादक रहथि त हमर कएटा रचना छपलनि। हमर दीर्घ कविताक पांडुलिपि देखि क' विनोदजी महत्वपूर्ण टिप्पणी देलनि आ हम हिनक सुझावक अनुसार आवश्यक संशोधन करबाक निर्णय केलहुँ, से नीक भेल।

(१९) प्रो. गंगानंद झा : हमर पोथी 'तोरा अंगनामे' छपि गेल रहय आ हमर स्थानान्तरण सीवान भेल। ओत' हिनकासं भेंट भेल।कॉलेजमे बॉटनीक प्राध्यापक छलाह। बंगला साहित्यक बहुत अध्ययन केने छलाह। गप-शपमे सेहो बंगलाक कोनो-ने-कोनो

साहित्यिक कृतिक कोनो अंशक चर्चा अवश्य करैत छलाह।से हमरा आकृष्ट करैत छल। हुनकेसं जानिक' बंगलाक साहित्यकार विमल मित्र,आशापूर्णा देवी,शंकर आ रवीन्द्र नाथ ठाकुरक कृति सभ पढ़लहुँ।ओ 'गीतांजलि'क गीत सभकें देवनागरीमे लिखि दैत छलाह आ मैथिली/ हिन्दीमे ओकर अर्थ कहैत छलाह। रवीन्द्रनाथक गीत : 'जगते आनंद यज्ञे आमार निमंत्रण धन्य हलो धन्य हलो मानव जीवन।' हमरा बहुत प्रभावित केलक। ई गीत हमरा और रचना करबाक लेल प्रेरित करैत रहल। हम मध्य प्रदेश चल गेलहुँ, ओतहु पत्र द्वारा संपर्क रखैत रचना-कर्म लेल जगौने रहलाह।ओ मैथिली पत्रिका विदेह-ईक सूचना देलनि आ २०१०मे हमर सेवा-निवृतिसं पहिने हमरा कहलनि जे आब 'विदेह'मे अहाँक नाम, अहाँक रचना देख' चाहैत छी।

(२०) गजेन्द्र ठाकुर : इन्टरनेट पर पाक्षिक मैथिली पत्रिका 'विदेह-ई' देखि क'बहुत आनंदित भेलहुँ। गजेंद्रजीसं हमरा भेंट नै अछि। मोने-मोन हुनका एहि लेल धन्यवाद देलियनि। ओ अपनो खूब लिखलनि आ एकटा विशाल लेखक-पाठक वर्ग तैयार केलनि। हम अवकाश प्राप्तिक बाद फरवरी २०११ मे पटना एलहुँ।पत्रिका नियमित रूपसं निकलि रहल छल। हम एहिमे नियमित रूपसं लीख' लगलहुँ : गीत, गजल। लिखबाक गति बढल।हमर अधिकांश गजल विदेहमे छपल। विदेहकें सदेह सेहो देखल।

(२१) आशीष अनचिन्हार :नेट पर मैथिलीमे गजल लेखनक लेल एकटा स्वतंत्र वेबसाईट बना क', ओहि पर गजल शास्त्र प्रस्तुत क'क', बहुत लोकके गजल लेखन लेल प्रेरित करब, मार्ग-दर्शन देब, पुरस्कारक योजना चलायब,बाल-गजल, भक्ति-गजल आदि विशेषांक प्रस्तुत करब,गजलकारक परिचय-श्रृंखला प्रस्तुत करब आदि काज

कठिन छल से आशीषजी केलनि आ हमरा सबहक आलोचनाक पात्र बनलाह। कएटा हिंदी,मैथिली पत्रिकामे गजल छपि चुकल छल। कतहु कियो एना आंगुर नहि उठौने छल।साठि बरखक उमेरमे जहिया ई सुनल जे व्याकरणक दृष्टिसं कएटा गजल दोखपूर्ण अछि त अहंकारकें चोट लागल।बहुत दिन धरि एहि बात पर कान देब आवश्यक नहि बुझलहुँ।मुदा, जखन-तखन ई बात ध्यानमे आबि जाइत छल।अंततः अहंकार पराजित भेल। जे नै जान' चाहैत छलहुँ, से जनबाक इच्छा भेल, जे नै पढ़' चाहैत छलहुँ, से पढ़बाक मोन भेल। 'अनचिन्हार आखर'क साइट पर गजलक व्याकरणक एतेक सामग्री देखि हर्ष भेल। मैथिलीक लेल गौरवक बात बुझाएल। हम सभ रदीफ़ आ काफिया पर ध्यान दैत छलहुँ, एकटा वस्तु छुटि रहल छल। ओ अछि बहर। हम सभ बहरक झंझटिसँ मुक्ति चाहैत छी, किएक त ओकर अभ्यास नै अछि। जिनका ई बूझल भ' गेलनि जे बहरक की भूमिका छै शेरमे, हुनका लगैत छनि जे बहरक बिना गजल कोना हेतै।स्वीकार आ विरोधक बीच बहरयुक्त बहुत रास गजल लिखा रहल अछि। आउ, नीक भविष्यक लेल तकर स्वागत करी।

(२२) प्रेम लता मिश्र 'प्रेम' : प्रेमलताजी २००८मे सेवा निवृतिक बाद मासे-मासे एकटा साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन अपन आवास पर करैत आबि रहल छथि आ सालमे एकटा पत्रिका सेहो प्रकाशित करैत छथि 'सांध्य गोष्ठी'। सभ मासक अंतिम शनि दिन ई गोष्ठी होइत छैक।हम २०१२ मे एहि गोष्ठीसं जुड़लहुँ। गोष्ठीमे नियमित रूपसं भाग लैत आबि रहल छी। एहि गोष्ठीक लेल सभ मास कम-स-कम दूटा नव गीत अथवा गजल लिखबाक कोशिश करैत छी।गोष्ठीमे बहुत साहित्यकारसँ भेंट भ' जाइत अछि आ हुनको सबहक रचनासँ लाभान्वित होइत छी।हम जे अनुभव करैत छी से हमर एहि दोहामे

प्रगट भेल अछि :
मनकें आनंदित करय, दिअए शान्ति, विश्राम
गीत, गजल, कविता,कथा हमर इ चारू धाम।

(१)

जन्म-स्थान :

मधुबनीसं चारि किलोमीटर दक्षिण आ पंडौलसं पांच किलोमीटर उत्तर। गामक नाम सलेमपुर। लोक सलमपुर कहैत छलै। सलमपुर नामक गाम और छलै, तें स्पष्ट करबा लेल भिट्ठी सलमपुर कहल जाइत छलै। भिट्ठी हमर पडोसी गामक नाम अछि, तें भेल भिट्ठी सलमपुर। बहुत बादमे पता चलल जे जमीनक नक्शाक अनुसार हमर गाम अछि शम्भुआड। सलमपुर हमर पडोसी गाम भेल। अही गाममे करीब चारि सय बर्ष पहिने भेल छलाह बेनी ठाकुर। बेनी ठाकुरक पुत्र भेलथिन हरिहर ठाकुर। हरिहर ठाकुरकें चारि पुत्र भेलथिन : मेबा लाल ठाकुर, जय कृष्ण ठाकुर, जयमंत ठाकुर आ भगलू ठाकुर। मेबा लाल ठाकुरकें दू पुत्र भेलथिन : अनंत लाल ठाकुर आ अशर्फी लाल ठाकुर। अनंत लाल ठाकुरकें दू पुत्र भेलथिन :राम नारायण ठाकुर आ दोसर पञ्च लाल ठाकुर जे अविवाहिते मरि गेलाह।जय कृष्ण ठाकुरक एकमात्र पुत्र छलथिन महावीर ठाकुर। जयमंत ठाकुरकें तीन पुत्र भेलथिन : मोतीलाल ठाकुर, अलीक लाल ठाकुर आ भोगी लाल ठाकुर। भोगीलाल ठाकुरकें दू पुत्र भेलथिन आ ओ अपने कमे बयसमे

मरि गेलाह। भगलू ठाकुरकें तीन पुत्र भेलथिन : राम रूप ठाकुर, गंगा दत्त ठाकुर आ राम स्वरुप ठाकुर। राम रूप ठाकुरक पुत्र भेलथिन महेंद्र नारायण ठाकुर। हिनक अलग घरारी छलनि। गंगा दत्त ठाकुरकें तीन पुत्र भेलथिन : राज नारायण ठाकुर, सुबुध नारायण ठाकुर आ ईश्वर नारायण ठाकुर। तीनू भाइक परिवार एक घरारी पर एक आंगनमे रहैत छल। राम स्वरुप ठाकुरकें तीन पुत्र भेलथिन : देव नारायण ठाकुर, हीरा लाल ठाकुर आ लक्ष्मी नारायण ठाकुर। तीनू परिवार एक आंगनमे रहैत छल।एक घरारी पर। मेबा लाल ठाकुर आ जयमंत ठाकुरक परिवार एक आंगनमे एक घरारी पर रहैत छल। अही आँगनमे अनंत लाल ठाकुरक पौत्र आ राम नारायण ठाकुरक पहिल संतानक रूपमे हमर जन्म भेल।ओहि दिन विजयादशमी रहै।भोरे हमर जन्म भेल गाममे। बाबा सीमान्त कृषक छलाह।खुट्टा पर एक जोड़ा बरद आ एकटा महिंस छल। खेतमे धान, मडुआ, अल्हुआ, राहरि,मसूरी, खेसारी आ कुसियार होइत छल। बहुत बादमे गहूम आ मकई सेहो हुअ' लगलै।

घर-आंगन :

परिवारमे माए, बाबू (पिता), दाइ (पितामही), बाबा(पितामह) छलाह। हमरा बाद घरमे तीन बहिन आ दू भाए एलाह। आंगनमे दोसर घर छलनि अशर्फी लाल ठाकुरक जे हमर बाबाक छोट भाए छलाह। हुनका दोकान बला बाबा सेहो लोक कहैत छलनि। ओ खेतीक अतिरिक्त किरानाके दोकान सेहो करैत छलाह। जाडक मासमे दरबज्जा पर कल्हुआर सेहो चलैत छलै।कुसियारकें पेड़ क' गुड़ बनाओल जाइत छल। तेसर घर छलनि मोतीलाल ठाकुरक आ भोगीलाल ठाकुरक। भोगीलाल ठाकुरक दू बालक छलथिन। चारिम घर छलनि अलीक लाल ठाकुरक। आंगनमे उत्तर कात मोतीलाल ठाकुर आ भोगी लाल ठाकुर,दच्छिन कात अनंत लाल ठाकुर (हमर

पितामह) पूब दिस दच्छिनसं अलीक लाल ठाकुरक घर छलनि,उत्तरमे एकटा छोट घर अशर्फी लाल ठाकुरक हिस्सामे छलनि। एहि दुनूक बीच चारि फीटक रास्ता छलै जाहि द' क' लोक आँगनसं दरबज्जा आ दरबज्जासं आँगन अबैत छल। पच्छिम दिस उत्तरसं अशर्फी लाल ठाकुरक घर छलनि आ दच्छिनमे अनंत लाल ठाकुरक हिस्सामे एकटा छोट-छीन घर छलनि जाहिमे भगवतीक घर आ भनसा-घर दुनू छल। आँगनमे एकेटा घर छल जे नीचांमे ईंटा आ उपर खपड़ा छलै। ई अशर्फी लाल ठाकुर बनबौने छलाह। शेष सभक घर फूसक छल। चारु घरबासीक लेल एकटा सझिया दरबज्जा छल जे खूब नमहर छल। दरबज्जा पर सभ घरक चौकी कि खाट रहैत छल।अशर्फी लाल ठाकुरक एकटा संदूक सेहो छलनि। दुपहरियामे आ रातिमे दरबज्जा भरल रहैत छल। दुपहरमे ताशक खेल होइत छल। दुर्गा पूजासं दीयाबाती तक पचीसी सेहो लोक खेलैत छल। भरि गाममे पांचे-छओ टा घर ईंटाक छल, और सभ फूसक फूसक घर लकड़ी, बांस, खढ, खरही, पतोइ आ साबेक जौडसं बनैत छल। जखन हवा चलैत छलै,लोक अगिलगीक आशंकासं डेराएल रहैत छल। एक शुभ दिनमे हम सभ अगिलगीक दुःख कोना भोगलहु, से आगू कहब। आंगनक पच्छिम एकटा इनार छल। टोल भरिक लोक एकर उपयोग करैत छल। इनारक पानिक उपयोग पीबा लेल, नहेबा लेल आ कपडा खिचबाक लेल कएल जाइत छल। नवकनिया सभ लेल घरक पाछू टाट सं घेरक' बाल्टीमे पानि राखि देल जाइत छल। टोलक दच्छिन एकटा पोखरि छलै। हेलि क' जाइठतक जाएब आ ओत' सं हेलि क' आएब नीक लगैत छलै। बूढ़ लोक सभकें पोखरिमे नहाएब नीक लगैत छलनि। लोक माल-जालकें सेहो पोखरिमे नह्बैत छल। पनिभरनी डोलसं घैलमे पानि इनारसं भरि क' अंगने-अंगने द' अबैत

छलीह। ओकरा सभ घरसं अन्न देल जाइत छलै आ पावनि-तिहार अथवा मूडन, उपनयन,विवाह आदि अवसरपर कपडा सेहो। पैखाना जेबाक लेल बसबिटटी अथवा खेत दिस लोक जाइत छल। नवकनियाँ सबहक लेल बाड़ीमे खाधि खुनि क’ तात्कालिक व्यवस्था कएल जाइत छल। हाथ माइटसं धोल जाइत छल।

परंपरा

पुत्र जन्म लेल लोक देवी-देवताक कबुला करैत छल। पुत्र भेला पर बड खुशी मनबैत छल। बच्चा एक-दू सालक होइत छल त नीक दिन तका क’ बड विधि-विधानसं मूडन कराओल जाइत छल। सभ सम्बन्धीकें नोत-हकार देल जाइत छल। पाहुन सभ अबैत छलाह। गामक लोककें भोज खुआएल जाइत छल। स्त्रीगण सभ गीत गबैत छलीह। हजाम कैंचीसं बच्चाक माथक केश कटइत छल। हजामकें पारिश्रमिक आ कपडा देल जाइत छल। परंपराक अनुसार हमरहु मूडन भेल। ई उत्सव बेटीक लेल नै कएल जाइत छलै। बच्चा आठ बरखक होइत छल त उपनयनक बात शुरू भ’ जाइत छल। नीक दिन तकाएल जाइत छल। एक दिन उद्योग-मरबठटठी होइत छल। बांस काटल जाइत छल आ मरबा बन्हाइत छल। भराइत छल। नीपल-पोतल जाइत छल। गीत-नाद होइत छलैक।भोज होइत छलैक। उपनयनक दोसर चरण होइत छल कुमरम।सर-कुटुंब सब अबैत छलाह। बच्चाक विवाहित बहिन,दीदी,मामी,नानी,मौसी आदि विदागरी भ’क’ अबैत छलीह। पंडितजी अबैत छलाह।पूजा-पाठ होइत चल।गीत-नाद होइत छल। भोज होइत छल। तेसर चरण होइत छल उपनयन। छागर कटाइत छल।गीत-नाद होइत छल। पूजा-पाठ होइत छल।एक आदमी गुरु बनैत छलाह। एक आदमी ब्रह्मा बनैत छलाह। बालकक माथक केश अस्थुरा ल’क’ हजाम द्वारा काटल जाइत छल। बालककें गायत्री मन्त्र पढ़ाओल जाइत छल। जनउ

धारण कराओल जाइत छल। पानि ल'क' लघुशंका करब सिखाओल जाइत छल।छुआछूत मानब सिखाओल जाइत छल। लघुशंका आ दीर्घशंका करैत काल जनउ कान पर राखब सिखाओल जाइत छल।रातिमे फेर भोज होइत छल। चारिम चरण होइत छल रातिम जे उपनयनक चारिम दिन होइत छल। एकर संग सत्य नारायण भगवानक पूजा होइत छल। पाहुन सभ जे कुमरम दिन अबैत छलाह से रातिमक बादे मुक्त भ' पबैत छलाह। बिदागरीवाली सभ सेहो रातिम अथवा पूजाक बादे वापस होइत छलीह। पाहुन सभ बरुआक लेल कपडा आ आशीर्वादक रूपमे किछु टाका खर्च करैत छलाह। जाइत काल हुनका विदाईमे धोती, जनउ-सुपाड़ी देल जाइत छलनि। स्त्रीगण सभ सेहो बरुआ लेल, बरुआक माए लेल कपडा आ पाइ अनैत छलीह। हुनको सभकें जाय काल साडी,साया,ब्लाउज आदि देल जाइत छलनि। उपनयनक प्रक्रियामे घरवारीकें १५ दिन सं २५ दिन समय लागि जाइत छलनि आ बहुत अन्न-पानि आ टाका खर्च होइत छलनि।मुदा बहुत उत्साहसं ई खर्च लोक करैत छल। जिनका अपना घरमे अन्न-पानि आ टाका नहि रहैत छलनि ओ कर्जा ल'क', खेत भरना ध' क' व्यवस्था करैत छलाह। परम्पराक अनुसार हमरहु उपनयन भेल। बेटीक लेल ई सभ नै होइत छल। बेटीकें लोक स्कूल नै पठबैत छल।लोक चाहैत छल जे बेटीकें अक्षरक ज्ञान भ' जाइ, घरवलाकें चिट्ठी लिखैक अवगति भ' जाइ।बेटी दस-बारह बरखक भेलै त कतहु ओकर विवाह करा क' लोक निश्चिन्त होइत छल। बेटाकें लोक स्कूल पठबैत छल। गाममे पुबाई टोलमे छलै स्कूल, पाँचमा तक पढाइ होइत छलैक। कोनो-कोनो शिक्षक सभ विद्यार्थीक संग बहुत कठोर व्यवहार करैत छलाह। उद्देश्य नीक छलनि। जे छात्र सबक याद क'क' नै जाइत छलाह हुनका मारि

खाए पडैत छलनि। मारबाक लेल बांसक करची अथवा खजूरक छड़ी अथवा रोलक उपयोग कएल जाइत छल। जकरा पर मास्टर साहेब खिसियाइत छलाह, ओकरा मारैत-मारैत ओध-बाध क' दै छलथिन। पीठ पर दाग भ' जाइत छलै। विद्यार्थी स्कूल जेबासं छीह काट' लगैत छल।ओकरा और कठोर दंड भेटैत छलै। शिक्षक बुझैत छलाह जे मारिक डरसं विद्यार्थी पढ़त, पाठ याद क' क' आएत मुदा परिणाम होइत छल जे बहुत विद्यार्थी स्कूल एनाइ बंद क' दैत छल। माए-बाबू सेहो सोच' लगैत छलाह जे जीतै त बीस टा उपाए हेतै।एहन बच्चा खुरपी-कोदारि ध' लैत छल।

प्राइमरी पाठशाला

घरसं एक किलोमीटर पर छल स्कूल। बाल मुकुंद बाबू छलाह प्रधानाध्यापक।दूटा और शिक्षक छलाह। बाल मुकुंद बाबूक डर बहुत होइ छलै विद्यार्थी सभकें। जे हुनका डरसं पाठ याद क'क' गेल से बांचल, जे नै याद केलक ओकरा छड़ी अथवा रोलसं बड मारि खाए पडैत छलैक। भरिसके कियो हुनकासं मारि नै खेने हएत। मारि नै खाए पडय, ताही डरसं पाठ याद क' क' जाइत छलहुँ। तकर लाभ भेल। हमर संगी छलाह राजेंद्र ठाकुर। हुनकर बाबू हुनका गायक बनब' चाहैत छलथिन। ओ सांझ क'कैटोला स्थानपर एकटा गबैयाजीसं गायन सीख' जाइत छलाह। हुनका संगे एकदिन हमहूँ गेलहुँ। हरमुनियाँ पर 'सा रे ग म प ध नी सा,सा नी ध प म ग रे सा' क अभ्यास करब आकर्षित केलक। बाबूकें नीक नै लगलनि। ओ हमरा बुझौलनि जे बी ए पास केलाक बाद और जे किछु करबाक हुअ' से करिह', एखन नै। ओ स्कूलमे मास्टर साहेबकें सेहो कहि देलखिन। मास्टर साहेब तेहेन छौंकी लगेलनि जे हमर गायन सिखबाक लेल उत्साह ख़तम भ' गेल। स्कूलमे एकटा सज्जन मास्टर साहेब एलाह। ओ ककरो नै मारैत छलखिन। ओ साइकिलसं

गामसं अबैत छलाह। साइकिलसं अबैत काल हुनका लोक बेर-बेर पुछैत रहै छलनि, मास्टर साहेब कते बजलैए? ओ खौंझाइत छलाह। लोक दौड़ि क' लग जा क' पूछि दैत छल। ओ कहैत छलखिन 'दस', चाहे कतबो बाजल होइ। स्कूलमे प्रार्थना होइत छलै, से हमरा सबसँ बेशी नीक लगैत छल। सरस्वतीक पूजाक अवसर पर स्कूलक आगाँ नाटक होइ छलै,सेहो देखब नीक लगैत छल।नाटक ओही टोलक नवयुवक सभ करैत छलाह।

न'हमे दूरदर्शन

दाइक सुइत हेरा गेलनि।वियाहमे भेटल रहनि। चानीक छलै। धन्हारीक खोधलीमे रखने छलीह।बहुत खोज भेल। नै भेटलनि। आठ बरख के भीतरक दू टा बच्चाकें ल'क' दाइ भौड़ा पहुँचलीह। एकटा हम रही।दोसर छलाह बाबू नारायण। ओ हमरासं दू बरखक नम्हर छलाह। हमरा सभक दहिना औंठामे काजर लगाक' मौलबी साहेब मोने-मोने किछु पढ़लनि आ कनी कालक बाद हमरा औंठाकें सोझां राखि पुछ्लनि देखियौ त किछु देखाइए। हम किछु नै देखलियै। बाबू नारायण कहलखिन, हं,हम त देखै छियै, ई त कैला छै। दाइ कहलखिन, हे, ठीकसं देखही, कैला नै हेतै, दोसर कियो हेतै। बाबू नारायण कहलखिन, हम ठीकसं देखै छियै, ई कैले छै। मौलबी साहेब फेर आँखि मूनि क' किछु मोने-मोने पढ़ि क' कहलखिन, आब देखियौ त की सभ ओ करै छै। बाबू नारायण बाजय लगलाह : ओ घरमे गेलैए .....धनहारीमे हाथ देलकैए ......ओइमे स' किछु निकालिक' फाँड़मे रखलकैए .....आब घरसँ निकलि गेलै....आब आँगनसं बाहर आबि गेलै.....कतौ जाइ छै ....एक ठाम पोखरि खुनाइ छै....ओत' ठाढ़ भ'क' ककरोसं गप्प करै छै.....जकरासं गप्प करै छै ओकरा नै चिन्है छियै......आब बिदा भेलै.....जा रहल छै....आब घर सभ

छै.....एकटा आंगनमे एलै......एकटा मौगीकें गोर लगै छै ....ओकरा संगे एकटा घरमे गेलैए....किछु देलकैए ओकरा ...आब घरसं बाहर आबि गेलै....फेर ककरो गोर लगैछै, हम नै चिन्है छियै..... मौलबी साहेब पुछलखिन, ई कैला के अछि? दाइ कहलखिन, नै मौलबी साहेब, कैला हमर वस्तु नै चोरा सकैए। मौलबी साहेब कहलखिन, वएह लेलक-ए, ओकरे पुछिऔ। घर अबै गेलहु।घरमे ककरो मोन नै मानै जे कैला चोरौने हेतै। कैला सबहक विश्वास पात्र छल।महींसक चरबाही करैत छल। कियो पुछलखिन त कैला सोझे नठि गेल। बाबा चिराकी चाउरक प्रयोगक घोषणा केलनि। चोर पकड़बा लेल चिराकी चाउरक प्रयोग : चिराकी चाउरक नाम सुनिते कैला बाज' लागल, हम त एक किलो चाउर चिबा जेबै, हमरा कोनो डर अछि, हम चोरेने छियैहे ने त हमरा कथीक डर। सांझमे टोलक बहुत लोक सभ जमा भेल। एकटा थारीमे अरबा चाउर आएल। बाबा किछु मन्त्र पढ़िक' कनी-कनी क' सभकें देलखिन चिबाब'। सभ कनिएँ कालमे चिबाक' घोंटि गेल, कैलाकें घोंटल हेबे नै करै। कतेक काल धरि चिबबैत रहल कैला, एक मुट्ठी चाउर नै भेलै चिबाएल। पक्का भ' गेलै जे कैले चोर अछि। बाबाक आँखिमे नोर भरि एलनि।कैला दिस तकलनि। कैला बाबाक पएर पर खसल, हमरा माफ़ क' दिय' गिरहत, हमही चोर छी। कैला चोर नै छल। घरमे बेगरता छलै। तें एहेन केलक। ओ गछलक जे हम त ओकरा बेचि लेलहुँ, मुदा हम ओकर पाइ सधा देब।कैलाकें कोनो दंड नै देल गेलै। ओकरा फ़ज्झति नै कएल गेलै। ओकरासं घृणा नै कएल गेलै। कैला दू-तीन सालमे कर्जसं मुक्त भ' गेल। बादमे ओ नोकरी कर' आसाम चल गेल। ओत' सं सालमे एक बेर अपन गाम अबैत छल त हमरो गाम आबि बाबा-दाइक भेंट कर' अवश्य अबैत छल। कैला हमरो नीक लगैत छल। गहना रखबाक एहेन उपाय, एहेन चोरी, चोर

पकड़बाक एहेन उपाय, चोरक प्रति एहेन भाव आ पकड़ा गेलाक बाद चोरक संग एहेन व्यवहार हमरा प्रभावित केलक। हमर व्यक्तित्वक निर्माणमे एकर महत्व अछि।हम मानैत्त छी जे जीवनमे ककरोसं कोनो क्षति भ' जाइ त ओकरा दंड देबाक बात नै सोचबाक चाही, ओकर स्थितिक अनुमान करक चाही,ओकरा प्रति करुणाक भाव रखैत क्षति कम करबाक प्रयास करबा पर ध्यान देबाक चाही, क्षति और ने भ' जाए से होश राखब जरुरी होइत छैक।भ' सकैछै जकरा अहाँ अपराधी बुझैत छी से अपराधी नै हो, ओ मात्र एकटा उपकरण हो आ अहाँक क्षति अहीं द्वारा निर्मित एकटा परिस्थितिक परिणाम हो। तें अपराधक जड़ि तकबाक प्रयास करब आ ओकर निदान ताकब बेशी उपयुक्त भ' सकैत अछि। अधिक काल एना होइत छैक जे कोनो दुर्घटना भेला पर लोक अपनाकें निर्दोष आ शेष सभकें अपराधी बुझैत अछि, जकर परिणाम शुभ नहि होइत अछि।

मिडिल स्कूल

पाँचमा पास केलाक बाद मिडिल स्कूल, भिट्ठीमे हमर नाम लिखाएल गेल। ई स्कूल घरसं दू किलोमीटर पर छल।

ओइ स्कूलमे सोहरायके हमर पीसा सेहो शिक्षक छलाह। पीसाक सुझावक अनुसार हम गाम परसं चारि एक्सरसाइज हिंदीसं अंग्रेजी ट्रांसलेशन बना क' ल' जाइत छलहुँ। दुपहरमे टिफिन टाइममे हुनका लग ल' जाइ छलहुँ। ओ सही क' दै छलाह। गलती दोबारा नै हो से ध्यान रखैत छलहुँ। गणित आ अंग्रेजी पढबामे नीक लगैत छल।अन्य विषयमे कम मोन लगैत छल। स्कूलमे प्रतियोगिताक वातावरण नै छलै। नेतरहाटमे नाम लिखेबाक लेल परीक्षामे सम्मिलित भेलहुँ। सफल नै भेलहुँ। मुदा,सातमामे कक्षामे सबसँ बेशी प्राप्तांक आएल।

शान्तिक खोजमे अशांति :

आंगनमे चारि घरवासी रहबाक कारण सदिखन टोना-मेनी होइत रहै छलै।जखन-तखन हल्ला-गुल्ला होइत रहब सामान्य बात भ' गेलै। हमर पिता घरारी अलग करबाक विकल्प चुनि लेलनि। एहि निर्णयसं लाभ ई भेलै जे हम सभ हल्ला-गुल्लासं अलग भ' गेलहुँ। हानि ई भेल जे रहबा लेल कहुना घर त ठाढ़ भ' गेल मुदा तीन साल तक भराइ चलैत रहल।ओ खेत छलै, गहींर छलै।बहलमान बड़द जोति क'कटही गाड़ी टोलसं दक्षिण बाध ल' जाइ छल। ओत' कोदारिसं माटि काटि क'गाडी पर लादि क' घर अबैत छल। बाबा गाड़ीक संग जाइ छलाह, अबै छलाह। खेतमेसं माटि उठाक' गाडी पर रखैत छलाह। कहियो क' बाबाक संग हमहूँ जाइत छलहुँ । घर बनयबामे जतेक खर्चक अनुमान कएल गेल छलै ताहिसं बहुत बेशी खर्च भेलै। दू टा घर बनल। पछबारी कात एकटा भनसा घर जाहिमे पूब दक्षिण कोनमे भगवती रहलीह, पूब दिस चिनुआर भेल। घरमे किछु कोठी बनाक' राखल गेल। बीच घरमे सेहो भोजन करबा लेल जगह छल।दुआरि पर सेहो भोजन कएल जाइत छल। दुआरि पर घैलची बनल जाहिमे पीय'वला पानिक दूटा घैल रखबाक जगह छल। दक्षिण कात घर बनल जाहिमे किछु कोठी सभ राखल गेल, एकटा पलंग राखल गेल। ओकर दुआरिपर जाँत छल। उत्तरसं एकटा दरबज्जा बनल। ताहिमे पच्छिम दिससं एकटा छोट-छीन कोठली निकालल गेल जाहिमे लकड़ीक एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी राखल गेल।पूब उत्तर कोनमे एकटा चक्का बनाओल गेल। आँगनमे एकटा ढेकी गराएल।आँगन नमहर बनल।घर सभ बांस, लकड़ी, खढ आ साबेक जौडसं बनल।समय बहुत लगलै। खर्च बहुत लगलै। एकर प्रभाव जीवन-यापन पर पडलै। एहि बीच हमर पढ़ाइ-लिखाइ जेना-तेना चलैत रहल।

कान त सोन नहि :

जे कर्पूरा एकटा बच्चाक बाट १२ बरख तकलनि, हुनका ६ टा बच्चा भेलनि, तीन टा बेटा, तीन टा बेटी। मुदा आब घरक आर्थिक स्थिति एहेन भ' गेलनि जे पहिलो बेटीक बियाहक लेल सक्षम नहि रहलीह। पहिल बेटी शान्तिक पढाई ओतबे भेलनि जते अपन छलनि। १२ बरख पुरैत-पुरैत शांतिक लेल बरक तलाश शुरू भेल। सभकें चिंता भेलनि। सासुकें सेहो पोतीक विवाह देखबाक तेहेन अभिलाषा जागृत भ' गेलनि जे एकटा अशिक्षित द्वितीय बरमे सेहो सभ गुण देखाय लगलनि। किछु लोको सभ प्रशंसा केलकनि, माथपर दू बीघा खेत छै, खुट्टापर महींस-बरद छै, पोखरि छै, पोखरिमे माँछ खूब होइछै। हमर पिता कलकत्तामे प्रेसमे काज केने छलाह, दरभंगामे नोकरी केने छलाह।हमरा विवाहक लेल बहुत दिन धरि अडल रहलाह मुदा बेटीक विवाह लेल किए एतेक धडफडा गेलाह, हमरा बहुत दिन धरि नहि बुझाएल। ओना जे कियो बाहर नहि गेल छलाह, हुनका सभ लेल ई सामान्य बात छलै। ओइ समयमे लोक बेटीकें पढ़ाएब ठीक नै बुझैत छल। लगमे स्कूल नै छलै।पढ़बा लेल बेटीकें दूर पठाएब अनुचित मानल जाइत छलै।बेटीक बियाहक लेल उपयुक्त वयस १२ वर्ष धरि मानल जाइत छलै।कोनो शाश्त्रमे लिखल छलै (हम नै पढ़ने छी) जे बेटीक विवाह १२ वर्षसं पहिने करा देबाक चाही ने त पिता पापक भागी हेताह। लोक शाश्त्रक एहि आदेशक पालन करब कर्तव्य बुझैत छल। मान्यता ई छलै जे बेटी पराया धन थीक, कहुना सकुशल अपन सासुर चल जाए से लोकक लक्ष्य होइत छलै। बियाहक विधि-व्यवहार महत्वपूर्ण होइत छलै। विधि-व्यवहार आसान नै छलै। विवाहमे वरियाती एतै। वरियातीक भोजनक व्यवस्था करब सबसँ महत्वपूर्ण काज होइत छलै।रंग-विरंगक २१ टा कि ३१

टा तरकारी बनतै।तौलाक तौला दही पौडल जेतै।रसगुल्ला जबरदस्ती पचास-पचास टा खुआएल जेतै।चारि-पांच दिन पर चतुर्थी हेतै।बीचमे सभ दिन मौह्क हेतै।गीत-नाद होइत रह्तै। चतुर्थीक बाद नीक दिनमे जमाएकें बिदाई द'क' विदा कएल जेतनि। जमाए १० दिन कि १५ दिन पर अबैत रहताह। हुनका सासुरमे जबरदस्ती १०-१०, २०-२० दिन राखल जेतनि। ओकर बाद पंचमी हेतै। तखन मधुश्रावनी हेतै। मधुश्रावनीमे १५ दिन धरि बेटी फूल लोढ़तीह।कथा-पूजा हेतै।गीत-नाद होइत रह्तै।लड़कावला नोत पूरय एताह।चारि-पांच दिन रहताह।हुनका ओहिना भोजन कराओल जेतनि जेना वरियातीकें कराओल जाइत छनि।हुनका नीक बिदाईक संग विदा कएल जेतनि। तकर बाद कोजगरा हेतै। कोजगरामे लड़कीवला मखान,दही,केरा,चूडाक भारक संग लड़काक ओत' एताह।हुनको चारि दिन राखल जेतनि।तकर बाद गंजी,धोती,कुरता,डोपटा, पाग आदि द' क' विदा कएल जेतनि। तकर बाद जराउर हएत। सभ पावनिमे दुनू दिससं भार-चंगेराक आदान-प्रदान होइत रहत। तीन अथवा पांच साल पर द्विरागमन हएत। एहि बीच लड़का अपन सासुर अबैत-जाइत रहताह। विवाहक सम्पूर्ण कार्यक्रममे एहि तरहें तीन सं पांच साल लागि जाइत छलै। ई छलै परम्परा। एकरा संग छलै बहुत रास विधि-व्यवहार जकरा आगाँ बेटीक इच्छा-आकांक्षाकें कोनो महत्व नै देल जाइत छलै। कोनो बेटी अपन इच्छा-आकांक्षाकें कहियो प्रगट नै करैत छलीह।दू-तीन टा बच्चा भेलाक बादे बेटी किछु बजबाक साहस जुटा पबैत छलीह। पन्द्रहम बरख पुरैत-पुरैत शान्ति अपन सासुरक परिवारमे शामिल भ' गेलीह। राम नारायण ठाकुर एक बेटीक विवाहसं निश्चिंत भेलाह।

बाल-मण्डली :

हमर संगी छलाह राजेंद्र ठाकुर,आशानन्द ठाकुर,बैद्यनाथ ठाकुर, खेलानन्द ठाकुर (बाबू नारायण),राम परीक्षण झा, फ़क़ीर चन्द्र दास, नगेन्द्र भूषण मल्लिक आ किछु और गोटे। एहिमे किछु गोटे हमरासँ एक किलास आगू छलाह। सभ गोटे सांझक' फुट-बौल खेलाइत छलहुँ। बादमे सभ गोटेक निर्णय भेल जे हम सभ गाममे स्वच्छता अभियान चलाएब। टोलमे पोखरिकें साफ़ करबाक काज शुरू भेल। पोखरिक भीड़ पर भरि टोलक लोक छठि पूजा करैत छल। छठि पूजाक बाद एकर चिंता लोक नै करैत छल। से पोखरिमे कुम्भी बड़ भ' गेल रहै।बाल मंडली एकर सफाइमे लागि गेल। दस-बारह दिनमे पोखरि साफ़ भ' गेल। आब पोखरिक भीड़ पर एकटा पुस्तकालय बनेबाक काज शुरू भेल। भूषणजीक अक्षर बहुत सुन्दर होइत छलनि। पुस्तका लयक लेल ओ एकटा नियामावली बनौलनि, लोक सभसं एकटा-दूटा क' बांस मांगल गेल।हम सभ अपनेसं बांस काटि क' अनैत छलहुँ। पोखरिक दछिनबरिया भीड़ पर जमा कर' लगलहुँ। लोक सभसं चंदा मागल गेल। जन राखल गेल। अपनो सभ भिडलहुँ।माटिक देबाल ठाढ़ हुअ' लागल। हमर सबहक पढ़ाइ बाधित भ' रहल छल। हमरा सभमे एक गोटे तमाकुल खाइत छलाह। हमर पिता एकदिन हमरा कहलनि जे जाहि मंडलीक सदस्य तमाकुल खाइत छथि ओ मण्डली समाज-सुधार की करत। ई बात हमरा ठीक लागल। हम मण्डलीक सदस्यकें नहि बदलि सकैत छलहुँ। हम इएह कारण लिखैत मण्डलीसं अलग भ' गेलहुँ। मण्डली किछु दिनक बाद भंग भ' गेल आ पुस्तकालयक काज पूरा नै भेल।मण्डलीसं अलग भेला पर हम अपन ध्यान अपन पढाइ पर केन्द्रित केलहुँ। शेष सदस्य सभ सेहो अपन-अपन पढाइमे लागि गेलाह। हमरा फुट-बौल सेहो पसंद नै आएल। हमरा एक बेर गेंदसं

जांघमे तेहेन चोट लागल जे सभ दिन लेल खेलसं विरक्ति भ' गेल। पिता कागजसं खेल केनाइ सिखौलनि। काग़ज़सं खेल ! कागजक दुआति बनौनाइ, काग़ज़क नाओ बनेनाइ। हमरा ई खेल सुरक्षित लागल। गाममे हमर कक्का आ हुनक समवयस्की सभ नाटक खेलाइत छलाह, से हमरा नीक लगैत छल। पुबाइ टोलमे जगदीश बाबू ओत' कोनो अवसर पर बेलाहीवला नौटंकी एलै।सत्य हरिश्चंद्र, वनदेवी और कोनो-कोनो नौटंकी देखैत खूब नीक लगैत छल।एक बेर सांझ तक पता छल जे नै हेतै, त हमसब खा क' सूति रहलहुँ। बहुत रातिमे निन्न टूटल त नगाराक आवाज सुनाइ पडल। हमरा नै रहल भेल। हम चुपचाप एसगर ओते रातिमे गाछी द' क' चल गेलहुँ नौटंकी देख' आ ख़तम भेलै त और लोक सभ संगे चल एलहुँ।

अथ महराजजी कथा :

नारायणपट्टीमे हमर पिताक एकटा बहिन छलथिन।हुनका एकमात्र पुत्र रहथिन शंकर। शंकरक उपनयन भ' गेल रहैक। दुर्योगसं एक राति घरमे सुतलमे शंकरकें सांप काटि लेलकनि। ओ नहि जीबि सकलाह।बडका शोकमे दीदीक परिवार डूबि गेल। सभ सम्बन्धी लोकनि दुःखमे पड़ि गेलाह।हमर पिता सेहो बहुत चिंतित भेलाह।घरमे सभ बहुत दुखी रहथि।एहि दुर्घटनासं पहिने एक बच्चाक जन्मक समय दीदीक ई स्थिति भ' गेलनि जे देहमे खून बहुत कम बचलनि, खून चढ़ाबक आवश्यकता भ' गेलै।बाबू अपन खून देलखिन। जान बँचलनि। आब ई पुत्र-शोक। बाबूकें भेलनि घरक जगहकें कोनो गुनी-महात्मासं जांच करबियैक। एकटा महात्माजी कतहु भेटलखिन। हुनका ओ घरारी देखब' लेल अनलनि। नारायणपट्टी जेबासं पहिने चारि-पांच दिन महात्माजी हमरा सबहक पाहुन भेलाह।ओ अपन किछु करतब देखौलनि।एकदिन ओ कहलखिन हम काग़ज़सं रुपैया बना देब। लोक अचंभित भेल। लोक जमा भ' गेल। महात्माजी एकटा

कागजक पन्ना लेलनि, एक लोटा पानि लेलनि।कागजपर किछु लीखि क’ सभकें देखाक’ ओकरा टुकड़ी-टुकड़ी क’ देलनि। ओकरा मुंहमे ध’ लेलनि। चिबाक’ लोटामे रखलनि। हाथ लोटामे ध’ क’ बाहर निकाललनि त ओहिमेसं एकटा दसटकही रुपैया निकललनि। ओइ पर ओहिना सभ चित्र आ चेन्ह सभ रहै जेना आन रुपैया सभमे रहै छै।सभ आश्चर्यचकित भ’ गेल। महात्माजी कहलखिन जे किछु घंटाक बाद ई रुपैया पुनः कागज भ’ जाएत, तें जतेक शीघ्र हो एकर उपयोग क’ लिय’।एक आदमी सायकिलसं गेल पंडौल ओ रुपैया ल’क’ आ ओकर मोतीचूरके लड्डू किनने आएल। सभ कियो लड्डू खेलक। सभ हुनका महाराजजी कह’ लगलनि। महाराजजी कहलखिन, जे कियो सिमरिया जाए चाहैछी से तैयार होउ, हम सांझमे गाछ पर चढ़ा क’ ल’ चलब, ओत’ स्नान क’क’ सभ गोटे घूरि आएब।दिनमे त’ कए गोटे तैयार भेलाह, मुदा सांझ होइते सभ डेरा गेलाह, कियो नै तैयार भेलाह। बाबू हमरा सिखौलनि जे महाराजजी जौं पुछथि ‘की चाही?’ त कहबनि जे कोट-पेंट चाही। दोसर दिन महाराजजी पुछ्लनि, ‘की चाही?’ हमरा नै कहल भेल जे कोट-पेंट चाही।हम किछु नै मांगि सकलहुँ।ई हमर स्वभाव छल।बाबू बहुत दिन तक हमर एहि स्वभावकें हमर कमजोरी मानैत रहलाह। मुदा,हमर ई स्वभाव हमर शक्ति छल,से बहुत बादमे पता चलल। महाराजजी और लोक सभकें पुछलखिन, की चाही त नवयुवक सभ कहलखिन हमरा सभ गोटेकें सिनेमा देखा दिय’। महाराजजी सभकें ल’क’ मधुबनी गेलाह।रस्तामे कागजसं एकटा नमरी बना क’ द’ देलखिन। सभ गोटे रातिमे घुरलाह त उदास रहथि। बजै गेलाह जे सिनेमा हॉलसं निकलैत काल महाराजजी कत’ बिला गेलखिन जे सभ गोटे तकैत-तकैत रहि गेलाह, नै भेटलखिन।

हमर हाई स्कूलक शिक्षा :

१९६१ मे आठमाँमे हमर नाम पंडौल हाई स्कूलमे लिखाएल गेल।हमरा गणितमे नीक लगैत छल।तें विज्ञान लेलहु। फिजिक्स,केमिस्ट्री आ मैथमेटिक्स। प्रधानाध्यापक छलाह श्री अशर्फी सिंह। गणित पढ़बैत छलाह महावीर बाबू। गुप्तेश्वर बाबू अलजेब्रा आ बैद्यनाथ बाबू ज्यामिति पढ़बैत छलाह। बच्चा बाबू मैथिली पढबैत छलाह।ओ हमरा मामा गामक छलाह। हुनका हाथमे 'मिथिला मिहिर' रहिते CHHALANIEE छलनि।बादमे हुनक पुत्र राम सेवक बाबू सेहो मैथिली पढ़ौलनि। बमबम मास्टर साहेब केमिस्ट्री पढ़ौलनि। पढाइ बड सुंदर होइत छलैक।खूब मोनसं मास्टर साहेब सभ पढबैत छलाह। हम बहुत कुशाग्र बुद्धिक बालक नै छलहुँ जे कोनो विषय एक बेर पढलासं याद भ' जाए।हम अभ्यास खूब करैत छलहुँ। क्लासमे जे पढ़ाइ होइत छलै, तकरा घुरती काल रस्तामे याद करैत अबैत छलहु।गामपर सांझमे फेर एक बेर याद करैत छलहुँ। गणित आ विज्ञानमे काल्हि जे पढाइ हेतै तकरा एक बेर पढ़ि जाइत छलहुँ।अइसं लाभ ई होइत छल जे क्लासमे जखन पढाइ होइत छलै त ठीकसं बुझि जाइत छलिऐक। जौं कतहु नै बुझाएल त ठाढ़ भ'क' पुछि लैत छलियनि।मास्टर साहेब बुझा दैत छलाह, फेर कोनो दिक्कत नै रहि जाइत छल। पढाइक ई तरीका बाबू सिखौने छलाह।एहिसं बहुत लाभ भेल। स्कूलमे प्रतियोगिताक वातावरण नै छलैक। आठमा-नौमामे हमर संगी छलाह राजेंद्र झा, मुनीन्द्र नारायण दास,मोद नारायण झा, शमीम अहमद आदि। आठमाक अर्ध-वार्षिक परीक्षामे एडवांस्ड मैथमेटिक्समे चारिटा सवाल रहै, तीनटाक जवाब देबाक छलैक। महावीर बाबू नंबर सुनौलथिन ---जगदीश चन्द्र ठाकुर ९९ हाईएस्ट। ओ हमर बचपनक सभसं बेशी आनंद दायक दिन छल। एलीमेंट्री मैथमेटिक्समे सेहो बहुत नीक अंक आएल।फिजिक्स आ केमिस्ट्रीमे

बहुत नीक नै रहय। सब विषय मिलाक' क्लासमे हमर स्थान प्रथम रहल। पाठ्य-पुस्तकमे मैथिली कथा-कविता सभ पढ़ब नीक लगैत छल, तथापि, गणित हमर सभसं प्रिय विषय भ' गेल छल। कोनो भारी सवाल जखन बनि जाइत छल त बडड आनंद अबैत छल। हमर सबसं छोट मामा सेहो ओही स्कूलमे पढैत छलाह, हमरासं दू क्लास आगाँ। मामा बहुत तेज छलाह, क्लासमे प्रथम अबैत छलाह।मामा दसम कक्षामे प्रथम एलाह, हम आठम कक्षामे। गर्मीक अवकाशमे मामा गाम जाइत छलहुँ आ जे सवाल सब अपना कठिन लगैत छल से हुनकासं बुझि लैत छलहुँ। नवम कक्षामे सेहो हमर स्थान प्रथम रहल। दसम कक्षामे कोनो दोसर स्कूलसं एलाह नागेन्द्रजी। हुनकासं हमर प्रतियोगिता भेल। हम अपन स्थान प्रथम रखबा लेल बहुत प्रयास केलहुँ।हमरा लाज होइत छल इ सोचि क' जे क्लासमे हमर स्थान छिना ने जाए। हमरा जतेक गणितमे मोन लगैत छल ततेक फिजिक्स आ केमिस्ट्रीमे नहि। दसमीक अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाक समय हमरा अबोग्राडोक परिकल्पना याद नै होइत छल आ ओ प्रश्न एबे करतै से लगैत छल। हम एकटा चलाकी केलहुँ। घरे पर एकटा पन्नापर संभावित प्रश्नक जबाब लीखिक' ओहि विषयक परीक्षाक दिन संगे नेने गेलहुँ आ और प्रश्नक जबाब लीखिक' एहि पन्नाकें प्राप्त कॉपीमे नाथि देलिऐ।परीक्षा द' क' चल एलहुँ।दूनू कागजक रंग भिन्न छलै तें चोरी पकड़ाएब निश्चित छल।एकदिन राम सेवक बाबू मास्टर साहेब हमरा फूटमे बजाक' पुछलनि, हुनका बमबम मास्टर साहेब कहने छलखिन।हम अपन गलती स्वीकार करैत हुनका कहलियनि जे जीवनमे फेर कहियो एहेन गलती नै करब। कॉपी बमबम मास्टर साहेब देखने रहथिन। ओ आ राम सेवक बाबू लगभग एके समय स्कूलमे आएल छलाह। राम सेवक बाबू हमर मामा गामक

छलाह। बमबम मास्टर साहेब नागेन्द्रजीक गामक छलाह।दूनू गोटे आपसमे गप केलनि आ बमबम मास्टर साहेब राम सेवक बाबूक माध्यमसं हमरा समझा देलनि, से हमरा नीक लागल। हमरा क्लासमे सबहक सोझाँ नै कहल गेल, से हमरा लेल बहुत पैघ बात छल।एहि घटनाक सकारात्मक प्रभाव हमरा पर पडल। अपन दूनू शिक्षक महोदयक प्रति हमर श्रद्धा बढि गेल। हम एसगरमे कनलहुँ। मोनसं पाश्चाताप केलहुँ आ फेर एहेन गलती कहियो जीवनमे नै करबाक संकल्प लेलहुँ। हम आइयो श्रद्धासं दूनू मास्टर साहेबकें स्मरण करैत सोचैत छी जे विद्यार्थीकें कोनो गलतीपर ओकरा बिना अपमानित केने, एसगरमे बजाक' ओकरासं मित्रवत बात क'क' गलतीक निराकरणक विधि कतेक कारगर भ' सकैत अछि। एहि घटनाक बाद हमर मोन हल्लुक भ' गेल। आब दोसर स्थान पर रहब सरल भ' गेल। नागेन्द्रजीक लेल मोनमे मित्रता आ सहयोगक भाव उत्पन्न भेल। ओ स्वयं बहुत सरल आ नीक स्वभावक छलाह। हमरा जतेक अंक भेटब उचित छल, से भेटल। नागेन्द्रजी प्रथम एलाह, हम दोसर स्थानपर रहलहुँ।दसमी-एगारहमीमे इएह स्थिति रहल। १९६५ मे मैट्रिकक परीक्षामे हमरा ६४८ अंक आएल, नागेन्द्रजीकें ६६५, हमरासं १७ अंक बेशी। गणितमे दू पेपर छलै। हमरा दुनूमे ९९-९९ आएल। हुनका एकमे १०० मे १०० एलनि। फिजिक्स, केमिस्ट्रीमे हमरासं बेशी अंक रहनि।

कॉलेज

नागेन्द्रजी सी एम कालेज, दरभंगामे नाम लिखौलनि ।हमहूँ ओतहि नाम लिखाब' चाहैत रही,मुदा बाबू नै तैयार भेलाह।हमर नाम आर के कालेज, मधुबनीमे लिखाएल।हमर मोन छोट भ' गेल। आर्थिक कारण छलैक। दरभंगामे नाम लिखयबाक मतलब छलै ओत' डेरा राखब।मेसक खर्च। समय-समय पर गामसं जेबा-एबाक खर्च।

मधुबनीमे नाम लिखयबाक मतलब भेल घरसं खा’क’ साइकिलसं जाएब-आएब।बहुत खर्चसं मुक्ति। बाबू नोकरीमे नै छलाह। खेतीसं ओते लाभ नै होइत छलै। जाहि सेक्शनमे हम छलहुँ ओकर क्लास ६ बजे सं शुरू होइत छलैक। घरसं भुखले कोना जाएब, तें माए अन्हरोखे भानस चढ़ा दैत छलीह। हम सवेरे जागिक’ स्नान-भोजन क’क’ साइकिल ल’क’ विदा होइत छलहुँ । घरसं ६- ७ किलोमीटरक दूरी तय करैत-करैत पहिल क्लास ख़तम हेबाक बादे पहुँचि पबैत छलहुँ। दुखी भ’ जाइत छलहुँ। गणित आ केमिस्ट्रीक पढाइसं संतुष्ट नहि होइत छलहुँ। प्री-साइंसमे हमर तैयारी नीक नहि भेल। हम सेकेण्ड डिवीज़नमे उत्तीर्ण भेलहुँ। गणितमे नीक अंक नै आएल। अही साल परिवारमे अशुभ घटना भेलै। दाइक हाथमे दर्द भेलनि। किछु दिन गर्म पानिसं सेकलनि। कनी काल दर्द नै बुझाइन त होइन जे ठीक भ’ गेल। फेर कखनो दर्द उठनि त वएह इलाज। ककरो पूछि क’ कोनो गोटी खेलनि ओहूसं जखन हारि गेलीह आ दर्द बर्दाश्त नै भेलनि त हमरा संगे मधुबनी गेलीह। डा.शिवानीसं देखौलनि त पुछलकनि, कतहु खसल छलहुँ की? दाइकें मोन पडलनि। किछु मास पहिने बेटीक ओत’ गेल छलीह नारायणपट्टी। पानि भेल रहै। आंगनमे पिच्छड़ भ’ गेल छलै।अइ घरसं ओइ घर जेबामे पिछड़ि क’ खसि पडलीह। हाथ रोपलनि से हाथमे किछु भ’ गेलनि जे दर्द कर’ लगलनि। एत’ एलीह ककरो लग ई बात नै बजलीह। कखनो-कखनो दर्द उठनि त पानि गर्म क’क’ सेक लैत छलीह।सभ बात डाक्टरनीकें कहलखिन त ओ कहलखिन, बहुत देरी क’ देलियै,हमरा होइए जे सेप्टिक भ’ गेल अछि, जतेक जल्दी हो दरभंगा हॉस्पिटलमे देखाउ। बाबू डी एम सी एच ल’ गेलखिन।डाक्टर कहलकनि सेप्टिक भ’ गेलनि, जान बचाबक लेल हाथ काटब जरूरी छनि। बामा हाथ

काटल गेलनि। अस्पतालमे दाइकें देख’ गेलहुँ त दाइ ह्बोढेकार भ’क’ कान’ लगलीह। हमरो कना गेल। ओइ दिन हमरा तीन चारि साल पहिनेक एकटा घटना मोन पड़ि गेल। दाइ संगे कलम गेल गेलहुँ। कलकतिया आमक जे गाछ छलै ताहिमे हमरा सबहक हिस्सा वलामे कम फड़ल छलै, कक्का वलामे बेशी छलै फड़ल। दाइकें की फुड़लनि, हबर-हबर चारि-पांचटा आम हुनका गाछमेसं तोड़ि लेलखिन। हमरा ओ दृश्य मोन पड़ि गेल जखन हुनकर ओ हाथ अस्पतालमे नै देखलियनि। एहि घटनाक प्रभाव हमरा पर पडल। जीवनमे कय बेर ई दूनू घटना मोन पड़ल। अस्पतालसं घर एलीह दाइ त जीवनसं मोह भंग भ’ गेल छलनि। जिजीविषा नै रहलनि। मृत्युक कामना कर’ लगलीह। एकटा पोतीक वियाह देखि लेबाक एखनहु कामना करय लगलीह।हुनकर ई कामना पूरा भेलनि। हमर छोट बहिनकें हमर मामा गाममे लड़काक पिता देखि क’ अपन पुत्रक विवाह करयबाक बात शुरू केलनि। ककरो लग चर्च केलखिन। हुनकर बहिनक विवाह छलनि ओत’। बात आगू बढ़लै। लड़का सभकें पसंद एलखिन। विवाह भ’ गेलै। दाइक कामना पूर्ण भेलनि। मधुश्रावणीक बाद दाइक देहांत भ’ गेलंनि। मरबासं किछु दिन पूर्व मोहिनारायण कक्का देख’ एलखिन त दाइ कानि क’ कहलखिन, बौआ, देखबै कनी, राम नारायण उजड़ि ने जाए। कक्का भरोस देलखिन, अहाँ चिंता नै करू। दाइकें आब एतबे चिंता छलनि जे अस्पतालमे खर्च भेलैए, बेटीक वियाहमे खर्चा भेलैए, आब क्रिया-कर्ममे खर्च हेतै, बाहरी आमदनीक कोनो स्त्रोत छै नै। खेत बेचतै कि भरना रखतै। भरना रखतै त जेहो उपजा होइछै सेहो नै हेतै त नओ आदमीक गुजर कोना हेतै। दाइक चिंता स्वाभाविक छलनि। इएह होइत एलैए।इएह भ’ रहल छै।इएह भरिसक होइत रहतै। सरल चीजकें कतेक कठिन बना देल गेल छैक। कर्मकांडमे भोजक परंपरा :

एकादशा, द्वादशा,माछ-मासु,फेर मासे-मासे ब्राह्मण-भोजन। श्राद्धक बाद ओहि तिथिक' पाँच साल तक बरखी। केश कटाउ,ब्राह्मण भोजन कराउ। श्राद्धक समय त लोक कहैत छैक, जीवन भरि त ओ अहीं सभ लेल सभ किछु केलनि, आब अहाँ सबहक कर्तव्य होइत अछि जे नीक जकां श्राद्ध क' दियनु जाहिसं हुनका सद्गति होइन, आब ओ अहाँ सभसं किछु लेब' थोड़े एताह।बिना भोज-भातके क्रिया-कर्मक कोनो मोजर लोक नै दै छै। जकरा गरदनिमे उतरी रहैत छैक ओ भावनामे बहि जाइत अछि, होइछै जे आब जे हेतै देखल जेतै, करब त नीके जकां। बी.एस.सी. पार्ट-१ मे स्थिति और ख़राब भेल। कॉलेजमे पढाईक स्थिति ख़राब भेल। परीक्षाक फॉर्म भरलहु। परीक्षा देब' लगलहुँ। गणितक परीक्षा दिन बुझाएल जे ६५ सं बेशी अंक नै आएत। गणितक परीक्षामे नीक अंक नै आएत माने प्रथम श्रेणीक अंक नै आएत। एकर मतलब छलै जे नीक टेक्निकल कॉलेजमे एडमिशनमे कठिनाइ। हम परीक्षा ड्राप केलहुँ, शेष विषयक परीक्षा नै देलहुँ। हमर लक्ष्य भेल बी.एस.सी.पार्ट-१ मे प्रथम श्रेणीक अंक प्राप्त करब।

(२)

सांस्कृतिक परिवेश

टोलमे मूडन, मरबठटठी, कुमरम,उपनयन,विवाह,मधुश्रावनी,कोजागरा,जराउर,द्विरागमन आदि अवसर पर कोनो-ने-कोनो आंगनसं स्त्रीगनक मूहें गीत सूनब आकर्षित करैत छल। फगुआ,रामनवमी,कृष्णाष्टमी,दुर्गा पूजा,दीयाबाती, छठि आदि अवसर पर राम-कथा, कृष्ण-कथा,सुदामाक कथा,महाभारतक कथा सुनबाक अवसर भेटैत छल। गाममे कैटोला स्थानपर आ शिवनंदन बाबूक ओत' सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छलै। बाबा संगे जाइत छलहुँ। नेवत दास आ दरबारी दासक मूहें दिनकर,नेपाली,विद्यापतिक आ मधुपजीक गीत सुनबाक अवसर भेटल। दुर्गा पूजा,दीयाबाती, आदि अवसर पर गाममे नौटंकी आ नाटक देखबाक अवसर भेटल।एहि मंच सभ पर नटुआ सबहक मूहें मधुपजी आ रवीन्द्रजीक गीत सुनलहुँ। डबहारीक भैयाजीक मूहें विवाह कीर्तन सूनब बहुत आनंददायक होइत छल। ओ कोनो प्रसंगकें बहुत रोचक बना दैत छलाह। कोनो खुशीक अवसर पर हुनका बजाओल जाइत छल। दुर्गास्थानमे मास-मास दिन धरि राम-लीला होइत छल। पोखरिशामक महंथजीक राम-लीला पार्टी छल। गाममे ई सभ मनोरंजनक साधन छलै। कैटोला स्थानपर, शिव नंदन सिंहजीक ओत', पुबाई टोलमे जगदीश बाबू ओत' राम चरित मानसक समूह-गायन,समय-समय पर अष्टियाम आ नवाह सेहो होइत

छल।हमरो टोलमे ई सभ होइत छल। कोनो गीतक टुकड़ीक संग रामचरितमानसक गायन नीक लागैत छल। कीर्तनमे स्नेहलताक गीत : जखन राघव लला छथि सहाय तखन परवाहे की, अपन किशोरीजीके चरण दबेबै हे मिथिलेमे रह्बै आदि बहुत प्रेमसँ लोक गबैत छल। अहिना बिंदुजीक हिंदी गीत सभ सेहो खूब लोकप्रिय छल : जीवन का मैंने सौप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में, प्रवल प्रेम के पाले पड कर प्रभु का नियम बदलते देखा। मामा गाम जाइत छलहुँ त ओतहु रवि दिन सांझमे रामचरितमानसक समूह-गायन देखैत-सुनैत छलहुँ। समय-समय पर अष्टियाम आ नवाह सेहो होइत छल। हमर बड़का मामा मिडिल स्कूल मे प्रधानाध्यापक छलाह आ विवाह कीर्तन सेहो करैत छलाह। मास्टर साहेब बच्चा बाबू पंडौल हाई स्कूलमे सहायक प्रधानाध्यापक छलाह, ओहो विवाह कीर्तन करैत छलाह। हिनका सबहक विवाह कीर्तनमे गंभीरता बेशी रहैत छल। प्री-साइंसमे एक पेपर मैथिली रखने छलहुँ। प्रो.बुद्धि धारी सिंह 'रमाकर' बहुत नीक पढबैत छलाह। मैथिली पढ़ब नीक लगैत्त छल। कॉलेजमे विद्यापति पर्व मनाओल गेलै। ओहिमे रमानाथ बाबू आएल छलाह। भाषण भेलै, कविता पाठ भेलै, गीत-नाद भेलै। रामपट्टीक आर के 'रमण' बहुत सुन्दर गीत रचना सस्वर प्रस्तुत केलनि। बहुत नीक लागल। सपना भेल जे हमहूँ एहन रचना लिखी आ मंच पर प्रस्तुत करी। बाबाक मूहें महादेवक गीत, विद्यापतिक गीत आ पराती सुनैत छलहुँ। दाइक मूहें रंग-विरंगक फकरा सुनैत छलहुँ। किताबक कविता सभ पढ़ब आ ओकरा याद करब नीक लगैत छल। इएह सभ देखैत-सुनैत हमहूँ तुकबंदी कर' लगलहुँ आ ओकर उपयोग दरबज्जा पर साप्ताहिक रामचरितमानसक समूह-गायनमे कर' लगलहुँ। पारंपरिक धुनमे किछु गीत लिखलहुँ जकर पहिल पाती ई सभ अछि ____

------भरल सभामे आबि जनकजी प्रण केने छथि भारी हे।
------गौरी लीलाविहारी तोहर भंगिया।
------कन्हैया यौ अहाँ आएब कहिया।
मधुपजीक 'अपूर्व रसगुल्ला' आ 'टटका जिलेबी' देखलहुँ। नीक लागल। हुनक अनुकरण केलहुँ। 'अनिल' उपनाम रखलहुँ। फ़िल्मी गीतक धुनपर किछु गीत लिखलहुँ।
-------यार कहू की बियाह केने हम सदिखन पछताय रहल छी,
आब होयत की माहुर खेने कहुना जीवन बिताय रहल छी।
------वाइफ बैजन्ती माला अपने राजेंद्र कुमार
महमूद हम्मर चेला, जानीवाकर हमर भजार।
------प्रीतम छोड़ि गेला परदेश
हमरा होइए कते कलेश
ककरा कह्बै
जखन विधिए भेल बाम।
------देखिते अमत बर सखी सभ पड़ेली कहिते बाप रे बाप
बरकें सोहरै सगरो देहियामे साप रे साप।
अहिना और किछु।
प्रो. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'जीकें देख' देलियनि। हुनकर शुभकामना लैत ओकरा छपा क' जहां-तहां बेचबाक योजनामे लागि गेलहुँ। बाबूजीकें जखन पता चललनि त बहुत दुखी भेलाह। हुनका हमर कैरियरक चिंता भेलनि।ओ हमरा अपन पाठ्य-पुस्तक सं प्रेम करबाक सलाह देलनि। हम हुनक चिंता पर विचार केलहुँ। साहित्य-प्रेमसं जीविकोपार्जन असंभव छल। घरक आर्थिक स्थिति चिंताजनक होइत गेल। हमरासं छोट तीनू बहिन आ दूनू भाए छलाह। निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ। साहित्यकें शौखक रूपमे राखब।इंजीनियरिंग अथवा एग्रीकल्चर पढ़ब। ताहि लेल बी.एस.सी.पार्ट-१ मे नीक अंक आनक

लेल पूरा प्रयास करब। मोने मोन निर्णय केलहुँ जे आब दू साल धरि ने त साहित्यक कोनो वस्तु पढ़ब ने लीखब। मुदा हम अपन निर्णय पर बहुत दिन धरि अटल नहि रहि सकलहुँ। बाबूजीक नजरि बचा क' मैथिली पत्रिका 'मिथिला मिहिर' पढ़ि लैत छलहुँ ,नीक लगैत्त छल। अपनो लिखबाक मोन होइत छल। अपन लिखल मिथिला मिहिरमे छपल देखबाक सिहंता होइत छल। आकाशवाणी,पटनासं प्रसारित मैथिली कार्यक्रम 'भारती' कतहु सुनि लैत छलहुँ।गंगेश गुंजन जी द्वारा प्रस्तुत भारती कार्यक्रम बहुत नीक लगैत छल। रवि आ मंगल दिन नियमित रूपसं सुनैत छलहुँ। अपन लीखल रचना आकाशवाणीसं प्रसारण हेबाक कल्पना करय लगलहुँ। मैथिली पढ़ब आ सूनब हमरा लेल सबसँ बेशी आनंद दायक भ' गेल छल.। एहि बीच हरिमोहन बाबूक 'चर्चरी' मामा गामक लाइब्रेरीसं आनि क' पढ़ि गेलहुँ। एहि सबहक असरि ई भेल जे जखन रातिमे सभ क्यो सूति रहै छल, हम किछु ने किछु लीख' लगैत छलहुँ। किछु कथा लिखलहुँ।'मिथिला मिहिर' मे पठौलियैक। एकटा कथा आकाशवाणीकें पठौलियैक। घूरि आएल। दू-तीन दिन धरि उदास रहलहुँ। फेर दोसर पठौलियैक। एक मासक बाद ओहो घुरि आएल। किछु दिनक बाद एकटा हास्य-कथा लिखलहुँ।'रमाकर'जीकें देख' देलियनि। हुनकासं सुधार कराक' फेर ओकरा फेयर क'क' आकाशवाणी पठौलियैक। एहि बेर स्वीकृतिक सूचना भेटल। स्वीकृतिक सूचना पाबि एतेक खुशी भेल जे बाबूकें सेहो कहि देलियनि। ओ नाराज त भेलाह मुदा, हुनका खुशी सेहो भेलनि, से हम अनुभव केलहुँ । १९६८ मे हमर रचना / विनोद वार्ता 'मोने अछि एखन धरि सासुरक यात्रा'आकाशवाणी,पटनासं मैथिली कार्यक्रम 'भारती'मे प्रसारित भेल। कार्यक्रमक संचालन गुंजनजी करैत छलाह। बटुक भाइ बहुत नीक

जकां पढ़लनि। हम सभ गामपर रेडियोसं सुनलहुँ। बाबाकें हर्ष भेलनि। हमरा पच्चीस टाका भेटैत। छात्रवृत्तिक अतिरिक्त हमर ई पहिल कमाइ होइत। बाबा कें पुछलियनि 'अहाँ ले' की नेने आएब?' बाबा कहलनि 'दू आना के सुपारी नेने अबिह'। बाबा सुपारी ले' नहि रुकलाह। जहिया पच्चीस टाकाक चेक आएल, बाबाक एकादशा रहनि।

(३)

घरक आर्थिक स्थिति कमजोर भ' गेलै। दू टा कन्यादानक बाद ६५ मे दाइक अस्पतालक खर्च आ तकर बाद हुनक देहांत। ६५ मे हुनक श्राद्ध। ६६ मे पहिल बरखी। ६७ मे दोसर बरखी। फेर

बाबाक क्रिया-कर्मक खर्च। खेतीसं साल भरिके खर्चक लेल अन्न नै भ' पबैत छलैक। आवश्यकतानुसार जमीन भरना राख' पडैत छलनि आ पाई सेहो कर्ज लेब' पडैत छलनि। बाबूक स्वभावमे तामस बेशी प्रगट हुअ लगलनि। हमरा गाममे नीक नै लागय। जेना-तेना बी.एस सी.पार्ट१ के परीक्षा भेल। परीक्षा बहुत सुंदर त' नहि भेल, मुदा अनुमान केलहुँ जे साठि प्रतिशतसं बेशी अंक आबि जेबाक चाही जे एग्रीकल्चर कॉलेजमे एडमिशन लेल आवश्यक बुझाइत छल। हम गाम पर असहज होमय लगलहुँ। आ एक दिन कलकत्ता जेबाक निश्चय क' लेलहुँ। हमरा एकटा कुटुंबक पता छल। ओ एक बेर कहने छलाह जे अहाँकें मैट्रिकमे तेहेन सुंदर नम्बर अछि जे कतहु नोकरी भेट जाएत। हम मोने मोन निश्चय केलहुँ जे नोकरी भेटत त करब। एकटा पिसिऔत भाए सेहो ओत' छलाह। हुनको पता छल।

हम दीदी ओत' नारायणपटटी जाइछी, से कहि क' घरसं विदा भेलहुँ। दीदी ओत' गेलहुँ। हुनका अपन विचार कहलियनि। हुनका ख़राब नै लगलनि। पढल-लिखल लोक नोकरी कर' कलकत्ता जाइत छल। ओ हमरा संगमे तीन-चारि किलो चाउर आ किछु चूड़ा आ गुड द' देलनि। किछु पाइ हमरा लग छल। ओइ समय आरक्षण जरुरी नै होइत छलै। हम राजनगर स्टेशनसं गाडी पकडलहु समस्तीपुरक लेल। प्लेटफार्म पर बेंच पर बैसल एकटा सज्जनकें देखलियनि। ओ बहुत सुंदर मैथिली बजैत छलाह। बीच- बीच मे अंग्रेजीमे सेहो बजैत छलाह। हुनक अंग्रेजी बाजब सेहो आकृष्ट केलक। हमहूँ ठाढ़ भ' क' हुनक बात सून' लगलहुँ। ओ देशक स्थिति पर बात करैत छलाह। बेरोजगारी पर बात करैत छलाह। एक दू आदमी कखनो क' किछु टोक दैत छलनि , ओ ओइ पर बाज' लगैत छलाह। एतेक सुंदर मैथिली आ अंग्रेजी हम एहिसं पहिने नहि सुनने छलहुँ। हमरा

नीक लगैत छल। थोड़े काल बाद एक आदमी उठलाह त' हम ओत' बैसि गेलहुँ। एकटा ट्रेन एलै त और दू टा व्यक्ति चल गेलाह। ओ हमरा दिस तकलनि। .विद्यार्थी, अहाँ हावड़ा चलब? हं। हम कहलियनि। ओत' कोनो काज करै छी की? फेर वैह पुछलनि 'पहिले बेर जा रहल छी? हं। हम कहलियनि। गप्प हुअ' लागल। ओइ ठाम के रहैत छथि?पिसिऔत भाए छथि। और एकटा कुटुंब छथि। भाइ साहेब कत' रहै छथि? शाम बाजार लग। की करै छथि? ट्यूशन करैत छलाह। एखन और किछु करैत छथि की नहि से नै बुझल अछि। हुनका बूझल छनि जे अहाँ आबि रहल छी? एखन त नै कहने छियनि। दोसर कुटुंब कत' रहै छथि? हम हुनकर पता देख' देलियनि। हुनको पता नै हेतनि जे अहाँ आबि रहल छी? हुनको नै कहने छियनि। एखन अहाँ घूम' जा रहल छी पांच-दस दिन लेल कि और किछु उद्देश्य अछि? हम चाहै छी कोनो नोकरी अथवा ट्यूशन भेट जाए। मैट्रिकमे कतेक प्राप्तांक छल?
६४८. माने ७२ %? हं। साइंस सब्जेक्टमे? ७७ % प्री-साइंसमे? सेकंड डिवीज़न। ५५ %। बी एस सी पार्ट १ मे की उमीद अछि? आशा अछि ६० % सं उपर नंबर आबि जाय। आगू पढ़बाक विचार नै अछि?
बी एस सी (ए जी) मे नाम लिखा जाइत तखन पढ़ितहुँ । मुदा ६०% सं बेशी अंक आएत तखने संभव अछि। ओ अपन परिचय देलनि। हम डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग केने छी। एक सालसं कलकत्तामे ट्यूशन क' रहल छी। हम ट्यूशन एही लेल क' रहल छी जे अप्लाइ करबालेल आ कतहु जेबा-एबा लेल गार्जियनसं मांग' नै पडय। हमरा विचारसं अहाँकें नीक होइत जे पोलिटेकनिकमे सिविल ब्रांचमे जाक' एडमिशन ल' लितहुँ, बी.एस.सी. पार्ट १ के रिजल्ट भेलापर बी.एस.सी.(एजी)मे अप्लाइ क' दितियै, भ' गेला पर

पालीटेकनिक छोड़ि दितियै आ नै भेल त पोलीटेकनिक जारी रखितहुँ। सिविलमे स्कोप छै।

हम दुविधामे पड़ि गेलहुँ। ओ सुझाव देलनि जे अहाँ एकटा काज क' सकैत छी।कलकत्ता विदा भ' गेल छी त चलू, किछु दिन घुमि-फिरि क' सोचि लिय' जे अहाँ एत' रहि सकै छी कि नै। अहाँ अपने निर्णय लेब त ठीक रहत। हुनकर ई बात हमरा बेशी नीक लागल। हवड़ा जंक्शन पर उतरि ई बता देलनि जे अपेक्षित जगह पर पहुँचबा लेल कोन बस कि ट्राम पकड़ब ठीक रहत। एहि संगे इहो कहलनि जे चारिम दिन रवि छै, हम दू बजे तक गिरीश पार्क पहुँचब।अहाँ आबि सकी त ओहि दिन ओत' आउ, अहाँक निर्णय सुनबामे नीक लागत। ओ इहो कहलनि जे जौं अहाँ इएह तय करब जे एतहि रहब त हम तत्काल एक-दूटा ट्यूशन पकड़यबामे मदति करबाक कोशिश करब। जाहि दू गोटेक पता हमरा लग छल, हुनका लोकनिसं भेंट भेल। हुनका सबहक आवास देखलाक बाद हमर दुविधा समाप्त भ' गेल।हम रविदिन गिरीश पार्क पहुंचि हुनका अपन निर्णय कहलियनि जे हम तुरत गाम वापस जाएब, पोलिटेकनिकमे एडमिशन लेब, बी.एस.सी.पार्ट १ के रिजल्ट निकललापर जौं हमरा एग्रीकल्चरमे एडमिशन भ' जाएत त पोलिटेकनिक छोड़ि क' एग्रीकल्चरमे एडमिशन ल' लेब। ओ बहुत प्रसन्न भेलाह। गिरीश पार्क लग कोनो होटल रहै ओत' दूटा रसगुल्ला आ एकटा समोसा खुआक' हमरा विदा क' देलनि।हमरा पाइ नै देब' देलनि।कहलनि एखन अहाँ नै कमाइ छी, हम त कमाइ छी।

(४)

हम दरभंगा पोलिटेकनिकमे सिविलमे एडमिशन ल’ एलहुँ। गामसँ बससँ जाए-आब’ लगलहुँ। एत’ किछु क्लास एकटा हॉलमे होइ छलै जे सड़क के बगलेमे छहरदेबालीक अंदर छलै।दू कात खूजल। ओकर देख-रेख ठीकसं नै होइत छलै। डेस्क पर चिड़ै सभक चट्टक देखि लागल जे हम एतहु नहि रहि सकैत छी। पढ़ाइ सेहो नीक नै लागल। हम मनब’ लगलहुँ जे एग्रीकल्चरमे एडमिशन भ’ जाए आ एहि ठामसँ मुक्ति भेटय। २८ दिन क्लास केलहुँ। बी.एस.सी.पार्ट १ के रिजल्ट निकललै। हमरा ६१.२ % अंक आएल। एग्रीकल्चरमे अप्लाइ क’ देलियै। एडमिशन भ’ गेल। ६० % सं उपर अंक वला हमही रही। ई हमरा लेल चिंताक विषय भ’ गेल। हम सोचय लगलहुँ जे ६० % सं उपर अंक वला और लोक सभ किए ने अप्लाइ केलकै। हम विचलित भेलहुँ। किछु लोक कहलनि अहाँकें नीक होइत जे एक साल सिंगल सब्जेक्ट बायोलॉजी पढ़ितहुँ, साठियो नंबर आबि जाए, त मेडिकलमे एडमिशन भ’ जाएत। हम लोभमे पड़ि गेलहुँ। निश्चितकें छोड़ि अनिश्चित दिस दौड़ि गेलहुँ। हम तिरहुत कॉलेज ऑफ़ एग्रीकल्चर,ढोली,मुजफ्फरपुर सँ अपन नाम कटाय पुनः आर.के.कॉलेज, मधुबनी आबि गेलहुँ। ओत’बी.एस.सी.पार्ट २ मे नाम लिखाओल आ सिंगल सब्जेक्ट बायोलॉजीक तैयारी करबामे लागि

गेलहुँ।हमरा प्री-साइंसमे बायोलॉजीमे कम सं कम पास मार्क्स आनब जरूरी छल मुदा बी.एस.सी.पार्ट १ मे बायोलॉजीमे कमसं कम साठि अंक आनब जरूरी छल। एके विषयक परीक्षा देबाक छल। हमरा आसान लगैत छल। मुदा जे आसान लगैत छल, कठिन साबित भेल। हमर शिक्षक हमरा ट्यूशन पढबाक सलाह देलनि। एखन धरि ट्यूशन नहि पढने छलहुँ। ट्यूशन पढब ख़राब बुझैत छलहुँ।हम नै बुझैत छलिऐक जे ट्यूशन पढलासं प्रैक्टिकलमे नीक अंक आनब आसान भ'जाइत छैक। हमर एहि अज्ञानतासँ हानि भेल। बायोलॉजी हमरा लेल एकदम नव विषय छल। ओकरा शुरूसं पढ़क छल। हमरा बायोलॉजीक प्रैक्टिकल क्लासमे दिक्कत भेल। चालीकें,झींगुरकें, बेंगकें चीरिक' ओकर अध्ययन करबामे दिक्कत भेल। फोटो बनाएब, लेबलिंग करबामे दिक्कत भेल। शिक्षक हमरा दिक्कतकें हल करबामे रुचि नै लैत छलाह। हम प्राचार्य महोदय लग शिकायत केलहुँ। प्राचार्य महोदय हुनका बजा क' किछु कहलथिन। ओ भीतर सं नाराज भ' गेलाह। हमर कठिनाई बढि गेल। हम बाबूकें कहलियनि। बाबू ओकील साहेबकें कहलखिन। ओकील साहेब ओहि कॉलेजक छात्र रहल छलाह। हुनकर धाख छलनि। ओ हमरा सोझेमे हुनका कहलखिन। ओ यथासंभव मदति करबाक आश्वासन देलनि।मुदा व्यवहारमे हमरा तकर अनुभव नहि भेल। हम अपन तैयारी करैत रहलहुँ। चित्र बनेबाक अभ्यास,लेबेलिंग करबाक अभ्यास करैत रहलहुँ। एके विषयक परीक्षा देबाक छल। मुदा विषय एकदम नव छल। आ कॉलेजक पढ़ाइक भरोसे नै रहि सकै छलहुँ। शिक्षक हमर शिकायतसं अपमानित अनुभव केलनि।परिणाम ओही दिन निर्धारित भ'चुकल छल। प्री-साइंसक परीक्षासं चारि दिन पहिने बोखार लागि गेल। डा.सं संपर्क केलहुँ।कहलियनि एहेन दबाई दिय' जे हमर

परीक्षा नहि छूटय। बोखार उतरि गेल। हम परीक्षा देलहुँ।मुदा,ओही राति हमर आबाज बंद भ' गेल। मुंहमे कांट जकां गरय लागल। हमरा लादि क' मधुबनी अस्पताल ल' गेलाह बाबू। हम कागत पर लीखिक' देलियंनि जे हम बोखार उतारक लेल अमुक दबाई सभ खेने छलहुँ। तीन दिन तक कोनो सुधार नहि भेल।डा.कहलखिन जे ड्रग रिएक्शन भेल छनि, ठीक हेबामे समय लगतनि। पांच दिनक बाद एक सप्ताह तक खाली दालिके पानि पर रहलहुँ।करीब सत्रह दिन अस्पतालमे भर्ती रहय पडल। नीक बात ई भेल जे बी.एस.सी.पार्ट-१ के परीक्षा हेबासं पहिने हम ठीक भ' गेलहुँ। अस्वस्थ हेबाक परिणाम परीक्षा-फल पर पडल। बी.एस.सी.पार्ट-१ के परीक्षाक परिणाम ई भेल जे १% माने ५ अंक कम रहबाक कारण मेडिकलमे हमर नामांकन नहि भ' सकल।हमरा फेर मोन पडल 'तिरहुत कृषि महाविद्यालय,ढोली,मुजफ्फरपुर'। एहि बेर मेधा सूचीमे हमर स्थान सोलहम छल।५० टा सीट छलै। हम तय केलहुँ जे आब अन्यत्र कतहु नहि जाएब। हॉस्टलमे हमरा संग भेलाह सहरसाक बनगामक नारायण मिश्र। पहिल दिन सबेरे ७ बजे प्रैक्टिकल क्लासमे सभकें कोदारि पकड़ा देल गेलै।१ धुर खेतमे गहूमक खेतीक लेल माटि तैयार करबाक छलै। प्रैक्टिकल ९० मिनट चललै। नीक नै लागल। मुदा आब आन कोनो विकल्प नै छल। आब नीक-अधलाह सोचबाक समय सेहो नै रहल। ७ सं ८.३० तक प्रैक्टिकल।१ घंटामे स्नान, जलपान क'क' ९.३० पर क्लास शूरू।१.३० बजेसं २.३० बजेक बीच भोजन क'क' पुनः क्लासमे जाउ। ५ बजे फाइल हॉस्टलमे ध'क' १ घंटा घुमि-फिरिक' आउ, ८.३० बजे तक पढ़ू-लिखू। ओकर बाद भोजन मेसमे जा क' करू।ओकर बाद किछु काल आपसमे गप-सप करै जाउ। दोसर कि तेसर दिन छलै। भोजनक बाद हम सभ अपन-अपन कोठलीमे सूत' गेलहुँ। पहिल निन्न

छलै सबहक। हल्ला उठलै।सभ रुमक केबार बाहरसं बंद क'क' बेरा-बेरी केबार पीट-पीट क'केबार खोलब' लगलै। एक रूम खोलाक' ओहिमे जे दू छात्र छलाह,हुनका पर प्रश्नक बौछार होम' लगैत छल, २०-२५ के संख्यामे छलाह आक्रमणकारी।लगैत छल जेना डकैती भ' रहल हो। एक रूममे ५-७ मिनट समय दैत छलाह। निकल' लगैत छलाह त रूम कें बाहरसं बंद क' दैत छलाह। हमरो सबहक नंबर आयल। केबार पीट' लगलाह। हनुमानजी मोन पडलाह। केबार खोललहुँ। आक्रमण ! किछु हमरा लग एलाह, किछु मिसरजीकें घेरलनि।

क्या नाम है?

कहाँ घर है?

कितना मार्क्स था?

एग्रीकल्चर पढ़कर क्या करोगे?

सीनियर लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना है?

ये टीकी क्यों रक्खा है?

कौन सी हिरोइन अच्छी लगती है?

क्या अच्छी लगती है?

और बहुत रास ऊंटपटांग सवाल। हमर टीक नै भेटलनि। मिसरजीक टीकपर आक्रमण केलनि। मिसरजी बहुत नेहोरा क'क' टीकक रक्षा केलनि। हमरा आज्ञाकारी बालक जकां सबहक पएर छूब' पडल। सीनियरक समक्ष शिष्टाचारक पालन करबाक सलाह आ प्रतिक्रियामे किछु नै करबाक चेतावनी दैत ओ सभ रूमकें बाहरसं बंद कय दोसर रूम दिस जाइ गेलाह।पच्चीसटा रूम करीब एक घंटामे निपटबैत गेलाह। हम सभ बड़ी काल धरि गुमसुम बैसल रहलहुँ।बेर-बेर इएह सोचै छलहुँ, आब कत' जाएब? एना फेर नै हो से के कहत? किछु

कालक बाद कियो एकटा रूम बाहरसं खोलि देलकै। बस सब रूम खुजि गेल। लोक जेना जेलसं निकलल हो तेना उत्साहमे हो हल्ला करैत एकठाम जमा भ' क' अपन-अपन रूमक घटनाक वर्णन करय लागल। बड़ी काल आलोचना होइत रहल। रातिमे नित्र नै भेल। बहुत दिनक बाद किछु लिखबाक मोन भेल। एहि घटनाकें रचनामे अनबाक प्रयास केलहुँ। तैयार भेल एकटा रचना जकर किछु पाँती प्रस्तुत अछि :

सुनो यार मैं करता हूँ रैगिंग का भंडाफोड़
रात अचानक आये जाने- पहचाने चोर।
आए वो ऐसे जैसे लुटेरा
तोड़के हॉस्टल का नादर्ण घेरा,
कुछ नीचे कुछ उपर जाकर लगे मचाने शोर
रात अचानक आये जाने-पहचाने चोर।
रात अँधेरी, हम सोये हुए थे
मीठे-मीठे ख्वाबों में खोए हुए थे
तभी सुनाई पड़ी कानमें, खोल कोठरी खोल
रात अचानक आये जाने-पहचाने चोर।

मिश्रजी देखलनि, किछु और गोटे देखलनि। दोसर दिन खूब एहिपर गाना-बजाना भेल। एहिसं किछु कलाकार सभ प्रगट भेलाह। एहि कांडसं लाभ ई भेलै जे नव छात्र सभ जल्दी एक दोसरसं परिचित भेलाह। गडबड ई भेलै जे सेकेण्ड इयरक हॉस्टलमे ई बात पता चललै जे हुनके सभकें लक्ष्य क' क' ई गाना-बजाना भ' रहल छै। सेकेण्ड इयरक हॉस्टलमे बजाओल गेल। अनिष्टक आशंका भेल। नै जाएब त आदेशक अपमान मानल जाएत। सोचलहुँ जे देखबनि नाराज त माफ़ी मांगि लेबनि। कहने रहय झाजी बुलाये हैं,से नीको लागल। विदा भेलहुँ। मिश्रजी सेहो संग भेलाह।

'सुना है तुमने हमलोगों पर कोई गाना-उना लिखा है? जरा सुनाओ तो।'

हम गाबि क' सुना देलियनि।

'फ़िल्मी गीत कोई गाते हो? कोई सुनाओ तो।'

हमरा मुकेशक गाओल गीत 'आप से हमको बिछड़े हुए एक ज़माना बीत गया' अबैत छल, सुना देलियनि। 'ओ एक पाँती गुनगुनाक' कहलनि 'इसको ऐसे गानेसे और अच्छा लगेगा। 'हुनक स्वर नीक लागल। ओतहि बैसल एक गोटे पुछ्लनि 'अहाँ मैथिलीमे नै लिखै छी?' आब हम आनंदित भेलहुँ। हमरा भेल भरिसक इहो लिखैत हेताह, तें पुछ्लनि अछि। ओ पुछलनि 'जीवकांतजीकें जनै छियनि?' 'आ हा हा, हुनका कोना ने जनबनि? मिथिला मिहिरक सभ अंकमे हुनकर रचना रहिते छनि। मुदा अहाँ कोना ....?'

'हमर जेठ भाइ साहेब छथि।' हम आनंदमे डुबि गेलहुँ। बड़ी काल गप भेल। घुरैत काल प्रसन्न रही। चलैत काल ओ आश्वस्त केलनि जे आब कोनो समस्या नै हैत, हुअए त कहब। मोन हल्लुक भेल।डर ख़तम भेल। परंपराक अनुसार रैगिंगक पश्चात् एकदिन सीनियर द्वारा वेलकम पार्टी देल गेलै जाहिमे किछु प्राध्यापक लोकनि सेहो आमंत्रित भेलाह। भाषण-भूषण भेलै। सांस्कृतिक कार्यक्रम भेल जाहिमे हमरासं रैगिंगवला ओ गीत सेहो सुनल गेल। सीनियर द्वारा जूनियर छात्रसं अनुशासनमे रहबाक आ परम्पराक पालन करबाक अपेक्षा कयल गेल आ बदलामे जूनियरकें सभ तरहें सुरक्षा आ सहायता देबाक आश्वासन देल गेल। थोड़े दिन त ई कठिन लगैत छल जे रस्तामे जते सीनियर भेटथि तिनका झुकि क' 'प्रणाम सर' कही,मुदा किछु दिनक बाद हम सभ अभ्यस्त भ' गेलहुँ आ ई आदति बनि गेल। सीनियर सभसं पता चलल जे हम परुका कॉलेज नै छोड़ने रहितहुँ त हमरा आई सी

एस ए आर सं १०० रु.मासिकक स्कालरशिप भेटैत आ हॉस्टलमे रहबा लेल सिंगल सीटवला रूम जे मेरिट लिस्टक अनुसार दू टा छात्रकें भेटैत छलै। ई हानि भेल मुदा लाभ ई भेल जे एक साल जे बायोलॉजी पढलहुँ से काज देलक। स्कालरशिपक एकटा अवसर छल कॉलेज दिससं जे एडमिशन भेलाक एक मासक बाद एकटा परीक्षाक परिणामक अनुसार चारिटा छात्रकें कॉलेज दिससं देल जाइत छलैक। हम एहि परीक्षामे दोसर स्थान पर रहलहुँ। पहिल स्थान पर छलाह दुलार चन्द्र मिस्त्री।बोटनीक प्राध्यापक श्रीवास्तवजी मिस्त्रीजीक वर्णन आ हमर बनाओल चित्र आ ओकर आकर्षक लेबेलिंगक प्रशंसा केलनि।एक साल जे बायोलॉजी पढ़लहुँ, तकरे परिणाम छल ई।हमर अनुभव केलहुँ जे कएल श्रम जँ एक ठाम काज नै आयल त एकर मतलब ई नै जे ओ व्यर्थ भ' गेल, ओ कोनो दोसर ठाम काज आबि जाएत। एहि परीक्षाक आधार पर ५० रु. मासिकके स्कालरशिप भेटल। मिस्त्रीजीकें बादमे मेडिकलमे एडमिशन भ' गेलनि, तें ओ कॉलेजसं चलि गेलाह।आब एहि परीक्षाक परिणामक अनुसारे यदि हमर तैयारी चलैत रहैत त हम कॉलेजक टॉपर रहितहुँ, मुदा एकटा विचलन सभटा गडबडा देलक।एहि विचलनक कथा आगाँ कहब। कॉलेजमे खूब मोन लाग' लागल। कॉलेजक भवन नीक। रंग-विरंगक फूल सभ नीक। हॉस्टलक व्यवस्था नीक, भोजन-जलपानक व्यस्था नीक, शिक्षक सबहक व्यवहार नीक, पढ़ाई नीक। शिक्षक सभ ठीक समय पर अबैत छलाह, एकोटा क्लास खाली नै जाइत छल। ओहि समय अधिकतर सामान्य कॉलेजमे पढाइक स्थिति बहुत नीक नै रहि गेल छलैक। हमरा विषय सेहो नीक लगैत छल। गाम पर बाबा आ बाबू खेतीमे नै भिड़बैत छलाह ई सोचिक' जे पढाइमे बाधा हेतनि मुदा आब खेतीए हमर पढ़ाइक विषय भ' गेल छल। खेतीक वैज्ञानिक पक्षसं परिचित भ' रहल

छलहुँ। माटिमे की सभ छै जे पौधा सभक लेल भोजनक काज अबैत छै, कोन फसिल ले' केहन माटि काज अबैत छै,पौधा सबहक विकासमे कोन तत्वक की भूमिका छै,कोन तत्वक कमीसं पौधा सभ पर की प्रभाव पड़ैत छै, नाइट्रोजन-फॉसफोरस-पोटाशक की उपयोगिता छै,कोन फसिल ले' खेतक तैयारी केहेन हेबाक चाही,कोन खाद कखन आ कतेक मात्रामे आ कोना देबाक चाही। पानि कतेक आ कखन-कखन देबाक चाही, कोन कीड़ा कोन फसिलकें कोना क्षति पहुँचबैत छै, ओइसं कोना फसिलक रक्षा करबाक चाही आदि कतेक वस्तुक ज्ञान प्राप्त कराओल जा रहल छल। जखन गाम जाइ छलहुँ त दरभंगामे 'मिथिला मिहिर' कीनि क' नेने अबैत छलहुँ। पढाइक संग-संग 'मिथिला मिहिर'पढ़ब सेहो दिनचर्यामे आबि गेल छल। भाषाक आ स्वभावमे अधिक समन्वक कारण तीन गोटे सं बेशी अपनत्वक अनुभव करय लगलहुँ।नारायण मिश्र जे हमर रूमक संगी छलाह, बनगाम (सहरसा)क छलाह आ हुकर जेठ भाइ साहेब एल एस कॉलेजमे फिजिक्सक प्राध्यापक छलथिन।मिश्राजी समय निकालिक' गीताक पाठ सेहो क' लैत छलाह। जखन-तखन ओ बुझबैत छलाह जे गीतामे कृष्ण भगवान अर्जुनकें की कहलखिन आ किए कहलखिन।नन्द कुमार झा मोहना (झंझारपुर)क छलाह, हुनक बाबूजी रेलवेमे समस्तीपुरमे काज करैत छलथिन आ जेठ भाइजी इंजिनियर छलथिन।अशोक कुमार ठाकुर पूर्णियांक छलाह, हुनक जेठ भाइजी हुनका पढ़ाइक लेल बहुत परिश्रम करैत छलथिन। हम सभ संगे टहल' जाइ छलहुँ ।गप सप करैत छलहुँ। विवाहक गप सेहो होइत छल।सभ कियो कहैत छलहुँ जे अविवाहित छी।हमरा सभमे अपेक्षाकृत सभसं नीक कपड़ा नन्द कुमार झाजी पहिरैत छलाह।ओहो कहैत छलाह जे विवाह नै भेल अछि।हम सब इएह बुझैत छलहुँ।

एक दिन ई झूठ साबित भेल।ओहि दिन हम भोजन क’क’ पहिने हॉस्टल आबि गेलहुँ। झाजी नै आएल छलाह।पोस्टमैन हुनकर चिट्ठी ल’क’ हुनकर नाम बाजल। हम कहलियै, हमरा द’ दैह हम द’ देबनि। पोस्ट कार्ड रहै। हमरा द’ देलक।हमर नजरि अटकि गेल ‘प्रिय ओझाजी’। हम अपनाकें रोकि नै सकलहुँ अनकर चिट्ठी नै पढबाक चाही, से ध्यान नै रहल। चिट्ठीसं पता चलि गेल जे हिनक विवाह कोन गाम भेल छनि।हमरा लेल ओ चिट्ठी मनोरंजनक लेल महत्वपूर्ण भ’ गेल। चिट्ठीमे एहेन कोनो बात नै रहै जे तत्काल नै भेटलासं हुनका कोनो क्षति होइतनि। तें हम चिट्ठीकें चोराक’ राखि लेलहुँ। मिश्राजीकें देख’ देलियनि।फेर ठाकुरजीकें देख’ देलियनि। हम सभ और ककरो ई बात नै कहलियै।घुमा-फिरा क’ झाजीकें पुछै गेलियनि। हुनका संदेह भेलनि। हमरा एसगरमे पुछ्लनि,’हमर कोनो चिट्ठी आयल अछि ठाकुरजी?’ हमरा हंसी लागि गेल। ‘अहाँ परेशान किए होइछी?’ ‘नै ठाकुरजी, हम नेहोरा करैछी, और ककरो नै कह्बै।’ हमरामे बैसल कलाकार बाजि उठल ‘अहाँ एसगर थोड़े छी? विवाह त हमरो भ’ गेल अछि।ऐमे डरबाक की प्रयोजन?’ हमरो विवाह भ’ गेल अछि से जानि हुनका जानमे जान एलनि। ‘सभ बूझत त मजाक कर’ लागत, पूछि-पूछि क’ परेशान क’ देत।’

‘अच्छा अहूँ हमरा विषयमे नै ककरो कह्बै।’

‘ठीक छै।’

हम दूनू तय केलहुँ जे चारि के अतिरिक्त ककरो ई सूचना नै भेटबाक चाही। हम त तीन गोटेकें कहने छलियनि। बात तीनसं तेरह तक पहुंचि गेलै। किछु लोक घुमा-फिरा क’ आ बादमे सोझे मजाक कर’ लगलनि जाहिसं झाजी एकरा ब्रीच ऑफ़ कॉन्ट्रैक्ट मानलंनि आ प्रतिक्रियामे ओहो हमर विवाहक (?) पोल खोलि देलनि मिश्राजी आ ठाकुरजी लग। हम हिनका सभकें कहलियनि जे ई बात

झूठ छै मुदा ई दूनू गोटे नहि माननलनि। अंतमे हमही मौन भ' गेलहुँ। आब हिनका सबहक संदेह पक्का भ' गेलनि। शुरू भेल एकटा नाटक।हम पर्दाक पाछू भ' गेलहुँ।नटकिया अनिलजी प्रगट भेलाह। गाममे नाटकमे भाग नेने रही। फैसला नाटकमे नायकक भूमिका आ उगना नाटकमे विद्यापतिक भूमिकाक निर्वाह क' चुकल छलहुँ ।से अनिलजी नवविवाहित नवयुवकक भूमिकामे आबि गेलाह।अपनहि लिखलनि अपन पटकथा।विवाह भेल छनि।लोकक दवाबमे विवाह कर' पडलनि।कनियाँसं मतान्तर रहैत छनि। घरक आनो लोक सबहक व्यवहार पसंद नै छनि।ककरोसं पत्राचार नै होइत छनि। सासुर नै जाइत छथि।आरो बहुत रास बात। परिणाम ई भेलै जे हम सबहक सहानुभूतिक पात्र भ' गेलहुँ। मिश्रा जी हमरा सुनब' लगलाह जे गीतामे कृष्ण भगवान अर्जुन कें की सभ कहलखिन।हम पढ़ाइक संग-संग गीता सेहो बुझ' लगलहुँ।कृष्ण भगवान अर्जुनकें बुझेलखिन। मिश्राजी हमरा बुझबै छलाह।ओ हमर कथाकें ध्यानपूर्वक सूनिक' ओकरा पर गंभीरतासं विचार करैत छलाह आ बुझबैत छलाह जे हमरा की करबाक चाही।हमहूँ अपन कल्पनाक संग आगू बढ़ल जा रहल छलहुँ।सभ संगी सभ सेहो अपन-अपन अनुभवक आधार पर उचित सुझाव दैत जा रहल छलाह।सभक ह्रदयमे हमर पत्नी(?)क लेल करुणा उमरि रहल छलैक:' ओइ बेचारीक कोन दोख?' सुनै छियै जे रामक जन्मसं पहिने रामायण लिखा गेल छल अर्थात जे वाल्मीकि लिखि देलखिन ओएह रामक जीवनमे घटित भ' गेलनि। रामक कथाक संग-संग वाल्मीकिजी अपनो भविष्यक कथा लिखलनि। हमहूँ सभ जे सोचैत छी, जे बजैत छी, जकर अभ्यास करैत छी, वएह हमर भविष्य नहि बनि जाइत अछि? ओहि समय हमहूँ कहाँ सोचै छलहुँ जे हम जे नाटक क' रहल छी सएह हमर वास्तविक

जीवनक कथा बनय जा रहल अछि।

एकटा छलाह ननू कका

तैतालिस बरख पहिलुक बात थिक। हम ओहि समय एग्रीकल्चर कॉलेजमे अंतिम वर्षमे पढैत रही। हमर तेसर आ सबसँ छोट बहिनक विवाहक बात घरमे चलैत रहै।

माए एकटा कथाक प्रसंगमे चर्च केलनि- 'होइतै त बहुत सुंदर होइतै।'

'ओ नै हएत।' बाबू कहलथिन।

'से किए?' हम पूछलियनि।

बाबू कहलनि जे हुनका सात हजार द' जाइ छनि से त ओ करैले' तैयारे नै भेलथिन, आ हम सभ ओतबो कत' सं देबै?

हम कनी काल गुम्म रहलहु। हम लड़काकें जनैत छलियनि। हमर दोसर बहिनक विवाह जिनकासं भेल छलनि हुनकर पितिऔत भाए छलथिन। हिनक माए नै छलथिन। बहुत दिन भ' गेलनि। पिता दोसर विवाह नै केलथिन। दूनू भाइ पढैत छलाह। आंगनमे एकटा दोसर पितिऔत छलथिन हुनके आश्रममे ई दूनू भाई रहैत छलाह। हुनक पत्नी हिनका सभकें अपने पुत्र जकां मानैत छलथिन। हिनक पिता विराटनगर लग मोरंगमे रहैत छलथिन। ओत' पटुआक खेती बहुत दिनसं करैत आबि रहल छलथिन।हुनकासं हमरा बेशी भेंट-घांट नै छल किन्तु लड़का जे छथि हुनका नीक जकां जनैत छलियनि। हुनक पढाई-लिखाइ आ बुद्धि-विचार हमरा नीक लगैत छल, तें हम मोने-मोन तय केलहुं जे हमरा सभकें ऐ कथापर जोर देबाक चाही। बाबू कें कहलियनि, 'हम एक बेर प्रयास कर' चाहैत छी,मुदा एक विन्दुपर विचार कर' पडत।'

'की?' बाबू पुछलनि।

हम कहलियनि जे पाइ लेथीन त ओकर हिस्सा खेत बेचि क' द' देबै, भाए रहैत त ओकरो हिस्सा त हेबे करितै।

बाबू किछु सोच' लगलाह। फेर कहलनि 'जखन तोरे ई विचार छ' त जाह-देखहक़।'

हम विदा भेलहु। हमर मझिली बहिन ओतहि छलि।ओकरो विचार नीक लगलइ। पहिने लड़कासं भेंट केलियनि। हुनका पुछलियनि 'यदि अहांक पिता हमरा ओत' विवाह तय क' लेथि त अहाँकें कोनो आपत्ति त ने हएत?'

ओ कहलनि, 'ननू कक्का (बाबूजी)क बात हम नै काटि सकैत छियनि, मुदा ओ त' चारिए दिन पहिने गेलाहे' गामसं, अइ साल विवाह नै हेतै, इएह निर्णय क'क' गेलाहे'।'

हम कहलियनि, 'हम हुनकासं भेंट कर' चाहैत छी एक बेर, निर्णय त जे हेतनि, हुनके हेतनि।'

ओ विराटनगर लग मोरंगमे रहैत छलाह। सकरी जंक्शनसं निर्मली, निर्मलीसं जोगबनी आ ओत'सं तीनटा धार टपि क' चारि-पांच कोस पएरे जाय पडैत छलैक। हुनका गामक किछु आदमी हमरा एकांतमे कहलनि, 'ओ पाइ नै छोड़ताह। ओ त बीमारो पडैत छथि त दबाइमे खर्च नै करैत छथि।एत' कयटा कथा एलनि, सात हजार तक द' गेलनि मुदा नाकपर मांछी नै बैस' देलखिन, से सोचि लिय'।' हम सबहक बात सुनियो क' विदा भ' गेलहु। मनीगाछी स्टेशन लग लड़काक मामाक घर छलनि। हुनकासँ भेंट केलहु। ओहो मना केलनि। कहलनि, 'अहाँ बेकार हरान होइ छी। हम ओते सुंदर कथा ल' गेल छलहु से त सुनबे नै केलनि जखन कि कन्यागत सात हजार देब' ले' तैयार छलथिन। अहाँ खेत बेचि क' की पाइ देबनि, की बरियातीक सम्मान करबै आ की विदाई देबनि? अहाँ घुरि जाउ। एसगर जाइ छी। अहाँ एखन विद्यार्थी छी। रस्तामे तीन टा धार छै। चारि कोस पएरे जाए पडै छै। बेकार हरान हएब। ओना अइ

साल त विवाह हेबे नै करतै, ओ इएह तय क’क’ एखन गेलाहे।’
हम तैयो चल गेलहु। पहिने अपन बहिनो कें भेंट केलियनि। ओ नेपाल सरकारक स्वास्थ्य विभागमे काज करैत छलाह। एकटा फूसक घरमे ननू ककासं अलग जेठ भाएक संग रहैत छलाह।
ओ सभ कहलनि- ‘ननू कक्काकें अहाँ अपने कहियनु।’
ननू कक्का ओत’ पहुंचलापर हुनका प्रणाम क’क’ अपन अभिप्राय कहलियनि।ओ सभटा बात ध्यानपूर्वक सुनि क’ कहलनि जे एकर जबाब हम परसू सांझमे देब। हुनके सबहक ओत’ रहलहु। हुनके अनुसार दू दिन एहि विषयपर कोनो बात नै केलहु। तेसर दिन नियत समयपर जखन पूजा क’क’ उठलाह त पुछलियनि। ओ कहलनि जे हम तय केलहु जे विवाह अहींक ओत’ हेतै मुदा हमर एकटा बड़का शर्त अछि तकर पालन करबाक वचन दिय’।
हम कहलियनि, ‘अपने स्पष्ट करियौ। हम जे तय क’क’ आयल छी से कहिये देने छी। अहांक मांग हमरा सामर्थ्य सीमा धरि हयत त हम अवश्य पूरा करब।’
ओ कहलनि, ‘हमर मांग अहांक सामर्थ्य सीमाक अनुकूले अछि मुदा हमरा भरोस नै अछि जे अहाँ पूरा करब, तें अहाँ हमरा वचन दिय’ जे अवश्य पूरा करब।’
हम कनेक भयभीत होइत कहलियनि- ‘ठीक छै, हम अवश्य पूरा करब।’
ओ तखन कहलनि, ‘हमर शर्त ई अछि जे विवाह ताहि रूपें हुअए जे विवाहसं द्विरागमन धरिक खर्चले’ अहाँकें ने एको धुर खेत बेच’ पडय ने भरना राख’ पडय, ने ककरोसं कर्ज लेब’ पडय।इएह हमर शर्त अछि। अहाँ वचन देलहु अछि, आब अहाँकें एकर पालन कर’ पडत।’
हमरा अपना कानपर विश्वास नै भ’ रहल छल। खुशीसं हम कान’

लगलहु। हम सोचै छलहु हिनका द' लोक सभ की की कहने छल आ ई की कहि रहल छथि। एकदम साधारण बगएमे रह'वला लोकक भीतर एहेन श्रेष्ट पुरुष विद्यमान भ' सकैत छथि, एकर हम कल्पना नै क' सकैत छलहु।

हमरा गुम्म देखि ओ कहलनि, 'अहाँकें खेत बेचबा क', कर्जाक त'रमे द' क', अहाँक ओत' कुटमैती करब? राम-राम।' फेर ओ अपन जीवन,दिन-चर्या, मनोरथ सबहक चर्च विस्तारसं केलनि। कहलनि हमर एकेटा मनोरथ छल जे नीक लोकक संग होइन, से हमरा नै भेटैत छल, पाइवला त बहुत अबैत छलाह मुदा कतहु हमर मोन नै मानलक, तें गाममे कहलियै जे अइ साल नै करब। ओत' एक बीघामे पटुआक खेती करैत छलाह आ संगहि पंडित-पुरोहितक काज सेहो। कहलनि जे पाइ त दुनू भाइले' एते छनि जे मनुक्ख जकां खर्च करताह त कोनो चीजक अभाव नै हेतनि आ हमरो क्रिया-कर्मले' सोच' नै पडतनि, जखन एते पाइसं नै काज चलतनि आ अपन पुरुषार्थसं नै हेतनि त अहाँकें कंगाल बनाक'हेतनि? ओ अपने दिन तकलनि। करीब डेढ मॉस आगांक दिन। दूटा छोट-छोट चिट्ठी लिखलनि, एकटा पुत्रक नामे आ दोसर अपन जेठ भाएक नामे। पुत्रकें लिखलथिन-हम हिनका ओत' एकदम आदर्श विवाह तय क' लेलियनि।फलां तारीख क' नीक दिन छै। आशा अछि अहाँकें हमर निर्णय पसंद हएत। शेष भेंट भेला पर। हम चारि दिन पहिने एबाक कोशिश करब। जेठ भाएकें लिखलथिन–हिनका ओत' हम एकदम आदर्श विवाह तय क' लेलियनि।फलां तारीख क' नीक दिन छै। ओही दिन विवाह हेतै। हम एबे करब। यदि कोनो कारणसं ओइ दिन धरि नै पहुचि पाबी त हम अहाँकें ई अधिकार दै छी जे अहाँ जा क' विवाहक काज संपन्न करा देबनि जाहिसं विवाहमे कोनो बाधा

नै होइन। दूनू चिट्ठी हमरा हाथमे द' देलनि। चलै काल पुनः शर्तक स्मरण करौलनि। हम कहलियनि 'मात्र एते आजादी दिय' जे प्रसन्नतापूर्वक जे क' सकी से करी।' कहलनि नै,ककरोसं कर्ज ल'क' वा खेत-पथार भरना राखिक' वा बेचिक' नै, ने त हमरा आत्माकें चोट पहुंचत। हुनक चरण स्पर्श करैत विदा भेलहु। हम बहिनो आ हुनक जेठ भाएकें कहलियनि त हुनको सभकें आश्चर्य भेलनि आ प्रसन्नता सेहो। ओ लोकनि सुझाव देलनि जे जखन एतेक उदारता देखौलनिहें त विदाई आदिक ध्यान राखब जरुरी हएत। मोनमे ततेक आनंद भरल छल जे होइत छल जे कतेक जल्दी गाम पहुचि जाइ आ सभकें ई समाद कहि दियै। रस्तामे हुनकर कहल रामचरितमानसक इ दोहा बेर-बेर मोन पडैत रहल :

'तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग
 तूल न ताही सकल मिली, जो सुख लव सत्संग।'

हम शिशवा पहुँचलहु आ दूनूकें पत्र द' देलियनि। बात तुरंत भरि टोलमे पसरि गेलै आ सभ लोक हमरासं तरह-तरहक सवाल कर' लागल। ककरो विश्वास नै होइ। सभ क्यो अपना-अपना ढंगसं चिट्ठीक अर्थ लगब' लगलाह। हम भोजन क'क' थोड़े काल पडलहु कि कियो जगा देलक। देखलहु लड़काक मामा (जे जाइत काल मनीगाछीमे भेटल छलाह)पहुंचल छलाह।हुनको कोना-ने-कोना खबरि भ' गेलनि। ओ साइकिलसं एलाह।तारमतोर हमरासं सवाल कर' लगलाह :

'अहाँ अबैत काल हमर भेंट किए ने केलहु?'

'अहाँ हुनका की सभ कहलियनि?'

'ओ अहाँकें और की कहलनि?'

'हमरा त कहलनि जे अइ साल करबे नै करब तखन कोना अहाकें गछि लेलनि?'

'भाएकें किए लिखलखिनहें जे हम नै आबि सकी त अहाँ जा क' विवाह करा' देबै?'

हम सविनय हुनक प्रश्नक उत्तर देत गेलियनि मुदा ओ हमर उत्तर सुन' नै चाहैत छलाह। हुनक तामस बढल जा रहल छलनि। हमरा ओ रामलीलाक परसुराम जकां लगैत छलाह। हम चुप्प भ' गेलहु। ओ बजलाह 'हुनकर माथा ख़राब भ' गेलनिहें।'

क्यो किछु नै बजलै। ओ भागिनकें बजा क' कहलथिन, 'तोरा बापक माथा ख़राब भ' गेलनि। हमरा संग चलह आ साफ-साफ़ कहुन जे हम एत' विवाह नै करब।'

ओ कहलखिन 'मामा,इ त जाए काल हमरासं पूछि नेने छलाह जे ननूकका यदि स्वीकार क' लेथि त अहाँकें कोनो एतराज त ने हएत,हम हिनका कहने छलियनि जे ननूककाक बात हम नै काइट सकै छी। एहेन स्थितिमे हम ओत' जा क' कहियनि जे हम एत' विवाह नै करब, अइसं त हिनको अपमान हेतनि आ ननू ककाक सेहो।हम एहेन काज नै क' सकैत छी।'

हम कहलियनि ' यदि अहाँ इ सोचैत होइ जे अहाँक पिताक निर्णय सही नै छनि आ अहाँक इच्छाक विरुद्ध अछि ई निर्णय त ओते दूर जेबाक कोन काज, ई त हमरे कहलासं भ' जाएत।

अहाँक इच्छाक विरुद्ध विवाहक कोनो अर्थ नै छै।'

मुदा ओ मामाजीक सुझावकें साफ अस्वीकार करैत कहलथिन- 'मामा हम नै जाएब, अहाँ जाए चाही त जाउ, अहाँक कहलासं यदि ननू कका हमरा दोसर आदेश देताह त हम ओकरे पालन करब।'

मामाजी कहलथिन 'तोरो माथा ख़राब भ' गेलह।'

मामाजी स्वयं मोरंग जेबाक निर्णय सुनबैत साइकिल ल'क' विदा भ' गेलाह। एम्हर हमरा किछु लोक कह' लगलाह-'विद्यार्थी, अहाँ किए

हल्ला क' देलियै? बुझै नै छियै? आब ई की जा क' कहथिन की ने आ भेलो काज गडबडा सकैए।'
हमर उत्साह ठंडा भ' गेल। फेर ई विचार मोनमे आएल जे नहिये हेतै त की हेतै, दोसर ठाम प्रयास करब। मामाजीक बात मोन पडैत छल त निराश होइत छलहु आ ननू ककाक बात मोन पडैत छल त प्रसन्न भ' जाइत छलहु। अही उहापोहक स्थितिमे ओत'सं अपन गाम आबि गेलहु। गाममे आबिक' फेर वएह केलियै।लोक जे पुछलक तकरा मोरंगसं शिशवा धरिक बात साफ़-साफ़ कहि देलियै। एतहु लोक हंस' लागल 'तोरा हल्ला करबाक कोन काज छलह? आब हुनकर मामा जेथिन त ओ बात बदलियो सकैत छथि।'
हमर पडोसी पुछलनि जे जत' लडकाक पितासं गप भेल' तत' और कियो रहै? हम कहलियनि 'ओत' त कियो नै रहै।'
लोक बाजय–'अही दुआरे ने चारि आदमीक बीच बात कयल जाइ छै जे कोनो हेर-फेर होइ त चारि आदमी पूछि सकै छनि, मुदा जखन कियो रहबे नै करै त काल्हि कहत' जे हम नै कहने रहियनि त की क' लेबहक?'
हमरा एकर जबाब किछु नै फुरय। मुदा, हमरा मोनमे ई विश्वास रहय जे ओ निर्णय बदल'वला लोक नै छथि।
माए पुछलनि, 'तोरा मोनमे भरोस छ'?'
हम कहलियनि ' हं।'
ओ कहलनि 'तखन हेबे करतै, तखन चिंता नै करह।'
माए-बाबूकें हुनकासं भेल सभटा बात जखन सुनौलियनि तखन हमरा पिताकें सेहो भरोस भेलनि, ओना हमरा पिताकें पढाई-लिखाईक अतिरिक्त आन कोनो काजमे हमरा सफल हेबाक संभावना क्षीण बुझाइत छलनि। विना पाई के एहेन ठाम विवाह ठीक हएब घरमे एकटा तेहेन आनंदक वातावरण बना देलकै जे सभकें खुशीसं होइ

जे की करी की ने। तय भेलै जे विवाहसं पहिने घडी, ट्रांजिस्टर, एकटा औंठी, पांचो टूक कपडा आ जूता लड़काकें द' देल जाए, तें ई सभ पहिने कीनि क' राखि लेल जाए। बाबू प्रसन्न मोनसं कोनो खेत भरना रखबाक विचार केलनि। हम रोकि देलियनि।

हम कहलियनि-'ओ हमरा सोझां ठाढ़ छथि। कहै छथि हमरा आत्माकें चोट पहुँचत। हमरा हुनक शर्तक पालन कर'क अछि।'

'तखन कोना हेतै?' बाबू पुछ्लनि।

हम कहलियनि 'हमरा सासुरसं आब' दिय'।'

हमर विवाह एक साल पहिने भेल छल। द्विरागमन नै भेल छल।हमर ध्यान कनियाँक गहनापर गेल। हम सासुकें विस्तारपूर्वक सभ बात कहि देलियनि।ओ कहलनि-'गहना-गुडिया एहने समयले' रहै छै, ओहो त हिनके छनि।भरना राखि क' एखन काज चलि जेतनि। बादमे नोकरी हेतनि त छोड़ा लिहथि।'

सएह केलियै। सभटा सामान कीनि क' घरमे राखि लेल गेल। वरियातीक खर्चक व्यवस्था ले' सेहो निश्चिन्त भ' गेलहु। हम हुनका एकटा चिट्ठी लिखि क' पठा देलियनि। हुनका गामपर जे-जे प्रतिक्रिया भेलै, से सभटा लिखैत इहो लीखि देलियनि जे मामाजी गेल हेताह, ओ किछु सुझाव देने हेताह। ओना हमरा पूरा विश्वास अछि, मुदा यदि अपनेकें लागय जे गलतीसं निर्णय लिया गेल अछि त अपने एखनो स्वतंत्र छी निर्णय बदलक लेल, हमर एतबे अनुरोध जे यदि कोनो कारणसं अपनेकें परिवर्तन आवश्यक बुझाए त जल्दीए हमरा सूचित करबाक कष्ट करब जाहिसं हमरा अन्यत्र कतौ प्रयास करबा ले' समय भेट सकय। चिट्ठीक जबाब नै आएल। ओत' चिट्ठी बहुत-बहुत दिन पर पहुचैत छलै। फोनक सुविधा त छलैहे नै। जे दिन तय रहै ओइसं चारि दिन पहिने सबेरे-सबेरे एक व्यक्ति साइकिलसं

एलाह आ कहलनि 'ननू कका काल्हि गाम एलाह,अहाँकें बजबैत छथि।'
ओ रुकलाह नै। हम तुरंते तैयार भेलहु। बैगमे सभ किनल सामान लेलहु। रिक्शासं विदा भेलहु। दरबज्जापर एकदम प्रसन्न मुद्रामे भेटलाह। प्रणाम केलियनि।
'एकदम प्रसन्न रहू।' खुशीसं बजलाह।
हम पुछलियनि-'हमर चिट्ठी भेटल रहय?'
'हं।' ओ कहलनि।
'हम उताराक बाट तकैत छलहु।'
'किए? हमरा बातपर भरोस नै छल?' ओ हंसैत कहलनि।
'भरोस त छल, मुदा कखनो-कखनो ई होइत छल जे मामाजीक कारण अपनेकें निर्णय बदलबाक लेल बाध्य ने हुअ पडल हुअए।'
ओ कहलनि- 'गेल रहथि। कहलनि, अहांक माथा खराब भ'गेल अछि। कहलियनि अहाँ निश्चिन्त रहू, सेहो हएत त अहाँकें कोनो कष्ट नै देब। हमरा समझाब' लगलाह। पुछलियनि अहाँ हमरासं जेठ छी कि छोट, कहलनि से त छोटे छी। त कहलियनि जे हम अहाँकें समझाएब कि अहाँ हमरा समझाब' आएल छी। रहू, भोजन करू, हमरा खुशीमे शामिल होउ। कहलनि जे हमर बात नै मानब त हम वरियातियोमे नै जाएब। हम कहलियनि जे हमरा खुशीमे अहाँकें दुःख हुअए त दुखी मोनसं वरियाती जेबो नै करू। भगला ओत'सं, ओ नै जेताह वरियाती। हम एतहु लोक सभकें कहि देलियनिहें, जे खुशी मोनसं चलि सकथि सएह वरियाती चलथि ने त नै जाथि। जे मनुक्ख जकां भोजन करथि से चलथि, जिनका राक्षस जकां भोजन करबाक होइन से नै जाथि।'
भरल दलान लोक आ एतेक स्पष्ट रुपें बात करब-हमरा लेल एकदम अप्रत्याशित छल। ओ हमरा कहलनि-'पंद्रह आदमी रहब। अहाँ

तरकारी दूटासं बेशी नै करब, दू तौला दही पौरबा लिय',मात्र एकटा मिठाई राखब, और किछु नै करक अछि।परेशान हेबाक काज नै करब, जएह रहत ताहीमे यश-यश भ' जाएत।'

हम कहलियनि ' अपनेक शर्तक पालन करैत हम सभ आनंदपूर्वक किछु चीजक इन्तिजाम क'क' अनने छी से ग्रहण करबाक आज्ञा देबनि?'

हम बैगमे राखल सामान सभ निकाललहु त ओ नाराज होइत कहलनि- 'ई आदर्श भेलै? जखन एते चीज अहाँसं लैए लेताह तखन कोन आदर्श?'

हम कतेक तरहें विश्वास दियौलियनि जे एहिमे हमर परिवारक आनंद आ उल्लास अछि, एहि लेल ने खेत भरना राख' पडल अछि ने ककरोसं कर्ज लेब' पडल अछि।

ओ बालककें बजाक' कहलथिन 'ई विद्यार्थी जे किछु ल' अनने छथि तकरा हिनक आशीर्वाद आ भगवानक प्रसाद बूझि सहर्ष ग्रहण क' लिय'।'

हम बरजोरी हुनका सभ सामान द' देलियनि। तेहेन हर्ष आ उल्लासक वातावरण ओ बनौने रहलखिन जे विवाहसं द्विरागमन धरि आनंदपूर्वक सभटा काज संपन्न भ' गेलै। दुसबाक कोन कथा, साधारण-सं-साधारण चीजक प्रशंसा तेना करैत छलथिन जे सबहक मोन हर्षसं भरि जाइत छलैक। हुनक पुत्र सेहो हुनके लीखपर चलैत कहियो कोनो समस्या नै उत्पन्न होम' देलथिन। ओ मित्र जकां सदैब रहलाह। हमरा पिताकें अपने पिता समान प्रेम आ आदर दैत रहलथिन।हमर पिता अपन अंतिम दू बरख हमरा लग छलाह परन्तु ओइसं पहिने किछु साल दिल्लीमे हिनके संग आनंदपूर्वक स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त केलनि।दिल्लीमे हमर अनुज लोकनि सेहो हिनक सानिध्य आ प्रेम

प्राप्त क' चुकल छथि। २००३ मे ननू कका ओछाइन ध' नेने छलाह। २ मार्च क' भेंट कर' गेलियनि। कहलियनि 'आशीर्वाद दियौ, ७ मार्च क' कन्यादान करक अछि।'
कहलनि-'सहर्ष आशीर्वाद दै छी, निर्विघ्न सभ काज पूर्ण हएत।'
ननू कका अंतिम समयमे सेहो अपन बात पर अडिग रहलाह। विवाह भेलै, चतुर्थी भेलै, जमाएकें विदा केलियनि। ओकर प्रात ननू कका देह त्यागि देलनि। ननू कका अइ संसारसं विदा भ' गेलाह, मुदा हम जाधरि जीब, हमरा मोनसं कहियो नै विदा भ' सकैत छथि ननू कका।

(५)

एकटा नाटकक अन्त : एक टा कथाक जन्म
दिन भरि हम सभ क्लासक पाछाँ व्यस्त रहैत छलहुँ। साँझमे पाँच बजेसं सात बजे धरि समय रहैत छल घुमै लेल अथवा मनोरंजनक लेल।
घुमैले' हम सभ बान्ह पर जाइत छलहुँ। अधिक काल चारू गोटे संगे रहैत छलहुँ।
गप कतहु सं शुरू होइ मुदा आबिक' सभ दिन ओही ठाम पहुंचि जाइ छलै। एकटा झूठ सत्यक स्थान प्राप्त क' नेने छल। मिश्र जी गीताक कोनो श्लोक द्वारा हमर स्थितिक विवेचन करैत छलाह आ समाधानक सूत्र कहैत छलाह। झाजी और ठाकुरजी सेहो अपन-अपन विचार दैत छलाह। सभ गोटे हमर तथाकथित समस्याकें सोझराबय

चाहैत छलाह।

निर्णय भेल जे पन्द्रह दिन बाद दू दिनक जे छुट्टी छै तकर उपयोग करैत हम शनि दिन क्लासक बाद बस पकडब। एहि सं पहिने हम एकटा चिट्ठी लीखि पठा दिऐ।

मिश्र जी हमरा रजोगुण आ तमोगुणक त्यागक लाभ बुझबैत रहलाह।एकटा चिट्ठी हमरासं लिखबाओल गेल।

निर्धारित दिन, जेबाक लेल हमर यथोचित तैयारी नहि देखि, हम नीक जकाँ जाइ तकर तत्काल प्रबन्ध भेल। झाजी अपन बला आयरन कएल सुन्दर पैंट-शर्ट पहीरिक' जाए लेल देलनि, जे हमरा फिट सेहो भ' गेल। ठाकुर जी अपन बला नबका बैग देलनि। एक बेर फेर हम अपन स्थिति स्पष्ट करबाक कोशिश केलहुँ, मुदा झूठ ततेक आकर्षक भ' गेल छलैक जे सत्य प्रभावहीन भ' गेल छल। क्लासक बाद, भोजनक बाद बस स्टैंड आबि हमरा दरभंगा बला बस पकड़ा देल गेल ।

बसमे सीट भेटि गेल। बैगसं 'मिथिला मिहिर' निकाललहुँ। पढ़' लगलहुँ। कोनो कथा पढ़ैत-पढैत एकाएक ध्यानमे आएल, हम जाहि स्थितिक अभिनयमे बाझल छी, ईहो त' एकटा कथा भ' सकैत छै। हम कल्पनामे डूबि गेलहुँ। एकटा नव विवाहित युवक- पत्नीक कोनो व्यवहारसं दुखी भेल अछि __कतेक नीक-अधलाह कल्पना करैत अछि _बहुत दिनसं एकटा चिट्ठीक बाट तकैत अछि _चिट्ठीक बिना डेग नहि उठब' चाहैत अछि- परीक्षाक अंतिम दिन छै-कॉलेज सं घुरैत अछि _चाहैत अछि कोनो चिट्ठी आएल रहितै त' आइ अवश्य विदा होइत सासुर.......।

अपने संग संवाद चलि रहल छल।

धुर, एहेन झूठ कतहु कथा भेलैए।

त' की कथा सत्य हेबाक चाही? कथा कोनो अखबारक समाचार थोड़े होइछै?
त की सभटा जे कथा पढैत छी, झूठ छै?
से नहि त की? कनी सत्य आ बेशी झूठ।
मगर झूठ किए? बिना झूठ के कथा नै भ' सकै छै?
बिना झूठक कथा माने कोनो अखबारक समाचार।
नै, अखबार ओ कहै छै जे भेलैए, जे हेबाक चाही से कथा कहतै। कथा लोकक सम्वेदनाकें जगबैत छै। अखबारमे एकटा तथ्य रहैत छै,कथा एकटा सत्य दिस लोकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। कथासं एकटा सन्देश निकलैत छै, जकर उद्देश्य कल्याण होइ छै, सुख आ शान्ति होइ छै।
कथ्य, तथ्य आ सत्य मे की अंतर?
की तीनू एके नै भ' सकैत अछि?
किछु कथा सुखान्त होइत अछि, किएक त जीवनक लक्ष्य होइत अछि सुख-शान्ति, अन्त नीक त सभटा नीक। किछु कथाक अन्त दुखमे होइत अछि...एकटा प्रश्न छोडि जाइत अछि...एहि दुखसं उबरबाक प्रश्न।
हमरा नीक लगैत अछि सुखान्त कथा। हमर कथा सेहो एहने हेबाक चाही। लिखलाक बाद मोन हल्लुक लागय।
हम अपन कथाक अन्त तकैत छी .....हम सिनेहसं किरण दिस तकैत छी.....तकिते रहैत छी .....बड़ी काल धरि....नीक लगैत अछि एना ताकब ....बहुत दिनक बाद।
बस रुकल। हमर कल्पनाक उड़ान बन्द भेल। आबि गेल छलहुँ लहेरियासराय।
लहेरियासराय सं दरभंगा, दरभंगासं सकरी पंडौल होइत कैटोला चौक धरि पहुँचैत-पहुँचैत कथा मोनमे जन्म ल' नेने छल आ कागत

पर उतरबा लेल लालटेमक इजोत, कागत आ पेनक प्रतीक्षा करय लागल।

सबेरे स्नान क' क' सायकिल लेलहुँ, विदा भेलहुँ भवानीपुर। संगे छलाह आशा भाइ आ भगवान बाबू।

ईहो स्थान एकटा कथाक कारणें आकर्षित केने अछि। उगना नाटकमे एकर वर्णन अछि। महाकवि विद्यापति राजा शिव सिंह ओत' जा रहल छलाह, संगमे छलनि खबास उगना। एतहि एलाक बाद बड्ड जोर पियास लगलनि। उगना कनिए कालमे जल आनिक' देलकनि पीबाक लेल। पीलनि त गंगाजलक आभास भेलनि। पुछलखिन कत' सं जल अनलें त जे जबाब भेटनि, ताहिसं संतुष्ट नहि होइत छलाह। लगमे कतहु जलाशय हेबाक सम्भावना नहि बुझाइत छलनि। कोनो अलौकिक शक्तिक आभास भेलनि। ध्यान केलनि त' महादेव सोझां आबि गेलखिन। उगनामे महादेवक दर्शन भेलनि।पएर पकड़ि लेलखिन। महादेव किछु पल लेल दर्शन दैत कहलखिन जे ई रहस्य जहिए ककरो लग प्रकट करब, हम अलोपित भ' जाएब।

कथा कहैत अछि जे महादेव विद्यापतिक गीतसं एतेक प्रभावित भेलाह जे हुनका संग रहबाक लेल धरतीपर एलाह आ हुनकर खबास बनिक' बहुत दिन धरि रहलाह।

काव्य-कर्मकें प्रतिष्ठा देब' बला ई अदभुत कथा अछि।

एहि कथाक कारण ई स्थान मिथिलाक प्रमुख धार्मिक स्थलक रूपमे लोकक आस्थाक केन्द्रमे रहल अछि। भव्य मन्दिर आ जलाशय लोककें आकृष्ट करैत अछि। शिव रात्रिमे एहि ठामक दृश्य मनोहर रहैत अछि, ओना रवि दिनक' सेहो सालो भरि दर्शक आ शिव-भक्त लोकनि अबैत रहैत छथि। हमहूँ सभ कतेक रविक' एत' आएल

छलहुँ। ढोली जेबासं पहिने नियमित रूपसं रवि दिनक’ अबैत छलहुँ। पूजाक बाद मुरही-कचरी कीनि कतहु बैसिक’ गप-शप करैत खेबाक आ फेर साइकिलसं घर घुरैत आनन्दक अनुभव करैत छलहुँ। से बहुत दिनक बाद आइयो भेल।

आइयो विद्यापति आ उगनाक कथापर विचार करैत आनन्द अबैत अछि। पुराण सभमे भगवानक विभिन्न अवतारक कथाक वर्णन अछि। कहल गेल अछि जे धरतीपर जखन-जखन अन्याय-आतंक-अत्याचार बहुत बढ़ि जाइत अछि त धर्मक स्थापनाक लेल भगवान विभिन्न रूपमे प्रकट होइत छथि।

कोनो महाकवि अपन विशिष्ट रचना द्वारा सामूहिक चेतनाक आविष्कार करैत छथि। यैह चेतना जन-मनमे नव संकल्प-शक्ति आ संस्कार भरैत अछि जे अपेक्षित सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक आन्दोलनक सूत्रपात करैत अछि जे अन्याय-आतंक आ अत्याचारक अन्त करैत अछि। एहि चेतनाकें भगवानक रूपमे देखल जा सकैत अछि। महाकवि विद्यापतिक समयमे समाजमे जे असमानता अथवा विद्रूपता छलै, तकरा मधुर गीतक माध्यमसं लोकक समक्ष आनि लोककें जागृत कएल गेल जे एकटा सांस्कृतिक आंदोलनक रूपमे देश-विदेश सभ ठाम प्रतिष्ठित भेल अछि।

विद्यापति आ उगनाक कथाकें जखन एहि दृष्टिसं देखैत छी त कथाकारक प्रति असीम श्रद्धा होइत अछि।

ई शोधक विषय भ’ सकैत अछि जे टेलिफ़ोन-मोबाइलक आविष्कारमे ‘के पतिया लय जायत रे मोरा प्रियतम पास....’ अथवा एहने कोनो रचनाक की आ कतेक योगदान अछि, अनमेल विवाहकें रोकबामे ‘पिया मोर बालक......’ गीतक हस्तक्षेपक की प्रभाव पडल।

साँझमे बैगसं कापी आ पेन निकालि लालटेम ल’ क’ बैसि गेलहुँ।

सबेरमे मोन प्रसन्न लगैत छल। कागतपर कथाक जन्म भ' चुकल छलै। आनंदक अनुभव करैत गामसँ प्रस्थान केलहुँ ढोलीक लेल। हमर मोन प्रसन्न छल, से देखि हमर शुभेच्छु संगी सभ सेहो प्रसन्न भेलाह।

हमर कथा पढ़िक' मिश्रजीकें नीक लगलनि आ आगू किछु पुछबाक आवश्यकता नहि रहि गेलनि। कह्लनि कथा आकाशवाणीकें पठा दियौ। तीनू गोटेक यैह सुझाव छलनि।

फेयर क' क' कथाकें आकाशवाणी,पटना कें मैथिली कार्यक्रम 'भारती' ले पठा देलहुँ ।

एक मासक भीतरे आकाशवाणीसं सूचना भेटल जे कथा 'भारती'मे प्रसारण हेतु स्वीकृत कएल गेल अछि, अतिरिक्त सूचना बादमे भेटत। नीक लागल। फेर किछु दिनक बाद प्रसारणक तिथि, समय आ पारिश्रमिक-राशिक सूचना भेटल। आनंदित भेलहुँ। संगी सबहक सुझाव जे हम अपनहि जा क' कथाक पाठ करी, कल्पना ई जे कथाक नायिका सेहो सुनतीह त आनन्दित हेतीह।

प्रसारणक समय ५.३० छलै। हम करीब ११ बजे आकाशवाणी पहुँचलहुँ। गुंजनजीक आवाज त सुनने छलहुँ, भेंट आइ पहिल बेर भेल छल, से नीक लागल। अपन एबाक उद्देश्य कहलियनि।सम्पादित कथा देख' देलनि। देखलिऐ, किछु ठाम अंगरेजीक शब्द छलै, तकरा बदला मैथिली शब्द राखल गेल छलै, किछु और सुधार कयल गेल छलै। हम आगाँ ध्यानमे रखबाक संकल्प केलहुँ।

कथा-पाठ लेल १० मिनट निर्धारित छलै। हमरा पढ़' कहलनि। कहलनि, हडबडी करबाक काज नै छै, एक-आध मिनट बेशीयो लागि जाइ त कोनो बात नै। कार्यक्रम साढ़े पाँच सं शुरू होइत छलै, हमरा पाँच बजे आबि जाय कहलनि।

हम पाँच बजे गेलहुँ, त कथा प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क हाथमे देखलियनि। प्रेमलता जी सेहो 'भारती' मे रहैत छलीह। गुंजन जी आ प्रेमलताजीक स्वर सुनने रही,मुदा सोझां देखबाक-सुनबाक ई पहिल अवसर छल, से आनंदित भेलहुँ। कथा पर दुनू गोटेक टिप्पणी नीक लागल। एकटा नव विवाहित नवयुवकक मनःस्थितिक चित्रण छलै कथामे। मिश्र जी कहैत छलाह जे ई जिनगी दू टा जिनगीक बीच ओहिना अछि जेना सिनेमाक बीचमे इन्टरवल होइ छै। हम कथाक नाम 'इन्टरवल' रखने रही, तकरा स्थान पर 'धारक ओइ पार' कयल गेल रहै, से हमरा कथाक अनुरूप ठीक लागल आ एहिसं शीर्षक चुनबाक लेल नव दृष्टि भेटल। नीक अनुभवक संग घुरल रही पटनासं।

पटनासं घुरैत काल सोचैत रही जे कथामे की रहै -सन्देहक एकटा धार छलै, जकरा ओइ पार तथ्य छलै, से सुन्दर छलै, कल्याणकारी छलै। मुदा छलै त एकटा कल्पना आ कल्पना मात्र। हमर त विवाहो नै भेल अछि । अपनहि मोन उतारा देलक, रोगीक दुःख दूर करबाक लेल कोनो जरुरी छै जे डॉक्टर कें बिमारीक अनुभव होइ?

त की जतेक कथा पढैत छी, से कल्पनाक कमाल मात्र थिक? सीता आ रामक कथा —रामक चरण रजसं अहिल्याक उद्धारक कथा, आइ रामक राजतिलकक निर्णय आ काल्हि चौदह बरखक लेल वनबासक कथा, सीता-हरण आ रावणक मृत्युक पश्तात रामक अयोध्या आगमन आ राज्याभिषेक —एहिमे कतेक सत्य आ कतेक कल्पनाक उड़ान से के कहि सकत। मुदा कथा विभिन्न परिस्थितिमे स्वस्थ जीवन जीवाक लेल मार्ग-दर्शनक रूपमे एकटा उपकरण बनिक सोझां अबैत अछि।

हमरा 'कन्यादान'क बुच्ची दाइक कथा मोन पडैत अछि। बुच्ची दाइक वियाहक कथा —सी सी मिश्रक कथा —अनमेल विवाहक

परिणाम एकटा सामाजिक समस्या समस्याक निदान देखबैत 'द्विरागमन' की एना सम्भव छै.......मुदा, हम ई सभ किएक सोच' लगलहुँ - हमरा जीवनमे बुच्ची दाइ नहि आबि सकैत छथि- हमरा सावधान रहबाक अछि ...एकदम सावधान .... हमरा लगैत अछि जे जीवनक आनन्द लेल जीविकोपार्जनक व्यवस्था आ साहित्यसं प्रेम दूनू जरूरी अछि आ साहित्यसं प्रेमक लेल आवश्यक अछि जे पत्नी सेहो पढ़लि-लिखलि होथि .... आ से किएक ने भ' सकैत अछि ...एकटा कल्पनामे विचरण करैत ढोली पहुँचलहुँ।

होस्टल पहुंचि आनन्दित भेलहुँ। हमर प्रिय संगी सभ सुनने छलाह कार्यक्रम। सबहक कल्पना ई जे कनियाँ सेहो सुनने हेतीह त कते आनन्दित भेल हेतीह।

आब चर्चाक केन्द्र ई कथा बन' लागल। हम कागज़ पर दू टा टुकड़ीमे लिखलहुँ जे एहि नाटककें एतहि समाप्त कर' चाहैत छी आ ठाकुरजी आ झाजीक कोठलीमे एक-एक टा टुकड़ी नीचाँ द' क' रातिमे खसा देलहुँ। मिश्रजीकें मौखिक रूप सं कहि देलियनि, मुदा कियो मान' लेल तैयार नहि भेलाह। हमरा कखनो क' हुअ' लागल की पता इहो सभ बुझियोक' नहि बुझबाक नाटक क' रहल छथि।

तिला संक्रान्तिक बाद हमर पिता गामसं किछु सनेश नेने एलाह त कोनो तरहें मिश्रजी पूछि क' सत्यकें स्वीकार करबाक स्थितिमे अबैत एक दिन कहलनि, हम सभ गोटे एहि सृष्टिमे कोनो-ने-कोनो भूमिकामे रहैत जीवन भरि अभिनय करैत रहैत छी, कखनो बालक-बालिकाक रूपमे, कखनो माता-पिताक रूपमे अथवा छात्र-गुरु,पोता-दादा, मित्र-शत्रु अथवा आन कोनो संबन्धमे, ई संसार एकटा रंगमंच अछि आ हम सभ अभिनेता, अभिनेता मंचसं दूर भ' जाइत अछि,मुदा अभिनयक

स्मृति शेष रहि जाइत अछि ; अभिनेता बदलि जाइत अछि, रंगमंचपर अभिनय चलैत रहैत अछि..........

(६)

मृगतृष्णा आ कि पशुपतिनाथक दर्शन

उन्हत्तरिमे प्रथम वर्षमे पचास गोटेक नामांकन भेल रहनि।

ओहिमे सं दुलार चन्द्र मिस्त्रीकें मेडिकलमे भ' गेलनि, त ओ चल गेलाह।

शेष उनचास गोटे उत्तर बिहारक विभिन्न जिलाक, भिन्न-भिन्न सामाजिक, आर्थिक आ शैक्षणिक पृष्ठभूमिक छलाह। विभिन्न स्वभाव आ संस्कारसं युक्त सभ गोटेक एक अनुशासनमे एकहि छत तर-छात्रावासमे रहब, एक संग भोजन-जलखै करब, एक संग कक्षामे जाएब सभ दिन उत्सव जकाँ लगैत छलै।

मोन पडैत छथि नारायण मिश्र,अशोक कुमार ठाकुर, नन्द कुनार झा, रामाधीन ठाकुर, अवधेश प्रसाद, राम नरेश प्रसाद,कंचन साह, कृष्ण मुरारी, कृष्ण कुमार, बृज किशोर सिंह, समरेन्द्र नारायण सिंह, सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, ब्रज भूषण शर्मा, प्रेमचन्द केसरी आ और बहुत गोटे जिनकर नाम एखन नहि मोन अछि। अपनामे मैथिलीएमे गप करबाक कारणे नारायण मिश्रजी आशोक कुमार ठाकुरजी नन्द कुमार झाजी आ रामाधीन ठाकुरजीक संग हम बेशी सहज अनुभव करैत छलहुँ। नारायण मिश्र जी बनगाम (सहरसा)क छलाह, अशोक कुमार ठाकुर जी डुमरिया (पूर्णियां) आ नन्द कुमार झा जी मोहना, झंझारपुर (मधुबनी)क छलाह। हिनका सभसं सम्पर्क बादहुमे रहल। मोन पडैत छथि आदरणीय श्री अयोध्या प्रसाद मिश्र, प्राचार्य आ प्राध्यापकगणमे श्री एन.के.सिन्हा, श्री के.पी.सिंह, श्री एस. श्रीवास्तव, श्री टी. डी. सिंह, श्री एस.एन. ओझा, श्री एन.के. सिंह, श्री बी.डी.

सिंह।

कॉलेजमे पढ़ाइ नीक होइत छलै। एकोटा क्लास खाली नै जाइ छलै।

समय-समयपर नाटक आ अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो होइ छलै। कॉलेज आ छात्रावास सभ ठाम हम सभ नीक अनुभव क’ रहल छलहु। तैयारी नीक चलि रहल छल। वार्षिक परीक्षाक समय सेहो निकट अबैत जा रहल छल। एकटा अन्हड़ एलै।

कॉलेजमे कृषि राज्य मन्त्री एलाह। हॉलमे हुनकर भाषण भेलनि। ओ कहलखिन जे सरकार निर्णय ल’ रहल अछि जे कृषि स्नातक लोकनिकें आब नोकरीक बदलामे १० एकड़ खेत देल जेतनि, बैंकसं जरुरतिक अनुसार कर्ज देल जेतनि। बैज्ञानिक ढंगसं खेती करताह, आनन्दसं जीवन-यापन करताह।

भाषण सूनि बहुत गोटे निराश भेलाह। हमहूँ निराश भेलहुँ। हम सभ चाहैत छलहुँ नोकरी जाहिमे रौदी-दाहीक प्रभाव नहि पडैत छलै।

बाबा गृहस्थ छलाह। पिता गृहस्थ छलाह। खेतीक अनुभव नीक नहि छलनि।चारि-पांच बीघा खेतक उपजसं घरक आवश्यकतानुसार अन्न नहि प्राप्त होइत छलैक। कर्ज लेब’ पडैत छलै। खेत भरना धर’ पडैत छलै।लोक विपन्नतामे जीवन-यापन करैत छल। कियो नहि चाहैत छल जे ओकर धिया-पूता सभ सेहो अहिना अभावमे जीबए।

रातिमे निन्न नहि भेल। आब की करब। इंजीनियरिंग पढ़िक’ लोक बैसल रहैत छल से जानि ओम्हर नहि गेलहुँ। मेडिकलमे नामांकन भेल नै। ई पढ़िक’ नोकरी भेटत नै। त’ आब की करब?

पढ़ाईसं मोन उचटि गेल।

अगिला शनि दिन सांझमे गाम पहुँचलहुँ ।

तेसर दिन एकटा कन्यागत पहुँचलाह। हुनका नेपालक नागरिकता छलनि। बायोलॉजी विषयक संग हमर प्राप्तांकक आधारपर कहलनि जे नेपाल सरकार द्वारा अहांक नामांकन मेडिकलमे कराओल जा सकैत अछि, एहि लेल हमरा हुनक कन्यासं विवाह करबाक स्वीकृति देब’ पडत। हुनक कन्या दस बरखक छलथिन, पाचमामे पढैत छलखिन।
ई प्रस्ताव हमरा सभ गोटेकें चिन्तामे ध’ देलक।
निर्णय लेब कठिन लगैत छल। कन्यागत एकटा विचार देलनि। विचार भेल जे हुनका संगे काठमांडू जाइ। देखी जे ऐ साल की भ’ सकै छै। तखन जे विचार हो से करी। अपन कन्याकें ओ देखा देलनि।
चारि दिनक बाद हम सभ काठमांडूमे रही।
हमर मार्क्स शीट ल’ क’ ओ गेलीह। हुनकर निकटक कोनो सम्बन्धी छलखिन नेपाल सरकारमे। हुनकासं भेंट क’ क’ एलीह। दू दिनक बाद परिणाम सुनौलनि जे ऐ साल मेडिकलक कोटा समाप्त भ’ गेल छै, इंजीनियरिंगमे जाए चाही त भ’ सकैए, करांची आ अफ्रीकाक लेल सीट खाली छै। मेडिकलमे जेबाक लेल एक साल प्रतीक्षा कर’ पडत।
हमरा निर्णय लेबामे सुविधा भेल। हम निर्णय लेलहुँ। मेडिकल लेल एक साल प्रतीक्षा नहि करब। इंजीनियरिंग पढ़बा लेल करांची आ कि अफ्रीका नहि जाएब।
बाबा पशुपतिनाथक दर्शन क’ क’ गाम घुरि एलहुँ। बाबूकें-माएकें सभ बात कहि देलियनि। दू-तीन दिनक बाद ढोलीक लेल प्रस्थान केलहुँ। ढोली अबैत काल अपन अभिभावक स्वयं बनल एलहु : की हेतै, एकठाम पाँच-दस एकड़ खेत रहै आ वैज्ञानिक विधिसं खेती कएल जाइ त किए ने लोक नीक जकाँ जीवन-यापन क’ सकैए?

गामक स्थिति नीक एहि लेल नै छै जे ओत' सिचाईक उपयुक्त साधनक अभाव छै आ वैज्ञानिक ढंगसं खेती नै भ' रहल छै। नोकरीमे ट्रान्सफरक झंझट लागल रहै छै, तैसं त बांचल रहब।

ढोली पहुँचलाक बाद ई अनुभव भेल जे पन्द्रह दिन कॉलेजसं अनुपस्थित रहिक' हम बहुत पैघ गलती क' चुकल छी। आब एहि गलतीक परिणाम सेहो एतैक। मुदा आब हमरा हाथमे की छल, जे संभव भ' सकैत छैक से करब ठनलहुँ।

परीक्षाक तिथिक घोषणा भ' चुकल छलै। पच्चीस दिन शेष छलैक आ पढाई समाप्त भ' गेल छलैक।एतबे दिनमे जतेक पढाई भ' गेल छै, तकर तैयारी कोना करब, से समस्या छल। हमर जे निकटतम संगी सभ छलाह हुनका सबहक नोट बुक देखिक', हिनका सभसं पूछि-पाछिक' जे पढाई भ'गेल छलै, तकर तैयारीमे लागि गेलहुँ। ठाकुर जीक तैयारी नीक छलनि, मदति केलनि, क्षतिकें कम-सं-कम करबाक प्रयासमे लागि गेलहुँ। प्रैक्टिकल क्लासमे अनुपस्थित रहबासं भेल क्षतिकें कम करब बहुत कठिन छल। ईहो बूझल छल जे ऐ सालक परीक्षा-परिणामक प्रभाव तीनू सालक औसत परिणामपर पडत। ऐ साल जौं प्रथम श्रेणीमे नै एलहुँ, त अंतिम परिणाम प्रथम श्रेणी नै भ' सकत। मोनकें मजबूत बनाक' जे क' सकैत छलहु, ताहिमे लागि गेलहुँ।

एग्रोनोमीक प्रोफेसर एस.एन.ओझाजी कहलनि,'तुम्हारे भाग्य में यही लिखा हुआ है,कहाँ भाग-भाग कर जा रहे हो?'

एक-दू दिन स्वयंसं लडैत रहलहुँ।

एके स्थिति छलै सबहक लेल, मुदा हम किए एतेक प्रभावित भ' गेलहुँ?

ठाकुर जी एम.एस.सी.(एजी) करबाक निर्णय केने छलाह। झाजी

सेहो विचलित नहि भेलाह। मिश्रजी सेहो स्थिर छलाह। किछु गोटे सोचि नेने छल 'जे हेतै देखल जेतै।' हमहीं किए एते चिन्तित भ' गेलहुँ?
एक गलती पहिने केलहुँ जे एडमिशन ल'क' फेर नाम कटाक' बायोलॉजी पढ़' चल गेलहुँ । दोसर ई जे मेडिकल पढबाक लोभमे एकटा अप्रिय समझौता करबाक लेल तैयार भ' गेलहुँ आ सलमपुरसं काठमांडू पहुंचि गेलहुँ । एहि निर्णयक लेल हमरापर कोनो दबाब त नहि छल। एहिमे हमर पिता-माताक त कोनो दोख नहि छलनि। ओझाजीक टिप्पणी सोझा आबि जाइत छल ' तुम्हारे भाग्य में ....' त की नेपाल जेबाक निर्णय लेब आ फेर वापस एबाक निर्णय - इहो सभ भाग्यमे लिखल छल हेतै?
भाग्यक बात सही होइ कि नै होइ मुदा हतोत्साहित हेबासं बचबाक लेल ई पैघ मन्त्र जकाँ काज करैत अछि। अहाँ अपन बुद्धि आ विवेकक उपयोग करैत सभ काज करैत चलू आ परिणाम जे आबय तकरा यैह सोचिक' मोनकें मजबूत बना लिय' जे यैह हेबाक छलै तें चिन्तामे डूबल रहबाक काज नै छै। एहिमे संगी-साथी सभक सहयोग सेहो महत्वपूर्ण होइत अछि। हमरा संगी-मित्र सबहक सहयोग भेटल जाहिसं जे समय बांचल छलै परीक्षाक लेल, ताहिमे संभावित क्षतिकें कम-सं-कम करबामे दिन-राति लागि गेलहुँ।
अपना मोनकें मजबूत बनाक' राखब सेहो हल्लुक काज नै छै, मुदा जीवनमे कतेक बेर एकर आवश्यकता पडैत छैक। सुनने रही कतेक गोटेक मूँहें 'नेपाल जाएब, कपार संगे जाएत।' एहि उक्तिक सकारात्मक पक्षपर विचार केलहुँ।
हमर मोन आब मानि गेल रहय जे बाबा पशुपतिनाथ अपन दर्शनसं लाभान्वित करबाक लेल हमरा कोनो लाथे बजा लेलनि आ मोन स्थिर करबाक लेल उचित सलाह दैत घुरा देलनि।

ओहि समयमे हम सभ एहि तथ्यसं एकदम अनभिज्ञ रही जे चौदह टा बैंकक राष्ट्रीयकरण भ' गेल छै आ निकट भविष्यमे कृषि स्नातक सबहक लेल एहि बैंक सभमे भर्ती-अभियान शुरू होइ बला छै।

(७)

गुरुर्विष्णुः

परीक्षा शुरू भेलै। हॉलमे भ' रहल छलै। बडकी टा हॉल, उनचास टा परीक्षार्थी, सभकें एक-एक टा कुर्सी-टेबुल, सबहक बीच पर्याप्त दूरी। मंचपर सिंह साहेब, हुनका सोझां एक-एक छात्रक गतिविधि एकदम साफ़,कतहु कोनो गड़बड़ीक आशंका नहि, परीक्षा-हॉलमे एकदम शान्ति।

सिंह साहेब सुनिश्चित केलनि जे सभटा ठीक चलि रहल अछि,अखबार पढ़' लगलाह।

किछु काल बीतल हेतै कि शान्ति भंग भेलै।

'क्या बात है?'

'हम बाहर जाना चाहते हैं।'

'कहाँ?'

'हॉस्टल'

''क्यों?'

'किताब लाने के लिए'

'क्यों?'

'देखकर लिखने के लिए'

'क्या बकते हो?'

'सही कह रहा हूँ।'

'गेट आउट ....'

'हम वृक्ष के सूखे पत्ते नहीं हैं कि हवा के एक झोंके में गिर जाएंगे...'

हॉल गनगना गेलै।

प्राचार्य महोदय दौगल एलाह, हुनका संग किछु और प्रोफेसर हल्ला सुनिक' दौगल एलाह।

मंच पर ठाढ़ छलाह सिंह साहेब, नीचांमे ठाढ़ छलाह मिश्र जी, हमर रूम-मेट मिश्र जी।

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'मुझे नारायण कहते हैं,सर।'

'क्या बात हुई है नारायण?'

'सर,मैं तो यही चाहता हूँ कि सभी को समान सुविधा मिलनी चाहिए।'

'थोडा और स्पष्ट करो।'

'सर,इससे ज्यादा मै कह भी नहीं सकता हूँ।'

प्राचार्य महोदय श्रीवास्तवजी दिस ताकि किछु कहलखिन, खोज शुरू भेल। एक-एक क' सभ छात्रक शर्ट, पैंट, मौजा, जूता सबहक

तलाशी भेल, एक ठाम जा क' सभ रुकि गेलाह। ओ छात्र लजा गेल छल।एकटा पन्ना ओकर मौजामे भेटलै। जाहि प्रश्नक उत्तर ओहिमे छलै, तकर मिलान भेलै, ओकरा समझा-बुझाक' ओ उत्तर कटबा देल गेलै,दोसर कॉपी देल गेलै आ फेर एहेन गलती नै करबाक चेतौनी देल गेलै। मिश्रजीसं पूछल गेलनि जे हुनका हिसाबसं और की दंड देल जाइ।

मिश्रजी कहलखिन 'मुझे किसी को दंड देने या दिलाने में कोई दिलचस्पी नहीं है,मैं अपने साथी को दंड क्यों दिलाना चाहूँगा,मैं तो सिर्फ यह चाहता था कि सबको समान सुविधा मिले।

सभ छात्र चुपचाप ई दृश्य देखि रहल छल। सबहक कलम रुकि गेल छलै। सभ प्राध्यापक चुप छलाह। एकटा अज्ञात भय व्याप्त छलै। वातावरणमे।

'सभी को पन्द्रह मिनट अतिरिक्त समय दिया जाएगा।' प्राचार्य महोदय बजलाह। ओ मिश्रजी लग एलाह।

'ठीक है नारायण अब लिखना शुरू करो।'

'हम अब क्या परीक्षा देंगे सर, हम नहीं लिख पाएंगे।'

'तुमको अतिरिक्त आधा घंटा समय मिलेगा।'

'नहीं सर, मैं बिल्कुल असंतुलित हो गया हूँ, मैं क्या परीक्षा दूंगा।'

'ऐसा नहीं कहते, साल बर्बाद नहीं करना है, चलो तुम जितनी देर चाहो लिखो, मगर परीक्षा मत छोडो।'

मिश्रजीक पीठ थपथपबैत प्राचार्य महोदय निकलि गेलाह। फेर मिश्रजी सेहो बैसलाह, सभ शुरू केलक लिखनाइ।

परीक्षा हॉल सं निकलैत काल सभ छत्रक ठोरपर मिश्रजीक नाम छल।

'मिश्रजी को ऐसे नहीं बोलना चाहिए।'

'अब इनका निकलना तो मुश्किल है।'
'प्रोफेसर से ऐसे बात करना बहुत मंहगा पड़ेगा।'
'हाँ भाई, प्रैक्टिकल तो इन्हीं लोगों के हाथ में रहता है, ये लोग पास होने देंगे?'
हम वस्तुस्तितिकें बुझबाक प्रयास करैत रहलहुँ। मिश्रजी जखन एलाह तखन बुझलियै जे एकटा स्टाफ-सदस्य आबिक' चुपचाप ओकरा एकटा कागज़ द'क' चलि गेलै,सिंह साहेब नै देखलखिन, मिश्र जी देखि लेलखिन आ अपना ढंगसं एकर विरोध केलखिन।एकटा अनुभवी प्राध्यापकक समक्ष फर्स्ट इयरक एकटा छात्रक एना विरोध प्रगट करब ककरो पचि नै रहल छलै। ककरोमे एतेक साहस नै छलै, जतेक मिश्र जी देखौने छलाह। हमहूँ देखने रहितौं त एना विरोध प्रगट नै क' सकैत छलहुँ।कियो नै क' सकैत छल।हम सोचि नै पबैत छलहुँ जे मिश्रजीकें की कहियनि। मिश्र जी सेहो कॉलेज सं एलाक बाद मौन भ' गेल छलाह।
साँझमे हॉस्टलमे ओझाजी एलाह। रुमक सोझां आबि ठाढ़ भेलाह।
'कौन है नारायण?'
'प्रणाम सर।' मिश्र जी सोझां एलाह।ओझाजी तेना देखलखिन जेना पहिल बेर देखि रहल होथिन।
'जो कुछ सुना है, क्या यह सत्य है?'
हम चुप्प छलहुँ। मिश्र जी सेहो चुप्प छलाह।
'मै नहीं था, अगर मैं रहता, तो आज या तो तुम रहते इस संस्था में या मैं रहता, मैं तो वर्दाश्त नहीं कर पाता।'
कियो किछु नै बाजल।
ओझाजी विदा भेलाह, पाछाँ बहुत छात्र सेहो चलल। हम सेहो ओहि मध्य रही। मिश्र जी रूमेमे रहि गेलाह।
छात्र सभ उत्सुक छल जान' लेल जे कोन दण्ड मिश्र जीकें देल

जेतनि।किछु गोटे सिंह साहेबक प्रति अपन आदर प्रदर्शित क' रहल छल : सर बहुत बुरा हुआ, सिंह साहेब के साथ मिश्र जी को ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

किछु गोटे चुप्प छल। हमहूँ चुप छलहुँ। हम किछु दूर संगे जाक' घुरि एलहुँ। मिश्र जी गुम्म छलाह।

किछु कालक बाद हॉस्टल मे हल्ला भ' गेलै जे महाविद्यालयक समस्त स्टाफक मीटिंग भेलैए जाहिमे मिश्रजी पर अनुशासनिक कारर्बाई करबाक निर्णय लेल गेलैए। ईहो हल्ला भेलै जे ओझाजी स्वयं ई बात कहलखिनहें।

किछु गोटे हमरा रूम मे आबिक' ई बात कहि गेल। किछु गोटे मिश्रजीकें सेहो सलाह देब' एलनि : अब आपके लिए यहाँ रहना अच्छा नहीं होगा।

एक गोटे एलनि : मिश्र जी, आप तो जा रहे हैं, अपना बॉटनी की किताब मुझे दे दीजिए, इसकी क्या जरूरत होगी आपको।

'चलू, भोजन क'क' अबै छी।' हमरा मुंह सं निकलल। जेना-तेना हम सभ भोजनमे सम्मिलित भेलहुँ। ओतहु किछु गोटे यैह सुझाव देलकनि।

मिश्र जी मौन छलाह। हमहूँ मौन छलहुँ। किछु फुरा नै रहल छल जे हम की सलाह दीयनि आ हमर सलाह हुनका लेल कतेक उपयोगी हेतनि सेहो स्पष्ट नहि छल।

थोड़े काल पडल रहलाक बाद एकाएक मिश्र जी उठलाह, अपन किताब आ कपडा आदि सभ सामान समेटलनि आ हमरा कहलनि ' कहल-सुनल माफ़ करब ठाकुरजी, हम जा रहल छी।'

'कत?' हमरा लागल आब हमरा किछु बाज' पडत, किछु करब अनिवार्य लागल।

'कोनो दोसर बाट पकड' पडत।'
'से किए?'
'सुनै नै छिऐ? आब हमरा या त' निकालि देत या पास नै कर' देत, तैसं नीक हमहीं छोडि दी।'
'त एखन रातिमे किए? सोचि-बिचारिक' काल्हि निर्णय लेब, दोसर विषयक परीक्षा त एक सप्ताहक बाद छै ने?'
'नै,हम सोचि लेलहुँ, हमरा जाए दिय'।'
'की अहाँ सोचैत छी जे अहाँसं कोनो अपराध भेल अछि? हमरा त नै
लगैए जे अहाँ अपराधी छी। आ अहाँ अपराधी नै छी त दण्ड अहाँ किए भोगब?'
'मुदा, सुनलिऐ नै ओझाजी की कहैत छलाह, सभ प्रतिष्ठाक प्रश्न बना लेलकैए, हमरा पास नै कर' देत।'
'त हमर एकटा बात मानि लिय', एखन जाएब त'सभ कहत डरसं भागि गेलाह, जेबे करब त काल्हि ओझाजी सं भेंट क'क' जाउ?'
'की हमरा माफ़ी मांग' कहै छी?से हम नै कए सकै छी'
'नै, माफ़ी कथीक? अहांक गलती एतबे ने जे तेज आवाजमे सिंह साहेबसं गप केलहुँ, मुदा एहि लेल जं ओझाजी एतेक नाराज छथि त हुनका कहबनि जे राखू अपन कॉलेज, अहीं सभ रहू, हमहीं जा रहल छी।'
हमर ई प्रस्ताव मिश्रजी मानि लेलनि।
बान्हल बेडिंग खोलि आरामसं पड़लाह मिश्र जी, हमरा लागल जेना हमरा बूते अनायास एकटा नीक काज भ' गेल अछि।
सबेरे स्नान-जलखै क' क' दुनू गोटे विदा भेलहुँ ओझाजी ओत'।
बहुत गोटे कें भेलै जे मिश्र जी आइ कॉलेज छोडि देताह।
हम सभ ओझाजीक डेरा पहुँचलहुँ त पता लागल जे ओ कतहु कोनो

काजे निकलल छथि।
पता लागल जे कनिएँ दूर पर छनि सिंह साहेबक डेरा।
'चलू, सिंह साहेब ओत' चलै छी।' हमरा मुंहसं निकलल।
'नै, हम ओत' नै जाएब, हम माफ़ी सेहो नै मांगि सकै छी।'
'अहाँ किछु नै कहबनि, हमहीं कहबनि जे ओझाजी ई बजलखिनहें, तें अहाँ कॉलेजसं जा रहल छी।'
हम सभ पहुँचलहुँ त सिंह साहेब स्नान कर' जाइ छलाह। हमरा सभकें बैस' कहलनि आ पाँच मिनट बाद स्नान क'क' लग मे एलाह। मैडम तीन ठाम प्लेटमे कचौड़ी,तरकारी आ जिलेबी राखि गेलीह। सिंह साहेब हमरा दिस तकलनि।
'सर, मिश्रजी रात ही कॉलेज छोडकर जा रहे थे, मैंने कहा कि कल सर से भेंट करके प्रस्थान करना ठीक होगा, हमलोग एक ही रूम में रहते हैं।' हमरा मुंह सं निकलल।
'इसमें कॉलेज से जाने की बात कहाँ से आ गयी?'
'सर, कल शाम में ओझा जी हॉस्टल पहुंचे थे, कुछ लड़के बता रहे थे कि ओझा जी कह रहे थे, पास नहीं करने देंगे।'
'और मैं तुम्हें कहता हूँ कि कोई तुम्हें फेल नहीं करा सकता है, नारायण, मेरी ओर देखो,मैं देखने में काला हूँ, दिल का काला नहीं हूँ।'
मिश्र जी मोम भ' गेलाह : सर मैंने आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, आपका तो कसूर था नहीं।
'तुम्हारा भी कसूर नहीं था, मैं तुम्हारी पीड़ा समझ सकता हूँ।तुम अगर कॉलेज से चले गए तो जिन्दगी भर मेरी आत्मा मुझे कोसती रहेगी कि मेरे चलते एक लड़के की जिन्दगी खराब हुई।मैं ऐसा होने नहीं दूंगा।'

मिश्र जीक आँखिमे नोर, सिंह साहेबक आँखिमे नोर। ई दृश्य देखि हमरो कना गेल।
'लो खाओ और मुझे वचन दो कि जाने की बात कभी नहीं करोगे।' सिंह साहेब अपने हाथसं प्लेट मिश्रजीक आगाँ बढ़ा देलखिन।
आइ ओ दृश्य मोन पड़ल त बशीर बद्र साहेबक एकटा शेर मोन पड़ि आएल :
'पत्थर मुझे कहते हैं मेरे चाहने वाले
मैं मोम हूँ उसने मुझे छूकर नहीं देखा'
खाइत-खाइत सिंह साहेब गीताक एकटा श्लोक मिश्रजीकें लक्ष्य क'क' कहलखिन। गीताक बहुत श्लोक मिश्र जी कें याद छलनि। सिंह साहेब कें ई जानि क' अतिरिक्त ख़ुशी भेलनि। फेर किछु काल धरि गीताक रसधार बहल।
हम मिश्र जी कें हुनका लग नेने गेलियनि, एहि लेल सिंह साहेब हमरा आशीर्वाद देलनि आ कहलनि दू-तीन दिन मिश्रजीक संग हुनका ओत'
आबक लेल।
हम सभ सिंह साहेबक चरण स्पर्श क'क' हुनका ओत'सं विदा भेलहुँ। हॉस्टल पहुंचिते एकटा छात्र पुछलकनि 'कब जा रहे हैं मिश्र जी?' मिश्र जी मुस्कुराइत पुछलखिन 'और तुम कब जा रहे हो?'
आरामसं कुर्सीपर बैसैत मिश्र जी बजलाह, 'मुझे तो अभी आराम करना है, जिसको जहां जाना हो, जाए।'
बहुत गोटे कें मिश्र जी कें प्रफुल्लित देखि आश्चर्य भ' रहल छलै। हम ठाकुर जी आ झा जी कें ई बात कहलियनि त हिनको सभकें नीक लगलनि।
एहि घटनामे हमर भूमिका बहुत थोड़ छल, मुदा हमरा जे अनुभव भेल से हमरा लेल महत्वपूर्ण सिद्ध भेल। हमरा समस्याक समाधानक

एकटा नीक आ सरल सूत्र हाथ लागि गेल छल जकर उपयोग हम जीवनमे कय बेर केलहुँ आ सभ बेर परिणाम शुभ रहल।

(८)

स्वयंसं साक्षात्कार

सिंह साहेबक बात सत्य सिद्ध भेल। मिश्र जी कें कोनो क्षति नै भेलनि। एक मासक बाद रिजल्ट निकललै। सभकें अपन-अपन तपक अनुसार परीक्षा-फल प्राप्त भेलनि।ठाकुर जी (अशोक कुमार ठाकुर) प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान पौलनि। झाजी आ मिश्र जीक संग हमहूँ द्वितीय श्रेणीमे उतीर्ण भेलहुँ। हमरा लगभग छप्पन प्रतिशत अंक प्राप्त भेल। अंतिम वर्षक परिणाम एहिसं अधलाह नहि हो, से ध्यानमे राखि दोसर वर्षमे पढ़ाइ-लिखाइ प्रारंभ भेल।

आब मात्र एकटा लक्ष्यपर ध्यान केन्द्रित केलहुं।आब गामो जाएब कम

क' देलहुं।गामसं मासे-मासे आवश्यकतानुसार पाइ मनीआर्डर द्वारा प्राप्त भ' जाइ छल।किछु मास पछिला सालक छात्रवृतिक पाइ सेहो संग देलक। मुदा ओ पर्याप्त नहि छल, तें गामसं सेहो मनीआर्डरक प्रतीक्षा रहैत छल। गाममे पाइक व्यवस्था कोना होइत छल,से हम नहि बुझि पबैत छलहुँ।पिता नै चाहैत छलाह जे घरक समस्यासं हम अवगत होइ। गाममे छलहुँ त देखने छलहुँ जे समय-समयपर भार-चंगेरा, ब्राह्मण-भोजन चलैत रहैत छलै। मुदा, ओकर व्यवस्था कोना होइत छलै, ताहि तथ्यसं अनभिग्य छलहुँ।

एक बेर गामसं मनीआर्डर एबामे बहुत देरी भ' गेल। मिश्रजीसं तत्काल किछु पैंच ल' क' काज चला लेलहुं आ फेर गाम चिट्ठी लिखलहुँ। तकर बादो बहुत देरी भेलै, तखन चिन्ता भेल, पैंच सधाबक छल आ दोसर मासक खर्च लेल सेहो आवश्यकता छल। गाम पहुँचलहुँ। पता चलल जे दू कट्ठा खेत भरना ध' क' पाइक व्यवस्थामे लागल छलाह, मुदा नै भ' रहल छलनि। एहि बेर बाबूकें बहुत असहाय देखलियनि। एक ठाम पाँच कट्ठामे गहुम लागल छलनि। गहूम दू मासमे कटितै, अहीपर साल भरिक खर्च निर्भर करतैक। ई कोना भरना लगा देल जाए। एकरा भरना राख' चाहथि, त तुरत पाइक व्यवस्था भ' सकै छनि, मुदा दू मासक बाद फेर सात आदमीक लेल भोजनक व्यवस्थाक प्रश्न छै। पता लागल जे लगभग अधिक खेत भरना लागल छनि, किछु टाका पाँच प्रतिशत मासिक सूदिपर नेने छथिन माने साठि प्रतिशत सालाना ब्याजपर। हित-अपेक्षितक दू टा गहना सेहो बंधक राखि क' काज कएल गेल छै।

बाबू साँझमे लगमे बैसाक' कहलनि : हम आब हिम्मत हारि चुकल छी, हमर विचार जे आब बियाह क' लैह, दोसर कोनो रस्ता नै देखाइए।

हम चिन्तित भ' गेलहुँ। हमरा की करबाक चाही? बाबू त पहिने

बजैत छलाह जे पढ़ि-लिखिक’ अपना मोने वियाह करता, मुदा हुनका सोझां सात आदमीक परिवार छलनि, हमर पढ़ाइक खर्च छलनि। मूडन,उपनयन,श्राद्ध आ बरखीक भोज देखिक’ ई नहि पता चलैत छलै जे घरमे कोनो आर्थिक समस्या छै, आर्थिक स्थितिक पता पढाइक खर्च जुटयबाकाल चलैत छलै। भोजक समय सर-कुटुम्ब सभक सेहो सहयोग प्राप्त हेबाक परम्परा छलै, मुदा समुचित शिक्षाक लेल ई परम्परा नै छलै। समुचित शिक्षा अनिवार्य नहि मानल जाइत छल।

टोलमे दू-चारि परिवार छोडिक’ सभ परिवारक मोटा-मोटी यैह स्थिति छलै,तें हमरा बयसक कय गोटे पढाइ छोडि चुकल छलाह आ गृहस्थ बनि चुकल छलाह, रोजी-रोटीक जोगारमे लागि गेल छलाह। भरिसक एहने स्थितिमे हमर पिता सेहो हाई स्कूलमे पढाइ छोडिक’ नोकरीक लेल कलकत्ताक बाट पकड़ने छल हेताह। मुदा ओ अपनासं नीक जीवनक सपना देखि रहल छलाह आ ताहि लेल हमर पढाई नहि छोडब’ चाहैत छलाह। तखन यैह एकमात्र समाधान देखाइत छलनि जे हमर विवाह करा देथि।

ओहि समय बैंक द्वारा शिक्षा ऋण नहि देल जाइत छलै, तें गरीब परिवारक विद्यार्थीक पढाईक खर्चक लेल विवाह कराएब एकमात्र लोकप्रिय समाधान छलै। बहुत कन्यागत ई सोचिक’ एहेन कन्यादान करैत छलाह जे लड़का पढ़ि-लिखिक’ नीक नोकरी कर’ लगतै त’ कन्याक जीवन सुखमय भ’ जेतनि। अधिक कन्यागतक मनोकामना पूर्ण होइत छलनि। जिनकर मनोकामना पूर्ण नहि होइत छलनि, हुनका देखिक’ दोसर कन्यागत सभ एहेन निर्णय लेबासं डेराइत छलाह। हमरा पिताक सलाह मानबाक अतिरिक्त कोनो दोसर उपाय नहि सूझल।

तय भ' गेलै जे हमर विवाह हैत।

तत्काल बहुत अधिक ब्याजपर किछु पाइ ल'क' हम ढोली विदा भ' गेलहुँ। रस्तामे चिन्तन चलि रहल छल। ओहि समय कोनो लड़का अपन विवाहक सम्बन्धमे अपने नहि किछु बजैत छल। बाबू-बाबा,कक्का-मामा यैह सभ बजैत छलाह। लड़का ओकर पालन करैत छल। हमरा ई सुविधा छल जे हम अपन विचार प्रगट क' सकैत छी। हम सोचलहुँ, जखन विवाह करब आब निश्चित भ' गेल अछि त किएक ने एकर प्रयास करी जे एहेन ठाम हो जतय लड़कीक विषयमे हमरो बूझल हो।

हम मोन पाड़' लगलहुँ एहेन लड़की जकरा देखने होइऐक। समय-समय पर कतहु कोनो गाम जाइत छलहुँ।एक ठाम देखने रही एकटा लड़की, नौमामे पढ़ि रहल छलीह, देखबामे नीक छलीह। मुदा कहियो ने हुनकासं गप भेल छल ने हुनका घरक कोनो आन लोकसं सम्पर्क छल।तकर कोनो आवश्यकता सेहो नहि बुझाएल छल मुदा, हमरा विषयमे हुनका बूझल हेतनि,से सोचैत रही।

ओहि समय यैह अवस्था लड़कीक विवाहक लेल उपयुक्त मानल जाइत छलै। तें हम सोचलहुँ, यदि हुनका सभकें पता चलनि जे हमर विवाह होम' जा रहल अछि, त अवश्य ओ सभ हमरा ओत' प्रस्ताव ल' क' जा सकैत छथि।

बेटाबलाक दिससं पहल करबाक चलन नै छलै। बेटाबला गम्भीर रहैत छलाह, एहिसं बेशी लाभ हेबाक आशा रहैत छलनि। हमरा होइत छल जे लड़का दिससं सेहो पहल करबाकें कोनो अनुचित नै मानल जेबाक चाही।

बेटीबलाकें लड़का आ ओकर परिवारक विषयमे जे किछु पता लगाबक रहै छै से सभटा स्पष्ट सुचित करबैत लड़कीक पिताक नामसं एकटा पत्र लिखि हम पठा देलियनि।

हुनका लिखलियनि जे जौं अपने हमरा परिवारमे अपन कन्याक विवाह करेबाक हेतु उत्सुक होइ, त एक मासक भीतर हमरा अथवा हमर पिताजीसं सम्पर्क करी। ईहो लिखि देलियनि जे एक मास धरि जौं अपनेक कोनो सूचना नहि प्राप्त हैत त हम मानि लेब जे अपनेकें ई कथा पसन्द नहि अछि।

एक मासक बाद एहि कथाक विषयमे हमर सोचब बन्द भेल।

बादमे हम गाम गेलहुँ त पता लागल जे ओतहु दू टा कन्यागत आएल छलाह। एकटा प्रस्ताव आकर्षित केलक। लडकी दसमामे पढैत छलीह। ओहि प्रस्तावक जे अगुआ छलाह, से हमर गामक हमर एकटा संगीक मित्र छलथिन। ओ हमरा मधुबनीमे भेटलाह।ओ हमर पिताक निर्णयमे किछु संशोधन आ हमरासं अपन प्रस्ताव आ सलाहपर स्वीकृति मंगलनि। हम स्वीकार क' लेलियनि। गामपर एलहुँ त बाबूक सोझां हम कन्यागतक आजुक प्रस्तावपर अपन सहमतिक सूचना देलियनि। संयोग सं मामा सेहो ओहि दिन आएल छलाह। बाबू हमर स्वीकृतिक समर्थन क' देलनि। हमरा नीक लागल। मामा सेहो प्रसन्न भेलाह।

दोसर दिन हमरा ढोली घुरबाक रहय। प्रस्तावक अनुसार हमर गामक संगी आ हुनक मित्र सेहो हमरा संगे लहेरियासराय तक एलाह। लडकीवलाक डेरापर हमरा नेने गेलाह। ओत' लडकीक मा-बाबूजी नै छलखिन। हमरा कहल गेल जे साँझ धरि आबि जेथिन। लड़की हमरा सोझां एलीह। पढाई-लिखाई द' किछु पुछलियनि। नीक लागल। हम कहि देलियनि जे हम प्रसन्न छी।

साँझ धरि घरक अभिभावक नहि एलखिन। हमरा चिन्ता भेल। हमरा रातिमे रहबाक अनुरोध केलनि हमर संगीक मित्र। रातिमे ओत' रहब हमरा अनुचित लागल।

ओहि समयमे लड़कीकें लड़का द्वारा देखल जाएब सेहो चलनमे नहि छलै, विवाहसं पहिने लड़की ओत' रहबाक लेल त कियो सोचियो नहि सकैत छल,हमरहु विवेक हमरा अनुमति नहि द' रहल छल। मुदा, ओ रुकबाक लेल जिद्द कर' लगलाह। हम कोनो लाथे घरक बाहर सड़कपर आबि रिक्शापर बैसि गेलहुँ, हमर एकटा सम्बन्धीक आवास छलनि बहुत दूर, ओतहि चल गेलहुँ। राति भरि ओतहि रहि भोरे हुनका डेरा पर गेलहुँ। अपन बैग लेलहुँ जे राति ओतहि रहि गेल रहय।

हमरा कहल गेल जे घरक अभिभावक लोकनि बेशी रातिक' एलाह। हम कहलियनि जे हमर स्वीकृति अछि, हम एखन चलैत छी, चिट्ठीसं अथवा व्यक्तिगत रुपें हमरासं अथवा हमर पिताजी सं सम्पर्क कएल जा सकैत अछि।

रस्ता भरि हम काल्हिक अपन आ हुनका सबहक कर्मक समीक्षा करैत गेलहुं। स्वयंसं सेहो लडैत गेलहुं।

हम एना किए केलिऐ?

ओ हमरा रहबाक लेल जिद्द किए करैत छलाह?

हम राति रहिए जैतिऐ त की भ' जैतै?

हमरा कथीक डर भेल?

हम लघुशंकाक लाथे सड़क पर आबि रिक्सासं निकलि गेलहुँ, हम स्पष्ट हुनका किए नहि कहलियनि जे हम रातिमे नै रहब?

हमरा विषयमे ओ सभ की सोचने हेताह?

हम हुनका सभकें नीक लगलियनि की नहि, से किए ने पुछलियनि? हम एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे ईहो हमरा लेल एकटा परीक्षा छल जाहिमे हमर असफलता सुनिश्चित भ' गेल अछि।

किछुए दिनक बाद पता चलल, हमरा जे लड़की देखब' अनने छलाह, हुनके सौभाग्य भेलनि ओहिठाम ललका धोती आ पाग

पहिरबाक।

(९)

शुभे हो शुभे

हमर शुभचिन्तकगणमे प्रमुख हमर मामा सभ छलाह। मझिला मामा रहिका हाई स्कूलमे अध्यापक छलाह। हुनक परिचयक क्षेत्र व्यापक छलनि। ओ हमर घरक स्थितिसं अवगत छलाह।शनि दिन गाम जाइत काल हमरा गामक कैटोला चौक पर हमर सबहक समाचार प्राप्त करैत आ आवश्यक लगै छलनि त हमरा ओत’ सबहक भेंट-

घांट करैत अपन गाम रुचौल जाइत छलाह।
मामा हमरा घरक समस्याकें दूर करबाक प्रयासमे लोकप्रिय समाधान ताक'मे लागल छलाह। सभ साल कोनो-ने-कोनो परिचित लोकक कन्यादान अथवा वरदानमे मदति करैत छलाह। तें एकर नीक अनुभव छलनि।
रहिकासं सौराठक दूरी कम छै।
सभ साल सौराठ-सभाक आयोजन ओहि समय होइत छलै जखन गाछमे आम पाक' लगैत छलै। दस दिनक ई आयोजन दर्शनीय रहैत छल। मिथिलाक कोनो कोनमे बसैत मैथिल ब्राह्मण, सभ साल एको दिनक लेल एत' अवश्य एबाक कोशिश करैत छलाह। ई सुनैत आएल छलहुँ जे जाहि दिन सबा लाख मैथिल जमा भ' जाइ छथि, ओहि दिन ओत' उपस्थित बरक गाछ मौला जाइ छै। इहो एकटा आकर्षणक विषय होइत छल। हमहूँ कय सालसं ककरो-ने-ककरो संगे एक दिन जाइत छलहुँ।
कन्यादान एकटा पैघ समस्या छलै। लोक कन्याक शिक्षाक लेल चिन्ता नहि करैत छल, एतबे शिक्षा जरूरी बुझैत छल जे चिट्ठी लीख' आबि जाइ जे नोकरी करबा लेल कलकत्ता गेल अपन घरबलाकें चिट्ठी लिखि सकय। लोक कन्याक बियाहक लेल परिश्रम करैत छल। गामे-गामे अपनासं भिन्न गोत्रक उपयुक्त लड़्काक तलाश करैत छल। एहिमे सालो लागि जाइ छलै।
सौराठ सभाक महत्वपूर्ण भूमिका छलै लोकक समस्याक निदानमे। एहि ठाम विभिन्न गामक लोकसभसं एकेठाम भेंट भ' जाइ छलै। विकल्प बहुत भेटि जाइ छलै।
मोन कें एकठाम स्थिर करबाक लेल अनुभवी लोकक आवश्यकता होइ छलै, सेहो एतय भेटि जाइ छलखिन। एहेन लोकक भूमिका सेहो महत्वपूर्ण होइत छलनि जे दुनू पक्षकें जनैत होथि अथवा दुनू पक्षकें

अपन तर्कसं संतुष्ट क’ सकथि।सेहो एत’
भेटि जाइ छलखिन।

एहि सूत्रक उपयोग खूब कएल जाइत छलै जे कन्यादानमे कतहु झूठो बजलासं पाप नहि होइत छैक। कन्यादानमे कोनो तरहें मदति करब धर्म मानल जाइत छलै। तें कन्यागतक कोनो त्रुटिकें लोक झाँपि दैत छल। परिणामस्वरुप कयठाम अनमेल विवाह सेहो भ’ जाइत छलै। दिव्यांग लड़कीक सेहो विवाह भ’ जाइ छलै, मुदा विवाह भेलाक बाद कोनो लड़का कोनो लड़कीक त्याग नहि करैत छल आ ने स्वयं आत्महत्या करैत छल, ई छलै मिथिलाक संस्कृति। एहेन उदाहरण अछि जे एहेन परिवारमे सेहो एक-सं-एक विद्वान आ पुरुषार्थी लोक सभ भेलाह अछि।

कय बेर दिव्यांग लड़का सबहक सेहो विवाह भ’ जाइत छलै नीक लडकीक संग आ लड़की परम्पराक अनुरूप सभ पावनि करैत वरक दीर्घायु हेबाक कामना आ नीक संततिक प्रतीक्षा करैत छलीह। कियो हुनक पतिक शिकायत करनि त ओकरासं गप केनाइ बन्द क’ लैत छलीह।

विवाह भ’ गेलाक बाद सभ ई सोचि संतोष क’ लैत छल जे ओकरा भाग्यमे यैह लिखल छलै। लोक एकरा भगवानक निर्णय मानि लैत छल, तें मोन स्थिर भ’ जाइत छलै, पाछू नहि तकैत छल, आगाँ जे काज रहैत छलै, ताहिमे लागि जाइत छल। मधुश्रावनी कोना हेतै, कोजगरा कोना हेतै, जराउर कोना हेतै ई सभ सोच’ लगैत छल। ई पैघ बात छलै।

घरसं बाहर जे युवक पढ़’ जाइत छलाह अथवा जिनका शहरक हावा लागि जाइत छलनि हुनका इच्छानुकूल विवाह नै भेलापर मोन स्थिर करबामे समय लगैत छलनि।

शहरमे सिनेमा छलै। उपन्यास छलै।
सिनेमा सिखबैत छलै, विवाहसं पहिने लड़की-लड़काक बीच प्रेम हेबाक चाही।
संस्कृति सिखबैत छलै, जकरासं विवाह होइ, ओकरासं प्रेम करक चाही।
परम्परा कहैत छलै, प्रेम-त्रेम नै करक चाही, स्त्रीकें जरूरतिसं बेशी महत्त्व नै देबाक चाही, ओकरा अपना काबूमे जातन द' क' राखक चाही।
हमरा सोझां कखनो क' 'कन्यादान'क बेचारा सी सी मिश्र आबि जाइत छलाह आ कखनो काल दूर, बहुत दूरसं दोसर बुच्ची दाइक स्वर सुनाइ देब' लगैत छल :
'तोरा अंगनामे वसन्त नेने आएब ....
एकदिन मामाक समाद पहुंचल, काल्हि अहाँ सभ तैयारे भ' क' अबै जाउ।
वरियातीकें ध्यानमे राखि किछु गोटेकें तैयार भ'क' चल' लेल अनुरोध कएल गेलनि। सभाक समय सभ घरमे नील-टिनोपाल द' क' लोक धोती-कुरता तैयार रखैत छलाह , की पता काल्हि ककर विवाह ठीक भ' जाइ आ वरियाती जाए पडनि।
हमर शर्ट लोककें नीक नै लगलै। बच्चू भाइ झट द' अपना घरसं प्रेस कएल एकटा शर्ट नेने एलाह। विवाह भेलाक बादे लोक नीक कपड़ा पहिरैत छल। वयसमे बच्चू भाइ हमरासं छोट छलाह, मुदा विवाह भ' चुकल छलनि।
टोलक किछु गोटेक संग हम सभ पहुँचलहुँ सौराठ सभा।
भुस्कौलक एकटा परिचित भेटलाह। हमरे तुरिया छलाह। गप भेल। हिनकासं मामा गाममे कए बेर भेंट भेल छल। ओ हमरा नीक जकां जनैत छलाह। हुनका हमर पढाइक विषयमे सभ किछु बूझल

छलनि। ओ एक गोटेसं परिचय करौलनि। हुनकर मुंह चिन्हार लगैत छल। आर. के. कॉलेज, मधुबनीमे प्री-साइंसमे दोसर सेक्शनमे छलाह। देखने रहियनि मुदा गप-शप नै भेल छल। आइ गप भेल। लदारी घर छनि। बहिनक विवाहक प्रयासमे छथि। हुनकर बड़का भाए आ बाबू सेहो गामक किछु गोटेक संग आएल छलखिन।

दोसर दिससं मामा एलाह, बाबू संग छलखिन। मामा अपन स्कूलक सचिव भिनाइ बाबू द्वारा अनुमोदित एकटा प्रस्तावक सूचना देलनि। पता चलल एखने जाहि व्यक्तिक संग परिचय भेल छल,हुनके बहिन छथिन कन्या।

मामा कन्या पक्षक बहुत गुणगान करैत हमरा आ हमर बाबूजीकें स्वीकार करबाक हेतु तैयार कर' लगलाह। बाबू हमरा दिस तकैत छलाह, हमरा पर दबाब देब' नै चाहैत छलाह। हम कन्याक पिताकें देखलाक बाद मामाकें कहि देलियनि जे ई कथा हमरा पसन्द नै अछि। हमरा बुझा गेल जे लड़की पढ़ल-लिखल नै छै। मामा लड़कीक पढाइ-लिखाइक सम्बन्धमे किछु नै कहैत छलाह।

मामाक किछु और परिचित लोक सभ आबि गेलाह। सभ हमरा बुझब' लगलाह जे कुमरजी जे कहैत छथि ताहिपर आँखि मूनिक' विश्वास कएल जा सकैत अछि, कथा काट' योग्य नै छै। जे सभ कहियो लदारी नै गेल हेताह, सेहो सभ लडकीक शिक्षित हेबाक गारन्टी देब' लगलाह। हमरा बूझल छल जे कन्याक विवाह लेल झूठो बाजब लोक धर्मक काज बुझैत छल। तें हम लोकक बातसं प्रभावित नै भ' रहल छलहुँ।

बाबूजी गुम्म भ' गेल छलाह। मामा दुखी भ' गेल छलाह। बरियाती जाइ लेल जे गामपरसं तैयार भेल आएल छलाह ओहो सभ अगुता रहल छलाह, जल्दी नौ-छौ होइ। कन्यागतकें होइ छलनि जे कियो

लड़की द' गलत बात कहिक' लड़काकें भड़का देलकैए। ओ सभ हमरा संतुष्ट करबाक लेल जोर लगा रहल छलाह।
सहसा मामा कहलनि तों तीन बेर हमरा कहि दैह जे हम एहि ठाम विवाह नै करब त आइ दिनसं हम एहि विवाहक चर्चे नै करब।
'की?'
'नै'
'नै?'
'नै'
बाबू कहलखिन, छोडि दियौ देविन्दर, अहाँ परेशान नै होउ, हम किछु खेत बेचि देबै पढ़ाइक लेल, जबरदस्ती विवाह नै हेतै।
तखने देखलियनि एकटा मास्टर साहेबकें। हाइ स्कूलमे हमरा पढौने छलाह।चारि बरखक बाद आइ सभामे देखलियनि। प्रणाम केलियनि। मास्टर साहेब कहलनि, हमर बेटी पढ़ितो अछि आ घरक काज करबामे सेहो दक्ष अछि। हम आकर्षित भेलहुँ। मधुबनीक एकटा डॉक्टर साहेब जे हमरा आ मास्टर साहेब दूनू गोटेकें जनैत छलाह, मास्टर साहेबसं किछु विवरण प्राप्त कर' लगलाह।
अही बीच एकाएक दुर्गा बाबू प्रगट भेलाह। मिडिल स्कूलमे पढौने छलाह। हमरा कने कात ल' जाक' कहलनि, कुमरजीक बात काटिक' ठीक नै क' रहल छह। हुनका कतेक दुःख भ' रहल छनि, से नै सोचै छहक, आखिर तोरा किए ई कथा पसन्द नै छह?
हम कहलियनि जे हमरा लगैत अछि जे लड़कीक शिक्षा शून्य छै, तें हमरा पसन्द नै अछि।
मास्टर साहेब कह' लगलाह : ई तोहर भ्रम छह, जकरा पास एतेक सम्पति रह्तै तकर बेटी कतहु अशिक्षित होइ, हमरा पता अछि ओइ ठाम मिडिल स्कूल छै, हाइ स्कूल छै, ओहि गामक लड़की अशिक्षित भइए नै सकैत छै। तों व्यर्थ कुमरजी कें दुखी क' रहल छहुन,

आखिर जेठ-श्रेष्ठक आशीर्वाद प्राप्त करबाक चाही।

तेसर बेर मामा हमरासं पुछ्लनि : बाजह, की?

हमर बकार बन्द भ' गेल।

दुर्गा बाबू बजलाह : जाइ जाउ, सिद्धान्त लिखाउ।

चहल-पहल शुरू भ' गेल। सभ गोटे विभिन्न दिशामे अलग-अलग काज लेल सक्रिय भ' गेलाह।

एक गोटे, जिनका वरियाती नहि जेबाक छलनि, से अपन साइकिलसं समाद ल'क' गाम पठाओल गेलाह।

पन्द्रह गोटे वरियाती जाइ लेल तैयार कएल गेलाह।

जे गामसं साइकिलसं आएल छलाह, से अपने साइकिलसं विदा भेलाह। शेष गोटेक लेल रिक्शाक व्यवस्था भेल। लदारीसं जे सभ साइकिलसं आएल छलाह, से निकलि गेलाह गाम समाद ल'क' विधि-व्यवहार आ और वस्तुक ओरिआओन करयबा लेल।

एकटा रिक्शापर हमरा संगे लड़कीक पिता विदा भेलाह जे पचास बीघाक मालिक, सात बहिनक एकमात्र भाए आ दूटा शिक्षित पुत्र, तीन टा अशिक्षित कन्याक पिता छलाह।

सौराठसं रहिका, कपिलेश्वर स्थान, बसौली, औंसी, केवटी, दड़िमा होइत लदारी पहुँचबामे दू घंटासं बेशी लागल हेतै। बाटेमे रही त अन्हार भ' गेल रहै।

हाजीपुर चौकसं थोड़े दूर पूब आबि आमक गाछी सबहक बीच होइत एकटा पोखरिक कात द' क' दरबज्जापर पहुंचलापर आंगनसं किछु हूलि-मालि सुनाइ पडल। एकर अतिरिक्त कोनो और आयोजन देखबामे नहि अबैत छल जाहिसं बुझाइ जे एत' कोनो लड़कीक विवाह होम' वला छै।

हमरा मोनक भीतर एकटा सी सी मिश्र परेशान भ' रहल छलाह।

हम एकटा स्वचालित मशीन भ' गेल छलहुँ।
हमरा किछु मधुर खुआक' परिक्षण क' क' आंगन ल' जाइ गेलीह, त हमरा भीतरक सी सी मिश्र और व्यथित भ' गेलाह। बलि-वेदीपर चढ़बासं पहिने हम मामासं एक बेर सम्पर्क कर' चाहलहुँ।
कोठलीक गेटक एक कात हम छलहुँ, दोसर कात मामा छलाह। हम मामाकें कहलियनि जे लड़कीक विषयमे हमर अनुमान सही छल। मामा न्यायाधीशक आसन धेलनि,'आब लड़की कनाहि होइ, घेघाहि होइ, चिन्ता करबाक काज नै छै। सभटा भगवानपर छोडि दहुन।' आंगनमे लोक सभ चिन्तित छलाह जे कियो हमरा कहि देलक अछि जे लड़की कनाहि छै।
हम जे मामासं गप करैत छलहुँ त कियो नुकाक' सुनबाक कोशिश केलनि आ हमरा मूंहसं एकटा शब्द 'लड़की' आ मामाक एकटा शब्द 'कनाहि', यैह दूटा शब्दकें मिलाक' उपस्थित लघु कथाकार सभ तुरंत एकटा लघु कथा तैयार क' लेलनि जे कियो लड़काकें भड़का देलकैए जे लडकी कनाहि छै। सी बी आइ तुरंत रिपोर्ट द' देलकै जे ई काज फल्लाँ गामक लोकक अछि, ओ सभ एत' विवाह कर' चाहै छलै, नै भेलै तें ई उडा देलकै जे लड़की कनाहि छै, जाहिसं लड़का कहै जे हम वियाह नै करब।
दरबज्जापर हमर पिता चिन्तित छलाह। चिन्तित छलाह वरियातीमे आएल किछु लोक, हुनका होइ छलनि जे लड़का कहीं भागि ने जाइ अथवा कहीं ई ने कहि दै जे हम नै करब विवाह। एहेन स्थितिमे हुनकर सबहक की हाल हेतनि, एहि आस-पासमे कोनो कुटुम्ब नै छथिन जत' जाक' रहताह आ एते रातिमे पन्द्रह-बीस किलोमीटर गाम कोना घुरताह। हुनका सोझां कयटा सूनल कथा छलनि जे लड़का बेदीतरसं भागि गेलै अथवा भगा देल गेलै आ वरियाती सभ जेना-तेना अपन जान बचाक' पडेलाह।

हमरा सोझां प्रगट भेलाह एकटा बड़का कल्लावला लोक मार्कंडेय ठाकुर,' ठाकुरजी अहाँ पहिने हमरा कन्याकें देखि लिय', कोनो त्रुटि बुझाय त नै करू विवाह।'

हम कहलियनि जे काज आगू बढ़ाउ, हमरा आब कोनो आपत्ति नै अछि।

तुरंत दृश्य बदलि गेलै। गीत-नाद शुरू भेल। पंडित जुगेश्वर झा अपन पोथी-पतरा ल'क' आसन धेलनि, हजाम अपन काजमे लागि गेलाह।

बुच्ची दाइ, क्षमा करब,बच्ची दाइ अपने एतेटा घोघ तनने हमरा बगलमे छलीह।

हमरा भीतर एकटा बच्चा छल जकर बैलून फूटि गेल छलै आ ओ कानि रहल छल।

हमरा भीतर एकटा सी सी मिश्र छलाह जे एहि विवाहक आलोचना क' रहल छलाह : जकर-जकर विवाह भ' रहल छै ओ एक-दोसरकें देखबो ने केने अछि तखन एहि गीत-नाद आ मंत्रोच्चारक की प्रयोजन?

हमरा भीतर अनिलजी छलाह जे गीत सुनबामे आ ओकर अर्थ बुझबामे लागल छलाह, ओहि गीत सभमे सुधार कर' चाहैत छलाह, ओकरा स्थानपर नव रचनामे
लागल छलाह।

हमरा भीतर रहिका हाइ स्कूलक उप-प्रधानाध्यापक श्री देवेन्द्र कुमरक एकटा आज्ञाकारी भागिन छलाह जे पंडितजी जेना-जेना कहैत छलखिन, तेना-तेना केने जा रहल छलाह, जे-जे पढ़बैत छलखिन, से-से पढने जा रहल छलाह।

हमरा भीतर तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोलीक द्वितीय वर्षक एकटा छात्र छल जे पढ़ाइक खर्चक चिन्तासं मुक्त भ' गेल छल किन्तु

अपना चारुकात एकटा देबाल देखि रहल छल।
हमरा भीतर क्यो छल जे हमरा बुझा रहल छल, यैह कहबैत छै 'भावी', देखि लेलहुं ने, अहाँकें कुदला आ फनलासं की भेल, वैह भ' रहल छै जे अस्तित्व चाहै छै।
आब हमरा आ हुनका स्थितिमे एतबे अंतर रहि गेल छल जे हम घोघ नहि तनने छलहुँ, ओ घोघ तनने छलीह।

(१०)

कल्पना-गगनमे

वरियातीक प्रस्थान करबाक समय बाबू हमरा लग आबि कहलनि कनियाँक पढाइक व्यवस्था कएल जेतै।
हुनका चलि गेलाक बाद लागल जे आब एसगरे हमरा अपन समस्याक

समाधान ताक' पडत। हमरा इहो लागल जे मोनसं अथवा बेमोनसं जखन हम पूर्ण सचेत अवस्थामे विवाह स्वीकार क' लेलहुं त आब अनका ककरो दोख देब उचित नहि, एकर जिम्मेदार हम स्वयं छी। 'कन्यादान'क सी सी मिश्र जकाँ सासुरसं भागि जाएब उचित नै बुझाएल। हम समाधानक लेल 'द्विरागमन'क कथाक चिन्तन कर' लगलहुँ। बुच्ची दाइकें ठीकसं बुझबाक प्रयास कर' लगलहुँ। मोनक बातकें शब्दमे बान्ह्बाक प्रयास केलहुं।

गीत

कल्पना-गगनमे मधुवन सजा रहल छी
दुनियाँमे जीबाक अछि, तें मन लगा रहल छी।

अछि आइ ने कोनो सपना
अछि आइ ने कोनो धारा
मोनो ह्रदयक प्रश्नक
नहि दैत अछि उतारा

उमड़ल जे बात मनमे, कहितो लजा रहल छी
दुनियाँमे जीबाक अछि, तें मन लगा रहल छी।

किछु पांती बादमे जोडायल :

चोट'छि ह्रदयमे लागल
नहि नोर टा बहैए
मरियोक' हम जिबै छी
हंसि ठोर टा कहैए

रूसल जे भाव मनमे, तकरे मना रहल छी

दुनियाँमे जीबाक अछि,तें मन लगा रहल छी।

जिनगीसं सीख भेटल

हंसिक' समय बितायब

सुखमे ने मुंह खसायब

दर्दमे ने छटपटायब

बाजल जे तार तनमे, तकरे बजा रहल छी
दुनियाँमे जीबाक अछि तें मन लगा रहल छी।

शास्त्र कहैत अछि जे विवाह, जन्म आ मृत्यु जहिया, जत' जेना हेबाक रहैत छै तहिना होइत छैक।
शास्त्रमे हजारो बरखक अनुभवपर आधारित ज्ञान अछि।
ई ज्ञान लोककें निराशासं बंचबैत अछि।
अपन स्थितिक समीक्षा केलहुं त लागल जे हमरा जते नहि भेटल अछि ताहिसं बहुत बेशी ओ अछि जे भेटल अछि। हमरा जे भेटल अछि ओहिपर ध्यान केन्द्रित क' क' प्रसन्न रहबाक चाही आ जे प्रयास केलासं और नीक भ' सकैछै,ताहि लेल प्रसन्नतापूर्वक प्रयास करबाक चाही। हमरा सोझां एखन द्वितीय बर्षक परीक्षा अछि, जल्दीए ढोली जाए पडत।
सासुरमे सासु छलीह जजुआरक। ससुर छलाह, दू टा जेठ सार छलाह, दुनू सरहोजि छलीह, चारिटा छोट-छोट सरबेटा छलाह। दूटा जेठ सारि छलीह जे नहि आएल छलीह। एकटाक सासुर डुमरा (बेनीपट्टी) छलनि, दोसरक सासुर कोरियाही (सीतामढ़ी) छलनि। एकटा साढ़ू आएल छलाह जे दरभंगामे बी.ए.मे पढ़ैत छलाह।
दिनमे कते गोटे भेंट कर' अबैत छलाह। अधिक लोक पीसा कहैत छलाह। चारि दिन भरि घर-दरबज्जा भरि रहैत स्त्रीगण सभक मूँहें

गीत सुनैत छलहुँ अथवा नव-नव लोक सभसं परिचय होइत छल। गीत सभक भास मनमोहक लगैत छल किन्तु शब्द सभमे सुधारक/परिवर्तनक आवश्यकता लगैत छल। एहेन एकटा गीत तैयार भेल :

घुमा दियनु हे ससुर अंगनामे।

नहूँ-नहूं चलियौ दुलहा
जोरसं ने चलियौ
एखनेसं कनियांकेर
हाथ ने छोड़ियौ

धरा दियनु हे ससुर अंगनामे।

देखब दुलहा कहियो
हुए ने गलती
अपने चलबै आगाँ
कनियाँ पाछाँ-पाछाँ चलती

सिखा दियनु हे ससुर अंगनामे।

पोथी मे ने भेटत दुलहा
एहेन गियान
जिनगी भरिमे संगी एहेन
भेटत क्यो ने आन

लिखा दियनु हे ससुर अंगनामे।

देखब दुलहा कहियो
ई संगी नहि छुटय
सासुरक बान्हल प्रेमक
डोरी ने ई टूटय

बन्हा दियनु हे ससुर अंगनामे।

देलहु अमोल धन
राखब जोगाकय
बड पछ्तायब
एकरा गमाकय
बुझा दियनु हे ससुर अंगनामे।
वर-कनियाँ होइए
एके गाड़ीके दू पहिया
हैत बड कचोट
बिसरबै ई जहिया
रटा दियनु हे ससुर अंगनामे।

चारि दिनक बाद साँझमे हाजीपुर अथवा खिरमा जाइत छलहुँ। संगमे सार आ टोलक किछु गोटे रहैत छलाह। सबेरेसं साँझ धरि पान खेबाक अभ्यास जोर पकडलक।

बहुत गोटेसं भेंट-घाँट नियमित होइत रहैत छल, मुदा एक गोटेसं भेंट करक लेल अठारह घंटा प्रतीक्षा कर' पडैत छल।पूरा वाक्य सुनबाक लेल दस दिन प्रतीक्षा कर' पडल।

ओ वाक्य छल ' आब कहिया एबै?'

भरिसक अही छोट-छीन वाक्यमे छिपल छल जकरासं विवाह हो, तकरासं प्रेम करबाक दर्शन।

ढोली पहुंचलाक बाद परीक्षाक तैयारीमे लागि गेलहुँ। किछुए दिनक बाद सासुरसं चिट्ठी आएल। ठाकुरजी सोझांमे छलाह। हम पढ़लिऐ त' हंसी लागल। ठाकुरजीकें कहलियनि पढ़िक' अर्थ हमरा बुझा दिय'। ठाकुरजी पढ़' लगलाह एके दममे हंसैत पढ़ने जा रहल छलाह, कहलनि पूर्ण विराम त छैहे नै,रुकू कत'।

कनेक खुशी भेल जे अक्षरक ज्ञान त छन्हि। एकर मतलब किछु

सुधारक आशा कयल जा सकैत अछि। चिट्ठीसं ई बुझबामे आयल जे मधुश्रावणीमे हमर आएब सुनिश्चित करबाक अनुरोध कएल गेल अछि। अनुमान कएल गेल जे ओइ समय तक परीक्षा पूर्ण नै भेल रह्तै तें जाएब संभव नहि अछि। परीक्षा शुरू भ' गेल त एकटा चिट्ठी पठा देलियंनि।

ई जुनि बुझू झूठ कहै छी।
कहिया दर्शन हैत अहाँसं
आंगुरपर हम दिन गनै छी।
सासुर अएबाक होइतछि इच्छा
मुदा चलैतछि एखन परीक्षा
बितत कोना ई मिलन-प्रतीक्षा
कखनो-कखनो खूब सोचै छी,
ई जुनि बुझू झूठ कहै छी।
हैत परीक्षा-फल जं ने बढ़ियाँ
लोक कहत जे अभागलि कनियाँ
चुटकी लेत हमरा भरि दुनियाँ
मोन मारि तें एखन पढै छी,
ई जुनि बुझू झूठ कहै छी।
जुनि बूझब जे अहाँकें बिसरलौं
ककरहु माया-जालमे फंसलौं
हम त अहाँकेर हाथ पकड़लौं
अहींकेर प्रेम-गगनमे उडै छी,
ई जुनि बुझू झूठ कहै छी।
बीतत परीक्षा शीघ्रे आयब

तखन अपन हम कुशल सुनायब
अहाँ कथू ले' ने गाल फुलायब
चिट्ठी एखन बस एतबे लिखै छी,
ई जुनि बुझू झूठ कहै छी।

एखन विदेहमे भाइ राम लोचन ठाकुर जी पर जे विशेषांक आएल अछि, ताहिमे वंदना किशोरजी द्वारा जे साक्षात्कार प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिमे एक प्रश्नक जबाब दैत भाइ कहैत छथि जे हमरा पत्नीकें अक्षरक ज्ञान छलनि, मात्राक नहि।

हमरा लगैत अछि जे इहो प्रश्न पूछल जेबाक चाही जे ओहि स्थितिमे परिवर्तनक हेतु अहाँ द्वारा की प्रयास कएल गेलै। मुदा, बड़ड देरी भ' गेल अछि, आब ई प्रश्न ककरासं पूछब?

ओहि समयमे ई स्थिति सामान्य रहैक। 'कन्यादान'क बाद 'द्विरागमन' उपन्यासमे हरिमोहन बाबू जे समाधानक एकटा 'मॉडल' देने रहथि तकर कतेक उपयोग भेल अथवा ओकर की प्रभाव ओहि समयक लोकपर पडल, से एकटा शोधक विषय भ' सकैत अछि।

शास्त्र ईहो कहैत अछि जे हमर एकटा निर्णय हमरा कत'सं कत' पहुंचा सकैत अछि तकर ठेकान नहि, तें सभ काज सोचिक' करक चाही। बहुत काज अज्ञानतावश लोक करैत अछि, जाधरि ज्ञान होइ ताबत बहुत देरी भ' गेल रहै छै।

गलतीसं जे अनुभव होइत छैक से सीढ़ीक काज क' सकैत अछि। मुदा किछु गलती एहेन होइछ जकर परिणाम ई अवसर नहि दैछ जे ओ सीढ़ीक काज क' सकय।

हमर एकटा कवि-मित्र छलाह आर. के. रवि। हमरा छत्तीसगढ़मे २८ साल पहिने परिचय भेल छल। हजारीबाग जिलासं गेल छलाह। ६ साल धरि प्रायः प्रतिदिन भेंट होइत छलाह। ओकर बाद मोबाइलसं सम्पर्क बनल छल। सालमे दू-चारि बेर मोबाइल पर गप नीक जकाँ

भ' जाइत छल। हिन्दीमे गीत-गजल लिखैत छलाह। गजलक दू टा पोथी प्रकाशित छनि : 'सुबह की धूप' आ 'धूप और छांव'। ओ कोलियरीमे काज करैत छलाह।

किछु साल पहिने सेवा निवृत भेल छलाह। बिलासपुरमे घर बनौलनि। बेटी-बेटा

इंजिनियर छथिन, बंगलोरमे काज करै जाइ छथि, मुदा किछु माससं घरेसं काज करैत छथिन। पत्नी शिक्षिका छथिन बिलासपुरसं दूर एकटा ग्रामीण विद्यालयमे। संगे रहैत छलाह।

दू साल पहिने गप भेल छल त कहलनि जे उच्च-रक्त चापक नियंत्रणक हेतु अंग्रेजी दबाइ जे खाइ छलाह से छोडि देलनि, छओ मास दुनू साँझ दू-दू टा मुक्तावटी खाक' आब ओहो छोड देलनि आ रक्त-चाप सामान्य रहैत छनि।

ओ उच्च रक्त-चापक समस्यासं अपनाकें मुक्त मानैत छलाह। बीस जुलाई २०२० क' गप भेल त कहलनि जे पत्नीक ट्रान्सफर बिलासपुर करेबाक प्रयासमे लागल छी, नै भ' रहल अछि।

गत २६ मार्चक' बाथ रूममे खसि पडलाह, ब्रेन हेमरेज भ' गेलनि। अपोलो अस्पतालमे भर्ती कएल गेलनि। चारि दिन वेंटीलेटरपर रहलाह। फगुआक प्रात ३० मार्चक' एहि जगतकें नमस्कार कहि गेलाह। हुनक पुत्र हिमांशुसं सम्पर्क भेल छल। चिरमिरी कोलियरीक अवकाश प्राप्त इंजिनियर आ गायक-मित्र दादा पल्टू मुखर्जी सर्वप्रथम ई सूचना देलनि आ समय-समयपर स्थितिसं अवगत करबैत रहलाह अछि । दादा सेहो बिलासपुरमे रहैत छथि। दादा रविजीक आ हमर दस-दस टा गीत-गजलकें शास्त्रीय धुनमे संगीतबद्ध क'क' कैसेट उपलब्ध करौने छलाह जकरा हमसभ एखन धरि सुरक्षित नहि राखि सकलहुँ। दादाकें आब डॉक्टर जोरसं गीत गेबासं मना क' देने छनि।

तें अपने अपन गायनसं संतुष्ट नै होइत छथि।
दादा रविजीक बेटी नेहाकें गायनक किछु अभ्यास करौने छलथिन। नेहा नोकरीमे बंगलोर चलि गेलीह त दादाक प्रशिक्षण छुटि गेलनि। नेहा इंजिनियर छथि मुदा गीत-संगीतसं लगाव आ शौक छनि, स्वर नीक छनि। आब नेहा अपन पिताक गीत-गजलकें स्वर द' क' हुनक शब्द सभकें जीवन्त राखि सकैत छथि। ई रविजीक प्रति उचित श्रद्धांजलि हेतनि।
लगैत अछि जे उच्च-रक्त चापक नियंत्रण हेतु दबाइ छोड़बाक निर्णय ओत' पहुंचा देलकनि जत' हुनका लेल आब किछु नहि कएल जा सकैत छै। हुनकहि दू टा शेरसं हुनका श्रद्धांजलि अर्पित करबाक प्रयास क' रहल छी :
'बेखुदी मे जो कभी गीत गुनगुनाते हैं
आंसू छलकाते हुए गम भी चले आते हैं'
'वक्त बिगड़े, तो बदल जाता है सारा आलम
खुद के साये भी खुद से दूर नजर आते हैं'

'विदेह'मे प्रकाशित विशेषांकमे अग्रज राम लोचन ठाकुर जीक मैथिली साहित्य मे योगदानक विषयमे बहुत किछु जनलाक बाद आश्चर्य होइत अछि जे एतेक कर्मठ लोक एतेक जल्दी कोना अदृश्य भ' गेलाह? कोन एहेन गलती कोन स्तरसं भेलै जे स्थिति ककरो नियंत्रणमे नहि रहि सकलै?   १२ मार्चक' घरसं निकलला आ एके बेर ६ अप्रैलक' मृत अवस्थामे पाओल गेलाह। बीचक स्थितिक कल्पनासं मोन बेकल भ' जाइत अछि। भाइ कत' खसल-पडल हेताह–कोना दीन-हीन अवस्थामे की भेल हेतनि, एहि जिज्ञासाक समाधान कठिन अछि। आदरणीय राम लोचन जी एहेन साहित्यकारकें एहि तरहें जाएब सभकें व्यथित केलकनि। कते गोटे हुनका खोजमे डेढ़ माससं लागल

छलाह।

मुदा अहू प्रश्नक उत्तर लेल शास्त्रक सुनय पडत : विवाह आ जन्म-मरण ....।

ओना भाइ बहुत किछु मैथिली साहित्य जगतकें द' गेल छथि जाहिसं ओ युग-युग धरि चर्चामे सभ ठाम उपस्थित रहताह।

अपन अनुभव यैह कहैत अछि जे बहुत स्थितिक स्पष्टीकरण लोक अपनहु नै द' सकैत अछि। गत पन्द्रह मार्च क' हम अपने बाथरूममे कोना खसि पडलहुँ से नै बुझि सकलिऐ। ने पिच्छर छलै, ने चप्पल स्लिप करबाक कोनो आन कारण बूझ' मे आएल आ ने बी पीक दबाइ छोड़ने रही। देबालसं टकरयबाक कारण माथक अगिला भागमे चोट बेशी बुझाएल।

बेहोश नै भेलहुँ आ ने ब्लीडिंग भेलै। तत्काल बर्फ सं ओहि ठाम थोड़े काल सेकाई क' क' बादमे डॉक्टरसं सम्पर्क केलहुं। दस दिनक हेतु चारि टा दबाइ लिखलनि।दर्द त नै होइ छल तैयो दर्दक दबाइ सेहो कम-सं-कम तीन दिन ल' लेब' कहलनि।

पाँच दिनक बाद दुपहरमे भोजनक बाद दीवानपर बैसल-बैसल औंघी लागि गेल आ नीचां खसि पडलहुँ। ऐ बेर केहुनीमे बेशी चोट लागल। एम्स गेलहुँ। हड्डी विभागमे सम्पर्क केलहुँ। डॉक्टर दू सप्ताहक लेल दबाइ लीखि देलनि।

जेनरल मेडिसिन विभागमे सेहो सम्पर्क केलहुं। ओहि ठाम बी.पी.क दबाइ बदलि लेबाक सलाह भेटल। पहिने टेलमा ४० लै छलहुँ, आब टेलमा ए एम लेब' कहलनि।

सूगरसं एखन धरि दुनू गोटे बचल छी। आँखिक ऑपरेशनक स्थिति एखनधरि नै आएल अछि, समय-समयपर आइ-ड्रापसं काज चलि जाइत अछि।

हम डॉक्टरक सलाहक अनुसार चारि सालसं हाई बी पी आ चारि माससं प्रोस्टेटक दबाइ यूरिमक्स-डी ल' रहल छी। पत्नी पच्चीस सालसं बी पीक दबाइ ल' रहल छथि। दुनू गोटे कोरोनाक टीकाक दुनू डोज ल' नेने छी। यात्रासं बचैत छी। घरसं बाहर मास्कक उपयोग करैत छी। भोजनमे संयम रखैत छी। तथापि मृत्यु देवताकें जखन एबाक हेतनि, हुनका के मनाक' सकैत छनि? मुदा वैज्ञानिक अथवा सरकारी आदेश अथवा सुझावक अवहेलना करैत स्वयं मृत्युकें आमंत्रित करी, ई त कोनो दृष्टिसं उचित नहि कहल जा सकैत अछि।

गाममे लोक कोरोनासं नहि डेराइत अछि। एखनहु बहुत लोक एकरा फूसि बुझैत छथि। शहरोमे किछु लोक सरकारी सुझावक पालन करब आवश्यक नहि बुझैत छथि। परिणाम चिन्तित करबा योग्य अछि।

सौभाग्यसं हमरा सबहक बीच ८०-९० बरखसं उपरक लोक सभ सेहो छथि जे सक्रिय छथि। हमरा लगैत अछि जे बेरा-बेरी हुनका सबहक स्वाथ्य-प्रबंधनक जानकारी सार्वजनिक होइत त नीक बात होइत। हुनका सभक अनुभवसं बहुत किछु सीखल जा सकैत अछि।

दू बरखक दुनू नातिन धीया, यानवी आ तीन बरखक पोता आर्षभ एखन नै जागल अछि, तें लिखबाक काजक लेल भोरक समय हमरा लेल उपयुक्त रहैत अछि।

आब जे घडी ने तीनू जागत । पहिने धीया कि यानवी जगतीह आ सोझे हमरा लग आबिक' लैपटॉपक की-बोर्ड पर आक्रमण करतीह।

प्रातसं राति दस बजे धरि तीनू गोटे हमरा सबहक मनोरंजन आ उपयोग करैत रहैत छथि जे एहि अवस्थामे बहुत ठाम दुर्लभ रहैत

अछि।

पटना / १४.०४.२०२१

(११)

चरैवेति-चरैवेति-एक

चारि बीघा वला परिवारक दुःख-सुखसं परिचित छलहुँ। विवाह भेलाक बाद पचास बीघावला परिवारक दुःख-सुखसं परिचय होम' लागल। मधुश्रावणीमे हम एक दिन लेल सासुर जा सकलहुँ। वापस ढोली गेलहुँ त किछुए दिनक बाद सूचना भेटल जे हमर जेठसारि कलकत्ताक एकटा अस्पतालमे अंतिम सांस लेलनि। तीनटा पुत्र बारह बरखसं उपरक छलखिन। एकटा पुत्री तीन सालक आ एकटा छओ मासक छलखिन। किछुए मास पहिने गेल छलीह कलकत्ता। दांतक पीड़ा भेलनि। ऑपरेशनक बाद खाँसी भेलनि।ब्लीडिंग भेलनि। नहि बचि सकलीह। अपने गाममे सासुक सेवामे लागल रहलीह आ चारिटा दियर आ दूटा पुत्रक पढाई-लिखाई कलकत्तामे चलैत रहलनि तकर प्रबन्धमे हिनक प्रशंसनीय भूमिकाक चर्चा हुनकासं भेंटक उत्कंठा जगबैत छल, मुदा आब तकर कोनो संभावना नहि रहि गेल छल। आब यैह इच्छा रहि गेल जे साढू कोना प्रबन्ध क' रहल छथि, से देखी ।

हम सभ अंतिम वर्षमे गेलहुँ त आल इन्डिया टूर प्रोग्राम कॉलेज दिससं तैयार कएल गेलै। डेढ़ मासक प्रोग्राम छलै। एकटा बोगी सुरक्षित रह्तै, ट्रेन आ बसक माध्यमसं यात्रा पूर्ण हेबाक छलै। हम एहि यात्राकें नहि छोड़' चाहैत छलहुँ। समस्या छलै जे छात्रकें अपना दिससं चारि सै टाका अग्रिम जमा कर' पडैत छलै।

हम एकटा अनुशासन अपनाले' बनौने रही जे ससुरसं कोनो मांग नहि करबनि आ ने कोनो अपेक्षा करब।

एकदिन ओ अपने कहलनि, ठाकुर हिनकाले' एकटा साइकिल लेबाक अछि, तें दरभंगा चलब। हम पुछलियनि कोन साइकिल लेबाक विचार छनि, त कहलनि सेन रेले।ओहि समयमे यैह सभसं नीक साइकिल होइत छलै। पुछलियनि कते दामक छै, कहलनि चारि सै। हम चुप्प भ' गेलहुँ, पुछलनि त कहलियनि जे साइकिलक बदला हमरा दोसर चीज बेशी उपयुक्त लगैए। कहलियनि जे आल इण्डिया टूर प्रोग्राम लेल एतबे राशि जमा करबाक छै। कहलनि हमरा कोनो आपत्ति नै अछि। हमर समस्याक निदान भ' गेल।

समस्तीपुर जंक्शनसं यात्रा आरम्भ भेल १२.०४.१९७२ क' बुध दिन । हम साढूकें पत्र द्वारा सुचित क' देने छलियनि। सबेरे हावड़ा जंक्शन गाड़ी पहुँचलै। साढू उपस्थित छलाह।पहिल भेंट छल तथापि असौकर्य नहि भेल। दुनू गोटे जलखै केलहुं। संक्षिप्त गप-शप भेल। हम कहलियनि कोन नम्बरक बस अथवा ट्रामसं पहुंचब, से बता दिय', हम साँझमे डेरापर आबि जाएब।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार दिनभरि सबहक संग घुमैत रहलहुं। बोटैनिकल गार्डन, चिड़ियाखाना, अजाएब-घर,विक्टोरिया मेमोरियल, धर्मतल्ला होइत साँझमे साढूक डेरा पहुंचि गेलहुँ।

एकटा कोठलीमे साढूक गृहस्थीक सभ सामान छलनि।

यैह हिनक तपस्या-स्थल छलनि।

एतहि रहि चारिटा अनुज आ बादमे तीनटा पुत्रक शिक्षाक संग अपन नोकरीक प्रबन्धन करैत आबि रहल छलाह। भोजन अपने बनबैत छलाह। भोजन बनबैत काल बच्चाकें पढाइमे मदति सेहो करैत छलाह। ओहि समयमे एकटा बालक संगे छलखिन। रूममे दूटा चौकी छलै। भोजनक बाद एकटा चौकीक उपर दोसर चौकी राखिक' नीचांमे ओछाइन भेल। ओहिपर फ़ैलसं हम दुनू साढू बड़ी राति धरि

गप-शप करैत रहलहुं। सादू अपन पारिवारिक जीवनक कथा कहैत-कहैत पत्नीक योगदानक चर्च करैत भावुक भ' जाइत छलाह। ककरो संग अपन दुःख-सुख बँटलासं मोन किछु हल्लुक होइत छैक।
हमरा बहुत किछु बूझल छल तथापि हुनका मूँहें सूनि नीक लागल। बडकी दाइक तपस्याक परिणाम कते दिन बाद आएत, से सोचैत रहलहुं।
दोसर दिन सादूक अनुज बिन्दु जीक संग किछु महत्वपूर्ण स्थान जेना कलकत्ता यूनिवर्सिटी इंडस्ट्रियल एंड टेक्नोलॉजिकल म्यूजियम, कालीघाट, प्लानाटोरियम आदि देखि एलहुं। साँझमे सादू हबर-हबर भोजन बनाक' हमरा भोजन करा देलनि। बिन्दुजी हमरा हावड़ा जंक्शन पहुंचा देलनि। राति सबा आठ बजे पुरीक लेल प्रस्थान करै गेलहुँ।
राति बर्थपर पडल-पडल बड़ी काल धरि सोचैत रहलहुं सादू, बडकी दाइ, दू टा अबोध पुत्री आ तीन टा पुत्रक भविष्यक विषयमे।
एक पीढ़ीक तपस्याक फल दोसर पीढ़ीकें प्राप्त होइत छैक। लगभग पचास साल भ' गेलै। आइ बडकी दाइ आ सादूक तपस्या आ आशीर्वादक प्रमाण बनल छथि सम्मानित सेवासं भारमुक्त भेल हुनक दू टा पुत्र आ जर्मनी, अमेरिका, बंगलोर, जमशेदपुरमे हिनका सबहक इंजीनियर, डॉक्टर पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू आ जमाए लोकनि।
अपन पूर्वजक प्रति सम्मान व्यक्त करबाक संस्कृति अनमोल अछि। हम सभ आइ जाहि ठाम छी ओहिठाम पहुचबामे हमर पूर्वज लोकनिक की योगदान रहल छनि, से जानबाक चाही।
सबेरे हम सभ पुरी पहुँचलहुँ।
सभ गोटे बंगालक खाड़ीमे ज्वार-भाटाक आनन्द लैत फेर चापा कलपर स्नान क' क' भगवान् जगन्नाथक दर्शन करबाक लेल मन्दिर जाइ गेलहुँ।

ज्वार-भाटाक आनन्द लोककें पानिमे उतरबाक लेल आकर्षित करैत छैक। पानिक प्रवल प्रवाह कखनो लोककें ऊपर ल' जाक'छोडि अबैत अछि त कखनो नेने-नेने बीचमे पहुंचा दैत अछि जत'सं लोक घुरियो सकैए, नहियों घुरि सकैए। दू साल पहिने हमर परिचित एकटा पति-पत्नी विवाहक बाद यात्रापर गेल छलाह। ज्वार-भाटा आकर्षित केलकनि। पानिमे उतरै गेलाह। थोड़े काल आनन्दमे रहलाह। किछुए कालमे आनन्द शोकमे परिवर्तित भ' गेलनि । दुनू गोटेकें पानिक प्रवल प्रवाह झिकने चल गेलनि मुदा वापस एके गोटेकें केलकनि। कनियाँ कनैत रहि गेलीह, पति वापस नै एलखिन।

एहेन दुर्घटना कम होइछै, मुदा होइछै।

तें हमरा दूरेसं ज्वार-भाटाक आनन्द लेब ठीक लगैए। बत्तीस बरखक बाद फेर पुरी जेबाक अवसर आएल त होटलमे स्नान क'क' आरती देख' मन्दिर गेलहुँ। बादमे दूरेसं ज्वार-भाटाक आनन्द लै गेलहुँ। शास्त्रमे द्रष्टा बनिक' संसारक सौन्दर्य देखबाक सन्देश अछि। मुदा, लोक डूबिक' आनन्द लेबाक चक्करमे बहुत किछु गमा बैसैत अछि।

भोजनक बाद गाड़ी वाल्टेर लेल प्रस्थान केलक।

दोसर दिन भोरे वाल्टेर (आन्ध्र प्रदेश) पहुंचै गेलहुँ।

स्नान-जलखैक बाद सिटी भ्रमण कय विशाखापत्तनमक बंदरगाह देखि अबै

गेलहुँ। एकटा मन्दिर सेहो देखि एलहुं।

साढ़े चारि बजे साँझमे गाड़ी मद्रास लेल प्रस्थान केलक।

सभ स्टेशनपर लोकक भीड़ अपन लोकप्रिय अभिनेत्री जय ललिताक स्वागत पुष्प-बृष्टिसं क' रहल छल। सामान्य कद-काठीक अभिनेत्री हाथ जोडि अपन प्रशंसक सबहक अभिवादन स्वीकार क' रहल छलीह। यैह लोकप्रिय अभिनेत्री बादमे तामिल नाडूक लोकप्रिय मुख्य

मन्त्री सेहो भेलीह।
मद्रास सेंट्रल २.३० बजे दूपहरमे पहुंचल रही। मूर मार्केट, पेरिस कार्नर, चाइना मार्केट आ जेमिनी स्टूडियो घूमि अबैत गेलहुँ। एक ठाम एकटा धूप चश्माक दाम पुछलियै, कहलक पचास रुपया। बढ़' लगलौं त बिना नेने जाए नै देब' चाहैत छल। कहलियै पाँच रुपया से ज्यादा नहीं देंगे। तुरत द' देलक। तैयो भेल जे ठका गेलहुँ। एहने सन अनुभव बहुत गोटेकें भेलनि। फेर कतहु कोनो वस्तुक दाम नै पुछलियै।
राति ८ बजे गाड़ी मद्रास सेंट्रलसं प्रस्थान करैत दोसर दिन सबेरे पाँच बजे इरोड जंक्शन पहुंचल। इरोडसं ६.३० बजे प्रस्थान क' क' साढ़े बारह बजे दूपहरमे तिरुचिरापल्ली पहुचै गेलहुँ। ओहि ठाम एकटा मन्दिर देख' जाइ गेलहुँ। रातिमे साढ़े बारह बजे प्रस्थान क' क' दोसर दिन साढ़े बारह बजे दूपहरमे रामेश्वरम पहुँचै गेलहुँ।
हिन्द महासागरमे स्नान कय पाँच बजे बाइस टा कुण्डमे सेहो स्नान करै गेलहुँ।
महासागर देखि मोन पडल कतेक कथा जे नान्हिटासं सुनैत आबि रहल छलहुँ। दस हजार साल पहिने भेल सीता-हरणक कथा, हनुमानजी द्वारा समुद्र फानिक' विभीषणक सहयोगसं सीता माताक पता लगयबाक कथा, लंका दहनक कथा, बानर सेनाक सहयोगसं एहि महासागरपर बनल सेतुक कथा, ओइपार कतेक दिन तक चलल युद्धक कथा, राम द्वारा रावणक संहारक कथा।
आब विचार करैत छी त लगैत अछि जे रावण आइ कोरोनाक रूपमे आबि चुकल अछि जे सम्पूर्ण विश्वकें आतंकित केने अछि। ओहि समय दस टा मुंह ल'क' आएल छल, एखन हजारो-लाखो मुंह ल'क' उपस्थित अछि। ओ रावण देखाइ दैत छल, तें ओकरा हनुमानजी आ अंगद सेहो लुलुआ लेलखिन, एखन त ओ देखाइए नै

दैत अछि। एहेन स्थितिमे ओकर नाभि कत' छै,से के कहत? ओइ बेर त बेर-बेर गरदनि काइटक' भगवान अपने परेशान भ' गेल छलाह।

संयोग देखियौ ओम्हर अयोध्यामे रामक आगमनक हल्ला भेलै, एम्हर अदृश्य भेषमे रावण सौंसे दुनियामे त्राहि-त्राहि मचा देलक।

युद्ध चलि रहल अछि।

रामक सेनामे लाखो प्रतिभाशाली विशेषग्य- चिकित्सकक टीम दिन-राति पुल तैयार करबामे लागल अछि। किछु लोक रावणक ख़ुफ़ियाक रूपमे काज क' रहल छथि। पुल बनबामे देरी करबा रहल छथि। कुर्सी पयबाक, कुर्सी बचयबाक अथवा कुर्सी हथियेबाक प्रोजेक्टपर सेहो काज संगहि चलि रहल अछि। किछु गोटे रंग-विरंगक डहकन तैयार क' रहल छथि।

काज बहुत भेलैए। करोडो लोककें दुनू खोराक टीका पड़लनि। जान बचयबाक लेल सुझाव देल गेल छनि जे घरेमे रहू। एकटासं काज नै चालत, दू टा मास्क लगाक' रहू। बेर-बेर हाथ धोइत रहू। दूनू डोज लेलाक बादो संक्रमण हो त चिन्ता नहि करब। डॉक्टरसं संपर्क क' क' सभटा दबाइ ल' लिय' आ जांच सेहो करबा लेब। सभटा प्रोटोकाल सुनिश्चित राखब त मरब नै। शेष लोक सभ ले' सेहो अभियान शुरू भ' चुकल अछि।

हमहूँ दुनू गोटे १२ अप्रैलक' दोसर डोज लेलहुं। चारिम दिन माने १५ क' हम भरि राति बोखारमे रहलहुं। बोखार १०२ तक रहल। पानिक पट्टी मात्रसं ठीक भ' गेल, मुदा फेर दस दिनक बाद बोखार आएल। डॉक्टरसं सम्पर्क केलहुँ। डॉक्टर साहेब सभटा दबाइ लीखि देलनि जे अखबारमे प्रकाशित कएल गेल छलै। कोरोना वला तीनू नै भेटल। यैह दबाइ भेटल :

१.पेरासिटामोल ६५०

२.अज़िथ्रोमायसिन ५००

३.विटामिन सी

दू दिनक बाद आब बोखार नहि अछि। अज़िथ्रोमायसिन तीन दिन ल' चुकल छी। पाँच दिनक सुझाव छल, तें दू दिन और लइए लेब, से सोचैत छी। हिनका पेरासिटामोलसं काज चलि गेलनि।

परसू रातिमे नाक जाम भ' गेल। राति भरि निन्न नहि भेल। चिन्ता भेल, मुदा सरिसोक तेलक प्रयोगसं लाभ भेल। ऐसं नै होइत तखन फेर डॉक्टर- अस्पताल-सिलिंडर की-की कर' पडैत आ की-की होइत से के जानय !

एम्हर तरह-तरहक प्रयोग व्यक्तिगत स्तरपर सेहो लोक क' रहल अछि।

हमर मित्र सुधाकान्तजी सुचित केलनि अछि जे शहरक अस्पताल सभमे ओक्सिजनक कमी सूनि एक गोटे, जिनकर ओक्सिजन स्तर कम भ' रहल छलनि, गाम आबि गेलाह आ एकटा पीपड़क गाछक जड़ि लग साफ़ क'क' ओतहि सात दिनसं रहै छथि आ एकदम स्वस्थ छथि।

एमहर नारद जी द्वारा कतहु ईहो प्रसारित कएल गेल अछि जे जहिया आ जखने ई रावण कोनो चुनावक रैलीमे चलि गेल अथवा गाम दिस गेल, ओही क्षण ई जरिक' भस्म भ' जाएत,कारण एहि बेर ब्रह्माजीसं वरदान मंगैत काल अही दुनू ठाम अपन सुरक्षाक आश्वासन मांगब बिसरि गेल। तें देखै नै छिऐ जे गाममे मूडन, उपनयन, एकादशीक यग्य, विवाहक भोज-भात आदि अबाधित चलि रहल अछि आ पटना,दिल्ली, मुंबई और जहां-तहांसं आबि लोक एहिमे सम्मिलित भ' क' अपन योगदान दैत अयशसं बचि रहल छथि।

शहरमे प्रति दिन आत्मा सभ देह छोडैत जा रहल छथि।

कुमार गगनकें नहि बचा सकलियनि।
मनोज मनुज नहि बचि सकलाह।
अदभुत लेखक नरेन्द्र कोहली नै रहलाह।
अदभुत गीतकार-गजलकार कुँवर बेचैन चल गेलाह।
कतेक घरक खाम्ह खसि पडल। कतेक घरक दीप मिझा गेल।
लोक आतंकित अछि। किनकर कहिया आ कखन नंबर आबि जेतनि, से निश्चित नहि अछि।
एखन क्यो खोंखी करैत अछि, त डेरा जाइ छी। क्यो छीकै छै, त डर भ' जाइए।
आपातकालमे लिखल गेल दुष्यंत कुमार जीक ई शेर मोन पड़ि रहल अछि :
'सैर करने के लिए सड़कों पे निकल जाते थे
अब तो आकाश से पथराव का डर होता है'
नीरज जी सेहो कहने छथि :
' मित्रो हर पल को जिओ अंतिम पल ही मान
अंतिम पल है कौन-सा कौन सका है जान'
एकटा स्वामी जी कहैत छलाह, जतेक पवित्र आत्मा सभ एखन जा रहल छथि, से किछुए सालक बाद वापस आबि जेताह आ हिनके सभसं हैत सतयुगक स्थापना।
स्वामी जीक बातसं मरबाक डर कम भेल अछि।
पटना /३०.०४.२०२१

(१२)

चरैवेति-चरैवेति-दू

रामेश्वरमसं गाड़ी २० अप्रैल क' रातिमे साढ़े दस बजे प्रस्थान केलक। २१ क' ६ बजे सबेरे मदुरै पहुंचल।

मीनाक्षी मन्दिर जा क' दर्शन क'क' ९ बजे प्रस्थान - ४ बजे तीरू जंक्शन पहुंचै गेलहुँ।

ओत'सं ११.५० बजे रातिमे प्रस्थान - ६ बजे ईरोड आ ओत' सं ७ बजे प्रस्थान क' २ बजे जल्लारपेट पहुचै गेलहुँ।

ओत' सं ९ बजे रातिमे प्रस्थान - २३ क' भोरे आर्कोनम पहुँचलहुँ। २४ क' ३.२० बजे दुपहरमे जनता एक्सप्रेससं पुणे लेल प्रस्थान क' २५ क' साँझमे ७ बजे पुणे पहुँचै गेलहुँ।

२७ क' ४.३० बजे भोरे बॉम्बे वी टी पहुँचलहुँ।

८.३० बजे खेलानन्दक डेरा गेलहुँ। हमरासं एक कक्षा आगाँ पढैत छलाह। गामसं एक साल पहिने आएल छलाह खेलानन्द। मामा गामक किछु गोटे काज करै छलखिन, हुनके सभ लग रहै छलाह। कहलनि जे आब दुःख होइए जे कम-सं-कम मैट्रिक पास क' क' आएल रहितहुँ त ढंगक नोकरी भेटल रहैत। नीक लागल ई देखि जे अपन पूर्व परिचित लोक सबहक संग नीक ठाम रहैत छथि। बिना भोजन केने नहि आब' देलनि।

ओत'सं घूरिक' १०.३० बजे स्टेशन एलहुँ। फेर अजायब घर, शंताकृज़ हबाई अड्डा घूमि अबै गेलहुँ।

२८ क' हबाई अड्डा, ओत'सं हैंगिंग गार्डन घुमैत साँझमे ८.३० बजे समुद्रक किछेरमे चौपाटी जाइ गेलहुँ।

३ मईक' आगरा किला,ताजमहल,फतेहपुर सिकरी घूमि स्टेशन आबि गेलहुँ।

४ क' आगरासं मथुरा, वृन्दावन घूमि मथुरा जंक्शनसं राति ११.४० बजे दिल्लीक लेल प्रस्थान।
५ क' सबेरे नई दिल्ली जंक्शन पहुँचै गेलहुँ।
आइ. ए. आर. आइ., जंतर-मंतर, जवाहरलाल नेहरु मेमोरियल, क़ुतुब मीनार,राष्ट्रपति भवन, संसद भवन,लाल किला,राजघाट समाधि, शान्ति घाट, विजय घाट घुमै गेलहुँ।
कृष्ण कान्त जीसं भेंट करबाक प्रयास केलहुँ। पता चलल जे तीन दिन पहिने गाम चलि गेलाह। हमर प्रिय लोक छलाह। पढैमे खूब मेधावी। मुदा गाममे नीक वातावरण नहि भेटबाक कारण पढ़ाइ छोडि दिल्ली चलि गेल छलाह। हम हुनकासं भेंट कर' चाहैत छलहुँ। हुनक स्थिति देख' चाहैत छलहुँ। नहि भेटलाह त सोचलहुँ आब गामे जाएब त भेंट करबनि।
६ क' इंडिया गेट, ललित बाबू ओत', राष्ट्रपति भवन घूमि सहरसाक सांसद चिरंजीव झा जी ओत' भोजन हम आ मिश्रजी केलहुँ।
सी पी आइ नेता-सांसद भोगेन्द्र बाबू ओत' गेलहुँ। हुनका संगे संसद भवन गेलहुँ। हुनकासँ पहिल बेर भेंट भेल छल मुदा ओ से भान नै हुअ' देलनि।संगे नेने गेलाह संसद भवन, कत' की होइ छै से जानकारी भेटल, हुनका संगे सी पी आइ कार्यालय गेलहुँ। हुनका संगे फोटो खिचबै गेलहुँ। तीन-चारि घंटा हुनका संग रहलहुँ हम दूनू गोटे, नीक लागल। बादमे स्टेशन आबि पुरानी दिल्ली स्टेशन गेलहुँ। राति ९.४५ बजे लुधियानाक लेल गाड़ी प्रस्थान केलक।
७ क' रवि रहै। हम आ मिश्रजी ओहिना घूमय निकललहुँ। एक ठाम ऊनक फैक्ट्रीक शाइन बोर्ड देखलिऐ। गेट कीपरकें कहलिऐ जे हम सभ फैक्ट्री घूम' चाहै छी। कहलक, साहब से जाकर पूछो। गेलहुँ। कहलियनि, हम लोग बिहार के एग्रीकल्चर कॉलेज से टूर पर आए

हैं, फैक्ट्री घूमना चाहते हैं। कहलनि, पहले से कोई अनुमति लिये हैं, कोई पत्राचार किया गया था? कहलियनि, नहीं। त कहलनि, फिर मुश्किल है। हम मिश्र जी कें कहलियनि, चलू-चलू, हम सभ यूनिवर्सिटी चलै छी। हम सभ मैथिलीमे गप करैत वापस हुअ' लगलहुँ, त ओ सोर पाडलनि। हम सभ घुमलहुँ।

एहि बेर ओ बहुत आदरसँ कुर्सीपर बैसौलनि। दू-दू टा सिंघारा आ दू-दू टा रसगुल्ला मंगबौलनि। नाम-गाम सभ मैथिलीमे पुछलनि। फेर कहलनि जे हमहूँ सभ दरभंगे जिलाक विभिन्न गामक छी, हमर गाम झंझारपुर लग अछि। बहुत आनन्दित भेलहुँ।

एक गोटे एलाह, हुनका हमरा सबहक परिचय देलखिन। ओ हमरा सभकें संग ल' गेलाह आ सभ किछु देखा देलनि। एक घंटा घूमि-फीरि एलाक बाद एलहुँ त हुनका धन्यवाद दैत बिदा हुअ' लगलहुँ त रोकि लेलनि, कहलनि, अहाँ सभले' भोजन तैयार अछि, बिना भोजन केने नै जा सकै छी। हमरा सभकें आश्चर्य भेल जे पहिल परिचयमे एतेक अपनापन हमरा सभकें कोना उपलब्ध भ' गेल। हम सभ कहलियनि जे साँझमे हमरा सबहक गाड़ी खूजत। ओ कहलनि जे भोजन क' क' थोड़े काल आराम करब, समयसं एक घंटा पहिने स्टेशन पहुचायब हमर काज थिक। ओ बड़ड आग्रह केलनि जे आबि गेल छी त सभ गोटेसं भेंट-घाँट क' लिय', हुनको सभकें नीक लगतनि। नहि माननलनि, ल' गेलाह डेरा।

ओत' जाइत लागल जेना पहिल बेर समधियान पहुँचल होइ। पयर धोब' सं ल' क' भोजन आराम धरिमे बहुत पैघ पाहुनक सत्कार जकाँ व्यवस्था देखि चकित भ' गेलहुँ।

बडकी टा हॉल छलै। सत्ताइस गोटे रहैत छलाह। विभिन्न शिफ्टमे ड्यूटी रहैत छलनि। शिफ्टक अनुसार जे उपलब्ध रहैत छलाह हुनके देख-रेखमे भोजन बनैत छल। एक आदमी सहायताक लेल

रखने छलाह।

भोजनक सँचार देखि गुम्म भ' गेलहुँ।हमरा सबहक आग्रहपर एकटा थारी उपलब्ध भेल। हम सभ जते भोजन क' सकैत छलहुँ ततेक राखि शेष भात,तड़ुआ, तरकारी वापस केलहुँ। एहि लेल बहुत संघर्ष कर' पड़ल।

रंग-विरंगक मुट्ठी काटल आम एकटा बाल्टीमे रखने छलाह, से चलब' लगलाह।

दही आ रसगुल्ला बेरमे फेर बड़का लीला भेल। हम दूनू गोटे मध्यम कोटिक खौकार छलहुँ। ओ सभ बरियाती जकाँ जोर करैत छलाह। कहुना-कहुनाक' हम दूनू गोटे भोजन समाप्त केलहुँ। पान-सुपारी आएल।ओहो सभ जे ओइ दिन छलाह से भोजन केलनि आ तकर बाद आराम करैत-करैत मिथिलाक संस्कृति, भोज, बरियाती आदि विषयपर गप्प आ ठहक्काक कार्यक्रम प्रारम्भ भेल से बड़ी काल धरि चलल।

न्यू एरा वूलेन फैक्ट्री, ओसवाल फैक्ट्री आ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी कैंपस घूमि साँझमे हम सभ स्टेशन पहुंचि गेलहुँ।

रातिमे बर्थपर पडल-पडल बड़ी काल धरि सोचैत रहलहुँ जे अपन भाषामे गप करबाक कारणे हमरा सभकें एकदम नव स्थानमे अपरिचित लोक सभसं अप्रत्यासित सम्मान प्राप्त भेल मुदा की बहुत आवेशसं भोजने कराएब मात्र मिथिलाक संस्कृति छै। कतहु किछु कमीक आभास भेल। किनको मैथिली साहित्यसं रूचि किएक नहि देखलियनि। चारि आनामे मिथिला मिहिर भेटैत छलै,मुदा एतेक मैथिलक बीच एकटा 'मिथिला मिहिर' किए नहि उपलब्ध छल। भाषाक प्रति जागरूकताक अभाव किएक छल, ई प्रश्न बेर-बेर मोनमे उठैत रहल। मुदा हिनका सभकें की कह्बनि जखन गाम-घरमे सेहो

स्थिति एहने अछि, लोक भोज करबामे ओतेक खर्च क’ लैत अछि,किन्तु चारि आनाक एकटा पत्रिका कियो कीनैत होथि से ताकब कठिन अछि। पत्रिका कीनब आवश्यक नहि मानल जाड़त अछि। जखन मधुबनी-दरभंगाक इएह स्थिति अछि त एतेक दूर चाकरी कर’ आएल लुधियानाक मैथिलकें की कहबनि।

८ क’ ३ बजे दिनमे पठानकोट जंक्शन पहुँचलहुँ। रात्रि विश्राम एतहि करै गेलहुँ।

९ क’ ७.३० बजे श्रीनगर लेल प्रस्थान करै गेलहुँ। २.४५ बजे ३४००० फीट ऊंचाइपर पत्नी टॉप पहुंचलहुँ।

कूदमे भोजन करै गेलहुँ।

९.३० बजे रातिमे श्रीनगर पहुंचलहुँ।

एकटा अप्रिय घटना एत’ घटि गेलै।

किछु गोटे होटलमे अपन सामान राखि बाहर निकलि गेलाह। हम ठाकुरजी (अशोक कुमार ठाकुर) आ मिश्र जी फ्रेश भ’ क’ चाह पीबि बाहर निकललहुँ। घूमि-फीरिक’ भोजन क’ क’ राति ११.४० बजे एम्बेसी होटल पहुंचलहुँ।

हमरा सभकें देखिते हमर सबहक एकटा संगी जोर-जोरसं अप्रिय शब्द सभ मूँहसं उगिल’ लगलाह, जकरा लोक गारि कहैत छैक। हम सभ सोच’ लगलहु जे की भ’ गेलै। गपसं लगैत छल जे ओ विशेष स्थितिमे छथि। किछु कालक बाद पता चलल जे हम सभ चाह पीबि क’ निकलि गेलिऐ घूम’ ले’ बाहर, ई सभ तखन बाहरसं आबि गेलाह। होटलक बैरा नहि बुझलकै जे ई सभ नहि पीने छलाह, हिनका सभकें देखि हिनके हाथमे बिल द’ देलकनि। ई किछु विशेष स्थितिमे छलाहे,पाइ द’ क’ झगडा करबाक तैयारी केलनि आ हमरा सभकें देखिते शुरू भ’ गेलाह।

हमरा मोन पडल रस्तामे एकठाम कहने छलाह, हमारी हंगामा पार्टी

किसी से कहीं भी और कभी भी उलझ सकती है। पुछने रहियनि, बिना कारण के भी आप किसी से उलझ जाएंगे त कहलनि, कारण हम ढूढ लेंगे न। हमरा लागल जे एखन धरि हम सभ बांचल छलहुँ मुदा आब हिनका कारण भेटि गेलनि। हमरा एखन पाइ चुकता क' चुप रहि जाएब उचित बुझाएल। हम एहेन स्थितिमे कमजोर भ' जाइ छलहुँ।

अशोक कुमार ठाकुरजीकें अनर्गल बात बर्दाश्त नै होइत छलनि। ओ डांटिक' गारि नै पढबाक लेल चेतौनी देलखिन। ओ ढूसि लडबाक लेल तैयार छल। आगू बढल। हम सभ ठाकुरजीकें रोकि लेलियनि। मिश्र जी ओकरा सामने ठाढ़ भ' गेलखिन। ओ चिकरल, आप हमारे सामने आनेबाले कौन हैं। मिश्र जी कहलखिन, मैं तुम्हारा पैगम्बर हूँ। दू गोटे ओकरो पकड़िक' ओकरा शांत करबाक कोशिश केलक। ओ शांत होइते नहि छल। ठाकुर जी कहलखिन, तुमने हमें गाली दी है, मैं तुम्हें शाप देता हू कि तुम फेल कर जाओगे।

बड़ी काल पर लोक सूतल।

सबेरे ओ एलाह, रात की गलती के लिए मुझे माफ़ कर दीजिए। कहलियनि, ठाकुरजी से कहिये।

ठाकुरजी सं सेहो माफ़ी मंगलनि।

सभ यज्ञमे व्यवधान होइत अछि, से भेलै। यात्रा आगाँ बढ़ल।

१० क' ९.४५ बजे होटलसं प्रस्थान क' १२.३० बजे दुपहरमे सोनमर्ग पहुंचै गेलहुँ।

२.३० बजे ओत'सं प्रस्थान क' ५ बजे होटल वापस आबि जाइ गेलहुँ।

६ बजे चाह पीबि बजार घूमय गेलहुँ। ९.३० बजे होटल घूरि अबै गेलहुँ।

११ क’ ७.३० बजे बससं प्रस्थान क’ चश्मेशाही, निसाद्बाग,आदि रमणीय स्थान सभ देखैत १२.३० बजे ८७ किलोमीटरपर स्थित पहलगाम पहुंचै गेलहुँ।

भोजन क’ घोडासं पहलगामसं २ मीलपर स्थित बेईशरण गेलहुँ। आधा घंटा ओत’ ठहरि ओइठामक मनोहर दृश्य देखैत घोडासं घूरि अबै गेलहुँ।

६ बजे घूरि क’ आबिक’, जलखै क’ क’ सिंकारासँ डल झीलमे ७ बजेसँ १० बजे धरि विचरण करैत झीलक मध्यसं चारू कात पहाडक मनमोहक दृश्यक अवलोकन करैत नेहरू पार्क, कबूतरखाना, चार चिनार आदि महत्वपूर्ण स्थानक आनन्ददायक दृश्यसं लाभान्वित होइत गेलहुँ। श्रीनगरक ओ साँझ, गार्डन बुलबुल (सिंकाराक)क मांझी नूर अहमदक मस्ती भरल प्रेम गीत ‘ ओलाइश्चिगो गाइश्चे दिलदार मे ....’ अविस्मरनीय रहल।

१२ क’ साढ़े नौ बजे होटलसँ प्रस्थान क’ साढ़े बारह बजे गुलमर्ग, डेढ़ बजे खिलनमर्ग पहुंचि क’, ओतहि भोजन क’ पुनः गुलमर्ग होइत घूरि आबि डल झील, बाजार घुमैत, भोजन करैत साढ़े दस बजे होटल आबि गेलहुँ।

१३ क’ टूरिस्ट सेंटरसँ प्रस्थान क’, पौने दू बजे बाटमे भोजन क’ साढ़े नौ बजे पठानकोट जंक्शन पहुँचैत गेलहुँ।

१४ क’ १.४० बजे पठानकोट जंक्शनसँ प्रस्थान क’ ६ बजे जल्लारपेट जंक्शन, १० बजे लुधियाना जंक्शन आ ओत’सँ हरिद्वार लेल प्रस्थान करै गेलहुँ।

१५ क’ ११ बजे हरिद्वार पहुंचि स्नान क’,मन्दिरमे दर्शन-पूजाक बाद भोजन क’ क’ बोगीमे चलि एलहुँ।

१६ क’ सबेरे ऋषिकेश लेल प्रस्थान करै गेलहुँ। ९.३० बजे ऋषिकेश पहुंचि साढ़े दस वला ट्रेनसं पुनः हरिद्वार आबि संध्या

३.४५ बजे हरिद्वारसं देहरादून लेल प्रस्थान क' साढ़े पाँच बजे देहरादून पहुंचै गेलहुँ।

१७ क' सबेरे आठ बजे मसूरीक लेल प्रस्थान क' पौने दस बजे मसूरी पहुँचै गेलहुँ। रोप-वे पर यात्रा केलहुं। लाल टिब्बा गेलहुँ, जतय टेलिस्कोपसं हिमालय, तिलायनामाक गौतम मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, बद्रीनाथ, केदारनाथ, सेंट जेवियर्स कॉलेज देखिक' डेढ़ बजे बससं विदा भ' क' साढ़े तीन बजे स्टेशन पहुँचै गेलहुँ।

१८ क' भोरे साढ़े तीन बजे बरेलीसं प्रस्थान क' काठगोदाम आ ओत' सं साढ़े नौ बजे बससं नैनीताल लेल प्रस्थान करै गेलहुँ। साढ़े ग्यारह बजे नैनीताल पहुँचै गेलहुँ। साँझमे नावसं झीलमे विचरण करै गेलहुँ। बजार घूमि, भोजन क' क' दस बजे रातिमे वापस अबै गेलहुँ।

१९ क' साढ़े दस बजे नैनीतालसँ प्रस्थान क' काठगोदाम होइत सबा बारह बजे पन्तनगर पहुँचै गेलहुँ। साढ़े तीन बजे पन्तनगर कृषि कॉलेज पहुँचै गेलहुँ।

साँझमे सबा छौ बजे पन्तनगरसँ ट्रेनसँ बरेली लेल प्रस्थान करै गेलहुँ।

२० क' २.३० बजे भोरमे बरेलीसं लखनऊ लेल प्रस्थान क' सबा नौ बजे लखनउ पहुँचै गेलहुँ।

छोटा इमामबाडा, बड़ा इमामबाडा, भूल भुलैया, चिड़ियाखाना, म्यूजियम, बोटैनिकल गार्डन घूमै गेलहुँ।

२१ क' भोरे ४ बजे लखनउसँ कानपुर लेल प्रस्थान कएल गेल।

७ बजे कानपुर पहुँचै गेलहुँ। बड गरमी छलै। दिन भरि ओतहि विश्राम करै गेलहुँ।

२२ क' भोरे २.३० बजे कानपुरसँ वनारसक लेल प्रस्थान कएल गेल।

सबेरे आठ बजे इलाहाबाद पहुँचै गेलहुँ। ९.३० बजे ओत'सँ प्रस्थान क' तीन बजे वनारस पहुँचै गेलहुँ।

हिन्दू यूनिवर्सिटी, बिडला मन्दिर,संकट मोचन,श्री सत्य नारायण तुलसी मानस मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, बाबा विश्वनाथ मन्दिर घूमै गेलहुँ।

गंगामे स्नान क', बाबा विश्वनाथक पूजा क' क' राति पौने नौ बजे स्टेशन घूरि अबै गेलहुँ।

२३ क' १२.१५ बजे वनारससँ प्रस्थान कय मुग़लसराय होइत तीन बजे अपराह्नमे पटना जंक्शन पहुँचै गेलहुँ। आकाशवाणी,पटना गेलहुँ। साढ़े नौ बजे रातिमे पटना जंक्शनसँ प्रस्थान कय राति बारह बजे बरौनी जंक्शन पहुँचलहुँ।

२४ क' भोरे पाँच बजे बरौनीसँ प्रस्थान क' सात बजे समस्तीपुर जंक्शन पहुँचै गेलहुँ।

समस्तीपुर जंक्शनसं आठ बजे प्रस्थान क' सबा नौ बजे दरभंगा पहुँचलहुँ।

दरभंगासँ बससँ एगारह बजे गाम सलमपुर शम्भुआड (मधुबनी)पहुँचि गेलहुँ।

टूर प्रोग्रामक समाप्तिपर एक सप्ताहक विशेष अवकाश स्वीकृत भेल छलै,

से तीन दिन गाममे बीतल आ तीन दिन सासुरमे।

ढोली पहुंचि फेर सभ गोटे पढाइमे लागि गेलहुँ।

दू मासक बाद परीक्षा भेलै।

ठाकुरजीक श्राप फलित भेलनि।

अशोक कुमार ठाकुर प्रथम श्रेणीमे प्रथम एलाह।

हम, मिश्र जी, नन्द कुमार झाजी द्वितीय श्रेणीमे उतीर्ण भेलहुँ।

हमरा संतोष भेल जे प्राप्तांक ५६.२ % आएल, एहि आधारपर बैंकमे बहालीक लेल होइबला प्रतियोगिता परीक्षामे सम्मिलित भ' सकै छी।
ठाकुरजी ओही कॉलेजमे एम्.एस.सी.(ए जी) कर' लगलाह।
हम सभ बैंकमे नोकरीक लेल प्रतियोगिता परीक्षाक प्रतीक्षा कर' लगलहुँ।

(१३)

कल्पना आ यथार्थ

ढोलीसँ गाम जाइत काल दरभंगामे टैक्सी स्टैंड पर भेटलाह रामपट्टीक आर के रमण जी। हुनकासँ किछु गीत सुनने रही आर के कॉलेजमे भेल विद्यापति पर्वमे। बहुत नीक लागल रहय। हुनकासँ गप भेल। हुनको दरभंगासँ मधुबनीबला टैक्सी पकड़बाक रहनि। रस्तामे हुनका जना देलियनि जे हमहूँ लिखै छी।
ओ पुछलनि जे कोनो रचना संगमे अछि। हम हुनका एकटा रचना देख' देलियनि। कविता रहै 'रूपांतरण'
ओ कहलनि, हम ई राखि लै छी, वैदेहीक अगिला अंकमे छपि जाएत (आदरणीय सोमदेवजी छलाह 'वैदेही'क सम्पादक)। पुछ्लनि, और की लिखै छी, त कहलियनि जे एखन किछु गीत सेहो लीखि रहल

छी। ओ कहलनि फल्लाँ तारीक क' कोइलखमे विद्यापति पर्व मनाओल जेतै, अहूँ आउ, किछु और साहित्यकार सभसँ परिचय हैत।

कोइलख गेलहुँ। नीक लागल। मधुपजी, किरणजी, सोमदेवजीकें सेहो देखलियनि। पहिल बेर हुनका सभसँ कविता सुनबाक अवसर भेटल छल, से बड्ड नीक लागल। हमरो काव्य पाठ लेल प्रस्तुत कएल गेल। दूटा रचना सुनौलियनि।

श्रोता सबहक प्रतिक्रिया आ साहित्यकार लोकनिक आशीषसँ हमर उत्साहवर्धन भेल।

तकर बाद रामपट्टी, कथवार आ रहिका सेहो विद्यापति पर्वमे भाग लेलहुँ। कमलाकान्तजी, 'अकेला' जी, शंकपियाजी, प्रदीपजी आ प्रवासी साहित्यालंकारजीसँ सेहो परिचय भेल। रहिकामे आदरणीय रवीन्द्रजी आ उदय चन्द्र झा 'विनोद'जीसँ परिचय भेल।

एकठाम एकटा गीत प्रस्तुत केने रही जकर अंतिम पांती ई रहै :

'दुख केर इ राति बौआ बीतत अबस्से, असरा गरीबक भगवान् रे, जुनि कान रे बौआ जुनि कान रे।'

आर के रमणजी कहलनि जे 'असरा गरीबक भगवान रे' के बदला 'जहिया तों हेबही जुआन रे' हमरा बेशी नीक लगैत। पूरा गीत ई अछि :

जुनि कान जुनि कान जुनि कान रे

बौआ जुनि कान रे।

नै तँ कौआ ल' जेतौ तोहर कान रे।। बौआ ....

खा ले जल्दी, सूति रह चुप-चाप

नहि तँ भकौआँ धरतौ,

सुनहिन हे जंगलमे गीदड़ बजै छै
टाङ पकड़ि ल' जेतौ
एतौ लकड़सुंघा धोकड़ीमे कसिक'
नेने चल जेतौ अपन गाम रे। ।......
काल्हि अबै छै बौआके बाबू
नेने कते बस्तुनमा
हमरा बौआ ले' अंगा - टोपी
रंग-विरंगक खेलौना
सायकिल के घंटी बौआ टुनटुन बजेतै
देखि जुड़ायत हमर प्राण रे। .....
बुचिया रधिया बड़ बदमास'छि
बौआ हमर बुधियार
भोरे बौआक बाबाकें कहिक'
मङबा देबै कुसियार
काल्हि खन नानीक गामसँ अबै छै,
चंङेरा भरल पूरी -पकवान रे। .....
भोरे बौआले' भानस करबै
भात- दालि- तरकारी
बुचियाकें कनिञो नै देबै
बौआकें भरि थारी
दुखकेर ई राति बौआ बीतत अबस्से
असरा गरीबक भगवान रे। ....

१९७८ मे प्रकाशित गीत-संग्रह 'तोरा अंगनामे'क पृष्ठ चारि आ पाँचपर ई गीत छपल अछि। इन्टरनेट पत्रिका 'विदेह'क साइटपर पोथी सेहो ई पोथी उपलब्ध अछि।

१०.०५.२०२१ क' यू-ट्युब पर 'नीलम मैथिली' द्वारा अशोक चंचल जीक स्वरमे ई गीत प्रस्तुत कयल गेल अछि जाहि मे 'वस्तुनमा'क स्थानपर 'वस्तुनामा' कहल गेल अछि, जे ठीक नै लागि रहल छै। विडियो तैयार करबा काल प्रस्तुतकर्ता आ गायक दुनू गोटेकें मूल गीतक शब्दक शुद्ध उच्चारण सुनिश्चित करबाक चाहियनि।
एहि प्रस्तुतिमे एकटा और त्रुटि भेल अछि जे गीतकारक नाम रवीन्द्र नाथ ठाकुर अंकित अछि। हमरा द्वारा सुचित केलापर एकठाम त सुधार कयल गेलै, मुदा फ्रंट पर एखनो सुधार बांकी अछि। आब दुनू नाम आबि रहल अछि। आदरणीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर जी मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गीतकार छथि। लोकप्रियताक लेल हुनक नामक उपयोग हुनक सहमतिक बिना नहि कयल जेबाक चाही।
आर के रमणजीक एकटा गीत 'अहांकेर इजोरिया कहाँ हम मँगै छी, अन्हारोमे हमरो जीब' त दीय'..... बहुत नीक लागल रहय। प्रवासी साहित्यालंकारजीक 'अन्नपूर्णा' सेहो सभकें बहुत नीक लागल रहनि। प्रदीपजीक कयटा गीत बहुत लोकप्रिय भेल छलनि।
रहिकामे कवि सम्मलेन खूब नीक होइत छलैक । रवीन्द्रजी पहिने कवि सम्मलेनमे सुन्दर कविता अथवा गीत प्रस्तुत करैत छलाह, सांस्कृतिक कार्यक्रममे एसगर अथवा महेन्द्र झा जीक संग रंग-विरंगक मनोरंजक गीत प्रस्तुत करैत छलाह जे लोककें चारि-चारि घंटा धरि मंत्र मुग्ध केने रहैत छल।
रहिकाक कार्यक्रमक विशेषता ई छलै जे सांस्कृतिक कार्यक्रमसँ कवि-सम्मेलन प्रभावित नहि होइत छलैक। बड़ी-बड़ी राति धरि लोक कवि सम्मेलनक आनन्द लैत रहैत छल। आदरणीय उदय चन्द्र झा 'विनोद' जीक देख-रेखमे कवि-सम्मेलनक आयोजन होइत छल, जे अपने त खूब सुन्दर कविता प्रस्तुत करिते छलाह, अन्त धरि कवि-सम्मेलनकें आकर्षक बनबौने रहैत छलाह। आदरणीय सुमनजी,

किरणजी,मनिपद्मजी, अमरजी, सोमदेवजी, प्रो. मायानन्द बाबू, विनोदजी, रवीन्द्र जी ,अर्जुन कविराज आदि कविक कविता लोककें भाव-विभोर क' दैत छलैक।

हमरा एहि मंचसँ बहुत किछु सिखबाक अवसर भेटल। आदरणीय रवीन्द्र जीसँ नीक जकाँ गप भेल। कहने छलाह जे रचनाकारकें प्रतिदिन कम-सँ -कम एकटा रचना करबाक चाही। यदि कोनो गीतकार प्रतिदिन एकटा गीत लिखैए त सालमे तीन सय पैसठिटा गीत भेलै। एहिमे यदि तीन सय रचनाकें ठीक नै मानैत छी आ ओकरा फाड़िक' फेकियो दैत छी तैयो पैसठिटा त नीक रचना अवश्य हैत। जँ दस साल ई क्रम चलल त छ सय पचासटा रचना त नीक हैत, एतबो पर्याप्त छै। सुझाव त नीक लागल, मुदा एकर क्रियान्वयन नहि कयल भेल।

आदरणीय सोमदेवजी, विनोद जीसँ सेहो मार्ग-दर्शन प्राप्त भेल।

हमर लेखन कार्य बढल।

किछु दिनक बाद सासुर (लदारी)मे कलिगामक मनोजानंद झा जीसँ भेंट भेल।

हुनको सासुर ओतहि छलनि, ओही टोलमे। हमरासँ पहिने हुनकर विवाह भेल छलनि। ओहि समयमे हुनकर गिनती सभसँ नीक जमाएक रूपमे होइ छलनि। हमहूँ हुनक बहुत प्रशंसा सुनने रही। भेंट भेल त नीक लागल।

सम्बन्धक अनुसार हम सभ साढ़ू नै छलहुँ, किन्तु एकहि ठाम सासुर छल,तें हम सभ साढ़ूएक संबोधन चुनलहुँ।

हुनका हमर गीत लेखन द' बुझल छलनि, हमरा हुनक फिल्म-जगतमे अपन जीवन तलाश करबाक प्रयासक विषयमे सूनल छल।

बड़ी काल गप भेल। कय बेर गप भेल। हुनका साहित्यिक विषय

पर चर्चा नीक लगैत छलनि, से हमरो नीक लगैत छल।

एक दिन दूनू गोटे साइकिलसँ दरभंगा गेलहुँ।

बस स्टैंड लग आर के रमण जी भेटि गेलाह, रिक्शासँ कतहु जा रहल छलाह। झाजीसँ परिचय करौलियनि। रमणजी कहलनि, सासुर घुरबासँ पहिने एकटा कविता हमर पत्रिका (मिथिला टाइम्स) लेल हमर कार्यालय (अजय छात्रावास)मे छोड़ने जाएब।

रमनजी त आगू निकलि गेलाह, हम मुश्किलमे पड़ि गेलहुँ। एकटा कविता तुरन्त लीखू, साफ़ कागजपर उतारू आ अजय छात्रावास जाक' जमा क' आउ, ई काज हमरा लेल बहुत कठिन लागल। पहिनेसँ कोनो कविता लीखल नहि छल जे वैह द' दितियंनि आ गीत त हुनका पत्रिका जोगर हमरा लग नहि छल ।

झाजी कहलनि, हुनका भरोस छलनि, तें अहाँकें कहलनि, आब एकरा पूरा हेबाक छै, चलू कोनो होटलमे चाह पिबैत छी आ तकर बाद भ' सकै छै अहाँकें लिखबाक प्रेरणा भेटि जाय।

लहेरियासराय टावर चौक लग कोनो होटलमे बैसलहुँ। दू ताव कागज बगलक स्टेशनरी दोकानसँ अनलहुँ । एक कोनमे खाली टेबुल छलै। हमरा ओहि कोनमे बैसाक' झाजी दूरक टेबुल लग चल गेलाह आ दू टा चाहक आदेश द' देलखिन।

हम कलम नेने कागज दिस थोड़े काल तकैत रहलहुँ। हमर परीक्षा छल। हमरा बूझल छल जे कम्युनिस्ट पार्टीक पत्रिका छै। विषयक लेल मंथन केलहुँ। किछु-किछु लिखाय लागल। आगू बढैत गेलहुँ। थोड़े काल लेल लागल जे हम एसगर ओत' छी, और कियो नै छै। एक बेर फेर चाह आएल।

लिखनाइ चालू छल। एकठाम आबि रुकल।

एक घंटा बीति चुकल छलै। हमरा आब एकरा संक्षिप्त क' क' दोसर कागजपर उतरबाक छल।

झाजी फेर किछु मंगयबाक लेल पुछलनि। मना क' देलियनि।
हम जहाँ ठाढ़ भेलहुँ त झाजी कहलनि, आउ हिनकासँ परिचय कराबी।
झाजी एते कालसँ एक गोटेसँ गप करैत छलाह जे एकटा हिन्दीक पत्रिका 'पूर्वांचल' निकालैत छलाह।
ओ अपन परिचय दैत हमरासँ एकटा हिन्दी कविताक मांग केलनि 'पूर्वांचल' लेल। हम कहलियनि जे हम मैथिलीमे लिखैत छी त ओ कहलनि, एकहुटा त अवश्य लिखने हेबै, हमरा केह्नो कविता देब, चलतै।
हमरा लागल जे झाजी हमर प्रशंसा क' देने हेथिन तें हुनका भरोस भ' गेल छनि जे हम जे देबनि से ठीके हेतै।
हम बहुत पहिने एकेटा तुकबन्दी बला कविता हिन्दीमे लिखने रही, सेहो एखन पूरा मोन नै छल।
फेर कनी काल बैसलहुँ।लीख' लगलहुँ त मोन पडैत गेल। हुनका द' देलियंनि। हमर ढोली छात्रावास बला पता ल' क' ओ प्रस्थान केलनि। हमहूँ सभ बिदा भेलहुँ। अजय छात्रावासमे मिथिला टाइम्सक कोठली बन्द छलै।
केबारक नीचाँ द' क' कोठलीमे राखिक' हम सभ विदा भ' गेलहुँ।
दोसर दिन झाजीक संग फेर बैसार भेल आ आजुक प्रसंगपर बड़ी काल गप भेल।
झाजी फिल्ममे अवसरक तलाशमे छलाह, कहलनि जे फिल्ममे विविध तरहक गीतक उपयोग होइत छै, मैथिलीयोमे एहेन रचना सभ हेबाक चाही जे काल्हि मैथिली फिल्म बन' लगै त ओहि लेल रचना सभ उपलब्ध होइ, एहि लेल और रवीन्द्र नाथ ठाकुरक आवश्यकता हेतैक।
झाजी हमरा कयटा विषय द' देलनि गीत रचनाक लेल : गीत जेहेन

मुकेश गबै छथि, जेहेन लता आ रफ़ी गबैत छथि, प्रेमक गीत, मिलन आ बिछुड़नक गीत।
दुनू गोटे अपन-अपन गामक बाट धेलहुँ।
गाम त आबि गेलहुँ, मुदा मनोज बाबूक देल विषय सब रहि-रहिक' स्मृतिमे आबि जाइत छल। कालान्तरमे किछु गीत हुनक देल विषय आ परिस्थितिकें ध्यानमे रखैत लिखा गेल, मुदा हुनकासँ व्यक्तिगत रुपमे कोनो नियमित सम्पर्क नहि रहल।
हुनकासँ पहिल भेंट अंतिम भेंट सिद्ध भेल। तीन बरखक बाद एकदिन ई खबरि सूनि बहुत आहत भ' गेलहुँ जे हमर प्रिय मनोजानंद झाजीक ह्रदय-गति रुकि गेलनि। लदारीसँ कलिगाम धरि शोकक लहरि व्याप्त भ' गेल छलै। दू बरखक एकटा बेटी आ किछुए दिनक एकटा पुत्र शांतीकें द' क' एहि जगतसँ प्रस्थान क' गेलाह।

कोनो रोजगारक खगता छल हमरा, से आंशिक रूपसँ प्राप्त भेल। प्रशिक्षु-पर्यवेक्षकक रूपमे छओ मासक अवधि लेल डेढ़ सय रूपया स्टाइपेंडपर पौधा संरक्षण केन्द्र, मधुबनीमे काज करबाक अवसर भेटल।
राज्य सरकार द्वारा बहुत गोटेकें ई अवसर विभिन्न जिलामे देल गेलनि । जाधरि बैंकमे भर्तीक विज्ञापन नहि अबैत छै, ताधरि ई हमहूँ स्वीकार क' लेलहुँ। बादमे स्टाइपेंड राशि दू सय क' देल गेलै।
मासमे जिला भरिक प्रशिक्षु सबहक मीटिंग होइ छलै दरभंगामे जिला पौधा संरक्षण पदाधिकारीक कार्यालयमे। किछुए मासक बाद एक दिन मीटिंगमे नन्द कुमार झाजी (मोहना, झंझारपुर) कहलनि जे टाइम्स ऑफ़ इंडियामे बैंकमे बहालीक विज्ञापन आबि गेलैए, जल्दिए पठा दियौ। दोसर दिन मधुबनी पुस्तकालय जाक' टाइम्स ऑफ़ इंडियामे

छपल विज्ञापन देखि तदनुसार आवेदन पठा देलिऐ। दू मासक बाद लिखित परीक्षा भेलै पटनामे। तीन मासक बाद परीक्षामे उतीर्ण हेबाक सूचनाक संग साक्षात्कारमे भाग लेबाक आदेश भेटल।

बैंकमे आवेदन पठा देलाक बाद साक्षात्कारक अवधि धरि लेखन कार्य एकदम छोडि देलहुँ, कतहु जाएब सेहो बन्द क' देने छलहुँ। मुख्य काज छल परीक्षाक तैयारी आ तैयारी मात्र।

साक्षात्कारक बाद फेर पौधा संरक्षण केन्द्र जाएब, घरक कोनो छोट-मोट काज रहैत छल से करैत, पुस्तकालय होइत घर आबि जाइत छलहुँ आ मिथिला मिहिर अथवा मैथिलीक कोनो किताब पढ़ब, कतहु गोष्ठीमे जाएब, साहित्यकार लोकनिक सम्पर्कमे रहब नीक लगैत छल। हमरा होइत छल जे जीवन जीबाक लेल जहिना नोकरीक आवश्यकता अछि, तहिना साहित्यसँ लगाव सेहो आवश्यक अछि। हम देखैत छलिऐक जे लोक स्वस्थ जिनगी नहि जीबि रहल अछि, लोककें सामान्य जिनगी जीबाक लेल जे वस्तु सभ हेबाक चाही, तकर अभाव छै। दोसर दिस अस्वस्थ परम्परा सबहक त्याग करबाक साहसक अभाव सेहो छै। हमरा लगैत छल जे जाधरि साहित्यसँ लगाव नहि रह्तै, ताधरि जीवनमे संतुलन नहि आबि सकैत अछि। हमरा होइ छल जे एहि लेल स्त्री, पुरुष सभकें समान रूपसँ शिक्षित हेबाक चाही। मुदा हम तँ अपने घरमे हारल छी। हमर पत्नी जँ शिक्षित नहि भेलीह त हमहूँ स्वस्थ जीवन नहि जीबि सकैत छी। तें हमरा लगैत छल जे एतेक योग्यता त अवश्य भ' जेबाक चाहियनि जे ओ कोनो पोथी अथवा पत्रिका पढ़ि लेथि। हमरा ई बुझल भ' गेल छल जे अक्षरक ज्ञान छन्हि, तें हम जे चाहैत छी, से संभव भ' सकैत अछि।

एहने विश्वास नेने हम एक बेर सासुर गेलहुँ आ रातिमे भेंट भेल त

मिथिला मिहिरक एकटा पेज सामने राखि पढबाक लेल कहलियनि। बड़ी काल अनुरोध करैत रहि गेलहुँ, ओ टस-सँ -मस नहि भेलीह। हमरा एकदम 'कन्यादान'क बुच्ची दाइ जकाँ लाग' लगलीह। हम कहलियनि, तखन अहाँ बाहर जाउ। ओ बाहर जाक' माए लग जाक' सूति रहलीह। हमरा भेल जे काल्हि अवश्य हमर बात मानि लेतीह, मुदा से नहि भेल। हमर सासु सेहो प्रयास केलनि हमरा तरफसँ मुदा सफल नहि भेलीह। आ लगातार तीन दिन धरि यैह चलैत रहल। ओ अबैत छलीह, हम पढ़' कहैत छलियनि, ओ ओहिना तकैत रहि जाइत छलीह, फेर हम कहैत छलियनि बाहर जाए लेल, ओ निकलिक' माए लग जाक' सुति रहैत छलीह।

चारिम दिन सबेरे जलखै क' क' अपन बैग ल' क' बाहर निकलि गेलहुँ। दरबज्जापर जेठ सार छलाह। ओहो संगे विदा भेलाह। हुनका अपन स्थिति नै कहलियनि, एतबे कहलियनि जे जा रहल छी, जाएब जरूरी अछि। सासु रोकने छलीह, हुनकर बात नै मानने छलहुँ। हम सभ किछु-किछु गप करैत जा रहल छलहुँ। हम तय क' नेने छलहुँ जे आब किन्नहु नहि घूरब। टोलसँ निकलि गाछीक बीच पहुँचल छलहुँ।

चौदह-पन्द्रह सालक एकटा लड़की ह्कमैत आबि आगूमे ठाढ़ भ' गेलि, हुनका पाछू एकटा अधवयसू महिला सेहो छलीह। हम अकबका गेलहुँ। ओ हमरा दूनू गोटेकें झुकिक' प्रणाम केलनि। पाछाँ हुनकर माए छलथिन। ओ कहलनि जे हम सभ अहींसँ भेंट कर' जाइ छलहुँ त पता चलल जे अहाँ जा रहल छी, तें दौडल एलहुँ, अहाँकें आइ नै जाए देब हम सभ।

ओ हमरा हाथसँ हमर बैग ल' लेलनि आ दुनू माइ-धी हमरा सभकें घुरबाक लेल जिद्द क' देलनि। हमरा लेल दुनू अपरिचित छलीह। हमर सार जनैत छलखिन। हुनका सबहक बीच जे गप भेलनि

ताहिसँ पता चलल जे ई बच्ची अपन माए संगे मामा गाम आएल छथि आ हिनकर मामाक घर सटले छैन्हि, ई सभ काल्हि साँझमे एलीह, एखन हमरासँ भेंट कर' गेल छलीह, हमर सासुसँ किछु गप भेलनि आ दौड़लीह हमरा घुरयबाक लेल।

हम किछु बहन्ना बनेलहुँ गाम जेबाक लेल, मुदा ओ सभ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि भेलीह। कहलनि जे आइ हम सभ नहि मानब, हम सभ अहाँसँ बिना गीत सुनने अहाँकें नहि छोडि सकैत छी। हुनकर माए कहलनि जे अहूँकें सूनब आ इहो सुनाएत, चलू आइ नै जाउ। हुनका सभकें देखि-सूनि हमरो पयर आगू नै बढ़' चाहैत छल। लागल जेना हमरे समस्याक समाधानक लेल भगवान हिनका सभकें पठा देलखिनहें।

ओ हमर बैग नै द' रहल छलीह। हमर सार निर्णय सुनौलनि। हमरा कहलनि, आइ यात्रा स्थगित करू, काल्हि देखल जेतै, प्राचीकें कहलखिन दाइ तों बैग नेने जा, हम हिनका चौकपर घुमाक' नेने आबि रहल छी। अही बातपर सहमति भेल। प्राची हमर बैग ल'क' माए संगे घुरि गेलीह। हम सभ हाजीपुर चौकपर पान ख़ाक' घुरलहुँ।

प्राची आ हुनक माएक उपस्थिति वातावरणकें रसमय बना देने छल। वस्तुतः साहित्य आ संगीतक प्रेम जीवनकें आनन्ददायक बना दैत छैक अन्यता लोक ककरो खिधांस करबामे अपन अधिक समय बितबैत रहैत अछि अथवा अपन बड़ाइ करबामे। हिनका दुनू गोटेमे जे ई चेतना छल से हमरा अद्वितीय लागल। प्राची अपन पाठ्य-पुस्तकसँ सेहो कोनो-कोनो कविता सुनबैत छलीह आ हमरो सूनि खूब आनन्दित होइत छलीह। बच्चन जीक कविता ' जो बीत गयी सो बात गयी...' बहुत नीक जकाँ सुनबैत छलीह।

दिनमे भोजनक बाद बड़ी काल आ रातिमे भोजनक बाद थोड़े काल बैसकी चलैत छल : गीत-नाद, कविता-संस्मरण, हंसी-ठहक्का चलैत रहैत छल। एकटा नियमक पालन प्राची करैत छलीह जे ओ कखनो एसगर नै अबैत छलीह, हुनकर माए संगे अबैत छलखिन। कखनो-कखनो हुनकर मामी सभ सेहो अबैत छलखिन, हमर दूनू सरहोजि त रहिते छलीह। किछु पुरुष लोकनि सेहो आबि जाइत छलाह।
प्राची बच्चीकें मौसी कहैत छलखिन आ हिनको गोष्ठीमे सम्मिलित करबाक प्रयास करैत छलीह, मुदा बच्चीकें ओहो सभ परिवर्तित नहि क' सकलीह। एकदिन कहलनि जे द्विरागमनक बाद अहाँक संग रह' लगतीह त देखबै सभ बदलि जेतनि, नैहरमे लाज होइ छनि। हुनकर माए पुछ्लनि, 'अहाँक बहिन सभ तँ पढल-लिखल हेतीह ने?'
हम निरुत्तर भ' गेल रही।
हमरो तीनटा छोट बहिन अछि। ओकरो सबहक पढाइक स्थिति त यैह छै।
हमर चित्त शांत भ' गेल रह्य। हमर सभ प्रश्नक जबाब हमरा भेटि गेल छल।
चमत्कार भेलै जे बच्चीकें बदलबाक हमर प्रयास बन्द भ' गेल। हम फेर हुनका पढबाक जिद्द नै केलियनि, फेर घरसँ बाहर जेबाक लेल नै कलियनि। हम सोचि नेने रही जे हमरा संग जखन रह' लगतीह तखन हम प्रयास करब, आ जँ तैयो संभव नै भेल त अपना बेटीकें खूब पढयबाक लेल बच्चेसँ प्रयास करब।
हमरा लागल जेना अस्तित्व हमरा वैह देलक अछि जे हमरा आ हमरा परिवारक लेल जरूरी अछि, अस्तित्वकें हमरा संग हमर परिवारोक लेल व्यवस्था करबाक छैक।
एकदिन जखन एसगर रही त अपनेसँ गप होइत रह्य।

'जँ बियाहसं पहिने प्राचीकें देखने रहितियनि त ....?'

'त की? वैह होइतै जे भेलैए। बच्चा जे-जे मंगेत छैक से सभटा ओकर माए-बाप नै दै छै, बच्चाकें वैह देल जाइ छै जे माए-बाप ओकरा लेल ठीक बुझैत छै। अहाँ जान' चाहैत छी त कखनो पुछियौ प्राचीकें जे हुनका सभकें केहेन लड़का पसन्द हेतनि।'

एक दिन हुनका पुछलियनि जे अहाँ लेल केहेन वरक खोज भ' रहल अछि, त प्राची चुप रहि गेलीह, हुनक माए कहलनि, काल्हि अबिते छथिन, कहबे करताह।

प्राचीक पिता कलाकार छथिन, कहलनि जे लड़काक लेल हमरा मोनमे कृष्णक छवि आबि रहल अछि, आँखि, नाक,मूँह,केश सभ एहेन जेना हम सभ कृष्णक फोटोमे देखैत छियनि, इंजिनियर अथवा डॉक्टर होथि, हँसमुख होथि, घर-दुआरि- पक्का मकान होनि, खेत-पथार होइन। हमर सार पुछलखिन जे गनबै कत्ते त कहलखिन, से हमर स्थिति त जनिते छी अहाँ सभ जे किछु गनबाक ओकादि नै अछि हमरा, तखन भगवाने कोनो उपाय लगेथिन त हेतै।

किछु गोटेकें हँसी लागि गेल रहै। हमरा हुनक कल्पना,आस्था आ विश्वासपर आश्चर्य भेल रह्य, मुदा पैंतीस बरखक बाद जखन प्राचीसँ भेंट भेल त बड़ी राति धरि हम सभ गोटे हुनके मूँहें हुनक पिताक सपना साकार हेबाक कथा सुनैत रहि गेलहुँ आ विश्वास भेल रह्य जे अस्तित्वक लेल सभ संभव छै।

पटना / १४.०६.२०२१

(१४)

दर्शन : अग्निदेवक

एकटा खुशीक समाचार प्राप्त भेल जे बैंकक प्रतियोगिता परीक्षामे सफल भेलहुँ। मुजफ्फरपुर क्षेत्रमे पन्द्रह गोटेक चयन भेल रहै, पन्द्रहममे हमर नाम रह्य। बहुत हर्षक बात छलै।

थोड़बे दिनमे एकटा दुखद समाचार भेटल जे एकटा बेटी जन्म लेलनि आ छठिहारक प्रात देह छोडि देलनि।

द्विरागमन नहि भेल छल, विवाहक तेसर साल हेबाक परम्परा छलै। ओहि समय धरि हमरा नोकरी भेटि जेबाक आशा छल।

द्विरागमनक दिन तय भ' गेलैक, मुदा बहालीक चिटठी नहि आयल। हमरासं छोट तीनटा बहिन छथि। दू गोटेक बिदागरी भ' गेल छलनि,आबि गेल छलीह। सभसं छोट बहिनक द्विरागमन नहि भेल छलनि। किछु और बिदागरी होयब शेष छलैक।

द्विरागमन दिन किछु फोटो लेबक हेतु मधुबनीसँ बीस रुपैया भाड़ापर एकटा कैमरा अनलहुँ। हमरा संग हमर अनुज जाएबला छलाह। सासुर जेबासँ पहिने एकटा दसटकही भजेबाक लेल गामक चौक पर गेल छलहुँ। हाइ स्कूल लग चाहक दोकानपर चाह पीबि रहल छलहुँ। संगमे एकटा भाइ साहेब छलाह जे हाइ स्कूलमे शिक्षक छलाह। हम सभ द्विरागमनक विषयमे गप क' रहल छलहुँ।

सडकसं पच्छिम पोखरिक भीड़पर किछु गोटेकें दौड़ैत देखलिऐ। किछु हल्ला सेहो शुरू भेलै। 'आगि लागि गेलै' हल्ला करैत लोक

भागल जा रहल छल। हम सभ सडकपर आबि देखलिऐ पूब दिस त आगिक प्रचण्ड रूपक आभास भेल। भाइ साहेब कहलनि, हौ,लगैए ई आगि भरिसक ककनामे छै। कहलियनि, हमरा त लगैए जेना लगेमे होइ। भाइ साहेब कहलनि, अपन सबहक भगबती एते कमजोर नै छथि, चलह,चाह पीबह।

चाह पीबि जखन सडकपर आबि फेर तकलिऐ पूब दिस त ऐ बेर धधरा बहुत लग स्पष्ट भेल। कहलियनि, भाइ साहेब, ई त बहुत लग बुझाइए। ओम्हरसँ एक आदमी दौड़ैत आबि रहल छल, ओ कहलक, आगि अहीं सबहक टोलमे अछि।

भाइ साहेब हमरा साइकिलक पाछाँ कैरियरपर बैसलाह। हम सभ भगलहुँ टोल दिस। पछबाइ टोलमे रही त एक गोटे कहलनि, अहीं सबहक घरमे धेने अछि।

साइकिल परसँ उतरि गेलहुँ। कहलियनि भाइ साहेब, आब स्थिर भ' जाह, आब जखन घरमे आगि पकड़ि लेलकै, त हम सभ की क' सकैत छी।

साइकिल गुड़कबैत हम सभ झटकारने टोलमे पहुँचलहुँ। एक गोटेक दरबज्जापर साइकिल राखि अपन घर दिस तकलहुँ।

एहेन दृश्य एतेक लगसँ ऐसँ पहिने कहियो नहि देखने रही।

एक पतियानीसँ घर सभ जरि रहल छल। लोक असहाय भेल दूर हटिक' अपन-अपन घर जरैत देखि रहल छल। जकर घर बाँचल छलै, ओ सभ अपन-अपन चारपर पानि छिटबाक जोगारमे लागल छल।

भाइ साहेबक पत्नी नैहर गेल छलथिन। घरमे जंजीर आ ताला लागल छलै, किछु नहि बँचि सकलनि। हुनका दुआरिपर किछु कपड़ा छलै, हुनकर भगिनी कपड़ा समेटिक' बगलक खेतमे फेकि देलकै। कपड़ामे

एकटा बच्चा छलै, से चिचिया उठल तखन देखलकै त चिन्हलकै जे बच्ची(हमर छोट बहिन)क एक बरखक बच्चा अशोक छलै। बच्ची ओहि आंगन बच्चाकें खेलबैत गेल छल, सूति रहलै, त हुनके दुआरिपर कपड़ासं ढँकिक' अपना आंगन आबि गेल छल। एत' आगि लगबासँ पहिने घरक सामान सभ निकालिक' बाहर फेक' लागल छल, बच्चा मोन पड़लै त भागल ओहि आंगन, हुनका दुआरिपर बच्चाकें नहि देखि बेचैन भेल, मुदा किछुए पलमे खेतमे बच्चाकें पाबि ओकरा नेने भागल अपना आंगन दिस। अपना आंगन जेबाक रस्ता अग्नि देवता बन्द क' देने छलथिन त घरक सभ गोटेक संग घरक पूब परती खेतमे स्थिर भ' गेलीह।

भाइ साहेब बहुत उद्विग्न छलाह। घरमे की कत' राखल छलनि,से हुनको नहि बूझल रहनि। आब कोनो उपाय नहि छलनि किछु बचा सकबाक।

घरसँ किछु दूर हटिक' खेते-खेते अपना घरक पूब पहुँचलहुँ त सभ गोटेकें सुरक्षित देखि संतोष भेल। घरपर हमर छोट दू टा अनुज छलाह, एकटा बारह बरखक, दोसर पाँच बरखक। हमरासँ छोट तीनू बहिन छलीह, माए छलीह, बाबू छलाह।

ई सभ गोटे बहुत सामानकें घर आ दरबज्जासँ निकालिक' खेतमे फेकि देने छलाह। टेबुल, कुरसी,पेटी,बाकस, कपड़ा, वर्तन आ किछु अनाज बचा लैत गेल छलाह। सभसँ नीक बात हमरा लागल जे लोक सभ सुरक्षित छल, भागिन सेहो बचि गेल छल।

मधुबनीसँ पानिबला टैंकर अयबासँ पहिने घर सभ जरि गेल छल। टैंकर आएल त जरल खाम्ह सबहक आगि मिझौलक। से होइत-होइत साँझ भ' गेलै।

कय टा समस्या ठाढ़ भ' गेलै।

ओकर प्राते द्विरागमन आब संभव नै छलै। बारह दिन बाद एकटा

दिन छलै। ओकर बाद दिन नै छलै।

मुदा, काल्हि द्विरागमन नै हेतै, ई समाद ल' क' ककरा पठाओल जाए लदारी।

एक गोटे गेलाह रहिका। मामा रहिका हाइ स्कूलमे सहायक प्रधानाध्यापक छलाह।

हुनका सुचित कएल गेलनि।

मामा साइकिलसँ गेलाह लदारी। ओत' गीत-नाद चलि रहल छलै। लोक हमर सबहक प्रतीक्षा क' रहल छल। मामाकें देखिक' लोक चिन्तामे पड़ि गेल। मामा सभ समाचार कहलखिन। मामा दोसर दिनक सूचना दैत रहिका घूमि गेलाह।

सबेरे किछु बांस, खढ़, साबेक जौर आ किछु खाद्य सामग्री ल'क' एकटा टायर गाड़ी आएल लदारीसँ। मामा गामसँ सेहो किछु आएल। हमर छोट बहिनक सासुर लखनपट्टीसँ श्रम दान करय किछु गोटे एलाह।

अपन बँसबिट्टीसँ सेहो किछु बाँस कटाओल गेल।

जल्दी-सँ-जल्दी दूटा घर तैयार करबाक प्रयास भेल।

मधुबनीसँ शफीकुल्लाह अंसारी,कांग्रेस पार्टीक विधायक घरक सभ सदस्य लेल हैंडलूमक कपड़ा ल'क' एलाह। किछु आर्थिक मदति सेहो केलखिन।

पुबाइ टोलसँ बलदेव बाबू ओकील साहेब, पछ्बाइ टोलसँ हरी बाबू, मास्टर साहेब आ और लोक सभ ओहि दुरदिनमे मदति करबाक लेल सोझाँ आबि गेलाह।

बहुत गोटेक सहयोगसँ दुरदिन काटब आसान भ' गेल।

जत' पन्द्रह हाथक दरबज्जा छल ओहि ठाम एकटा एकचारी ठाढ़ भेल।

जेना-तेना एकटा भनसा घर तैयार भेल।
जत' गठुल्ला छल ओत' ओतबहि टा कोहबर घर तैयार भेल।
बारह दिनक बाद कोठाबला घरसँ आबि बच्चीकें अही कोहबरमे मास दिन बिताब' पड़लनि। मास दिनक बाद दच्छिन दिस एकटा नमहर घर रहबालेल तैयार भेल आ ओहिमे द्विरागमनमे भेटल पलंग राखल गेल त' ओहि घरमे जेबाक आ ओहि पलंगपर विश्राम करबाक अवसर भेटलनि।
अगिलगीसँ हानि ई भेलै जे छओ मास धरि लोक घरहटमे लागल रहल, लाभ ई भेलै जे पहिल बेर लोक गम्भीरतासँ ईंटाबला घरक कल्पना केलक। आ एकर श्रेयक हकदार वैह अबोध धिया-पूता सभ छल जे चारि घरवासीबला हमर पुरना आंगनक पतोइसँ छाड़ल गठुल्लामे भगवानक पूजा करैत काल सलाइ खरडिक' अगरबत्ती लेसि रहल छल, जे समयपर कियो देखि नहि सकलै।
ओ अबोध सभ नै जनैत छल जे भगवानक पूजा केलासँ आगि पकडि लेतै आ एतेक घर जरि जेतै।
सत कही त बहुत चेतन लोक सभ, बहुत पढल-लिखल लोक सभ त सभटा जानियो क' एकर चिन्ता नहि करैत छथि जे पूजाक नामपर जे प्रदर्शन कएल जा रहल अछि ओइसँ ककरो किछु क्षति त ने भ' रहल छै।
धिया-पूता त जैह देखैत अछि, सैह सिखैत अछि, वैह करैत अछि।

(१५)

आगिक बाद आगि

बच्ची किछुए दिनमे हमरा परिवारक आवश्यकताक अनुरूप अपनाकें

बना लेलनि।

माएकें काजुल पुतोहु भेटि गेलनि। गृहस्थ परिवारक काजसँ पूर्ण परिचित छलीह बच्ची। नैहरमे माए,बाबू,दू टा भाए,दू टा भाउज,चारिटा भातिज आ एकटा भतीजीक संग छलीह, एत' सासु,ससुर,पति, छओ आ चौदह बरखक दू टा दीय'र आ एकटा विवाहित ननदिक बीच प्रसन्न रहब जल्दी सीख गेलीह।

अगिलगीक दुख क्रमशः कम होइत गेलै। जीवन सामान्य हुअ' लगलै। हिनक पढाइ-लिखाइक लेल जे किछु सोचने रही, से स्थगित भ' गेल । हम यथास्थितिकें स्वीकार क' लेलहुँ आ अपन नोकरीक प्रतीक्षा करय लगलहुँ।

एक दिन अपन दरबज्जापर हम एसगर बैसल रही। पछ्बाइ टोलक बटोही कका कतहुसँ जा रहल छलाह। ह्मरा सोर पाड़लनि। कहलनि, अहाँक घराड़ीक सटले पूब खेत बिका रहल छै, अहाँकें कोनो व्यवस्था हुए त' सामनेबला सबा दू कट्ठा भेटि सकैए, बिचारिक' जल्दी कहू, ने त बिका जेतै।

एकटा नव समस्या सोझाँमे उपस्थित छल, बिनु समस्याक समस्या। हम सोचय लगलहुँ, हमरा बैंकमे नोकरी त भेटबे करत, कते देरी हेतै, दू मास...चारि मास यैह ने। हम एखन कोनो तरहें जँ पाइक व्यवस्था क' लै छी त खेत कीनि सकैत छी। समाधान छनि बच्ची लग। जँ हुनक गहना बन्धक ध' क' पाइक व्यस्था क' लै छी त संभव अछि, अन्यथा नहि। घराड़ीबला जमीन छै, तें ल' लेब जरूरी लागल।

हमरा मोन पडल, दू साल पहिने ई गहना बन्हकी ध' क' छोट बहिनक विवाहमे उपयोग केने रही, बादमे पौधा संरक्षणमे नियोजित भेलापर एक बेर छओ मासक पाइ भेटल त गहना छोड़ा लेलहुँ ।

हम बच्चीसँ पुछलियनि ओ तैयार भ' गेलीह। हम बाबूकें कहलियनि सभ बात। ओ पुछ्लनि जे ककरा नामे लिखबिऐ। हम हुनका अपने नामपर लिखा लेब' कहलियनि। सैह भेलै। गहना मधुबनीमे बन्हक राखल गेल। दू कट्ठा सबा पाँच धुर खेत पुबाइ टोलक बुधन ठाकुरसँ बाबूक नामपर ०८.०५.१९७४ क' मधुबनीमे रजिस्ट्री भेल। हमर पड़ोसीक सामनेबला खेत ओ लिखौलनि।

बच्चीकें विश्वास रहनि जे पहिने जकाँ फेर सातो अठन्नी हमरा लग वापस आबि जाएत, जँ हुनका बूझल रहितनि जे आब ई गहना हमरा वापस नहि भेटत, त ओ एत्ते आसानीसँ अपन पेटीसँ निकालिक' सहर्ष नहि दीतथि। ओ नहि जनैत रहथि जे ओ गहना आब माटिमे परिवर्तित भ' गेल अछि।

हमहीं कहाँ जनैत रहिऐक जे हमरा नोकरी भेटबामे एत्ते देरी भ' जाएत आ परिवारक स्थितिक कारण हमर प्राथमिकतामे गहना नहि रहि जाएत ।

क्यो नहि जनैत रहै जे देशक स्थिति एहेन भ' जेतै, उत्तर प्रदेशक चुनावमे इन्दिरा गांधी एहेन नेताक जीतकें राजनारायण द्वारा चुनौती देल जेतै, इलाहाबाद हाई कोर्ट हुनक जीतकें अबैध घोषित क' देतै, प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधीसँ इस्तीफ़ा मांगल जेतै, सौंसे देशमे हंगामा शुरू भ' जेतै आ प्रधान मन्त्री द्वारा इस्तीफ़ा देबाक स्थानपर देशमे आपातकाल लागू भ' जेतै आ बैंकमे बहाली सेहो स्थगित भ' जेतै। क्यो नै जनैत रहै, मुदा सभ भेलै।

नोकरीक प्रतीक्षामे मास पर मास बीतल चल गेल।

हम एक बेर सेंट्रल बैंकक क्षेत्रीय कार्यालय मुजफ्फरपुर गेलहुँ पता लगब'। एकटा झाजी छलाह ए.एफ.ओ.। कहलियनि, हमरा सेलेक्शन भेना दस मास भ' गेल, एखन धरि बहालीक चिट्ठी नै भेटल अछि। झाजी मुस्किआइत कहलनि,ठीक कहै छी, दस मासमे त बच्चो भ'

जाइ छै। झाजी एते कहिक' अपन काजमे व्यस्त भ' गेलाह।
हम यूनियनक सेक्रेटरीसँ सम्पर्क केलहुँ, ओ ककरोसँ गप केलनि, हमरा कहलनि, टाइम लगेगा मगर होगा निश्चित ये भरोसा रखिए।
हमरा सचिव महोदयक वचनपर भरोस भेल, घर एलहुँ आ जहिना प्रतीक्षा करैत छलहुँ, तहिना फेर प्रतीक्षा कर' लगलहुँ।
घर, कैटोला चौक,मधुबनी वाचनालय यैह हमर ठेकाना छल।
हमर गामक मुखियाजी एकदिन परम शुभचिन्तक जकाँ बुझौलनि, विद्यार्थी, एना गाममे निश्चिन्त भ'क' बैसलासँ आइ के समयमे नोकरी नै हैत, नोकरी बिना दौड़-धूपके नै होइछै, एक बेर पटना जाउ, एम एल ए सँ भेंट करू, मुख्य मन्त्रीसँ भेंट करू, जरूरत हेतै त हमहूँ जैब, कोना ने हेतै मुदा एना बैसलासँ त बैसले रहि जाएब।
हम निश्चिन्त रही जे नोकरी भेटबे करत, सभकें छोड़िक' खाली हमर बहाली क' देतै से त संभव नै छै। मुदा मुखियाजी एहि सभकें फ़ालतू बात बुझै छलाह। हमर पिताजीकें सेहो कहलखिन। हमर पिताजी सेहो मुखियाजीक सुझावपर मोहित भेलाह। अंततः पटनाक प्रोग्राम बनल। हमर परोसी अमिरीलाल ठाकुर (हुनको लोक सभ मुखियाजी कहैत छलनि) सेहो अपन जेठ बेटाक नोकरी लेल प्रयासमे मुखियाजीक संग भेलाह।
पटना गेलहुँ। शफीकुल्लाह अंसारी, कांग्रेसक एम एल ए साहेब सँ भेंट केलहुँ। एकटा कागजपर संक्षेपमे लिखिक' देब' कहलनि। देलियनि। कहलनि, मुख्य मन्त्री महोदय से बात करता हूँ, वो अगर बुलाएंगे तो बताऊंगा तब जाइएगा मिलने।
साँझमे एलाह त कहलनि, उनका कहना है कि बैंक के मामलेमे हमलोग कुछ नहीं कर सकते हैं, सिलेक्शन हो गया है तो देर-सबेर नोकरी तो मिलेगी ही।

मुखियाजी कहलनि, चलू आब मोनमे ई नहि ने हैत जे प्रयास नै केलियै आ मुख्य मन्त्री महोदय कहि देलनि तखन चिन्ता करबाक काज नै छै।

घर आबि फेर हम ओहिना नोकरीक लेल प्रतीक्षा कर’ लगलहुँ जेना पहिने करैत रही।

खेत कीनब एखन हमर परिवारक आवश्यकता नहि छलैक। परिवारक आवश्यकता छलैक पाँच-छओ आदमीक जलखै, भोजन,कपड़ाक खर्च,समय-समयपर पाहुनक उचित सत्कार,सर-कुटुम्बमे आवश्यकतानुसार समय-समयपर भार-चंगेराक व्यवस्था, समय-समयपर ब्राह्मण-भोजनक व्यवस्था आदिमे आवश्यक खर्चक लेल टाकाक जोगार।

ई जोगार हथपैंचसँ शुरू होइत-होइत खेत भरना तक जाइत छल।खेतक उपजासँ तीन-चारि मासक काज चलैत छल। फेर खेतीक लेल वैह जोगार होइत छल। टोलमे दू-तीन घर छोड़िक’ सभ घरक स्थिति मोटा-मोटी एहने छलै।

एहनो स्थितिमे मूड़न, उपनयन,विवाह,श्राद्ध,बरखी आदि काजमे लोक नीक भोजनक व्यवस्था करिते छल चाहे एहि लेल खेत भरना देब’ पड़ै अथवा बेच’ पड़ै।

भोजेमे अथवा वरियातीमे लोककें जी-भरि नीक-निकुत खेबाक मौका भेटैत छलैक। तें लोक भोजक नामपर सब तरहक सहयोग देबा लेल तैयार रहैत छल। श्राद्धक भोज दू दिन होइ छलै, तें एकर आकर्षण बेशी छलै। भोज लोककें एतेक आकर्षित करैत छलै जे कोनो बृद्ध लोककें देखिते लोकक सोझाँ दू दिनक भोजक दृश्य उपस्थित भ’ जाइ छलै-पूड़ी-जिलेबी,खाजा-मुंगबा, रंग-विरंगक तड़ुआ-तरकारी आ चटनी, ब’ड़-ब’ड़ी, दही-चिन्नी-सकरौड़ी आदिक संग हाथ जोड़ने पाँते-पाँते घुमैत कर्ताक विनीत भाव- ‘अपने लोकनि संतुष्ट

हेबै, तखने हमरो उद्धार हैत।' सबजाना भोज कम होइ छलै।

खाली पुरुखे सभ जखन भोज खाए जाइ छलाह त स्त्रीगण सभ अपनाले' भोजन नै बनबैत छलीह, दिनका किछु बाँचल रहै छलनि से अथवा घरमे चूड़ा अथवा और किछु रहै छलनि त नून,गुड़ अथवा मूर संगे ख़ाक' सूति रहै छलीह। पुरुख सभ एकर चिन्ता नहि करैत छलाह जे स्त्रीगण सभ की खेलनि। स्त्रीगण सभकें भोजन नै बनब' पड़ैत छलनि, एतबेसँ प्रसन्न रहैत छलीह। सबजाना भोज दिन त हुनको सभले' पावनि भ' जाइत छलनि। घरक स्त्रीगणकें भोजे दिन भानस-भातसँ अवकाश भेटैत छलनि।

सामान्य दिनमे सेहो कोनो घरमे स्त्री-पुरुखक भोजन एक बेर नहि होइत छलै।

सभ पुरुख आ धिया-पुताकें परसन द' द' क' खुआक' जे किछु बचि जाइ छलै, से नून,मूर आकि गुड़ संगे खाक' रहि जाइत छलीह स्त्रीगण सभ।

बेशी घरमे भात तखने बनै छलै जखन कोनो पाहुन अबै छलखिन। पाहुनक लेल भात,दालि,तरकारी,तडुआ,कने घी आ दहीक व्यवस्था कोनो तरहें अवश्य कएल जाइत छलनि। पाहुनकें खुआक' घरबारी भोजन करैत छलाह।

घरबारीक भोजनमे बेशी काल रोटी,दालि,अल्हुआक प्रधानता रहैत छलै। रोटी गहुम,मडुआ,खेसारीक बनैत छलै। जकरा खुट्टापर महींस रहैत छलै, ओकरे दूध-दही भेटै छलै। जकरा खुट्टापर महींस नै छलै, ओकरा घरमे क्यो दुखित पड़ि जाइ छलै तखने अथवा कोनो पाहुन अबै छलखिन तखन दूध कीनल जाइ छलै।धिया-पुताकें सेहो ओहीमे सँ बचाक' द' देल जाइ छलै।

हमर बाबा महींस पोसैत छलाह। हमर मझिली बहिनक द्विरागमनक समय महींस खुट्टापर सँ गेल, फेर कहियो खुट्टापर महींस नै आएल। बहुत दुखित पड़लेपर ककरो समतोला खेबाक अवसर भेटैत छलैक, ने त कीनिक' फल खैब संभव नै छलै। बाड़ीमे केरा ककरो-ककरो रहैत छलै, त माटितर गाड़ि क' डाबा ल' क' धूकिक' पकाक' खाइत छल।हमरो सबहक बाड़ीमे केरा, नेबो आ अरड़नेबा छल। केराक उपयोग कतहु भार पठेबामे कएल जाइत छल, एकटा चंगेरामे एक कात पाकल केरा, दोसर कात दहीक भार लोकप्रिय छल।

पाकल केराक उपयोग चौठचन्द्र पावनिमे आ केरा घौड़ अथवा हत्थाक उपयोग छठि पावनिमे सेहो होइत छल।आमक मासमे अपना गाछक आम खेबाक आनन्द भेटैत छलैक। हमरो सबहक आमक गाछ दुर्गास्थानमे छल,पुरना घराड़ी लग सेहो किछु गाछ छलै। नबका घराड़ीपर सेहो बाबा कलकतिया आ कृष्णभोग आमक किछु गाछ लगौने छलाह जे फड़ै छलै। दुर्गास्थानमे एकटा बेलक गाछ सेहो छलै।

गरीबी एहि लेल छलै जे घरमे छओ-सात आदमीक सामान्य जलखै-भोजनक अतिरिक्त समय-समय पर घरक मरम्मति,खेतीमे लागत आ भोज-भातक परम्पराक निर्वाह करैत सभ साल किछु खेत भरना पड़बाक कारणे जोत योग्य खेत कम भेल जा रहल छलै आ जे खेत छलै ताहिसँ आवश्यकतानुसार उपज नै प्राप्त होइत छलै। बाहरी आमदनी नै रहबाक कारणे लोक सभ किछु लेल खेतपर आश्रित रहैत छल आ खेती भगवान भरोसे चलैत छलै।

नोकरीक प्रतीक्षा धीरे-धीरे कठिन भेल जा रहल छल।

एकदिन एक पाँती लिखा गेल :

'कहिया तोहर मूँह देखबौ गे, बहालीक चिट्ठी।'

आ एकटा गीत और जकर किछु पाँती द' रहल छी :

मोटका-मोटका पोथी पढ़लौं
पोथी केर सभ पन्ना रटलौं
से सभ रटिक' किछु नै भेल।
पहिने जोड़ी जोड़ दशमलव
आब जोड़ै छी नून आ तेल।। मोटका-मोटका पोथी
....
ईहो टुकड़ी देखू :
पहिने छल डिगरीक सिहन्ता
आब अछि नोकरी केर चिन्ता
खेतो सभ अछि पड़ि गेल भरना
बिका गेलनि कनियाँ केर गहना
हम छगुन्तामे पडले छी
हे परमेश्वर ई की भेल?? मोटका-मोटका पोथी......
अंतिम टुकड़ी :
पहिने बिपति पड़ै त लोकक
मदति करैत छला भगवान
आब कतबो हर-हर बम-बम कहू
देथि ने शिवशंकरजी ध्यान
आइ कृष्ण गोवर्धनधारीक
चक्र-सुदर्शन कत्त' गेल?? मोटका-मोटका पोथी
....
समस्या मात्र हमरे लेल नहि छल। हमरो सभसँ बदतर स्थितिमे बहुत लोक कहुना जीबि रहल छल।
समाजमे अधिक लोकक आर्थिक स्थिति दयनीय छलै। बहुत नवयुवक बेरोजगारीक कष्ट भोगि रहल छलाह। कतेक लोक एहेन छल जकरा

रहबाक लेल घर नहि छलै, पहिरबाक लेल आवश्यक कपड़ा नै रहै छलै, भोजन लेल चाउर-दालि-आँटा नै छलै।

एहेन लोक सबहक लेल फगुआक कोनो आकर्षण नै रहैत छलै।

एहेन स्थितिक लेल जे गीत लिखाएल तकर चारि पाँती देखू :

छै जेबी जकर खाली-खाली

आ खरची घरक लटपटायल

से फगुआ खेलायत कोनाक'

जकरा आंगन वसन्त नहि आयल ....

ईहो चारि पांती :

जकरा सोझाँमे नेना कनैछै

माँ, की खैब भूख अछि लागल?

से पूआ पकाओत कोनाक'

जकरा आंगन वसन्त नहि आयल ....

पटना / ३०.०७.२०२१

(१६)

दृश्य परिवर्तन

बेरोजगारीक अवधि बढ़ल जा रहल छल।

गामक वातावरणमे हम सहज अनुभव नहि करैत छलहुँ।

एक बेर पटनामे अपन हाइ स्कूलक संगी नागेन्द्र कुमार झासँ भेंट केलहुँ। हुनका संगे दू दिन रहलहुँ। ओ बी.एस.सी. केलाक बाद इंडियन नेशन प्रेसमे काज क'रहल छलाह,एसगर रहैत छलाह। हुनकासँ बहुत गप-शप भेल। हुनका ओहि ठामसँ एकटा नव उर्जाक संग गाम घुरलहुँ।

हमर सादूक जेठ भाइ साहेब आरामे रहैत छलखिन, सिविल इंजिनियर (एस. डी.ओ.)छलखिन। छोट भाए (हमर सादू), दुनू छोट बहिन,अपन दूटा छोट बच्चा-बच्चीक संग अपने दुनू गोटे रहैत छलाह। दोसर छोट भाए चीनू बाबू सेहो पटनासँ कहियो-कहियो अबैत छलाह। इंजिनियर साहेब हमरो छोट भाए जकाँ मानैत छलाह। हुनका सभ

लग हम सहज रहैत छलहुँ। साँझ क' अथवा रातिमे भोजनक बाद गीत-नाद होइत छलैक। कहियो क' अपना संगे जीपपर हमरो घुमा दैत छलाह साइटपर। हमरा नोकरी लेल सेहो सोचैत छलाह,मुदा बैंकमे हमर नोकरी पक्का अछि, से जनैत छलाह।

मधुर स्मृतिक संग हुनका ओत'सँ गाम घुरलहुँ।

हमर छोटका मामा डाक-तार विभागमे जमशेदपुरमे काज करैत छलाह। अपन भतीजी आ एकटा सारक संग अपने दुनू गोटे साकचीमे रहैत छलाह। हुनको ओत' गेलहुँ। रवि दिन क' जुबली पार्क घूम' सभ गोटे जाइत छलहुँ। जमशेदपुर शहर नीक लगैत छल।

जमशेदपुरसँ गामक जे दृश्य हमरा सोझाँ अबैत छल तकरा हम अतुकांत कवितामे व्यक्त करबाक कोशिश कर' लगलहुँ।मामाकें अतुकांत कविता नीक नहि लगैत छलनि, ककरो नीक नहि लगैत छलैक।हमरा नीक लगैत छल। लिखैत गेलहुँ। वैह कविता सभ पच्चीस बरखक बाद आ दू संशोधनक बाद 'धारक ओइ पार' नामक दीर्घ कविताक आकार ग्रहण केलक। जमशेदपुर अथवा एहने कोनो जगह नोकरी पयबाक कामना करैत गाम घुरल रही।

बेरोजगारीक अवधि एखनो समाप्त नहि भेल छल।आब होइत छल जे किछु करक चाही। आब बहालीक चिट्ठीक प्रतीक्षामे बैसल रहब उचित नहि।

मुजफ्फरपुरमे सेनाक भर्ती भ' रहल छलै, एकटा संगी आशा भाइक संग चलि गेलहुँ। मैट्रिकक प्राप्तांकक आधारपर कहलक, जाना चाहते हो तो ओरिजिनल सर्टिफिकेट जमा करो। हम सोचलहुँ जे हमरा त बैकमे हेबे करत, तखन ऐ ठाम मूल प्रमाण-पत्र जमा करब उचित नहि, नै जमा केलिऐ, दुनू गोटे घूरिक' गाम चलि गेलहुँ।

भूमि विकास बैंकक विज्ञापन निकललै, ओइमे आवेदन पठा देलिऐ,

लिखित परीक्षा देब' पटना गेलहुँ। आकाशवाणी लग कोनो होटलमे ठहरलहुँ। एक दिनक भाड़ा जमा करबा लेलक, रातिमे भोजनक बाद हमरा लग बीस रुपैया बाँचल रह्य, से कतहु रखलिऐ। सबेरे स्नान क' क' जलखै कर' बिदा भेलहुँ, त रुपैया हमरा नै भेटल। परीक्षा-केन्द्र कंकडबागमे रहै, पयरे विदा भेलहुँ बिना किछु खेने। जाइत रही ई सोचैत जे गाम वापस कोना हएब। चिड़ियाटांड़ पुल लग गेलहुँ त सुनाइ पडल 'यौ अनिल जी'। रामपट्टीक रमणजी छलाह, आर. के. रमण, रिक्शासँ एक गोटेक संग कतहु जा रहल छलाह। रिक्शा रोकबाक' कहलनि कलकत्ता चलबाक अछि विद्यापति पर्वमे, समय हो त तीन बजे आउ आर ब्लाक लग एम एल ए फ्लैटमे हम एखन रहै छी, ओत' आएब त विस्तृत गप हयत। पता बताक' ओहो रिक्शासँ बढि गेलाह, हमहूँ किछु खुशीक संग परीक्षा केन्द्र दिस बढलहुँ।

परीक्षा बारह बजे समाप्त भेलापर भूख बड्ड जोर लागल,मुदा संगमे पाइ त नै छल। एखन भोजन लेल तत्काल दू टाका चाही आ गाम घुरबा लेल स्टीमर आ ट्रेन-बसक किराया करीब आठ टाका माने दस टाकाक आवश्यकता अछि। हमरा गामक वर्माजीक डेराक पता बूझल रहय, पयरे हुनका ओत' गेलहुँ त पता चलल जे ओ काल्हि गाम चल गेलाह। भूख आर जोर केलक। हम आर ब्लाक लग जायसवाल होटल लग गेलहुँ। होटल बलाकें अपन हाथक घडी खोलिक' दैत कहलिऐ, अभी मेरे पास पैसे नहीं हैं, ये घडी आप अपने पास रखिए, खाने का जो भी बिल होगा, दे देनेपर आप मुझे घडी लौटा देंगे। काउंटरपर जे बैसल छलाह, से कहलनि, मुझे आपपर विश्वास है, आप खाना खाइए, अपनी घडी अपने साथ रखिए, इसकी कोई जरूरत नहीं है। कहलियनि,मगर मेरा मन तैयार नहीं हो रहा है, मैं

कल घडी ले जाऊँगा। हमर जिद्दपर ओ घडी सम्हारिक' राखि लेलनि, हमरा नीक जकाँ भोजन करौलनि। हम भोजन करैत रही तखने रमणजी सेहो ओही व्यक्तिक संग होटलमे प्रवेश केलनि आ दोसर दिस जेम्हर कुरसी खाली छलै, ओम्हर चलि गेलाह।ओ हमरा नै देखलनि। ओ सभ भोजन करिते रहथि, हम उठिक' पुछलिऐ, कते भेल, त कहलनि,एक रुपैया नब्बे पाइ। हम पान खाइ लेल दस पाइ और हुनकासँ ल' क' पान खाक' आगाँ बढ़ि गेलहुँ।

हुनकासँ पहिने हम हुनका डेरापर पहुँचि गेलहुँ। कम्युनिस्ट पार्टीक एम एल ए साहेबक डेरा छलनि।एकटा कोठलीमे रमण जी रहैत छलाह।ऐ बेर विद्यापति पर्वमे कलकत्ता जेबाक कार्यक्रमपर चर्च भेल। किछु गीत नाद सेहो भेलै। गीत लिखबाक विषयक चयनपर चर्च भेल। हम कहलियनि, हमरा साँझ बला स्टीमर पकडबाक अछि, विदा भेलहुँ त पुछलनि, संगमे पाइ-ताइ अछि ने? हम कहलियनि, दस टाका अछि अपन जरुरतिसँ अधिक त द' दिय'। नोकरकें बजाक' कहलखिन, जो त मलिकिनीकें कहिहनु, कविजीकें दस टाका दियनु त। नोकर भीतर गेल आ तुरत एकटा दसटकही आनिक' हुनका देलकनि, ओ हमरा दैत कहलनि, और के आवश्यकता हो त कहू। हम कहलियनि,नै,पुछलियनि गाम कहिया एबै,त कहलनि, एक मासक बाद आएब, मुदा अहाँ ई वापस करबा लेल आएब त हम भेंट नै देब। हमरा बूझल छल ओहो नोकरीमे नै छथि।

हुनका ओत'सँ जायसवाल होटल गेलहुँ, हुनका दू टाका द' क' धन्यवाद दैत अपन घड़ी ल'क' रिक्शासँ बाँसघाट जाक' प्राइवेट स्टीमर पकड़ि पह्लेजाघाट, ओत'सँ ट्रेन पकड़िक' दरभंगा आ ओत'सँ बससँ गाम पहुंचि गेलहुँ। एक मासक बाद साइकिलसँ रामपट्टी जाक' रमणजीकें दस टाका बहुत-बहुत धन्यवादक संग द' देलियनि। बिना जलखै करौने वापस नै आब' देलनि।

केन्द्र सरकार द्वारा बेरोजगार युवक सबहक लेल राष्ट्रीयकृत बैंक सबहक माध्यमसँ रिटेल कण्ट्रोल क्लॉथक व्यवसाय लेल पाँच हजार रुपैयाक ऋणक योजना चालू भेलै। हमर स्वभाव एहि व्यवसाय लेल उपयुक्त नहि छल, तथापि हम अपनाकें तैयार केलहुँ। हमरा टोलक मुखियाजी (अमीरी लाल ठाकुर) कहलनि जे हम एहिमे मदति करबह, शुरू करह। आवेदन देलिऐ भारतीय स्टेट बैंक, मधुबनीमे। दौड़-धूप केलहुँ। ऋण स्वीकृत भेल। जिला उद्योग केन्द्र,मधुबनीसँ मार्जिन मनी सेहो स्वीकृत भेल। आब बैंक ऋण वितरणक प्रक्रिया करितै। बैंक रुपैया नहि दैत छलै, कपडाक लेल कोनो संस्थाकें आदेश दितै, कपडा हम किनलिऐ कि नै, तकर निरीक्षण होइतै, तखन बैंक ओइ संस्थाकें बिलक भुगतान करितै। ई प्रक्रिया होइतै, मुदा दृश्य बदलि गेलै।

मुजफ्फरपुर जिलामे मुशहरी प्रखण्डमे किछु क्षेत्र नक्सल आन्दोलनसँ एक समय बहुत प्रभावित भेल रहै। चर्चित नेता जय प्रकाश नारायण ओइ क्षेत्रमे भ्रमण कय ओहि ठामक समस्याकें दूर करबाक प्रयास केने छलाह। हुनका आह्वान पर हजारो युवक आत्मसमर्पण केलनि। मुख्य धारामे एलाह। ओहि इलाकाक भूमिकें शत प्रतिशत सिंचित करबाक योजना बनल, तकर क्रियान्वयन भेल। लोक सभकें रोजगार दिययबाक किछु व्यवस्था कयल गेल छल। एहि योजना सबहक प्रभावसँ की परिवर्तन भेलै, तकर अध्ययन करबाक लेल नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ कम्युनिटी डेवलपमेंट, हैदराबाद द्वारा पच्चीसटा फील्ड इन्वेस्टिगेटरक बहाली कराओल जा रहल छल। जाहि कृषि स्नातककें एग्रीकल्चर एक्सटेंशन विषयमे साठि प्रतिशतसं अधिक अंक प्राप्त भेल छलनि, हुनकर सिलेक्शन भ' रहल छलनि। ई काज हमर पसन्दक छल, तें हम ई नोकरी स्वीकार क' लेलहुँ। एहिमे

पन्द्रह टाका प्रतिदिन भेटब निश्चित छल यद्यपि नोकरी एकदम अस्थायी छल।

हम ढोली चल गेलहुँ।

रिटेल कण्ट्रोल क्लॉथक व्यवसायबला योजनाकें बिसरि गेलहुँ।

ढोलीमे दू दिनक प्रशिक्षण प्राप्त केलहुँ।

करीब बीस पेजक प्रश्नावालीक पुस्तिका छलै। एहिमे बहुत तरहक सूचना सीधे परिवारक मुखियासँ सम्पर्क क' क' भरबाक छलै। प्रतिदिन कम-सँ-कम पाँचटा परिवारसँ सूचना प्राप्त करबाक लक्ष्य देल गेल छलै।

दोसर दिनक प्रशिक्षण समाप्त भ' रहल छल, तखने एकटा अधिकारी खबरि ल' क' एलाह जे पूरा मुशहरी ब्लाक बाढ़िमे डूबि गेल अछि, तें एखन ई कार्यक्रम स्थगित कयल जा रहल अछि। आगाँ कहिया शुरू होयत तकर सूचना सभकें प्रेषित कयल जाएत।

बाढ़ि ततेक भयंकर एलै जे ढोलीसँ गाम घूरिक' आएब बहुत कठिन भ' गेल।

ट्रेन, बस सभ टा बन्द भ' गेलै।

सात दिन ढोलीएमे छात्रावासमे रहि जाए पड़ल।

संगी अशोक कुमार ठाकुर जी ओतहि एम. एस. सी. (ए जी) क' रहल छलाह, तें ओत' रहबामे असौकर्य नहि भेल।

बस-ट्रेन चालू भेलै, तखन गाम घूरि एलहुँ आ फेर नव सूचनाक प्रतीक्षा कर' लगलहुँ।

दुर्गा पूजा शुरू भेलै। गाममे हलचल शुरू भेल। दुर्गास्थानमे हूलि-मालि बढल। चौकपर आ दुर्गास्थान दुनू ठाम दुर्गा पूजाक आयोजन होइत छल। दुनू ठाम सांस्कृतिक आयोजन होइत छलै। चौकपर जे आयोजन होइत छल तकर प्रमुख छलाह मुखिया जी श्री राम लखन सिंह। दुर्गास्थानमे आयोजनक प्रमुख छलाह देबू बाबू अर्थात श्री देवेन्द्र

प्रताप सिंह।

दुर्गास्थानमे एहिबेर देबू बाबूक आग्रहपर एक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रममे हमहूँ रूचि लेलहुँ। बैद्यनाथ बाबू मास्टर साहेब संग देलनि। यमसम गेलहुँ। प्रसिद्द गायक महेन्द्र झा जीसँ भेंट केलहुँ। एक दिन दू-तीन घंटा समय देबाक अनुरोध केलियनि। भरिसक नवमी दिन रहै। महेन्द्रजी, जेना कहने रहथि, साँझमे सासुरसँ घुरैत काल एलाह दुर्गास्थान। महेंद्रजीक कार्यक्रमक लेल हम सभ बहुत गोटेसँ व्यक्तिगत रूपें सेहो सम्पर्क केने रही। हम सभ जेना चाहैत रही, नीक संख्यामे लोक सभ महेन्द्रजीकें सून' आएल छलाह। रामपट्टीक कवि-गीतकार आर. के. रमण जी सेहो आएल छलाह। रमणजीक स्वर सेहो बहुत मधुर छलनि, ओ चारि-पाँचटा अपन रचना सुनौलखिन, लोककें बहुत नीक लगलनि। अन्तमे महेन्द्रजी माइक पकड़लनि त दू घंटा धरि लोक मंत्रमुग्ध भेल हुनका सुनैत रहल।

जेहने आदरणीय रवीन्द्रजी (श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर, धमदाहा, पूर्णिया)क सरल,आकर्षक आ अनमोल शब्द सभ, तहिना महेन्द्र जीक अदभुत आ अनमोल स्वर परमानन्दक अनुभव करबैत छल।

देबू बाबूक पिता स्व. प्रताप भानु वर्मा, जे हमरा इलाकामे चर्चित लोक छलाह, ओहो पहिल बेर महेन्द्रजीकें एना सुनने छलाह, सुनैत-सुनैत भावुक भ' गेलाह, मंचपर आबि जे उदगार व्यक्त केलनि, से सभ गोटेकें भावुक क' देलकनि।

कार्यक्रम बहुत दिन धरि चर्चाक विषय बनल रहल।

कार्यक्रमक आयोजन लेल हमरो मंगनीमे प्रशंसा भेटि रहल छल।

हमरो नीक लागल आ नोकरीक चिट्ठीक बाट ताकब आसान भ' गेल।

करीब एक मासक बाद ढोलीसँ एबाक सूचना प्राप्त भेल।

ढोली पहुँचलहुँ।

पाँच-पाँच गोटेक समूह बनाक' अलग-अलग गाम निर्धारित क' हमरा सभकें मुशहरी ब्लाक लेल विदा क' देल गेल। हमर सबहक निदेशक हमरा सभकें सहायता आ सुझाव देबाक लेल आवश्यकतानुसार उपलब्ध रहैत छलाह।

हमर सबहक समूह पहिने सुस्ता गाम गेल।

ओहि गामक काज पूर्ण भेलाक बाद गेल माधोपुर। माधोपुरमे मुखियाजीसँ सम्पर्क भेलापर एकटा खूब नमहर दलानपर हमरा पाँचो गोटेक रहबाक व्यवस्था भेल।

लक्ष्मी सिंह नामक एक अविवाहित सज्जन छलाह, वैह हमरा सभ लेल भोजन, जलखै बनेबाक भार उठेलनि। पता चलल जे हिनका बाहरसँ अबैबला हाकिम-कर्मचारी सबहक सेवा करब नीक लगैत छनि, सेहो बिना कोनो लोभ-लालचके।

हमरा सबहक समूहमे एकटा मुस्लिम भाइ सेहो छलाह। सिंह जी माए जकाँ सभ गोटेक देख-भाल करैत छलाह। सभकें बड़ड जिद्द क'क' परसन द' क' प्रेमसँ केराक पातपर भोजन करबैत छलाह। साँझमे दलानपर बहुत गोटे जमा होइत छलाह जिनका सभसँ हम सभ गामक इतिहास सुनैत छलहुँ। अपने गामक लोक जकाँ लगैत छलाह सभ गोटे।

एक दिन हम सभ कोनो गाममे साढ़े पाँच बजेक बाद तक रहि गेल रही। सिंहजी गमछामे चूड़ा भूजल आ मुरही ल'क' पहुंचि गेलाह। हुनका भेलनि जे सभकें भूख लागि गेल हेतै आ चिन्ता सेहो भेलनि जे कोनो अनहोनी त' ने हमरा सबहक संग भेल। से बादमे कहलनि आ अभिभावक जकाँ हिदायत देलनि जे हम सभ पाँच बजे अवश्य बिदा भ' जाइ। सिंहजी पहिने गामक जे स्थिति रहै तकरे अनुभवसँ हमरा सभकें सलाह दैत छलाह।

हम सभ करीब बीस दिन ओइ गाममे रहलहुँ। जहिया ओत'सँ विदा

भेलहुँ,सिंहजी एना उदास भेलाह जेना अपन कोनो निकटतम सम्बन्धी सभसँ बिछुडन भ' रहल होनि।

हम सभ सिंहजीसँ ई कहियो नै पुछलियनि जे ओ विवाह किए नहि केलनि।

डर होइत छल जे पता नहि पुछलासँ ओ भावुक भ' जाथि। एहि संसारमे कतेक लोक केहेन-केहेन कष्टकें भोगैत-भोगैत चुप-चाप प्रस्थान क' जाइत अछि, तकर हिसाब के करत? कोना करत?

तकर बाद जाहि गाममे काज करबाक छल से मुजफ्फरपुरसँ लग छलै।

ओत' सँ शनि दिन मुजफ्फरपुर गेलहुँ, सेंट्रल बैंकक क्षेत्रीय कार्यालय। कार्मिक विभागमे जाक' सम्पर्क केलहुँ त कहलनि, जल्द ही आदेश आनेबाला है,अगले सप्ताह आइए।

दोसर शनि दिन गेलहुँ त कहलनि, सिविल सर्जन से फिटनेस सर्टिफिकेट लेकर

तीन दिन के भीतर आ जाइए।

मेडिकल सर्टिफिकेट ल' क' पहुँचलहुँ। दस दिसम्बरक' सिवान जिलामे बसंतपुर शाखामे योगदान करबाक लेल आदेश प्राप्त भेल। हमरा कहल गेल जे मुजफ्फरपुरसँ बस पकडिक' मोहम्मदपुर तक जाएब, मोहम्मदपुरसँ मलमलियाक लेल बस पकड़ब आ ओत'सँ सिवानबला बस अथवा रिक्शासँ बसंतपुर जाएब, कुल पाँच-छओ घंटाक रस्ता अछि। ईहो सूचना भेटल जे मुजफ्फरपुरक कोनो शाखासँ रामेश्वर ठाकुर डेपुटेशनपर गेल छथि जे बसंतपुरमे हेड केशियरक रूपमे कार्य क' रहल छथि।

अपन निदेशकक़ें कहलियनि जे हम आठ तक काज क' क' चल जाएब। हमरा जतेक भेटबाक चाही से आठ समयपर भेटि गेल।

हम नओ तारीखक' मुजफ्फरपुर बस स्टैंडपर गोपालगंज होइत सिवान जाइबला बसमे बैसलहुँ। करीब चारि घंटामे मोहम्मदपुर, ओत'सँ एक घंटामे मलमलिया आ ओत'सँ रिक्शासँ दस-बारह मिनटमे बसंतपुर पहुंचि गेलहुँ।

साँझ भ' गेल छलै।

बैंकक गेटक सामने थोड़े काल ठाढ़ भेलहुँ त ठाकुरजी (रामेश्वर ठाकुर)एलाह, अपन परिचय देलियनि। गेट खोललनि। भीतर गेलहुँ। ठाकुर जी रातिमे शाखा प्रबंधकबला टेबलपर अपन बेडिंग पसारैत छलाह। हमरा एग्रीकल्चर विभाग बला टेबलपर अपन बेडिंग रखबाक सुझाव देलनि। थोड़े काल गप भेल। फेर फ्रेश भ' क' हम सभ बत्तक साहक होटलमे भोजन कर' गेलहुँ।

भोजन क' क' एलहुँ त थोड़े काल फेर गप-शप भेल, ओकर बाद ओ शाखा प्रबंधक बला टेबलपर अपन बेडपर पड़ि रहलाह। हम एग्रीकल्चर विभाग बला टेबलपर अपन ओछाइन ओछाक' पड़ि रहलहुँ। बड़ी काल धरि निन्न नहि भेल। अतीतक दृश्य सभ सोझाँमे आबि गेल :

पटनामे नागेन्द्रजीसँ भेंट, आरामे साढूक भैयाक डेरा, जमशेदपुरमे मामाक डेरा, रिटेल कण्ट्रोल क्लॉथक व्यवसायक लेल दौड़-धूप, फील्ड इन्वेस्टिगेटरक प्रशिक्षण, मुशहरी ब्लाकमे बाढ़ि, गामक दुर्गा-पूजा, दुर्गास्थानमे महेन्द्र झाजीक कार्यक्रम,फेर मुशहरी ब्लाक आगमन,सुस्ता गाम, माधोपुर गामक लक्ष्मी सिंह, सेंट्रल बैंकक क्षेत्रीय कार्यालय, बहालीक चिट्ठी, मुजफ्फरपुरसँ बसंतपुरक यात्रा। लगैत छल जेना धीरे-धीरे एहि पहाड़पर बहुत दूरसँ आबि रहल छी, बहुत दूरसँ।

मोन पड़ल अपन गाम।

मोन पड़ल अपन घर।

मोन पड़लाह पिता, मोन पड़लीह माए, मोन पड़लाह दुनू अनुज, मोन पड़लीह पत्नी

मोने मोन सभकें कहलियनि, आब अहाँ सभ चिन्ता नहि करू,

जकर प्रतीक्षा कतेक माससँ करैत आबि रहल छलहुँ,

से नोकरी हमरा भेटि गेल अछि।

पटना / १४.०८.२०२१

(१७)

नोकरीक साढ़े चारि साल

बैंकमे पहिल दिन

मलमलियासं सिवान जाइबला सड़कक दहिना कातमे प्रथम तलपर पूब दिससं सेंट्रल बैंकक शाखा छलै जे छओ मास पहिने खूजल छलै, पच्छिम दिस भूमि विकास बैंकक कार्यालय छलै। सड़कक बामा कात प्रखंड-अंचल कार्यालय छलै। एहि ठामसं सिवान बत्तीस किलोमीटरपर छै।

बैंकक हाल खूब नमहर छलै। स्वीपर छल महेन्दर बांसफोर। ओ सबेरे आबिक' हमरा सभकें पानि आ चाह पियाक', हमर सबहक ओछाइन स्टेशनरी रूममे राखि, बैंकक सफाइ क' क' चल गेल। हम सभ फ्रेश भ' क' नीचां चापा-कलपर स्नानकय

तैयार भ'क' बजारसं किछु जलखै क' क' एलहुं। वाटर बॉय छल राम नरेश, बाल्टीमे पीबैबला पानि भरिक' रखलक। दफ्तरी छलाह राम अयोध्या पंडित, मशरक घर छलनि,सोम दिन गामसं अबैत छलाह,

बैंकक हॉलमे दू टा टेबल जोडिक’ सुतैत छलाह, होटलमे खाइत छलाह, शनि दिन गाम चल जाइत छलाह।
दस बजे बैंकमे आबि हम सभ बैसलहुँ। साढ़े दस बजे बैंकमे बहुत लोक आबि गेलाह। सिवानसं शाखा प्रबंधक एलाह, दास बाबू (श्री निरंजन दास) आ श्री गौरी शंकर सिंह, कृषि वित्त अधिकारी। दुनू गोटे सिवानसं सभ दिन बससं अबैत छलाह। शाखामे कृषि विभागक काज एखन धरि सिंहजी देखैत छलाह, सिवानसं अबैत छलाह आ साँझमे सिवान घूरि जाइत छलाह।
एगारह बजैत-बजैत हालमे लोकक भीड़ लागि गेलै।
हम त घबरा गेलहुँ।
सिंहजी कहलनि, ई सभ गोटे गहूमक खेतीक लेल लोन लेबय आएल छथि, ब्लाक ऑफिस सं आवेदन फॉरवर्ड भ’ क’ आएल छै, अंचल अधिकारी द्वारा जमीनक प्रमाण पत्र देल गेल छै , प्रति एकड़ छः सौ रूपैयाक लोन स्वीकृत करबाक छै, दू सै बीयाक लेल आ चारि सै खादक लेल। स्वीकृतिक लेल हमसभ अनुशंसा क’ क’ शाखा प्रबंधक लग पठबैत छियनि, शाखा प्रबंधकक हस्ताक्षरक बाद हमसभ बैंकक दस्ताबेज सभपर आवेदक आ दूटा गारंटरक हस्ताक्षर ल’क’ बीज निगम कें बीजक लेल आ खाद डिपो कें खादक लेल डिलीवरी आर्डर देल जाइ छै ।
यैह भेल हमर प्रशिक्षण।
दफ्तरी दस्ताबेजक सेट बनाक’ दै छलाह।
सिंह साहेब एक-दूटा आवेदनक निष्पादनक प्रक्रिया देखा देलनि आ तकर बाद दस्ताबेज सभ पर आवेदक आ दू-दूटा जमानतदारक हस्ताक्षर लेब’ कहलनि।
ठाकुर जी कैश विभागक काज देखि रहल छलाह।
बीचमे ठाकुर जी संगे भोजन कर’ बजार गेलहुँ, सिंहजी एसगरे थोड़े

काल काज करैत रहलाह।

ठाकुरजी कहलनि, आज त लगैए रात भ' जेतै, जत्ते लोक दू तीस तक बैंकमे आबि गेल छथि, हुनकर काज त हेबे करतै। हम घबरा गेलहुँ। लगातार एते काल बैसबाक अभ्यास नहि छल।

साढ़े चारि बजे पेट्रोमक्स जड़बैत देखलिऐ तखन ठाकुरजी जे कहने छलाह तकर पुष्टि भ' गेल।

जाड़क मास छलै, बैंक बन्द होइत-होइत नौ बाजि गेलै। बड्ड थाकि गेल रही।

होटलमे खेबाक लेल जे किछु भेटल, से ख़ाक' जखन सूत' गेलहुँ त मोनमे भेल जे नोकरी ठीक नै भेल, मुदा आब कोनो विकल्प शेष नहि रहि गेल अछि, से सोचि मोनकें स्थिर करबाक प्रयासमे लागि गेलहुँ।

दू दिनक बाद सिंह साहेब सिवानसं एनाई बन्द क' देलनि। हुनका जेना-जेना देखने छलियनि, तहिना आवेदन पत्र देखिक' कते खेत हिस्सामे छै जाहिमे गहूमक खेती करबाक छै, से देखिक' कते आ कोन-कोन खादक आवश्यकता छै,से गणना क'क' ऋण स्वीकृतिक लेल अनुशंसा करैत अपन लघु हस्ताक्षर कय शाखा प्रबंधककें दै छलियनि। ओ हस्ताक्षर करैत छलाह। एकर बाद दस्ताबेज सभपर आबेदक आ जमानतदार सबहक हस्ताक्षर लैत छलहुँ। तकर बाद बीज निगमकें बीज लेल आ खाद डिपोकें खाद लेल डिलीवरी आर्डर भरिक' ओइपर अपन लघु हस्ताक्षर कय शाखा प्रबंधकक हस्ताक्षर लैत आवेदककें द' दैत छलियनि।

आवेदक कृषक निगम आ डिपोसं बीज आ खाद ल' क' चलि जाइत छलाह, निगम अथवा डिपो किसानकें बीज अथवा खाद द' क' बैंक शाखामे बिल पठा दैत छलैक। बिलमे सूचना रहैत छलै जे बैंक

शाखाक आदेशपर कोन कृषककें कतेक राशिकेर बीज अथवा खादक आपूर्ति कयल गेलैए। डिलीवरी चलानपर कृषकक हस्ताक्षर रहैत छलैक।
बैंकक बही(लेजर)मे कृषकक खाता खोलल जाइ छलै, बिलक राशिसं सम्बन्धित कृषकक खाता नामे (डेबिट) होइ छलै। एतबे राशिक धनादेश (पे आर्डर) अथवा ड्राफ्ट आपूर्तिकर्ताक नामे बनाक' बिलक भुगतान क' देल जाइत छलै। एकर विवरण जाहि छपल कागतपर लिखल जाइत छल तकरा डेबिट आ क्रेडिट भाउचर कहल जाइत छलै। भाउचरपर हमर लघु आ शाखा प्रबंधकक पूर्ण हस्ताक्षर होइत छलनि, भाउचर दिन भरिक अन्य भाउचरक संग अभिलेख(रिकॉर्ड) लेल सुरक्षित राखल जाइत छलैक।
भाउचरपर विवरण कोना लिखी, से पछिला कोनो तिथिक सिंहजीक बनाओल भाउचर देखिक' सिखैत छलहुँ —महाजनो येन गतः स पन्थाः।
तकरा बाद :
भीड़ क्रमशः कमैत गेल।
रामेश्वर ठाकुर जीक ट्रान्सफर मुजफ्फरपुर भ' गेलनि, हुनका स्थानपर मधुबनी शाखासं गणेश ठाकुरजी एलाह स्थायी हेड केशियर बनिक'। गणेश ठाकुरजी डेरा ताकि लेलनि आ परिवार संगे रह' लगलाह। हमरो लगेमे डेरा भेटि गेल। एसगर रह' लगलहुँ।
दफ्तरी राम अयोध्या पंडित ऑफिसमे रातिमे सुतैत छलाह, सबेरे आ साँझक' हमरे संगे भोजन बनबैत छलाह आ करैत छलाह। शनि दिन ऑफिसक काजक बाद अपन गाम चलि जाइत छलाह आ सोम दिन अबैत छलाह।
शाखा प्रबंधक दास बाबू (श्री निरंजन दास) सभ दिन सिवानसं बससं अबैत छलाह।

डेरा भाड़ा प्रसंग

हमरा आवासक किराया पचास रुपैया छल। सभ मास एक तारीकक' पछिला मासक किराया मकान मालिकक‍ें खातामे जमाक' दैत छलियनि।

एक दिन मकान मालिकक भातिज एलाह आ कहलनि जे ऐ माससं किराया हमरा देब' पड़त। हम कारण जान' चाह्लहु त कहलनि, हमर पारिवारिक समस्या अछि, एकर किराया हमरा भेटक चाही, तें हमरा देब' पड़त। हमर कोनो अनुरोध ओ सुनबा लेल तैयार नै भेलाह। हम सोचलहुँ जे हिनकासं झगड़ा करबासं नीक अछि दोसर डेरा ताकि लेब। हम कहलियनि, ठीक छै, जाउ ऐ महिनामे अहाँकें किराया भेटि जाएत। ओ कहलनि जे ओ आबथि त कह्बनि जे हुनका द' देलियनि, अहाँ हुनकासं गप करू। हम कहलियनि, अहाँकें किराया भेटि जाएत, आब हमर चिन्ता अहाँ छोडि दिय'। ओ प्रसन्न भ' क' चल गेलाह।

ओही दिन साँझमे ओ एलाह जिनका पहिनेसं किराया दैत आबि रहल छलहुँ। ओहो अपन परिवारक समस्याक चर्च करैत कहलनि, अहाँ हमर पारिवारिक झगडामे नै पड़ू, अहाँ जहिना हमरा किराया दैत आएल छी, तहिना दैत रहू, ककरोसं डरबाक काज नै छै। ईहो अपने बातपर अड़ल रहलाह, हमर कोनो बात नै सून' चाहैत छलाह। हम सोचलहुँ जे दोसर डेरा ताकि लेब ठीक रहत, ताबत ऐ मासक किराया हिनको द' देबनि। कहलियनि. ठीक छै, अहाँकें जेना दैत छलहुँ से अवश्य भेटत। ओहो प्रसन्न भ' क' गेलाह।

हमरा पंडित दफ्तरी कहलक, अहाँ ई ठीक नै केलहुं, दुनू गोटेकें किराया देबनि?

हम कहलियनि, एक मास द' देबनि, दोसर मासमे हम ई डेरे छोडि

देब। झगड़ा केलासं अपनो अशांत भ' जाएब, ऐसं नीक पचास रुपैयाक नोकसान, बूझब जे पचास रुपैया जेबीसं कतहु खसि पडल।
तीस तारीखक' एक गोटे सबेरे आबिक' किराया ल' गेलाह।
दोसर साँझमे एलाह। ओहो अपन किछु अनिवार्य आवश्यकताक चर्च करैत किराया ल' गेलाह।
हम दोसर डेराक खोज तेज क' देलहुं।
एक सप्ताहक बाद एकदिन मुखियाजीकें हिनका दुनू गोटेक संग अबैत देखलियनि त चिन्ता भेल।
मुखियाजी कहलनि, हम अहांसं एकटा जानकारी प्राप्त कर' आएल छी ठाकुरजी। हम कहलियनि, अवश्य, पूछल जाए।
मुखिया जी पुछलनि, ई कहैत छथि जे ठाकुरजी हमरा किराया देलनि आ ई कहैत छथि जे किराया हमरा भेटल, ऐमे सही के अछि?
हम कहलियनि, मुखियाजी, दुनू गोटे सही छथि, गलत कियो नहि छथि।
मुखिया जी आ ओहो दुनू गोटे हमरा दिस ताक' लगलाह।
मुखिया जी बजलाह, अजीब बात अछि , एक आदमी दुनू गोटेकें किराया देलाक बादो शांत छथि, कोनो शिकायत नै आ ई दुनू आदमी किराया लेलाक बादो अशांत अछि , लड़ाइ-झगड़ा करबा पर उतारू अछि !
मुखिया जी अपनापन जनबैत दुनू गोटेकें बुझौलखिन जे ई लाजक बात थिक।
दुनू गोटे मुखियाजीक कहलापर पचास-पचास रुपैया हमरा वापस क' देलनि। मुखिया जी हमरा कहलनि, अहाँ एखन राखू पाइ,दू-तीन दिनमे फैसला भ' जेतै, तखन जकरा कहब तकरा द' देबै।
दुनू गोटेक गेलाक बाद मुखिया जी कहलनि तखन बुझलिऐ जे दुनू गोटे एके आँगनमे रहैत छथि, एक आदमी हमरासं किराया ल'क'

गेलाह आ अपना घरमे बजलाह, हुनकर पत्नी दोसरकें सुनाक' कहलखिन जे लोककें बजलासं की हेतै, किरायादार हमरा मालिक बुझलक तखन ने किराया देलक। दोसर पक्षकें ई बुझेलनि जे ई हमरा खौंझबैए, किएक त हमरा त किराया आबि गेल अछि। प्रतिक्रियामे दोसर पक्ष सेहो किछु बजलीह, दुनू पक्षमे कहा-सुनी भ' गेलनि, बात पुरुष सभमे सेहो भ' गेलनि। झगडा ततेक बढ़ि गेलै, जे मुखियाजीकें हस्तक्षेप कर' पड़लनि।

हमरा दुख भेल जे हमर जे क्रिया भेल तकर परिणाम अशुभ भ' गेलै, तें हमरा

किछु दोसर तरहें समाधान ताकब उचित छल।

तीन दिनक बाद मुखियाजी कहलनि, फैसला भ' गेलै, अहाँ जिनका दैत छलियनि, हुनके देबनि, दोसर कियो आब कहियो किराया मांगय नै एताह।

सैह भेलै। तकर बाद फेर कहियो डेरा ल' क' समस्या नहि भेल।

लंबित आवेदन प्रसंग

आपात काल चलिए रहल छलै। सभ ठाम शान्ति। सभ ठाम पोस्टर छलै, 'अनुशासन ही देश को महान बनाता है।'

बैंकमे किसान सबहक ऋण आवेदन अबैत छलै प्रखण्ड कार्यालयसं अग्रसारित भ'क'। आवेदन पत्र कोनो स्थितिमे पन्द्रह दिनसं अधिक अवधि लेल लंबित नहि रहबाक चाही, से स्पष्ट आदेश छलैक। आवेदन-पत्र सबहक निष्पादनक समीक्षा हेतु टास्क फ़ोर्सक साप्ताहिक मीटिंग होइत छलैक जिला स्थित कलेक्टरक सभा कक्षमे। मीटिंगमे प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सभ रहैत छलाह आ बैंक दिससं जिला स्थित मुख्य शाखाक कृषि वित्त अधिकारी रहैत छलाह।

बसंतपुरक प्रखण्ड विकास पदाधिकारी रिपोर्ट केलखिन जे सेंट्रल बैंक

बसंतपुरमे बोरिंगक सत्तरिटा आवेदन तीन माससं लंबित अछि। कलेक्टर बहुत नाराज भेलाह आ गौरी शंकर सिंह, सिवान शाखाक कृषि वित्त अधिकारीकें कहलखिन जे ओहि ठाम जे स्टाफ काज करैत अछि, तकरा ससपेंड क' क' हमरा खबरि करू।
दोसर दिन सिवानसं गौरी बाबू एलाह आ ई समाचार कहलनि। हमरा त ओत' तीन मास भेलो नै छल, हमरासँ पहिने वैह सिवानसं आबिक' एहि शाखाक काजक निष्पादन करैत छलाह। हम एहि बीचमे फसल-ऋणक आवेदनक निष्पादन करैत जा रहल छलहुँ। किछु सर्कुलर सभ जे आएल छलै, से पढने छलहुँ। हम ओहि सर्कुलरकें निकाललहुँ। गौरी बाबूकें बूझल छलनि। सर्कुलरक अनुसार जाहि किसानकें अपना पंप-सेट नै छै अथवा ओकरा आसानीसं उपलब्ध नै छै तकरा खाली बोरिंग लेल ऋण नै देबाक छै।
विचार-विमर्श भेल। हमरा अगिला सप्ताहक टास्क फ़ोर्सक मीटिंगमे उपस्थित हेबाक लेल कहिक' गौरी बाबू चल गेलाह।
अगिला मीटिंगमे हमहूँ गेलहुँ। बसंतपुर प्रखण्डक चर्चा शुरू भेल त कलेक्टर साहेब पुछलखिन सेंट्रल बैंक बसंतपुरसं के एलाहे। हम ठाढ़ भेलहुँ। कलेक्टर पुछ्लनि लम्बित आवेदन पत्रक विषयमे। हम बैंकक ओहि सर्कुलरक चर्च करैत कहलियनि, अढ़ाइ मास पहिने आवेदन पत्र सभ प्रखण्ड कार्यालयकें वापस कएल जा चुकल छै। हम शाखा प्रबंधकक हस्ताक्षरसं गेल लगभग अढ़ाइ मास पहिलुक पत्रक प्रति देख' देलियनि, गौरी बाबू सेहो एकर समर्थन केलखिन। कलेक्टर साहेब प्रखण्ड विकास पदाधिकारीपर बिगड़ि गेलखिन। कहलखिन, हमरा लगैत छल जे बैंक एहेन गलती नहि क' सकैत अछि, मिस्टर पी वी पी, गलत सूचना ल'क' नै आउ।
अहाँक ठीक सामने अछि बैंक शाखा, अहाँ बैंकसं ताल-मेल किए नै रखैत छी? आब बैंक स्टाफक संगे मीटिंगमे आउ।

दोसर दिन पी वी पी हमरा शाखामे एलाह आ कहिया वापस भेलै आ के प्राप्त केने रहै, से जान' चाह्लनि। दफ्तरी पिउन बुक देख' देलकनि। प्राप्तकर्ताक हस्ताक्षर नहि चीन्हि सकलाह, पी वी पी गुम्म भ' गेलाह, कहलखिन, आब यदि कोनो आवेदन वापस रही त कोनो आन अधिकारीकें देब।

तकरा बाद फेर कहियो कोनो रिपोर्ट मे कोनो त्रुटि हेबाक अवसर नै एलै। पी वी पी कोनो मीटिंगमे जेबासं एक दिन पहिने बैंक शाखामे अपने आबिक' अथवा कोनो अधिकारीकें पठाक' बैंकक रिपोर्टसं अपना रिपोर्टक मिलान करा लैत छलाह आ जहिया टास्क फ़ोर्सक मीटिंग रहै छलै त हमरो संग क' लैत छलाह।

पिताक अस्वस्थता प्रसंग

१९० रु. मूल वेतनपर हमर बहाली भेल छल, डी. ए. मिलाक' ५०३ रु. होइ छलै।

शुरूमे किछु मास धरि किछु ओवरटाइम सेहो भ' जाइ छलै। एकर अतिरिक्त मीटिंगमे सिवान जाइ छलहुँ त ओकरा लेल डाईम अलाउंस सेहो एक दिनक बारह रु. भेटि जाइत छल। हम संतुष्ट छलहुँ। अपना लेल कम-सं-कम खर्च करैत पाइ गाम पठा दैत छलहुँ अथवा नेने जाइ छलहुँ।

आमदनी भेल त खर्चक नव रस्ता सभ सेहो बन' लागल। किछुए मासक बाद बाबूक स्वास्थ्य बहुत ख़राब भ' भेलनि, जांचक बाद टी.बी. प्रगट भेलनि।बहुत खतरनाक बिमारी छलै ओहि समयक लेल। दबाइ, पथ्य आदिमे बहुत खर्चक आवश्यकता होइत छलैक।

हमर प्राथमिकतामे सभसं ऊपर भ' गेल बाबूजीक इलाज आ पथ्य। दरभंगामे नीक डॉक्टरसं इलाज चल' लगलनि।

लगातार छौ मास इलाज आ पथ्यपर बाबूक स्वास्थ्य सामान्य भेलनि।

तकर बादो बहुत दिन धरि डॉक्टरक सलाहक अनुसार दिनचर्या चलैत रह्लनि।

एक मास पुरलापर एक दिनक आकस्मिक अवकाश भेटैत छल। शनि दिन दू बजेक बाद विदा होइत छलहुँ, रातिमे गाम पहुँचैत छलहुँ, रवि दिन रहिक' सोम दिन विदा भ' जाइत छलहुँ।

बादमे किछु मास लेल परिवार ल'क' सेहो रहलहुं। किछु मास बाबूकें सेहो अपना संग रखलियनि।

छोट भाए सभ गामक मिडिल आ हाइ स्कूलमे पढ़ै छलाह।

घरमे आवश्यकतानुसार माएकें लोकसं कर्ज ल' लेब' पडैत छलैक, ओ ओकर सूदिक गणना करैत छलीह।

बाबूक हाथक कर्ज सभकें बूझल रहैत छलै।

हम दुनू तरहक कर्जसं धीरे-धीरे मुक्तिक प्रयास क' रहल छलहुँ। बच्चीक गहना छोड़यबाक बात ध्यानसं हटि गेल। एक सालक बाद को ऑपरेटिवसं लोन ल'क' गहना छोड़यबाक बात सोचलहुँ त कहलक जे गला देल गेलै। हम तखन ओइ दिस सोचनाइए छोड़ि देलहुं।

शाखामे नव-नव सदस्य सबहक आगमन

शाखाक व्यवसायमे वृद्धि भेलैक त सदस्यक संख्यामे सेहो वृद्धि भेलै। कृषि वित्त अधिकारीक पदपर एलाह श्री शिव शंकर सिंह जी। सिंह जी सभसं लम्बा-तगड़ा छलाह, खांटी इमानदार आ स्पष्टवक्ता छलाह। परिवारक संग रहैत छलाह, पिता सेहो संग रहैत छलखिन।

दफ्तरी राम अयोध्या पंडित लिपिक सह खजांची भ' क' गेलाह डुमरा (सीतामढ़ी), हुनका स्थान पर मदन प्रसाद एलाह।

किछु अंतरालक बाद एकटा और कृषि सहायक एलाह चितरंजन शर्मा जी।

दिघवारासं श्रीवास्तवजी एलाह चीफ केशियर भ' क'।

किछु मासक बाद शाखा प्रबंधक दास बाबूक स्थानान्तरण मुजफ्फरपुर भ' गेलनि, हुनका स्थानपर चौबे जी एलाह आरासं। चौबेजी बहुत हंसमुख स्वभावक छलाह।

लोक जे हुनका चैम्बरमे कोनो काजे जाइत छल, से प्रसन्न मुद्रामे निकलैत छल।

सामान्यतया कृषि विभागसं सम्बन्धित आवेदन पत्र पर कृषि सहायक, कृषि वित्त अधिकारीक अनुशंसापर शाखा प्रबंधक स्वीकृतिपर हस्ताक्षर करैत छलाह। कोनो-कोनो आवेदन जे बैंकक सर्कुलरक अनुसार उपयुक्त नै रहै छलै, ओहिमे हमरा सबहक अनुशंसा नहियों रहलापर, यदि हुनका ठीक लगै छलनि, त स्वीकृत क' दैत छलखिन। हमरा सभ जकाँ ओ नै डेराइत छलाह।

कन्हैया लाल श्रीवास्तव लिपिक सह खजांचीक पद पर आ छपरासं बी.पी. शर्मा एलाह लेखापालक पदपर। शर्मा जी एसगरे रहैत छलाह। ओहो नियमक अनुसारे सभटा काज करैत छलाह, नियमसं कनियों विचलन पसन्द नै करैत छलाह। ओ कतेक सदस्यकें बैंक सेवामे भेल दुर्गति देखने छलाह अथवा सुनने छलाह, तकर चर्च समय-समयपर करैत छलाह आ सर्कुलरेक अनुसार सभ काज करबापर जोर दैत छलाह। ओ रस्तोपर चलैत काल यदि सड़कपर कोनो धिया-पूताकें देखि लैत छलाह त ओकर घरक अभिभावककें बजाक' धिया-पूताकें सम्हारिक' रखबाक उपदेश द' दैत छलखिन। हम सभ एक बेर पुछलियनि जे अहाँकें कोन मतलब अछि आनक एते चिन्ता करबाक त कहलनि जे एक त सभ जिम्मेदार नागरिकक काज छै जे ककरोसं किछु चूक भ' रहल छै, त ओकरा सतर्क क' दियौ,

दोसर जे कोनो दुर्घटना भ’ जाइ त पुलिस हमरो सभसं पुछ-ताछ क’ सकैए। एतेक सावधान रहैबला आ दोसरोकें सावधान करैबला शर्माजी ककरोसं अपन परिवारक विषयमे कखनो किछु नै कहैत छलखिन।

एक दिन ऑफिसमे कोनो बात पर शर्माजी शाखा प्रबंधक महोदयकें कहलखिन जे कहियो अहाँ अपनो फसब आ हमरो सभकें फसाएब। जबाबमे शाखा प्रबंधक कहलखिन जे कपारमे लिखल हैत फसब त कियो बचा नै सकत आ लिखल हैत बचब त कियो किछु बिगाड़ि नै सकैए। शर्माजीकें ई बात नीक नै लगलनि, पान खाए बिदा भ’ गेलाह। हुनका ककरो बात पसन्द नै पड़ैत छलनि त पान खाए निकलि जाइत छलाह आ पाँच मिनटक बाद शांत भ’ क’ घुरैत छलाह।

एक दिन एक गोटेक गपसं हुनका एतेक दुख भेलनि जे उठिक’ रोडपर एलाह, एकटा बस मुजफ्फरपुर जाइत रहै, ओहीमे चढ़ि गेलाह आ एक सप्ताहक बादे मुजफ्फरपुरसं घुरलाह।

दुखक बात ई भेलै जे दस बरखक बादे शर्माजी शाखा प्रबंधक भेलाक किछुए दिनक बाद बैंक छोडि देलनि आ चौबेजी तीनटा शाखामे शाखा प्रबंधक रहलाक किछुए बरख बाद संसारे छोडि देलनि। शर्माजी किए बैंक छोडि देलनि, से पता नै चलि सकल। चौबेजी द’ पता चलल जे बिमारीक कारणे नै ठहरि सकलाह। डायबिटीज छलनि, मुदा अपेक्षित परहेज नहि करैत छलाह।

बहुत पहिने एक दिन ऑफिसमे शर्माजी आ चौबेजीक मुंहसं जे निकलल रहनि से कोना एक-दोसरक लेल सत्य भ’ गेलै अथवा एक दोसरक लेल श्राप सिद्ध भेलनि,से चिन्तनमे आबि जाइत अछि। शर्माजीक कहब छलनि जे असावधान रहलासं अनिष्ट भ’ सकैत अछि, से चौबेजी लेल सत्य सिद्ध भेलनि।

चौबेजीक कहब छलनि जे कतबो सावधान रहब, यदि भाग्यमे अनिष्ट लिखल अछि त कियो बचा नै सकैए–ई शर्माजीक लेल सत्य सिद्ध भेलनि। शर्माजी एतेक सावधान रहैत छलाह, कोनो अपराध नै केने छलाह तखनो स्वयं शाखा प्रबंधकक पद छोड़िक' भागि पड़यलाह। चिन्तक लोकनि कहैत छथि आवर वड्र्स क्रिएट आवर वर्ल्ड, सोचिक' कोनो बात बजबाक चाही, मुदा से कहाँ होइत छैक, पता नहि दिन भरिमे हम सभ अपन चिन्तन अथवा अपन शब्दसं किनका-किनका श्राप दैत रहैत छियनि अथवा किनकर-किनकर चिन्तन अथवा शब्द सभसं शापग्रस्त होइत रहैत छी।

किछु मासक बाद अंचल निरीक्षकक पर पर एलाह रामजी लाल दास जी जे हमरे जिलाक छलाह। हुनकासं मैथिलीमे गप होइत छल,से हमरा लेल अतिरिक्त खुशीक बात छल। दास जी हिन्दीमे लिखैत छलाह, त्रिकालदर्शी उपनामक संग कार्टून सेहो नीक बनबैत छलाह, एखनो फेस बुक पर हुनकर कार्टून अधिक काल देखैत रहैत छी। विज्ञानपर आधारित हुनक विलक्षण कथा संग्रह प्रकाशित भेल छनि, हमहूँ पढने छी। एकटा और पोथी प्रकाशित भेलनि अछि।

दास जी छलाह त अंचल कार्यालयक स्टाफ मुदा बैंकक स्टाफ सभसं ततेक घुलल-मिलल छलाह जे बहुत गोटे हुनको बैंकेक स्टाफ बुझैत छलनि।

हम सभ संगे साँझमे कहियो मलमलिया दिस त कहियो कन्हौली दिस पयरे घूमय जाइ छलहुँ।

हम मिथिला मिहिर मंगबैत छलहुँ, मैथिली आ हिन्दीक किताब पढैत छलहुँ आ मैथिलीमे गीत लिखैत छलहुँ। हिन्दीमे काका हाथरसीक एकटा किताब पढ़लहुँ, हिन्दी मे सेहो किछु छोट-छोट कविता लिखय लागल छलहुँ।

कन्हैया लाल श्रीवास्तव जी सेहो भोजपुरीमे गीत गबैत छलाह आ लिखबो करैत छलाह। हमरा संगे किछु मैथिली गीत सेहो गाबि लैत छलाह।

मोटर साइकिल प्रसंग

एक दिन आंचलिक प्रबंधक एलाह। कृषि विभागमे दू गोटे रही- हम कृषि सहायक आ सिंह जी, कृषि वित्त अधिकारी। हमरा सभकें पुछ्लनि जे हम सभ एखन धरि मोटर साइकिल किए ने किनने छी, बिना मोटर साइकिलके फील्डमे कोना जाएब इंस्पेक्शन अथवा वसूली लेल। हम सभ कहलियनि जे चलब' नै अबैए त कहलनि जे सीखि लिय', बिना सिखने काज नै चलत।
हम ईहो कहलियनि जे पन्द्रह प्रतिशत मार्जिन मनी जमा करब सेहो एकटा समस्या अछि। ओ तुरत लैटर पैडपर शाखा प्रबंधककें आदेश द' देलखिन जे मोटर साइकिल के जतेक दाम छै, ततेक ऋण स्वीकृत क' देल जाए, मार्जिन मनी नै जमा कराओल जाए। पुछ्लनि, और कोनो समस्या? हम सभ आश्वस्त क' देलियनि जे एक मासक भीतर मोटर साइकिल ल' लेब। जाइत- जाइत आंचलिक प्रबंधक महोदय कहलनि, हम एक मासक बाद फेर आएब अहाँ सबहक मोटर साइकिल देखबाक लेल, से ध्यान राखब।
हम सभ अपनामे विचार केलहुं जे आंचलिक प्रबंधक कें एते पलखति कत' हेतनि जे एक मासक बाद फेर एहि शाखामे एताह। हम सभ निश्चिंत भ' गेलहुँ। असलमे मोटर साइकिल चढ़बासं हम सभ डेराइत रही। सिंह जी हमरासं बेशी मोटर साइकिल चढ़बासं डेराइत छलाह, हुनकर देहो बेशी भारी छलनि,खसबाक डर बेशी होइ छलनि। हम सिखबाक लेल तैयार भेलहुँ, एक आदमी तैयार भेला अपन पुरान

मोटर साइकिल देबाक लेल कहियो-कहियो थोड़े कालक' सीख'क लेल। तीन-चारि दिनमे लागल जे हम आब चला लेब। एक दिन हुनकर मोटर साइकिलसं सात-आठ किलोमीटर दूर कोनो गाम गेलहुँ एसगरे। घुरती काल की भेलै से नै बुझलिऐ, गाड़ी रोक' चहिऐ त रुकबे नै करै, ब्रेक फेल भ' गेलै, हम नर्वस भ' गेलहुँ, आब कोना-की करू। भेल जे आब कतहु ठोकर लागि जेतै, तखने एकटा विचार आएल आ झट द' चाभी निकालि लेलिऐ, एकटा हाथ हैंडलसं हटलाक कारणे गाड़ी असंतुलित भेलै आ थोड़बे दूर पर रुकलै आ एक कात खसियो पड़लै। गति कम भ'क' खसलै, तें बेशी चोट नै लागल।

अपने उठिक' गाड़ीकें गुड़कौने किछु दूर गेलहुँ त एकटा साइकिल मरम्मति बला दोकान भेटल ओकरा कहलियै त कहलक जे हम एते क' दै छी जे धीरे-धीरे चलाक'

अहाँ बसंतपुर चल जाएब, ओत' ठीक करा लेब।

ओ मिस्त्री जहिना कहने रह्य तहिना धीरे-धीरे चलाक' बसंतपुर सकुशल पहुंचि गेलहुँ। जिनकर गाड़ी छलनि हुनका कहलियनि त कहलनि जे आधा अहाँ सीखि गेलहुँ, एक दिन एक बेर और खसब तखन पूरा सीखि जाएब। हमरा एक सप्ताह तक गाड़ी चलयबाक हिम्मति नै भेल, मोने मोन सोचलहुँ जे पुरान गाड़ी पर आब नै चढब। खसबाक कल्पनासं डर भ' जाइ छल।

सिंहजी सेहो नै सीखि सकलाह।

कखनो-कखनो ईहो बात ध्यानमे आबि जाइत छल जे आंचलिक प्रबंधक महोदय यदि आबिए जाथि त हम सभ की कह्बनि। एक दिन सिवानक राजकमल एजेंसीमे पता लगेलहुँ त कहलक जे एखन स्टॉकमे राजदूत मोटर साइकिल नै अछि, बस, हमरा सभकें एकटा

बहाना भेटि गेल, आब यदि आंचलिक प्रबंधक महोदय आबियो जेताह त कहबनि जे हम सभ राजदूत मोटर साइकिल लेब' चाहैत छी जे एखन स्टॉकमे नै छै।

ठीके जहिना कहिक' गेल रहथि, आंचलिक प्रबंधक महोदय मास दिनक बाद

शाखामे आबि गेलाह आ हमरा सभकें देखिते पूछि बैसलाह, मोटर साइकिल ल' लै गेलहुं ने। जबाब हमरा सभ लग तैयार छल, कहलियनि जे राजदूत स्टॉक मे एखन नै छै। ओहि समयमे मोबाइल आ शाखामे फोनक सुविधा त रहबे नै करै जे ओकरा फोनसं पुछितथिन। कहलनि, हमरा संगे पटना चलू ओत'सं ल' क' चल आएब। हम सभ कहलियनि जे हम सभ आब गाड़ी लेलाक बादे चलेनाइ सीखब, तें पटनासं अनबाक विचार छोडि देल जाए, सिवानमे उपलब्ध भ' जेतै त हम सभ ककरो मदति ल'क' आनि लेब। साहेब कहलनि जे गाड़ी चलेनाइ सीखि लेब त फील्डमे जाएब त टी ए सेहो भेटत, तें आर्थिक दृष्टिसं सेहो अहाँ सबहक लेल मोटर साइकिल लाभदायक अछि आ एहिसं बैंककें सेहो काज बेशी हेतै।

जेड.एम.साहेब सिवान पहुंचिक' राजकमल एजेंसीमे पता लगबौलनि त कहलकनि जे एखन गाड़ी छै स्टॉकमे। ओकरा कहल गेलै जे दू टा राजदूत मोटर साइकिल बसंतपुर शाखाक दू टा फील्ड स्टाफ लेल राखि दियौ आ हमरा शाखाकें टेलीग्रामसं सुचित कएल गेल जे अहाँ सभ लेल गाड़ी राखल अछि, अविलम्ब आबिक' ल' जाउ।

आब हमरा सभ लग कोनो बहाना नै रहि गेल छल। बैंकमे डॉक्यूमेंटेशन क' क' पूरा दामक राशिक ड्राफ्ट बनाक' ल' गेलहुँ आ तीन अप्रैल १९७९ क' हम दूनू गोटे सिवानक राजकमल एजेंसीसं राजदूत मोटर साइकिल कीनिक' आबि गेलहुं। दुनू गोटे एक-एक चालककें संग ल'क' गेल छलहुँ जे हमरा सभकें सकुशल सिवानसं

बसंतपुर पहुंचा देलनि।
नवका गाड़ीपर एक-दू बेर कनी-मनी चोट लागल मुदा हम एक सप्ताहमे नीक जकाँ अपन काज जोगर गाड़ी चलेनाइ सीखि गेलहुँ। तकर बाद करीब तेरह साल बिहारमे रहलहुं, मोटर साइकिलसं कोनो दुर्घटनाक शिकार नहि भेलहुँ।

धरना प्रसंग :

आपात काल समाप्त भेलै,चुनाव भेलै, केन्द्र मे जनता पार्टीक सरकार आबि गेलै, सभ गाममे नव-नव नेता सभ भेलाह। सभ क्यो जनता सबहक बीच अपन नीक छबि बनयबा लेल परिश्रम करैत छलाह। ओ सभ बैंक शाखामे सेहो लोकक काजक पैरवीमे अबैत छलाह। बैंकक नियमानुसार शाखा आवेदन पत्र सबहक इमानदारीपूर्वक निष्पादन करैत छल, नेता लोकनिक बहुत आदर करबाक ध्यान नै रखैत छल। से बात नव नेता लोकनिकें पसन्द नै छलनि।
बैंक द्वारा जे ऋण स्वीकृत कएल जा रहल छलैक, से मुख्यतः कृषि विभागसं सम्बन्धित रहै छलै। कृषि वित्त अधिकारी छलाह शिव शंकर सिंह जी जे पक्का ईमानदार आ स्पष्टवक्ता छलाह। स्थानीय नेता सभ हुनकासं जे अपेक्षा करैत छलाह से नै होइत छलनि। परिणाम ई भेलै जे सभ नेता मिलिक' हुनका लक्ष्य क'क' एकटा अभियान चलौलनि। शाखा प्रबंधककें लिखिक' देलखिन जे आपके ए.एफ.ओ. के अमानवीय व्यवहार के कारण अमुक तिथि को बैंक शाखा के समक्ष धरना देंगे।
पहिने त सभकें भेलै जे ओहिना धमकी द' क' डेरा रहल छथि, मुदा तारीख लग एलै त भेलै जे यदि सत्ये ई सभ एहेन किछु करथि त की करबाक चाही। ऐ तरहक परिस्थितिक अनुभव किनको नै

छलनि।
स्टाफ मीटिंगमे शाखा प्रबंधकक सुझाव भेलनि जे ओहि दिन सिंहजी ऑफिस नहि आबथि, कतहु फील्डमे कोनो काजसं निकलि जाथि, सिंह जीकें
 डेराक' ऑफिस नै आएब पसन्द नै भेलनि। तखन हुनका ई सुझाव देल गेलनि जे ऑफिसमे रहथि, बाहर नै निकलथि। निर्णय भेलै जे शाखा प्रबंधक आ गणेश ठाकुर, प्रधान खजांची (जे हमरा सबहक यूनियनक सेक्रेटरी सेहो छलाह) जाक' गप करताह, शेष सभ गोटे बैंकक भीतरे रहताह।
निर्धारित तिथिक' करीब सै आदमीकें जुटाक' धरना शुरू भ' गेल, मुदा कोनो हल्ला नै रहै शुरूमे। २.३० के बाद शाखा प्रबंधक आ गणेश ठाकुर गेलाह गप करै लेल। ओ सभ कहलकै जे सभ गोटेकें लोन देब' पड़त। शाखा प्रबंधक से स्वीकार करबामे डेराइत छलाह। हम चाहैत रही जे आजुक भीड़ कहुना ख़तम भ' जाइ,तें एकटा स्लिपपर लिखिक' शाखा प्रबंधककें अनुरोध केलियनि जे एखन स्वीकार क' लियौ, स्लिप वाटर बॉय द्वारा पठा देलियनि, शाखा प्रबंधक कहलखिन, ठीक छै, हमर स्टाफ अहाँ सबहक बात मानक हेतु तैयार छथि। तखन ओ सभ कह' लगलै जे सात दिनक भीतर ऋण देब' पड़त। हम फेर दोसर स्लिप पर लिखिक' देलियनि जे कहि दियौ जे प्रखंड कार्यालयसं आवेदन पठा दिय', हम सभ सात दिनमे स्वीकृत क' देब। शाखा प्रबंधक गछि लेलखिन जे प्रखंड कार्यालयसं आवेदन पठा दियौ, सात दिनमे स्वीकृत भ' जेतै। ओ सभ झगड़ा करबा लेल दोसर कोनो उपाए ताक' लगलाह। एकटा नेता बजलाह जे अहाँक स्टाफ एत्ते उदार छथि त सामने आबिक' किए ने बजैत छथि।
सिंहजी एते काल तक चुप छलाह, मुदा ई बात सूनिक' नै रहल

गेलनि, हमरो सबहक कहने नै रुकलाह आ बैंक हॉलसं निकलि कहलखिन, अहाँ सबहक दुश्मन हमहीं छी ने, त हम सोझां मे छी हमरा मारि दिय'।

भीड़मे हिंसाक प्रवृति होइ छै। किछु लोक हो-हो करैत ऊपर सीढ़ीपर चढ़' लगलै, मुदा तत्काल मकान मालिक आ हाइ स्कूलक एक शिक्षकक हस्तक्षेपसं ओ सभ उपर नै जा सकलाह आ कोनो अप्रिय घटना नै घटलै। मुदा जतेक भेलै, सेहो हमरा सभ गोटेक लेल बहुत अप्रिय आ अपमानजनक छल।

तकरा बाद आगू की करी, से विचार करबाक लेल ओहि ठामक वरिष्ठ पदाधिकारी सी. ओ. साहेब ओत' गेलहुँ। ओ कहलनि जे अहाँ सबहक लेल ई नव घटना अछि, हमरा सबहक विरुद्ध त जखन-तखन इनकिलाब-जिंदाबाद होइते रहैत अछि। ओ विचार देलनि जे अपन उच्च अधिकारीकें जानकारी द' दियनु आ ओ जे कहथि,सैह करू।

हम सभ गोटे एकटा जीपसं सिवान क्षेत्रीय कार्यालय गेलहुँ। क्षेत्रीय प्रबंधक कतहु गेल छलाह। हम सभ काल्हि एबाक अनुरोध करैत लिखित शिकायत जमा क'क' बसंतपुर घुरि एलहुं।

प्रात भेने क्षेत्रीय प्रबंधक पेंडसे साहेब एलाह।

ओ सभटा घटनाक विवरण सूनि क' कहलखिन जे यैह नेता सभ किछु दिनमे एम एल ए भ' सकैत छथि, मन्त्री भ' सकैत छथि, चीफ मिनिस्टर भ' सकैत अछि, हिनका सभसं झगडा करब उचित नै अछि, बैंकक राष्ट्रीयकरण भेलै, आम आदमीक सुविधाक लेल बैंक छै, ओही बीचसं नेता सभ अबैत छथि, हुनका सभकें बैंक एबासं कोना मना करबनि, ओ सभ आबथि त प्रेमसं बैसाक' चाह पियबियनु, आदर करियनु मुदा करू अपने मोनक माने बैंकक नियमानुसार।

सी ओ साहेब सेहो एलाह। हमर क्षेत्रीय प्रबंधक हुनकोसं गप केलनि। फेर सी ओ साहेबक माध्यमसं एकटा मुखर नेताकें बजाओल गेलनि ।

नेताजी हमरा क्षेत्रीय प्रबंधककें कहलखिन जे बैंकक सभ सदस्य ईमानदार छथि, हमरा सबहक एकेटा शिकायत अछि जे अहाँक अधिकारीक व्यवहार पब्लिक आ नेता सभसं नीक नै होइ छनि। आर एम साहेब कहलखिन जे हमर स्टाफ यदि इमानदार अछि त इमानदार स्टाफ सभसं अहाँ सभ एहेन व्यवहार किए करै छी, यदि एहेन घटनाक पुनरावृति हैत त हम सभ एहि ठामसं बैंक शाखा हटा लेबाक लेल मजबूर भ' जाएब, अहाँ सभकें कोनो शिकायत हो त सिवान आबिक' हमरा कहू, मुदा हमरा स्टाफ सभसं नीक व्यवहार करू।

पेंडसे साहेब गांधीवादी तरीकासं सभकें मेल करौलनि, सभकें एक दोसरसं हाथ मिलबौलनि, आपसमे एक-दोसरक बीच रसगुल्लाक आदान-प्रदान करबौलनि आ सभकें पीठ थपथपाक' सीवान घुरि गेलाह। तकरा बाद फेर कहियो शाखामे अथवा शाखाक बाहर कोनो अप्रिय दृश्य नहि उपस्थित भेल।

ई घटना हमरा जीवनमे कय बेर पथ प्रदर्शकक काज केलक।

पिता बनलहुँ :

बसंतपुरमे रही, ओही अवधिमे

लगभग दू बरखक अन्तरालपर दूटा कन्याक जन्म भेलनि।

पहिल बसंत ऋतुमे आएल छलीह, मधुबनी अस्पतालमे जन्म भेल छलनि, हिनकर नाम वसन्त कुमारी भेलनि, बादमे बदलिक' वन्दना भ' गेलनि।

दोसरक जन्म दुर्गापूजाक मध्य अस्पताल पहुँचबासं पहिने भ' गेलनि, हिनकर नाम मैथिली भेलनि आ मैथिलीए रहलनि।

शशिकान्तजी-सुधाकान्तजीसं सम्पर्क :

एक बेर गाम गेलहुँ त सकरीमे विद्यापति पर्वक कार्यक्रममे भाग लेबाक अवसर भेटल। कवि गोष्ठीमे हम अपन रचना पढलहुँ ' तीन कोटि मैथिल ताल ठोकिक' कहैए / ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए।'

हम जखन मंचसं नीचां एलहुं त शशिकान्तजी,सुधाकान्तजी हमरा लग एलाह आ अपन परिचय दैत हमरा ई गीत लीखिक' देबाक अनुरोध केलनि।

हमरा पहिने हिनका सबहक नाम सूनल छल, भेंट नहि भेल छल। दुनू भाइक स्वर बहुत मधुर छलनि आ दुनू गोटे मिलिक' रवीन्द्र नाथ ठाकुरजीक गीत सभ गबैत छलाह। ओहू दिन कार्यक्रममे देखलियनि, बहुत आकर्षक प्रस्तुति भेल रहनि।

हुनका सबहक अनुरोधपर हम ओ रचना लीखिक' द' देलियनि।

ओ रचना पटना आ आनो ठाम ओ सभ प्रस्तुत केलनि आ श्रोता-आयोजकक नीक प्रतिक्रिया देखि हमरासं पत्र द्वारा सम्पर्क केलनि आ अनुरोध केलनि जे गाम आबी त हुनको सभकें सुचित क' दियनि जाहिसं ओ सभ हमरासं और गीत सभ ल' सकथि। तहिना भेलै आ पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार दुनू गोटे हमरा गामपर एलाह आ हमरा और गीत सभ लीखिक' देबाक अनुरोध केलनि। हम फेर दूटा रचना देलियनि। ई क्रम कय मास धरि चलल। हिनके सबहक माध्यमसं हमर मैथिली-सेवा चलि रहल छल। हिनके सबहक स्वरमे हमर और कते गीत सभ लोकप्रिय भेल जेना :

१. 'तोरा अंगनामे वसन्त नेने आएब सजना'

२. 'फगुआ आएल फगुआ गेल फगुआ चलिए गेल'

३. 'पटनाक मजा लीय' दिल्लीक मजा लीय'

बेकार छी अहाँ त बम्बइक मजा लीय'
४. 'आएल केहेन समैया यौ बाबू यौ भैया
दुनियाँसं उठि गेल धरम-करम
बूझैए के धरतीक मरम
मिथिला केर की बात पुछै छी
सौंसे भारत भेल बदलाम, अरे राम-राम-राम।'
५. 'कक्का मारल गेला सौराठक मैदानमे
पहिले कन्यादानमे ना।'
६. 'तिलक प्रथाकें बन्द करू'
७. 'आइ धरतियो लगैछ नव कनियाँ जेना'
८. 'आइ ने छोड़ब भौजी, लेपब गालमे लाल अबीर'
९. 'आँखिमे चित्र हो मैथिलीकेर
ह्रदयमे हो माटिक ममता,
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस यैह एकटा सिहन्ता।'
१०. 'मोन होइए अहाँकें देखिते रही'
११. 'जुनि कान, जुनि कान,जुनि कान रे बौआ जुनि कान रे।'
१२ . 'हम देशकेर सिपाही, हम एक बात जानी
ऐ देशकेर पूत हम, थिक नाम हिन्दुस्तानी।'
१३. 'आइ धरतियो लगैछ नव कनियाँ जकाँ'
१४. 'छोटे-मोटे टूटल मड़ैयामे गौरी कोनाक' रहती हे।'
शशिकान्तजी, सुधाकान्तजी देशमे जहाँ-जहाँ विद्यापति पर्व होइत छलै, ताहिमे अधिक ठाम बजाओल जाइत छलाह। गीत शुरू करबासं पूर्व ओ गीतकारक नाम लेब नहि बिसरैत छलाह। ई हुनक अपन विवेक-जन्य स्वभाव छलनि। हम अपने नहि जाइत छलहुँ,मुदा कोनो-ने-कोनो श्रोतसं ज्ञात होइत छल त नीक लगैत छल आ और लिखबाक लेल

उत्साहित होइत छलहुँ। अखबार-पत्रिका सभमे सेहो विवरण पढ़ि आनन्दित होइत छलहुँ।

हम मानैत छी जे हमरा गीत सभकें जे लोकप्रियता भेटै छलै, ताहिमे हिनका दुनू भाइक मधुर-मनोहर स्वरक योगदान बेशी छलनि।

तोरा अङना मे

हमर साहित्य साधनामे कन्हैया लाल श्रीवास्तव, बी पी शर्मा, रामजी लाल दास जीक सहयोग रहैत छलनि। जखन-तखन विचार-विमर्श होइ छलै आ गीतक पोथी छपयबाक विचार सेहो अबैत छल। श्रीवास्तवजी हमरा संगे कतेक बेर तोरा अंगनामे वसन्त नेने आएब सजना गेने छलाह आ गीत संग्रहक नाम 'तोरा अंगनामे' रखबाक विचार भेल छल।

शर्माजी एक बेर भरिसक ट्रेनिंगमे पटना गेल छलाह। कतहु एकटा चित्र देखलनि जाहिमे एकटा स्त्री अपना आंगनमे अरिपन द' क' दीप सजा रहल अछि। शर्माजी हमरा गीतक पोथीक कवर पृष्ठक लेल ओ फोटो नेने एलाह आ हमरा देलनि।

हम हुनक पसन्दकें स्वीकार क' लेलहुं, मुदा पोथी छपयबाक निर्णय नहि भेल रहय। खैर, जहिया छपतैक, तहिया एकर उपयोग करबाक लेल राखि लेलहुं।

हमर ढोलीक संगी अशोक कुमार ठाकुर जी एम. एस. सी. (ए जी) केलाक बाद बिहार एग्रीकल्चरल मार्केटिंग बोर्ड केर ट्रेनिंग सेन्टर, पटनामे नोकरी करैत छलाह।

पुनाइ चकमे आवास छलनि। हुनकासं पत्राचार होइ छल, कय बेर विचार होइ छल पटना जाएब त एक दिन रहब संगे। ओहो कहैत छलाह। एहि बेर विद्यापति पर्वमे पटना जाएब आ हुनकोसं भेंट करबाक विचार भेल।

निर्धारित तिथिक’ पटना पहुँचलहुँ। ठाकुर जीक डेरापर ठहरलहुँ। हुनका संगे गेलहुँ विद्यापति पर्व देख’। सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू भेलै। हम सभ पाछाँमे ठाढ़ भ’ क’ देखि-सूनि रहल छलहुँ। शशिकान्तजी, सुधाकान्तजी मंचपर एलाह त गीतकारक नाम लैत हमर तीन-चारिटा गीत प्रस्तुत केलनि। श्रोता-दर्शकक प्रतिक्रिया बहुत आनन्दित करैबला भेलनि। बादमे ध्यान गेल हमरा सबहक लगेमे हमर साढ़ूक अनुज चीनू बाबू (कृष्ण चन्द्र झा, डुमरा,बेनीपट्टी, मधुबनी) छलाह। ओ देखलनि त अपन मित्रकें कहलखिन जे शशिकान्त-सुधाकान्तजी एखन जाहि गीतकारक नाम नेने छलाह से अनिलजी यैह छथि। हमरो परिचय भेल। ई छलाह चतरा, बेनीपट्टी निवासी डा. हेम चन्द्र लाल कर्ण जे एम. बी. बी. एस. क’ क’ इंटर्नशिपमे छलाह, डॉक्टर्स हॉस्टलमे रहैत छलाह, हमर साढ़ूक अनुज हुनके अनुरोधपर हुनके डेरामे रहिक’ यू.पी.एस.सी./बी. पी. एस. सी.क तैयारी क’ रहल छलाह। ओ अपना डेरापर ल’ जेबाले’ बहुत अनुरोध कर’ लगलाह। हम अपन मित्र ठाकुर जीसं परिचय करबैत कहलियनि जे हम हिनका संगे आइ काल्हि छी, काल्हि साँझ धरि अहाँक डेरा आएब।

दोसर दिन हुनका ओत’ पहुंचलहुँ त ओ जिद्द क’ देलनि जे आब अहाँ पटनासं अपन गीतक किताब बिना छ्पौने नहि जाएब। स्टेट बैंकक लोकल हेड ऑफिसमे डरहार(दरभंगा)क स्टाफ ऑफिसर छलाह बी.के.चौधरी, ओहो एलाह हुनका डेरापर। किछु मैथिल आ किछु अमैथिल डॉक्टर सभ सेहो एलाह। ओ सभ हमरासं किछु गीत सूनय चाहैत छलाह, सेहो भेलै। ओही हालमे एकटा सीट खाली छलै। डॉक्टर साहेब हमरा ओहि सीटपर स्थान दैत कहलनि जे अहाँ अपन पाण्डुलिपि तैयार क’ लिय’। हम छुट्टी दुइए दिनक ल’क’ आएल रही, डॉक्टर साहेब कहलनि, हम मेडिकल सर्टिफिकेट द’ देब। हम पाइक

व्यवस्था क' क' नै आएल रही, डॉक्टर साहेब कहलनि जे ओकर व्यवस्था भ' जेतै, अहाँ दू-तीन दिनमे पांडुलिपि तैयार क' क' चलू मुसल्लहपुर, द' देबै छप' लेल।

डॉक्टर साहेब नोकरीमे नै छलाह तें हुनकर आर्थिक सहयोग लेब हमरा उचित नै लगैत छल। पता चलल जे धनबादसं कोनो इंजिनियर आएल छलाह अपना पत्नीक इलाज करेबाक लेल, हुनका ई बहुत मदति केने छलखिन, हुनका पता चललनि जे ई पटनामे अपन क्लिनिक खोलबाक लेल स्टेट बैंकमे आवेदन देने छथि, जाहिमे मार्जिन मनी किछु जमा कर' पडैत छैक, ओ ऐ ठाम त नै किछु बजलखिन, धनबाद जाक' ओत' सं तीन हजारके ड्राफ्ट पठा देलखिन, वैह पाइ हिनका पास छनि। लोनमे एखन समय लगतै, तें तत्काल एकर उपयोग क' क' बादमे पठा देबै, से भ' सकैए। डॉक्टर साहेबक मैथिली प्रेम देखि आनन्दित भेलहुँ।

हम ३१ टा गीतक पांडुलिपि तैयार केलहुं। डॉक्टर साहेबक संग मुसल्लहपुर गेलहुँ, भवानी प्रकाशन। देवेन्द्र झा जीक प्रेस छलनि। पांडुलिपि देखिक' एक हजार एक सय प्रतिक लेल लगभग तेरह सय खर्च आ लगभग दस दिनक समय कहलखिन। डॉक्टर साहेब आधा पाइ द' देलखिन। हम मुख पृष्ठक लेल शर्माजीक पसन्द बला चित्र द' देलियनि ब्लाक बनबयबा लेल।

हम बसंतपुर शाखामे शर्माजीकें पत्र लिखलियनि जे हमरा आवश्यकतानुसार ड्राफ्ट पठा देथि, किताब छपि जेबाक संभावित तिथि सुचित क' देलियनि।

बटुक भाइसं भेंट क' क' भूमिका लिखबाक अनुरोध केलियनि।

एक दिन तीनू गोटे हरिमोहन बाबू ओत' गेलहुँ। हुनका अनुरोध केलियनि अपन आशीर्वचनक रूपमे किछु लिखिक' देबाक हेतु। ओ

एकटा गीत सुनब' कहलनि। सुनौलियनि। ओ संकल्प-लोक लहेरियासरायक कार्यक्रममे गीत शशिकान्त-सुधाकान्तक मूहें सुनने छलाह से कहलनि।
हुनकर आशीर्वचन ल'क' विदा भेलहुँ त कहलनि जे मार्च धरि अखबारमे निकलतै पुस्तकालय सभ लेल पोथीक क्रयक सम्बन्धमे विज्ञापन त दूटा प्रति पठा देबै, अहाँक पोथी स्वीकृत भ' जाएत तखन जतेक पोथी मांगत, से पठा देबै त पाइ त भेटबे करत, पोथी सभ सेहो सुठाममे चलि जाएत।
डेरामे सभ साँझक' उत्सव जकाँ वातावरण भ' जाइत छलैक।
डॉक्टर साहेब बहुत गोटेसं परिचय करौलनि।
सभ ठाम किछु गीत-नाद होइत रहै छलै।
मुरलीधर प्रेससं मिथिला मिहिर कार्यालय अबैत छलहुँ। आदरणीय भीमनाथ बाबू प्रूफ रीडिंग कय सुधार क' क' दैत छलाह, हम फेर मुरलीधर प्रेस, मुसल्लहपुर जाइत छलहुँ। एना क' क' पोथी छपल। बटुक भाइक लिखल भूमिका एलै।
अंतिममे कवर पृष्ठपर हरिमोहन बाबूक लिखल आशीर्वचन छलनि।
एहि बीच बहुत साहित्यकार लोकनिसं परिचय भेल। सभकें पोथीक प्रति भेंट केलियनि। समीक्षाक लेल दू-दू प्रति आकाशवाणी, मिथिला मिहिर, आर्यावर्त आ इंडियन नेशन कार्यालयमे सेहो प्रस्तुत केलहुं।
एक दिन मैथिली अकादमी कार्यालय गेलहुँ। आदरणीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर जी ओहि समय अकादमीमे छलाह। ओ दिल्लीसं आएल 'राधाकृष्ण प्रकाशन'क प्रतिनिधिसं परिचय करौलनि। हुनको दू प्रति देलियनि। बाद मे राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्लीसं पच्चीसटा पोथीक मांगपत्र आएल, पठा देलियै, समयपर ओकर भुगतान सेहो प्राप्त भ' गेल।
जहिना आदरणीय हरिमोहन बाबू कहने रहथि, अखबारमे विज्ञापन एलै,

दू टा प्रति पठा देलियै। राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी संस्थान (कलकत्ता) सिन्हा लाइब्रेरी,पटनाक माध्यमसं ३४० पोथीक मांग केलक आ शीघ्रहि ओकर भुगतान सेहो क' देलक।
किछु पोथी शशिकान्तजी-सुधाकान्तजीक माध्यमसं सेहो बिका गेल। एहि प्रकारें पोथीक लागत मूल्य लगभग प्राप्त भ' गेल।
बादमे एहि पोथीक दोसर संस्करण उर्वशी प्रकाशन, पटनासं प्रकाशित भेल, गोपीकान्त बाबू हमरा पच्चीसटा प्रति उपलब्ध करा देलनि।
ज्ञात भेल जे भवानी प्रकाशन,पटना द्वारा गीतक फुलवाड़ी प्रकाशित भेल जाहिमे हमरा सहित छओटा गीतकारक रचना सभ छलनि। ओकर एकोटा प्रति नै प्राप्त भेल, देवेन्द्र बाबू कहलनि जे एकोटा नहि बांचल अछि, ओकर बदला ओ एकटा दोसर पोथी द' देलनि। कतहु देखबो ने केलिऐ। बहुत दिनक बाद एक गोटे सुचित केलनि जे काठमांडूमे गीतक फुलवारीमे अहाँक गीत पढ़लौं। संतोष केलहुं।
एहि गीत संग्रह ''तोरा अङना मे' केर किछु गीत सभक ऑडियो कैसेट आएल।
कोनो कैसेटमे भाइ चन्द्रमणि जीक बहुत सुन्दर स्वरमे आ एकदम शुद्ध-शुद्ध सुनने रही 'कक्का मारल गेला सौराठक मैदानमे, पाहिले कन्यादानमे।' आब अलोपित भ' गेल अछि।
'आइ ने छोडब भौजी,लेपब गालमे लाल अबीर' टी-सीरीजक कोनो कैसेटमे छल, ओहो नै देखि रहल छी। महादेव ठाकुरक कैसेटबला गीत सभ सेहो अदृश्य अछि।
एखन जतेक गीत सभ यू-ट्यूब पर अछि ओहि सभमे अधिकमे किछु-ने-किछु अनियमितता अछि। अनियमितता अछि कतहु-कतहु उच्चारणमे, कतहु-कतहु शब्दक हेर-फेरमे, अपूर्ण गायनमे, पोस्टरपर गीतकारक नाम त किछुए ठाम देखबामे अबैत अछि।

पदोन्नति :

१० दिसम्बर १९७५ क' हम बैंकमे योगदान केने रही। १९८० मे पदोन्नतिक लेल लिखित परीक्षामे सफल भेलाक बाद मौखिक परीक्षा द' क' एलाक बाद क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय शाखामे एलाह त पुछ्लनि जे कत' पोस्टिंग चाहैत छी त हम जयनगर शाखाक नाम कहलियनि, मधुबनीमे ए. एफ. ओ. छलाहे, जयनगरमे नै छलाह तें पता लगाक' कहने रहियनि, मुदा जखन पदस्थापनक पत्र आएल त ओहिमे हमरा सिवान शाखामे योगदान करबाक आदेश छल। निदेशानुसार १८ अगस्त १९८० क' सिवान शाखामे कृषि वित्त अधिकारीक रूपमे कार्य भार ग्रहण केलहुं।

पटना / ३१.८.२०२१

(१८)

पाँच बरख सिवानमे

१८ अगस्त १९८० क' हम सिवान शाखामे पद भार ग्रहण केलहुं।

सिवान पैघ शाखा छलैक, लगभग बीसटा सदस्य काज करैत छलाह। श्री रामेश्वर प्रसाद सिंह वरिष्ठ शाखा प्रबंधक छलाह। ओ अधिक काल भोजपुरीमे सभसं गप करैत छलाह। ओना भोजपुरी साहित्यसं कोनो लगाव हम नहि देखलियनि। हुनका बाद मध्य प्रदेशसं सी.एल.व्यास एलाह आ हुनका बाद वैद्यजी एलाह।

सुरक्षा प्रहरी छलाह जनार्दन सिंह।

अन्य अधिकारी-कर्मचारी सभ छलाह रामेश्वर सिंह, लक्ष्मण तिवारी,ओ.पी. जग्गी, एम पी दुबे, एच.पी. शाही,नेफरे साहेब,श्री नारायण झा, जय राम शाही, अन्सारी जी, राम चरण सिंह आदि।

अपना जिलाक अपन भाषा-भाषी एक गोटे भेटलाह श्री नारायण झा। झाजी घोंघौर गामक छलाह, ओत' हमर मौसी छलीह। झाजीसं परिचय भेल त नीक लागल। बादमे मधुबनी शाखासं अधिकारीक रूपमे एलाह एम एन झा (मोद नारायण झा) जे कलिगामक छलाह । झाजी बचत खाता विभागमे अधिकारी छलाह।

कृषि विभाग ओही बिल्डिंगमे एकटा अलग हॉलमे छलैक। ओहिमे एकटा ए. एफ. ओ.(कृषि वित्त अधिकारी) छलाह श्री शंभू शरण द्विवेदी जी आ दूटा कृषि सहायक छलाह सुधीर कुमार जी आ अरुण कुमार वर्मा जी। द्विवेदीजीक स्थानान्तरण मुजफ्फरपुर, क्षेत्रीय कार्यालयमे हेबाक छलनि। बादमे एलाह अंजनी कुमार सिन्हा(ए एफ ओ), कमलेश कुमार (ए एफ ओ), एन. पी. सिंह, डी सी ओ (आर डी)

ओवरटाइम बन्द भेलाक बाद शाखामे बैलेंसिंग (शेष मिलान)क काज बाधित भ' गेल छलैक। बचत खाताक संख्या आ बही बहुत छलै, ओकर बैलेंसिंग बहुत कठिन भ' गेल छलैक, कृषि विभागमे सेहो गत तीन सालसं लंबित छलै आ आब असंभव जकाँ लगैत

छलै। शाखामे कृषि विभागमे बी आर सी, आइ आर डी पी, आइ डी ए, डी आर आइ, अन्त्योदय आदि योजनान्तर्गत ऋण स्वीकृति-वितरण, पूर्वमे देल गेल ऋणक वसूली लेल नोटिस जारी करब आ व्यक्तिगत सम्पर्क करब, दस्ताबेज सबहक समयानुसार नवीनीकरण कराएब , नियमानुसार वसूली हेतु कानूनी कार्यवाही करब, मीटिंग सभमे भाग लेब आ नियंत्रक कार्यालय सभकें समयपर मासिक,तिमाही,अर्ध वार्षिक आ वार्षिक विवरणी बनाक' प्रस्तुत करब, ऑडिट रिपोर्टक जबाब तैयार करब आ अपेक्षित सुधारक लेल आवश्यक काज करब, आदि कार्य सभसं समय नहि बचैत छलै जे शेष मिलानलेल समय निकालि सकय।

हमरा एहिसं पूर्वक शाखामे ई समस्या नै रहै कारण शाखा नव रहै। एहि ठामक ई स्थिति हमरा ठीक नहि लागल। हम चाह्लहुँ जे ई अनियमितता दूर भ' जाए, द्विवेदीजी सेहो एहिमे सहयोग करय चाहैत छलाह किन्तु ओ कोनो-ने-कोनो व्यवधानमे रहि जाइत छलाह।

द्विवेदीजीक गेलाक बाद हम तय केलहुँ जे हम दुनू कृषि सहायकक संगे एहि कार्यकें अवश्य पूर्ण करब। हम अपना विभागकें स्वच्छ राखब,ई ठानि लेलहुं आ काज शुरू क' देलहुं। बीचमे लोक दोसर काज लेल आबि जाइत छल त बाधित भ' जाइ छल। ऑफिस-समयक बाद ई काज करब शुरू केलहुं।

एकदिन एम एन झा कहलनि, हम अहाँकें एहि कार्यमे मदति क' सकैत छी, मुदा एहि लेल शाखा प्रबंधककें कहिक' दस दिन लेल बचत खाता विभागक कार्यसं हमरा मुक्त करबाब' पड़त।

शाखा प्रबंधककें अनुरोध केलियनि त ओ प्रसन्नतापूर्वक झाजीकें कृषि विभागक बैलेंसिंग हेतु अनुमति द' देलखिन। झाजी एलाह कृषि विभागमे। मुदा एके घंटामे हॉलमे बचत खाता विभागमे ततेक समस्या भ' गेलै जे झाजीकें शाखा प्रबंधक बजा लेलखिन बचत खाता विभागक

काजक लेल।

हमरा सभकें झाजी कहलनि जे एकटा निर्णय ली त ऑफिसक निर्धारित समयक बाद हम मदति क' सकैत छी। निर्णय लेल गेल जे दिन भरि आन काजक संग जतेक संभव हो हम सभ बैलेंसिंग लेल जे किछु क' सकी से करी, तकर बाद झाजी सेहो संग देताह आ एक तिमाहीक बैलेंस मिलाक' डेरा लेल प्रस्थान करै जाएब। ओहि समय चारू गोटेक डेरा एकहि दिस रहय।

सुधीर बाबू आ वर्माजी दिनमे आन काज करैत एक तिमाहीक अंतिम दिनक शेष उतारि लेथि, हम आ झाजी साँझमे बैसी बैलेंस मिलाबक हेतु। बिजलीक लाइन चलि जाइ त पेट्रोमैक्स जराओल जाइ। बीच मे सुधीर बाबू, वर्माजी आ झाजी बगलमे मारवाड़ी भोजनालयसं भोजन क' अबैत छलाह। हम परिवारक संग रहैत रही, तें जखन घर जाइ, घरेमे भोजन करी। निर्णयक अनुसार सुधीर बाबू आ वर्माजीकें औंघी लागि जाइन त टेबुलपर माथ झुकाक' पड़ि रहथि मुदा डेरा जाथि संगे। हम आ झाजी एक तिमाहीक बैलेंस मिलाइएक' सीट छोड़ी। लगभग बारह बाजि जाइ एक तिमाहीक बैलेंस मिलाब'मे। यदि बारहो बजे नै होइ त छोडि दिऐ।

क्षेत्रीय कार्यालय लगेमे छलै। क्षेत्रीय प्रबंधक एलाह एल.एन.भाटिया। बनर्जी साहेब ए आर एम छलाह। डी सी ओ (आर डी) सिंह जी छलाह। ग्रामीण विकास विभागमे अन्य अधिकारी छलाह एस एस पी सिंह,मंजुल मोहन, कमलेश प्रसाद आदि। अन्य अधिकारी छलाह बी एम त्रिपाठी, एच सी पी दत्ता, सुनील कुमार श्रीवास्तव आदि। सुभाष नामक स्टाफ सेहो छलाह।

क्षेत्रीय प्रबंधक भाटिया साहेब एक साँझ एलाह आ हमरा सबहक प्रयासक प्रशंसा करैत पुछलनि जे क्षेत्रीय कार्यालयसं एहि कार्यमे अहाँ

सभ कोन तरहक सहयोगक अपेक्षा करै छी। हम सभ कहलियनि जे संभव होइ त एकटा चपरासीकें हमरे सबहक लेल उपलब्ध करा देथि जे आवश्यकतानुसार वाउचर हमरा सभकें उपलब्ध करबैत रहथि। भाटिया साहेब क्षेत्रीय कार्यालयसं एकटा चपरासीक ड्यूटी हमरा सबहक विभागमे लगा देलनि।

हमरा सभहक रूटीन भ' गेल जे सभ दिन साढ़े दस बजे ऑफिस आबी आ राति बारह बजेक बादे ऑफिससं प्रस्थान करी।

लगातार सत्रह दिन लागल रहलापर शेष मिलानक काज अद्यतन भ' गेल।

शाखा प्रबंधक रामेश्वर बाबू सेहो प्रसन्न भेलाह, आब बाहरसं कोनो उच्च अधिकारी अबथिन त कहथिन जे हमर एग्रीकल्चर विभागक शेष मिलान अद्यतन अछि।

क्षेत्रीय कार्यालयसं शाखाकें आ कृषि विभागक सभ सदस्य आ झाजीक लेल सेहो प्रशंसा पत्र निर्गत भेल।

क्षेत्रीय प्रबंधकक नजरिमे हमर सबहक नीक छवि बनल।

एक बेर डी सी ओ (आर डी)क स्थानपर अस्थायी रुपें हमरा क्षेत्रीय कार्यालयमे बजा लेलनि जखन हमरासं सीनियरो ए एफ ओ उपलब्ध छलखिन। हम किछु दिन ओहि पदपर काज केलहुं, फेर वापस अपन स्थानपर सिवान शाखामे आबि गेलहुँ।

एक बेर शेष मिलान अद्यतन भेलापर नियमित रूपसं बही सभ संतुलित होइत रहल।

एम एन झा जी ऑफिस एबा काल घडी देखैत छलाह, जेबा काल नै, मुदा हुनका जकाँ बहुत कम स्टाफ छलाह। तें बचत खाता विभागक बही-संतुलन असंभव भ' गेल छलैक।

सभ पैघ शाखा एहि समस्यासं ग्रस्त रहैत छल।

बही सबहक असंतुलनसं कपट अथवा धोखाघड़ीक आशंका बनल

रहैत छलैक।

किछु शाखामे बहीक संतुलन भेलाक बाद कपट प्रकाशमे अबैत छलैक।

सभ साल ऑडिट रिपोर्टमे एहि अनियमितताक चर्च रहैत छलै, सभ शाखा एहि अनियमितताकें दूर करय चाहैत छल, किछु शाखामे एहि काज लेल दोसर शाखासं अथवा नियंत्रक कार्यालयसं स्टाफ सभ पठाओल जाइत छलाह। तथापि पैघ शाखा सभमे एहि समस्याक समाधान नै भ' पबैत छलै।

कंप्यूटरीकरण भेलाक बाद बही संतुलनक समस्या इतिहासक बात भ' गेलै।

ऋण वितरण समारोह :

जनता पार्टीक सरकार समाप्त भ' गेल छलै, श्रीमती इन्दिरा गाँधी भारी बहुमतसं पुनः सत्तामे एलीह नव बीस सूत्री कार्यक्रम तीव्र गतिसं चलय लागल। आइ आर डी पी कार्यक्रम राष्ट्रीयकृत बैंक सबहक लेल आ सरकारी विभाग लेल सेहो मुख्य कार्यक्रम भ' गेल छल। जिलामे जतेक राष्ट्रीयकृत बैंकक शाखा छलै, सभकें गाम निर्धारित क' देल गेल छलै, सभ शाखाकें लक्ष्य सेहो निर्धारित क' देल गेल छलै। सभ गामसं पर्याप्त संख्यामे आवेदन सम्बन्धित बैंक शाखाकें प्रेषित कएल जाइत छलै, शाखा सभ युद्ध स्तर पर आवेदन निष्पादन लेल स्थल निरीक्षण आ स्वीकृतिक तैयारी करैत छल। शिविर लगाओल जाइत छलै जाहिमे सभ सम्बन्धित बैंक शाखाक अधिकारी / शाखा प्रबंधक, स्थानीय नेता लोकनि आ प्रखंड आ जिला स्तरक शासकीय अधिकारी लोकनि उपस्थित होइत छलाह। कलेक्टर महोदय सेहो अधिक शिविरमे उपस्थित होइत छलाह। शिविरमे विभिन्न बैंक शाखा द्वारा विभिन्न उत्पादक क्रियाकलापक लेल लाभार्थीकें स्वीकृति

पत्र प्रदान कएल जाइत छल।

बादमे लाभार्थी सम्बन्धित बैंक शाखामे उपस्थित भ’ क’ बैंकक निर्धारित दस्ताबेज सभपर हस्ताक्षर करैत छलाह, जे सामान जाहि दोकानसं लेबाक मोन होइ छलनि ओकर कोटेशन प्रस्तुत करैत छलाह, बैंक द्वारा आपूर्तिकर्ताकें आदेश देल जाइ छलै जे हिनका अमुक सामान द’ दियनु। आपूर्तिकर्ता लाभार्थीकें सामान द’ क’ बैंक शाखामे बिल प्रस्तुत करैत छलाह। बैंक अधिकारी / कर्मचारी द्वारा स्थल निरीक्षण क’ क’ लाभार्थीकें संतुष्ट भेला पर बैंक बहीमे लाभार्थीक खाता खोलि हुनकर खाताकें नामे करैत आपूर्तिकर्ताकें पे-आर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा बिलक भुगतान क’ देल जाइत छलै।

शिविरमे कतेक गोटेकें ऋण स्वीकृत कएल गेलै आ ओहिमे सं कतेक गोटेकें बैंक द्वारा ऋण वितरित कएल गेलै, एकर समीक्षाक लेल विभिन्न स्तरपर मीटिंग होइ छलै।

सभ जिलामे अग्रणी बैंकक जिम्मा कोनो खास बैंककें निर्धारित छलै। अग्रणी बैंकक काज होइ छलै सम्पूर्ण जिलाक लेल वार्षिक कार्य योजना तैयार करब, सभ बैंक शाखा आ शासकीय विभागक सहयोग प्राप्त करब आ कलेक्टरक अध्यक्षतामे जिला स्तर पर विभिन्न मीटिंगक आयोजन क’ क’ उपस्थित समस्या सबहक निराकरण सुनिश्चित करब ।

सिवानमे सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया लीड बैंक छल। पहिने क्षेत्रीय कार्यालयमे एकटा डी सी ओ (आर डी) आ एकटा कृषि सहायक अथवा ए एफ ओ (कृषि वित्त अधिकारी) द्वारा एहि विभागक काज चलैत छल, बादमे लीड बैंकक अलग कार्यालय बनल, लीड बैंक अधिकारीक पदस्थापन भेल । श्री आर पी शर्मा लीड बैंक अधिकारी भ’ क’ एलाह।

जिलास्तर पर मीटिंगमे सभ बैंकक प्रतिनिधि आ भारतीय रिज़र्व बैंकक

अधिकारी सेहो भाग लैत छलाह आ कखनो-कखनो बैंक आ शासकीय कार्यालयक बीच मध्यस्थक भूमिकाक निर्वाह सेहो करैत छलाह। बैंक आ सरकारी मशीनरीक सम्मिलित प्रयाससं जिलाक अन्तर्गत समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रमक संग वार्षिक कार्य योजनाक अनुसार जिलाक विकासक यग्य चलैत छलैक। कखनो-कखनो एहिमे बाधा उपस्थित होइतो छलैक त आपसमे बैसक क' क' निराकरण क' लेल जाइत छलै।

एक बेर एकटा ऋण शिविरमे कोनो स्थानीय नेता द्वारा शिकायत कएल गेलै जे स्टेट बैंकमे ऋण सम्बन्धी काजक लेल बहुत दौड़' पडैत छैक। कलेक्टर साहेब अपन भाषणमे कहलखिन जे हमर ध्यान आब बैंक दिस गेल अछि आ बैंकके सेहो ठीक करब कोनो बड कठिन बात नै अछि। एहिपर स्टेट बैंकक जिला शाखाक वरिष्ठ प्रबंधक उठिक' कहलखिन जे हम एहि सन्दर्भमे किछु स्पष्टीकरण देब' चाहैत छी। कलेक्टर साहेब हुनका ' बैसू, ऐ ठाम कोनो डिबेट थोड़े भ' रहल छै।' ई कहैत चुप हेबाक लेल बाध्य क' देलखिन। स्टेट बैंकक वरिष्ठ प्रबंधक की करितथि, चुप भ'क' बैसि गेलाह, मुदा ई बात शिविरमे उपस्थित सभ बैंकक प्रतिनिधिकें अपमानजनक लगलनि।

लीड बैंक कार्यालयमे सभ बैंकक आपात बैसक भेल आ कलेक्टर द्वारा शिविरक मध्य स्टेट बैंकक सम्मानित प्रतिनिधिकें अपमानित करबाक बातकें गंभीरतासं लैत आगामी निर्धारित सभ शिविरक बहिष्कार करबाक निर्णय लेल गेल आ एहि निर्णयक सूचना कलेक्टर कार्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक आ सभ बैंकक नियंत्रक कार्यालयकें देल गेल।

ओकर बाद निर्धारित तिथिक' शिविरमे कोनो बैंकक प्रतिनिधि

उपस्थित नै भेलाह, तखन कलेक्टर साहेब लीड बैंकसं सम्पर्कक'क' सभ स्थानीय बैंक प्रतिनिधिक बैसक अपना सभा कक्षमे बजौलनि। आपसी गप-शपसं स्थिति सामान्य भेल आ तकर बाद जे शिविर सभ निर्धारित छलै ताहिमे कोनो व्यवधान नै भेलै आ जे शिविर नै भेल छलै सेहो सफल भेलै। तकरा बाद बैंक प्रतिनिधिकें कोनो शिकायतक अवसर नै देल गेलनि।

यैह कलेक्टर साहेब सिवान शहरक सभ सर्विस लैट्रिनकें सेप्टिक टैंक लैट्रिनमे बदलबाक एकटा स्कीम बनौलनि आ सभ बैंककें लक्ष्य निर्धारित करबाक' नियत समयमे एहि लक्ष्यकें पूरा करबाक भार देलखिन। नगरपालिका द्वारा सभ बैंक शाखाकें वार्ड आबंटित क' क' पर्याप्त संख्यामे आवेदनपत्र उपलब्ध करा देल गेलै।

तीन मासक बाद जखन कलेक्टर साहेब एहि योजनामे उपलब्धिक जानकारी मंगलखिन त उपलब्धि शून्य सूनिक' बहुत दुखी भेलाह। कारण पुछलखिन त बेरा-बेरी सभ बैंक प्रतिनिधि द्वारा सुचित कएल गेलनि जे हुनक नियंत्रक कार्यालय द्वारा एहि योजनाक स्वीकृति नै देल गेलनि, कलेक्टर साहेब बहुत नाराज भेलाह।

कलेक्टर साहेब कहलखिन ' हम बेसीकली इंजिनियर छी, हम सोचि समझिक' ई स्कीम बनेने छी, एकरा कोना कोनो बैंक रिजेक्ट क' सकैए।' अपन पी ए कें बजाक' तुरत एकर शिकायत विभिन्न स्तर पर पठेबाक आदेश देलनि आ एजेंडाक अगिला विन्दु 'वसूली' सुनिते सभा कक्षसं बाहर चलि गेलाह।

तीन मासक बाद दोसर-तेसर विषय सभ प्राथमिकतामे ऊपर अबैत गेलै आ ई विषय नीचां भ' गेल। फेर स्थिति सामान्य भ' गेलै।

एक बेर दोसर कलेक्टर साहेब एकटा बैंक शाखामे गेलाह। शाखा प्रबंधक ठाढ़ भ' क' हुनका नमस्कार केलखिन। कलेक्टर साहेब कहलखिन जे एम्हर जे ऋण वितरण केने छी ताहिमे सं किछु

प्रकरण हमरा देखाउ, शाखा प्रबंधक आलमारीमे सं किछु दस्ताबेज आन' गेलाह त कलेक्टर महोदय हुनका कुरसीपर बैसि गेलाह। शाखा प्रबंधक जखन किछु फाइल हुनका सोझा रखलनि त किछु उनटा-पुनटा क' कलेक्टर साहेब कहलखिन जे एहि सभमे बहुत अनियमितता अछि आ अपना संगे गेल अधिकारीकें दस्ताबेज जप्त करबाक लेल कहलखिन। शाखा प्रबंधक डरि गेलाह, किछु नहि बजलाह, कलेक्टर साहेब किछु दस्ताबेज शाखा प्रबंधककें बिना कोनो सीजर लिस्ट देने जप्त क' क' ल' गेलाह।

साँझमे ओ शाखा प्रबंधक अपन कोनो दोसर अधिकारी संगे लीड बैंक कार्यालय एलाह आ घटनाक लिखित सूचना दैत ओ अपन नियंत्रक कार्यालयकें सेहो सुचित क' देलखिन।

किछुए दिनमे जिला स्तरीय मीटिंग होम' बला रहै, ओकर एजेंडाक अन्य विषयमे ई विषय सम्मिलित क' लेल गेलै।

जहिया मीटिंग रहै, रिज़र्व बैंकक प्रतिनिधिकें एहि घटनाक पूर्ण जानकारी द' देल गेलनि। मीटिंगमे जखन अन्य विषयपर चर्चा शुरू भेलै, मीटिंगक संयोजक लीड बैंकक तरफसं कलेक्टर महोदयसं पूछल गेलनि, 'सर, ई हाउस जान' चाहैत अछि जे की सरकें कोनो बैंक शाखामे जाक' शाखाक दस्ताबेज जप्त करबाक अधिकार छनि।' कलेक्टर महोदय ओहि शाखा प्रबंधकपर अपन खीझ प्रगट करैत कहलखिन ' हमरा अपन अधिकारक ज्ञान अछि, हम जिलामे कतहु कोनो ठाम जाक', कोनो ऑफिस मे कोनो चीजक जांच क' सकैत छी।'

रिज़र्व बैंकक प्रतिनिधि कहलखिन जे कलेक्टर महोदयकें अपन अधिकारक उपयोग जिलाक विकासक कार्यक्रममे बैंककें सहयोग करबामे लगेबाक चाहियनि बैंकक कार्यमे बाधा उपस्थित करबामे

नहि। ओ इहो कहलखिन जे कलेक्टर महोदयकें कोनो बैंकक शाखा प्रबंधकसं कोनो शिकायत छनि त सम्बन्धित बैंकक नियंत्रक कार्यालयकें सुचित करथि, ओ हुनका विरुद्ध जे करबाक हेतनि से अवश्य करताह लेकिन बैंकक दस्ताबेजकें जप्त करबाक आ सीजर लिस्ट नै देबाक क्रियाकें कोनो दृष्टिसं उचित नहि कहल जा सकैत अछि।

कलेक्टर महोदय आवेशमे कहलखिन, देखू हमरा अपन अधिकार बूझल अछि, हम चाही त जिलामे ट्रेन चलनाइ बन्द करा सकैत छी, प्लेनकें उड़नाइ बन्द करा सकै छी, हम चाही त अहाँ सभ गोटेकें ऐ हॉलमे चौबीस घंटाक लेल बन्द क' द' सकैत छी।

हॉलमे सबहक मूँहसं हंसी छुटलै।

कलेक्टर साहेब सभा कक्षसं निकलि गेलाह।

किछुए दिनमे सम्बन्धित शाखाकें सभ दस्ताबेज भेटि गेलै।

फेर अगिला मीटिंगसं पहिने सभ किछु सामान्य भ' गेलै।

एक बेर वी एम एच ई स्कूलमे विशाल ऋण वितरण शिविर आयोजित भेलै, कलेक्टर महोदय सिवानक विश्व स्तरीय इतिहासकार स्व. बांके बिहारी मिश्र जीकें मुख्य अतिथिक रूपमे बजौने रहथिन। मिश्रजी ई देखि बहुत हर्षित भेल रहथि जे समाजक जरूरतमंद लोक सभकें एते सम्मानपूर्वक ऋण देबाक लेल एहि तरहक उत्सव मनाओल जा रहल अछि। ओ ई दृश्य देखिक' भावुक होइत उदगार व्यक्त केने रहथि जे जाहि उद्देश्यसं बैंकक राष्ट्रीयकरण भेल, से प्रशासन आ बैंकक संयुक्त प्रयाससं फलीभूत भ' रहल अछि।

महान साहित्यकार प्रेमचन्दक कथा सभमे जाहि समाजक उल्लेख छल, नागार्जुन जे लिखने छलाह जहां न भरता पेट / देश वह कैसा भी हो / महा नरक है - से समाज आब बदलि रहल छल, रिक्शाबला,

ठेलाबला, पान दोकानबला, हजाम, दर्जी, मोची,चाहक दोकानबला, साइकिल मरम्मति दोकानबला, दोसर कोनो छोटो-छिन रोजगार करैबला सबहक लेल बैंकक सम्पर्क आसान भ' गेलै, महाजनक शरणमे जेबाक आ अनियंत्रित ब्याजक पीड़ासं मुक्तिक समय आबि गेल छलैक।

हमरा सबहक लेल ई हर्षक विषय छल जे एहि परिवर्तनमे हमहूँ सभ किछु योगदान देबाक स्थितिमे भेलहुँ। तें निष्ठापूर्वक एहि यग्यमे भाग लेब अपन सौभाग्य मानैत छलहुँ आ बैंकमे अबैबला लोक सबहक संग स्नेहपूर्वक व्यवहार करब अपन धर्म बुझैत छलहुँ।

वसूली :

बैंकमे नव ऋण देबाक संगहि पूर्वमे देल गेल ऋणक वसूली सेहो बड़ महत्वपूर्ण काज होइ छै। नव ऋण त एके-दू ब्लाकमे देबाक लेल गाँव आबंटित छलै, किन्तु पुरान ऋण सभ कयटा ब्लाकमे स्थित छलै जेना सिवानक अतिरिक्त आंदर, पचरुखी, सिसवन, रघुनाथपुर, दरौली आदि जकर वसूलीक लेल व्यक्तिगत सम्पर्क कठिन होइत छलैक।

वसूलीक सम्बन्धमे हमर सबहक अनुभव यैह छल जे किछु लोक समयपर ऋणक किश्त बैंकमे जमा करैत छलाह, किछु लोक जमा करैत छलाह मुदा निश्चित समयपर नहि, किछु लोक ई मानैत छलाह जे ऋण ल'क' नहि जमा केलासं मुक्ति नहि भेटतनि, किछु लोक बैंक ऋण सरकारी मदति बूझिक' चुकाएब आवश्यक नहि बुझैत छलाह। मुख्य रूप सं नै चुकबैबलाक दूटा श्रेणी छल- बहुत मजबूरीक

कारण नै चुकब' बला आ जानि-बूझिक' नै चुकब' बला।

हम सभ नियमानुसार ऋणक किश्त जमा करबाक लेल नोटिस पठबै छलिऐ, स्मरण पत्र सेहो जारी कएल जाइत छलै, व्यक्तिगत रूपसं सम्पर्क कएल जाइत छलै, पर्याप्त समय देल जाइ छलै, तैयो जे नै जमा करै छलाह हुनका विरुद्ध लोक मांग वसूली एक्टक अन्तर्गत कार्यवाही कएल जाइत छलै।

चपरासीक नै रहलापर हम सभ अपने पोस्ट ऑफिस जाक' पावती पत्रक संग पंजीकृत डाकसं नोटिस पठयबाक काज करैत छलहुँ। सालमे जखन ऑडिट होइ छलै त ई देखल जाइ छलै जे वसूलीक लेल शाखा द्वारा की की प्रयास कएल गेल छै अर्थात बैंक द्वारा निर्धारित सभ कार्यवाही कएल गेल छै कि नै।

वसूलीक सम्बन्धमे हमरा दूटा घटना मोन पडैत अछि।

एक दिन एकटा मुस्लिम महिला एलीह आ कहलनि जे हुनकर पति बैंकसं रिक्शा कीन' लेल लोन नेने छथिन, हुनकर देहान्त भ' गेल छनि, ओ हुनकर बकाया जमा कर' चाहैत छथि, हिसाब जोड़िक' कहि दीय' जे कते जमा करबाक छै।

हम सभ खाता देखलिऐ, खातामे समयपर किश्त जमा होइत आएल छलै।

हम सभ हुनका पुछलियनि जे हुनकर बेटा जवान छनि की नै। बेटा जवान नै छलनि। हम सभ कहलियनि जे ओ एखन चिन्ता नहि करथि, मुदा ओ मानक लेल तैयार नै भेलीह। हुनकर कहब छलनि जे जाधरि पूरा कर्ज ख़तम नै भ' जेतनि, हुनका जन्नत नै भेटि सकैत छनि। हम सभ भावुक भ' गेल रही, ओ पूरा पाइ चुकाक' प्रसन्न भ' गेल छलीह। लगभग चालीस बरख भ' गेलै, ओहि महिलाक अविस्मरनीय छाप हमरा सबहक स्मृतिमे अछि।

एकर विपरीत एकटा उदाहरण सेहो मोन अछि। एक दिन हम सभ

एकटा जीपसं एक आदमी ओत' गेल रही जे किछु साल पहिने ट्रैक्टर किनबाक लेल ऋण नेने छलाह आ नियमानुसार किश्त नै जमा करैत छलाह। दूरेसं देखि ओ हमरा सभ लग दौगल एलाह आ कहलनि जे आइ हमरा दरबज्जापर नै जाउ, पौत्रक विवाह लेल घटक सभ आएल छथि। हम सभ हुनका दरबज्जापर नै जाक' आन-आन ठाम गेलहुँ। मास दिनक बाद जखन फेर हम सभ गेलहुँ त ओ अपने असहाय जकाँ कहलनि जे हमरापर केसक' क' हमरा जहलमे ध' देब तखने हमरा घरक लोक ऋण चुकयबाक लेल तैयार हैत। ओ कहलनि सबेरे सभ खा-पी क' अपन-अपन मोटर साइकिल ल'क' घरसं निकलि जाइए, ककरो चिन्ता नै छै बैंकक ऋण चुकयबाक। कोठाबला बड़का घर आ घरक मालिकक विवशता सेहो नहि कहियो बिसराएल। हुनका अंतिम नोटिस द'क' पी डी आर एक्टक शरणमे जाए पडल।

एखनो दुनू तरहक लोक समाजमे विद्यमान छथि। किछु लोक त नै चुकयबाक लेल देशोसं भागि जाइ छथि, हुनका नरक जेबाक भय नै होइ छनि।

किछु गोटेक कहब छनि जे चार्वाक दर्शनमे कहल गेल छै जे ऋण लिय' आ घी पीबू माने सुखसं रहू। हुनकर कहब छनि जे चार्वाक दर्शनमे ऋण चुकयबाक बात नहि लीखल छै।

बैंक आ साहित्य :

नया बीस सूत्री कार्यक्रम पूरा देशमे पावनि जकाँ मनाओल जा रहल छल। हम हिन्दीमे ओहिसं सम्बन्धित एकटा कविता लिखलहुं :

आया है नव सपने लेकर और नए आयाम
श्रीमती गांधी का नूतन बीस सूत्री प्रोग्राम।

आकाशवाणी,पटनामे चौपाल अथवा मैथिली कार्यक्रम 'भारती' मे भाग लेबय सालमे एक-दू बेर जाइ छलहुँ। क्षेत्रीय प्रबंधककें से बूझल छलनि। एक दिन हमरा बजाक' कहलनि जे डी ए वी कॉलेजमे सेंट्रल बैंकक एक्सटेंशन काउंटर खुज' बला छै। ओकर उद्घाटन दिनले' एकटा कविता तैयार करबाक भार हमरा देलनि।
दू-तीन दिन लागल।
सस्वर पाठ कर'बला एकटा कविता तैयार भेल :

क्या है सेंट्रल बैंक हमारा क्यों इसके गुण गाते हैं
सुनो साथियो हम इसका इतिहास तुम्हें बतलाते हैं।

भाटिया साहेब प्रसन्न भेलाह।
हमरासं ओहि दिन एकर सस्वर पाठ करबाओल गेल।

ओहि दिनक बाद हमरा लागल जे बैंकक क्रिया-कलापक अन्तर्गत अबैबला बहुत विषय छै जैपर रचना कएल जा सकैत अछि।

ओहि समयमे बैंकमे बैलेंसिंग, दस्ताबेजक नवीनीकरण, वसूली, ऋण वितरण आदि काज सबहक जे तनाव भोगल जा रहल छल ताहि लेल एकटा रचना भेल :

'यह बैंक का चक्कर है, चक्कर में रहना है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं तबाही से गुजरना है'...............

आइ आर डी पी पर दू टा रचना भेल :

(१)

रिक्शा बाला तांगा बाला
पान बीडी और ठेले बाला
होटल सैलून चाय बाला
बैल भैंस और गाय बाला
आज ब्लाकमे लगा है मेला
मेला आइ आर डी पी बाला।........

(२)

आइ आर डी पी की न टूटे लड़ी
लोन देते चलो हर घडी।

बैंकमे ऑडिट होइत रहै छलै, ओहिपर एकटा व्यंग्य रचना :

ए ऑडिटर साहेब कब जाएगा तू
यहाँ कब तक माथा खपाएगा तू
और कब तक डाइम बनाएगा तू
चला जा..तू चला जा ....

कतहु-कतहु कोनो अधिकारीक अथवा कर्मचारीक कदाचार प्रकाशमे अबैत छलैक।
एहि सम्बन्धमे एकटा पैरोडी :

एहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तो
ये कोट तेरे नोट से भरा है दोस्तो ....

नव शाखाक शाखा प्रबंधक सबहक समस्या पर एकटा कविता :

खुद ही रिसीट भी लेना है, खुद ही करना पेमेंट
खुद को ही निर्मित करने हैं सारे एस्टेटमेंट
सारे एस्टेटमेंट कभी कुछ तार यूं आते
अनुशासनिक कार्र्बाई की धमकी दे जाते
धमकी दे जाते नेतागण पेंडिंग आवेदन को लेकर
सुचित करेंगे श्रीमती इन्दिरा गांधी को लेटर देकर
बड़ी मुसीबत दे जाता पेंशन पेमेन्ट का काम
रात गयी सर्कुलर उलटते कभी नहीं आराम
देख व्यस्तता श्रीमतीजी यूँ झल्लाती
इससे तो अच्छा होता जो मैं मर जाती
एक दिन लगी बुखार भाग्य से तो मैंने मौका पाया
बड़े प्रेम से पास बिठाकर मैंने उन को समझाया
प्यारी दीदी इन्दिरा गांधी का है ये अभियान
कल हम कहाँ रहेंगे प्रियतम मत करना अनुमान
मत करना अनुमान जेल का द्वार खुला है
अभी-अभी मोतिहारी का समाचार मिला है
हो जाएंगे बिष-सूत्री पर हम बैंकर कुर्वान
कृपा करो जल्दी आकर हे बेकटेश्वरम भगवान।

(ओहि समय बेकटेश्वरम साहेब हमर सबहक आंचलिक प्रबंधक छलाह, मोतिहारी शाखाक एकटा फील्ड स्टाफकें मेलामे पशु-खरीदक विधिमे कोनो आपत्ति लगाक' जेलमे ध' देल गेल छलै)

अही अवधिमे हम दुष्यंत कुमारक गजल संग्रह 'साये मे धूप' आ हरिवंश राय बच्चनजीक आत्म कथाक दू भाग 'क्या भूलूं क्या याद

करूं' और 'नीड़ का निर्माण फिर' पढने छलहुँ।

किछु दिनक बाद प्रशिक्षणमे आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्र, राजेंद्रनगर पटना गेलहुँ।

ओहि कार्यक्रममे पटना जोनल ऑफिससं एन के झा आ दरभंगासं नवेन्द्र झा सेहो आएल छलाह।

एक दिन जोनल ऑफिससं मुख्य प्रबंधक एन सी मित्रा साहेब क्लास लेब' एलाह। मित्रा साहेब देशक आजादीक लेल महापुरुष सबहक बलिदानक चर्च करैत सभकें भावुक क' देलनि, फेर बैंकक राष्ट्रीयकरणक उद्देश्य आ तकर बाद आइ आर डी पीक आवश्यकता आ समाजक गरीबी दूर करबामे बैंकक योगदान आ ताहि लेल सम्बन्धित स्टाफ सबहक निष्ठापूर्ण कर्तव्यक बोध करौलनि।

तकरा बाद वातावरणकें आनंदपूर्ण बनयबाक लेल प्रशिक्षु लोकनिसं योगदान देबाक लेल कहलनि। एक गोटे कोनो फ़िल्मी नीक गजल सस्वर सुनौलखिन। एन के झा हमर लेखनक चर्च केलखिन। मित्रा साहेब हमरा किछु सुनाबय कहलनि।

हम कहलियनि जे हम मैथिलीमे लिखैत छी।

मित्रा साहेब हमरा मैथिलीए रचना सुनबय कहलनि।

हम कोनो रचना सुनौलियनि। कहलनि जे हम बुझै छी मैथिली मुदा बाजि नहि सकब।

ओ पुछलनि, हिन्दीयोमे किछु सुना सकै छी।

हम सुनौलियनि -

' क्या है सेंट्रल बैंक हमारा क्यों इसके गुण गाते हैं

सुनो साथियो हम इसका इतिहास तुम्हें बतलाते हैं '

मित्रा साहेब पूरा रचना सूनिक' भावुक भ' गेलाह।
ओ बजलाह, हम चाहैत छी जे बैंकक सभ सदस्य ई गीत सुनथि, तें ट्रेनिंग समाप्त हेबासं दू दिन पहिने एकटा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक घोषणा केलनि जाहिमे पटनामे स्थित सभ कर्यालयक अधिक सं अधिक स्टाफ रहथि।
हमरा कहलनि जे अहाँ और किनको एहि कार्यक्रममे बजाबय चाही त बजा सकै छी
एन के झा आ नवेन्द्र झा जी एहि कार्यक्रमक व्यवस्थाक भार लेलनि।
हिनके सबहक संग हम आकाशवाणी,पटना गेलहुँ, बटुक भाइकें अनुरोध केलियनि जे वैह ऐ कार्यक्रमक उदघाटन करथि आ कोनो कलाकारकें सेहो संगे नेने आबथि।
निर्धारित तिथिक' साँझमे लगभग छओ बजेक बाद पटना स्थित क्षेत्रीय कार्यालय, आंचलिक कार्यालय आ शाखा कार्यालयसं पर्याप्त संख्यामे अधिकारी-कर्मचारी लोकनि अबै गेलाह।
मित्रा दादा कार्यक्रमक विषयमे संक्षेपमे अपन विचार रखलनि।
बटुक भाइ आइ आर डी पी मे बैंकक योगदानक चर्च केलनि।
बटुक भाइ मैथिली गायक कृष्णानन्द जीकें हारमोनियम आ एकटा तबलाबादक संगे नेने आएल छलाह।

कृष्णानन्द जी हमर नाम लैत हमरहु किछु मैथिली गीत रचना प्रस्तुत केलनि जे गीत सभ 'तोरा अंगना मे' गीत संग्रहमे छल।

अन्तमे हम अपन एकटा मैथिली गीत आ तकर बाद सेंट्रल बैंकक परिचय गीत सुनौलियनि :

क्या है सेंट्रल बैंक हमारा क्यों इसके गुण गाते हैं
सुनो साथियो हम इसका इतिहास तुम्हें बतलाते हैं।

आते हैं जब याद वो दिन भर आता आँखों में पानी
अपने ही घर में थे खोए हम सारे हिन्दुस्तानी
शान्तिप्रिय यह देश हमारा बेबस था परतंत्र था
यहाँ की अर्थ व्यवस्था में अंग्रेजों का षड्यंत्र था
उनके दमन-नीति से घायल तेजस्वी लोग अनेक थे
सर सोरावजी पोचखानावाला उनमें से एक थे
उन महान देश-प्रेमी ने देखा एक सुन्दर सपना
भारत में एक बैंक बने जो भारतियों का हो अपना
ये देते हैं ताने हमको, हम इनको दिखलाएंगे
आलोकित होगा भारत हम ऐसा दीप जलाएंगे
चला बहादुर अपने पथपर निश्छल कदम बढ़ा करके
अपनी प्रतिभा से पाए ओहदे को भी ठुकरा करके
उनके देश-प्रेम के आगे फिर-फिर शीश झुकाते हैं
सुनो साथियो हम इससे आगे की कथा सुनाते हैं।

सच है शूरों के राहों में रोड़े कितने आते हैं
पर विश्वास अटल हो जिनका कभी नहीं घवराते हैं
विपदाओं को गले लगाते आगे बढ़ते जाते हैं
और किसी दिन निश्चित ही मंजिल अपनी पा जाते हैं
इसी तरह भारतमे भैया एक दिन जय-जयकार हुआ
सन उनीस सौ ग्यारह में जब यह सपना साकार हुआ

पोचखानावाला ने भारत को अनुपम उपहार दिया
भारत वासी के दिल में आजादी का संचार किया
एक अनोखा एक निराला एक नया आयाम दिया
सचमुच ही कितना सुन्दर और कितना प्यारा नाम दिया
पलते लाखों लोग निरंतर इस बरगद की छांव मे
तीन हजार शाखाएं जिसकी हैं शहरों और गांव मे
प्रस्तुत करती कार्य प्रणाली झांकी हिन्दुस्तान की
गाँवों के आधुनिकीकरण की बातें जन कल्याण की
राष्ट्रीयकरण हुआ फिर इसने एक अनोखा मोड़ लिया
कल तक थे जो लोग दूर अब सबसे नाता जोड़ लिया

प्रथम स्वदेशी बैंक हमारा हम जिसके गुण गाते हैं
इसीलिए सब बैंकों से हम इसे महान बताते हैं।

एहि प्रस्तुतिक प्रशंसामे किछु वरिष्ठ अधिकारी सभ अपन-अपन उदगार व्यक्त केलनि।
हमर दोसर प्रस्तुति छल नव बीस सूत्री कार्यक्रम पर लिखल कविता :

'आया है नव सपने लेकर और नए आयाम
श्रीमती गांधी का नूतन बीस-सूत्री प्रोग्राम।'

फेर किछु वरिष्ठ अधिकारी सभ प्रशंसाक रूपमे अपन-अपन उदगार व्यक्त केलनि।
करीब दू घंटा धरि कार्यक्रम चललै।
बैंकक क्रिया-कलापसं सम्बन्धित हमर बहुत रचना सुनै गेलाह।

टिप्पणी एतेक धरि भेलै जे बैंकक पी. आर. ओ. पद लेल हम एकदम उपयुक्त छी।
बहुत गोटे ई बूझय लगलाह जे हम बहुत जल्दी पी. आर. ओ. होमय जा रहल छी।
कखनो-कखनो हमरो भ्रम हुअ' लागय जे हम पी.आर.ओ. बन' जा रहल छी।
ओहि समय तक सेंट्रल बैंक में पी. आर. ओ. पद नहि छलैक, तें ई उत्सुकता भेल जे ओहि पद पर कोन-कोन काज करय पडैत छै, से बूझि ली। बटुक भाइ एक आदमीक पता देलनि जे दोसर कोनो बैंक में पी. आर. ओ. छलाह। हम हुनकासं भेंट कर' गेलहुँ मुदा हुनकासं भेंट नै भेल, ओ पटनामे ओहि समय नहि छलाह।

एक दिन हम नवेन्द्र झा जीक संग एन.के.झा जीक कंकड़बाग़ स्थित डेरापर सेहो गेलहुँ। नवेन्द्र जी कहैत छथि जे ओतहु किछु गीत-नाद भेल रहै।

प्रशिक्षण कार्यक्रमसं घुरिक' सिवान एलहुं आ फेर अपन वर्तमान काजमे एतेक तल्लीन भ' गेलहुँ जे हमरा सही समय पर पतो नहि चलि सकल जे बैंक में पी.आर.ओ.पद लेल विज्ञापन एलै,जिनका जेबाक छलनि,से आवेदन पठा देलनि आ साक्षात्कारक तिथि सेहो आबि गेलै।
हम जेना एहि उमेदमे रही जे हमरा लेल विशेष आमंत्रण पत्र आएत।

सभ किछु बिहित नियमक अनुसार भेलै। सिवाने शाखाक श्री नारायण

झा जी पटना आंचलिक कार्यालयमे पी.आर.ओ. पदपर गेलाह। झा जी बैंकक सी.ए.आइ.आइ.बी. क परीक्षा उत्तीर्ण छलाह, बैंकक एकटा यूनियनक नेता छलाह आ नीक वक्ता छलाह, मैथिलीमे एकटा पोथी सेहो प्रकाशित भेलनि।

जे अपन प्रशंसक वरिष्ठ अधिकारी सभसं सेहो सम्पर्क रखबाक कला नहि जनैत हो, ओकरा जन सम्पर्क अधिकारी पद लेल उपयुक्त हमहूँ कोना मानि सकै छी?

ओकरा लेल अस्तित्व किछु और तय केने छलैक।

हम सोचैत छी यदि हम आवेदन देनहु रहितिऐ आ गेलो रहितहुं साक्षात्कारमे त सफल नहि होइतहुं किएक त हम सी ए आइ आइ बीक परीक्षा पास नहि केने छलहुँ आ एकर महत्व बेशी छलै।

हम अपन मोनक शान्तिक लेल एहि दर्शनकें आत्मसात क' लेलहुं :

''जे भेटल सैह अहाँक लेल सर्वोत्तम अछि आ जे आगाँ भेटत से और सुन्दर होयत आ जे नहि भेटल से बूझू जे अहाँक लेल उपयुक्त नहि छल''

मैथिली साहित्य परिषद आ हमर मैथिलीमे लेखन :

मैथिली साहित्य परिषदक सम्पर्कमे एलापर बहुत गोटेसं परिचय भेल जे कलेक्टरिएट, बैंक, कोर्ट, जेल, डी. ए. वी. कॉलेज आदि ठाम विभिन्न पदपर काज करैत छलाह।
नरेश कुमार दत्त, अचुतानंद कंठ कलेक्टरिएटमे छलाह। दत्त जी लिखैत सेहो छलाह।
सेंट्रल बैंक शाखामे हम रही, मोद नारायण झा, श्री नारायण झा छलाह। सेंट्रल बैंकक क्षेत्रीय कार्यालयमे अरुण झा आ अरुण कुमार झा छलाह, बादमे बिन्दुजी (बिन्दु प्रसाद कर्ण) एलाह राजभाषा अधिकारीक पद पर।
स्टेट बैंकमे चौधरी जी छलाह। कोर्टमे लाल साहेब मजिस्ट्रेट छलाह। जेल अधिकारी पी. के. झा छलाह। जेलमे डॉक्टर छलाह चौधरी जी।

डी.ए.वी. कॉलेजमे प्राध्यापक छलाह संस्कृत विभागमे कमलोद्भव शर्मा आ डा. अमर नाथ ठाकुर, बनस्पति विज्ञान विभागमे गंगानंद झा, हिन्दी विभागमे सोमेश्वर झा, राजनीति विज्ञान विभागमे उपेन्द्र मिश्र आ इतिहासमे छलाह आर.एन. चौधरी।

इंजिनियर रमेश झा छलाह, हुनका संग उमेशजी छलाह, टनटन जी छलाह। उपेन्द्र चौधरी कुसियार विभागमे छलाह।
बी. डी. ओ. छलाह शिव देव सिंह आ सी.ओ. छलाह धीरेन्द्र मोहन झा।

प्रो. गंगानंद झा मैथिली, हिन्दी आ बंगला साहित्यक नीक अध्येता छलाह। हुनक साहित्यिक समझसं हमरा बहुत लाभ भेल। हुनकहि अनुशंसा पर हम बंगला लेखक शंकर आ आशापूर्णा देवीक किछु महत्त्वपूर्ण पोथीक हिन्दी अनुवाद पढलहुं। रवीन्द्र नाथ ठाकुरक गीतांजलि पढ़िक' बुझबामे हुनकासं बहुत सहयोग भेटल।
हुनकासं सूनल रवीन्द्र नाथ ठाकुरक कविता 'पुरस्कार' आ गीत ' जगते आनन्द यज्ञे आमार निमंत्रण / धन्य होलो धन्य होलो मानव जीवन' मोन-प्राणमे बसि गेल
काजी नजरूल इस्लामक रचना सबहक रसास्वादन करबाक सेहो अवसर भेटल। सर्वप्रथम हुनकहिसं नजरूल इस्लामक प्रसिद्द कविता 'विद्रोही' सुनने छलहुँ।
हुनक संघर्षमय, संयमित आ संतुलित जीवनसं हमहूँ प्रेरित भेलहुँ।

एक दिन दैनिक जनशक्तिक सम्पादक सिवान एलाह त हुनकासं परिचय करौलनि, ओ किछु मैथिली गीत सुनलनि आ १४.१०.८४ क' जनशक्तिक रविवारीय अंकमे 'तीन मैथिली गीत शीर्षकसं हमर तीनटा गीत छपलनि।

१९८३ मे मिथिला मिहिरक ३-९ अप्रैलक अंकमे दूटा गजल आ माटि-पानिक दिसम्बर अंकमे तीनटा गीत प्रकाशित भेल।

१९८४ मे मिथिला मिहिरक १५ सं २१ जनवरी बला अंकमे एकटा कविता 'दुख', २६ फरबरीबला अंकमे गीत ' तीन कोटि मैथिल ताल ठोकिक' कहैए / ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए' आ २० सितम्बरबला अंकमे गीत ' मैथिलीले' अहाँ की करै छी' प्रकाशित भेल।

माटि-पानिक फरबरी अंक मे दूटा गजल प्रकाशित भेल :

(१)   'रौदीक मारिसं कुहरैत हमर गाम
हमरा करैछ सोर बिलटैत हमर गाम'

(२) 'चालनिमे पानिसभ दिन भरैत रहल लोक
करबाक नामपर किछु करैत रहल लोक'

विद्यापति पर्व दिन एकटा रचना लिखाएल :

आजुक राति कथीले' भैया, आजुक राति कथीले'
माटिक ममता सोर करैए, सैह समाद सुनैले'।
(गीत संग्रह गीत- गंगामे रचना सम्मिलित अछि)

दूटा रचना एहि तरहक लिखाएल :
पहिल :
'विकास हो कि नै हो परचार होना चाही
वाह रे वाह एहने सरकार होना चाही'

दोसर :
'ई की भेल ई की भेल
हे गै बुढ़िया ई की भेल

जानि ने कत' चोराक' रखलें
चिन्नी और किरासन तेल।'......

साढ़ू-मित्र मनोजानन्द झाक असामयिक निधनक दुखद समाचारसं मर्माहत भेल रही। ओना ओ दूटा शिशुकें छोडिक' गेल छलाह जे शान्तीक जीवनक लेल पैघ संबल छल। शान्ती नीक परिवारक पुतोहु छलीह, जतय हुनका सम्मानित जीवन जीबाक लेल सबहक सिनेह आ आशीर्बाद प्राप्त छलनि।
मुदा समाजमे बहुत एहनो शान्ती रहैत छथि जिनका लेल सम्मानित जीवन सुलभ नै होइत छनि। एहि समस्यापर गम्भीर चिन्तन-मनन चलल आ ओहीसं निकलल
एकटा एकांकी 'कोरांटी' आ एकटा गीत 'एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें (जे गीत संग्रह 'गीत-गंगा' मे सम्मिलित अछि।

मैथिली साहित्य परिषद निष्क्रिय जकाँ छल, मुदा सिवानक स्थायी निवासी बनल   बड़का आवास-परिसरक स्वामी आ प्रतिष्ठित चिकित्सक डा. बी. एल. दास आ श्रीमती आशा दास जीक सिनेहसं पुनः सक्रिय भेल, निर्धारित समयपर डा. दास ओत' बैसक होमय लागल। डा. साहेब संरक्षक छलाह। बैसकमे सभ गोटेकें पर्याप्त सिनेह आ सत्कारक संग डा. दम्पतिक उपस्थिति आ सलाह सुलभ होइत छलनि।

बैसकमे विभिन्न विषयपर चर्चाक संग काव्य-पाठ सेहो होइत छलै। हम मिथिला मिहिर पढैत छलहुँ।
पटनासं 'माटि - पानि' प्रकाशित होमय लगलै त ओहो दस प्रति मंगब' लगलहुं, परिषदक किछु सदस्य सभ लैत छलाह, पढैत छलाह, गोष्ठीमे ओहिपर सेहो चर्चा होइत छल।

हमर अनुरोधपर प्रो. गंगा नन्द झा मैथिलीमे किछु लेख लिखलनि-

एकटा लेख 'मिथिलामे दीयाबातीक परम्परा' हुनकहि द्वारा आकाशवाणी,पटनाक मैथिली कार्यक्रम 'भारती' मे दिनांक २५.१०.१९८४ क' प्रसारित भेलनि, दोसर लेख 'प्रवासी मैथिल : बैद्यनाथ धामक पंडा' मासिक पत्रिका 'माटि-पानि'मे प्रकाशित-प्रशंसित भेलनि। 'बंगला भाषा आन्दोलन आ मैथिलीपर ओकर प्रभाव' आ 'मैथिली आंदोलनक दिशा'पर सेहो हुनक विचार बहुत स्वस्थ आ सुन्दर छलनि।

प्रो. अमर नाथ ठाकुरक दू टा लेख 'सूतल नहि अछि सिवान' आ 'जागल अछि बासोपट्टी' माटि-पानिमे प्रकाशित भेलनि। हुनकहु लेखनीक गति तेज भेलनि।

किछु साल नरेश कुमार दत्त आ किछु साल रमेश झा परिषदक सचिव छलाह।
हम रही त दू बेर विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल छल। ओकर बादो परिषद सक्रिय छल।
कवि गोष्ठीमे मार्कंडेय प्रवासी, उदय चन्द्र झा 'विनोद', विभूति आनन्द,छत्रानंद सिंह झा, रवीन्द्र नाथ ठाकुर सेहो भाग नेने छलाह। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रममे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, महेन्द्र झा, अवनींद्र नाथ ठाकुर, शारदा झा,अशर्फी अजनवी, अमिय हलाहल,महादेव ठाकुर आदि भाग नेने छलाह।
रवीन्द्र-महेन्द्रक कार्यक्रम अमैथिल लोक सभकें सेहो बहुत आकर्षित करैत छलनि।
दुनू गोटे मंचपर अबै छलाह त एक बेरमे लगातार छओटा गीत गाबि लैत छलाह। छक्का कय बेर चलैत रहैत छल।

एक बेर गरमीमे कार्यक्रम भेल रहै। रवीन्द्र आ महेन्द्र जखन मंच पर एलाह आ गाबय लगलाह ' हवा रे चल मिथिलामे चल' त लोक आनन्दसं ततेक भरि गेल जे लगै छलै जेना ठीके शीतल बसात बहय लागल हो।

बहुत दिन धरि कार्यक्रमक चर्चा चलैत रहैत छल। जिला कार्यालयक किछु अधिकारी सभ सेहो ओहि कार्यक्रमक प्रतीक्षा करैत छलाह। डा.बी.एल.दास ओत' अतिथि सबहक ठहरबाक व्यवस्था रहैत छलनि। एक बेर कार्यक्रमक प्रात सेहो सबेरे-सबेरे डा. साहेब ओत' बहुत गोटे जमा भ' गेलाह। रवीन्द्रजी आ महेन्द्र जी लोकक आग्रहपर 'पञ्च कन्या'क पाठ गीते जकाँ दुनू गोटे मिलिक' बड़ी काल धरि प्रस्तुत करैत रहलाह आ सभ श्रोता आनंदक सागरमे डूबल रहलाह, बड़ड आकर्षक रहल ओहो कार्यक्रम।

लगभग एहि समय तक गीतकार चन्द्रमणि जी सेहो अपन शब्द आ स्वर ल'क' मैथिली गीत-मंचपर अपन स्थान जमा चुकल छलाह, से हरिमोहन बाबूक अभिनन्दन समारोहक मंचपर पटनामे देखने छलहुँ।

१९८४ मे १९ फरबरी क' आर्यावर्तमे प्रकाशित लेख " मिथिला राज्य क्यों" पढ़लहुं।
२० फरबरीक' मिथिला-मिहिर दैनिक शुरू भेल।

२३ फरबरीक' तीन बजे भोरमे दरभंगा मेडिकल कॉलेज-अस्पतालमे ७६ बरखक अवस्थामे हास्य सम्राट हरिमोहन बाबूक देहान्त भ' गेलनि, दाह संस्कार सिमरियाघाटमे भेलनि।
२४ क' आर्यावर्त्तमे खबरि प्रकाशित भेलै, श्री मार्कंडेय प्रवासीक वक्तव्य प्रकाशित भेलनि : मैथिली साहित्याकाशक सूर्यास्त भ' गेल।

हरिमोहन बाबूकें श्रद्धांजलि अर्पित करबाक हेतु २६ क' एकटा शोक सभा जेल अधिकारी पी. के. झाक आवासीय परिसरमे आयोजित भेल।

१९८५ मे २३ फरबरी क' हरिमोहन बाबूक स्मृति संध्या स्थानीय आ आदरणीय अधिवक्ता श्री सुभाष्कर पाण्डेय जीक आवासीय परिसरमे हॉलमे मनाओल गेल जाहिमे मैथिल आ अमैथिल विद्वान् लोकनि द्वारा हरिमोहन बाबूक स्मृतिमे हुनक साहित्यिक कृतिक पाठ कएल गेल आ हुनक साहित्य संसारक चर्चा भेल।

गोष्ठी श्री आर. एन. मिश्र, एस.डी. जी. एम. क अध्यक्षतामे भेल।
स्वागत भाषण केलनि श्री राम चन्द्र त्रिपाठी।
श्रद्धांजलि अर्पित करयबलामे देवेन्द्र झा,प्रो. आर.एन. चौधरी, डा. अमरनाथ ठाकुर, शिवदेव सिंह आ प्रो. गंगानंद झा सेहो छलाह।
डा. ठाकुर एकटा लेख प्रस्तुत केलनि आ हरिमोहन बाबूक कथा 'टोटमा'क पाठ केलनि।
श्रीमती कान्ति पाण्डेय हरिमोहन बाबूक कथा-संग्रह 'रंगशाला'क एक कथा 'रसमयीक ग्राहक'क पाठ केलनि।
नीलांजना आ सुदीप्ता द्वारा प्रस्तुत कएल गेल गीत ' तोरा अंगनामे ...' आ 'जोगिया मोर जगत सुखदायक .....'
काव्य पाठ केलनि नरेश कुमार दत्त, डा. ए. के. घोष आ मानस मुख़र्जी।
श्री सुभाष्कर पाण्डेय जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कएल गेल।

एहि कार्यक्रमक अध्यक्ष श्री आर एन मिश्र, एस डी जी एम सं १३ मार्च क' साँझमे सड़केपर भेंट आ संक्षिप्त गप भेल।

दुखक बात ई भेल जे १५ मार्चक' रस्तोगीजी (अधिवक्ता) सं पता चलल जे ४.३० बजे भोरमे आर एन मिश्र जीक ह्रदय गति रुकि गेलनि। पत्नी, सार आ चारिटा बच्चा छलखिन डेरामे।

ऑफिससं छुट्टी ल' लेलहुं। बहुत गोटेकें सुचित केलियनि, अबै गेलाह।

मिश्र जीक शव देखि लगैत छल जे सूतल होथि।

कातमे ठाढ़ पाँच बरखक अबोध नेनाक चेहरापर शून्य ह्रदय विदारक छल।

सिवानमे अही अवधिमे हरिमोहन बाबूक किछु पोथी आ व्यासजीक पोथी 'दू पत्र' सेहो पढबाक अवसर भेटल।

बच्ची सेहो 'रंगशाला' पढ़िक' आनन्दित भेलीह।

जीवकांत जीक कथा संग्रह 'वस्तु' पढ़लहुँ। 'नानी' कथा एखनो स्मृतिमे अछि।

अरुणजीसं नानी कथाक भूमिका सूनि नीक लागल।

बेरोजगारीक अवधिमे जमशेदपुरमे लीखल अपन दीर्घ कथाकें फेरसं लीखिक' अरुणजी (जीवकान्त जीक सुपुत्र)क माध्यमसं आदरणीय जीवकान्त जीकें पठौलियनि आ हुनक सुझाव प्राप्त भेल। बहुत बादमे ई दीर्घ कविता 'धारक ओइ पार' नामसं प्रकाशित भेल।

जीवकान्त जीसं पत्राचार होइत रहल।

हुनकासं सुझाव प्राप्त भेल जे किछु गद्यो लिखी, नीक रचनाकार

सबहक रचना पढ़ी आ पोथी छपयबाक लक्ष्य बनाबी।

प्रो. गंगानंद झाजीक सुपुत्र अपूर्वानन्द जीसं नागार्जुनक बहुत रास रचना एहि अवधिमे सुनबाक अवसर भेटल।
‘उत्तरशती’ मे छपल अपूर्वानंदजीक कविता सभ सेहो सुनबाक अवसर भेटल।
गंगा बाबूक ओत’सं ‘निशा निमंत्रण’(बच्चन जीक), भवप्रीत्यानंद पदावली आ ‘अंधा युग’ आनि पढ़लहुँ।
१९८५ मे २२ अगस्तक’ आकाशवाणी,पटनाक मैथिली कार्यक्रम ‘भारती’ मे संध्या ५.३०   बजे कवि गोष्ठीमे भाग लेलहुं जाहिमे श्री आरसी प्रसाद सिंह, प्रो. श्याम नारायण चौधरी आ श्री पूर्णेंदु चौधरी सेहो छलाह।

हमर पारिवारिक स्थिति :

सिन्धुजीक जन्म भेलनि। बादमे हिनक नाम शैलेन्द्र आ फेर बादमे विवेक आनन्द भेलनि ।
आरम्भमे वसन्त, मैथिली आ शैलेन्द्रक संग बच्ची किछु मास गाम आ किछु मास सिवान रहैत छलीह।
आरम्भमे स्टेशन रोडमे एकटा मुनीमजीक मकानमे रही।
बाबूक स्वास्थ्यमे परिवर्तन होइत रहै छलनि आ समय-समयपर डॉक्टरक सम्पर्क आवश्यक रहै छलनि। ओहो एक-दू बेर सिवान एलाह आ किछु दिन रहिक’ गाम चलि गेलाह।

लहेरियासराय शाखामे जे ए एफ ओ छलाह हुनकासं म्यूच्यूअल ट्रान्सफरक लेल आवेदन देलिऐ। शुरूमे ओ तैयार छलाह, मुदा बादमे ओ तैयार नै भेलाह तें स्थानान्तरणक प्रयास विफल भ' गेल।

एक बेर दुर्गा पूजामे गाम गेलहुँ आ २२.१०.८२ क' बाबूकें दरभंगामे कोनो डॉक्टरसं सम्पर्क हेतु बैदिक ककाक संगे गेलहुं।

घुरती काल बाबू गामक कैटोला चौकपर बससं उतरि सोझे घर चलि गेलाह, ओ दोकानपर चाह ओहि समय नहि पिबैत छलाह, हम दुनू गोटे चौकपर चाह पीबाक हेतु रुकि गेलहुँ।

पानि भेल रहै, बाट सभ पिछराह भ' गेल छलै।
हाथमे बैग आ जूता नेने बढल जाइत रही। पुरना आँगन लग द'क' कनी लग होइत, से सोचि पुरने आंगन बला रस्तासं बिदा भेलहुँ। चापा कल लग पिछड़ि गेलहुं, एकटा पैर सोझे नब्बे डिग्री घूमि गेल।

खसबाक आबाज सूनि मौसी (हमर काकी मौसी सेहो छलीह, तें हम सभ मौसिए कहै छलियनि) लालटेम ल'क' दौड़लीह। कक्का हाथसं एक झटकामे पैर सोझ क' देलनि। कहुनाक' आंगन गेलहुँ। कक्का ओहि पैरकें पातर रस्सीसं बान्हि देलनि। रातिमे दर्दसं नीन ठीकसं नै भेल।

सबेरे आबि कक्का जखने रस्सी खोललनि त पैर फूलि गेल। छूलासं दर्द होइ छल।
मधुबनी गेलहुँ। एक्स-रे भेल। फ्रैक्चर भ' गेल छलै। २३.१०.८२

सं ६.१२.८२ धरि डेढ़ मास प्लास्टर भेल पैर नेने गामपर इलाजमे रहलहुं।

ओही अवधिमे आँगनमे एकटा चापा-कल गड़ाएल।

ओही बीच शैलेन्द्रक मूड़न सेहो भेलनि।

बहुत दिनक छुट्टीक बाद सिवान घुरलहुं आ यात्रासं परहेज करैत बहुत दिन धरि ओइ पैरमे एंकलेट लगाक' रहलहुं।

खसबाक सिलसिला ओही समयसं चलैत आबि रहल अछि।
एहि बेर गत मार्चमे १५ आ २२ क' खसलहुं आ दहिना केहुनीमे सूजन भेल, २९ जूनक' एम्समे एस्पिरेशन द्वारा अतिरिक्त द्रब्य पदार्थकें सूईसं निकालि देल गेल।
डेढ़ मासक बाद फेर ओहिना ओही ठाम सूजन भेल आ गत ८ सितम्बरक' पुनः वैह एस्पिरेशन द्वारा सूईसं अतिरिक्त द्रब्य पदार्थकें निकालि देल गेल। निदेशानुसार क्रेप बैंडेज लगबैत छी, दुनू समय बर्फसं सेकाइ करैत छी आ दुनू समय एकटा टेबलेट थ्राइज ल' रहल छी, कहल गेल अछि जे पुनः यदि सूजन होइत अछि त स्टेरॉयडक उपयोग कएल जाएत।

पता नहि अहू बेर की होइत अछि। की पता दहिना हाथ कखन काज केनाइ बन्द क' दिए, तें जल्दी-जल्दी कथाक संग जा रहल छी।

हं, १९८४ मे छलहुँ।

सभसं छोट भाए रतनजी दसमी उत्तीर्ण भेलाह, ६५० अंक एलनि। ओ एक-दू बेर एलाह सिवान मुदा, आर. के. कॉलेज,मधुबनीमे आगाँक पढ़ाइ केलनि।

२२.०६.१९८४ क' बसंती आ मैथिलीक नाम गिरिधर लाल स्मारक मोंटेसरी स्कूलमे
लिखाएल गेलनि। ओहि दिन सिन्धुजी सेहो स्कूल गेलाह।
एक सालक बाद मकान मालिक एहि मकानमे आबि गेलाह आ हम सभ हुनक दच्छिन टोला स्थित मकानमे रहय लगलहुं।

रतनजीक जांघमे एकटा गिल्टी भ' गेल रहनि।
सिवानमे डा. बी.एल.दास ऑपरेशनक सलाह देलखिन।
डा. श्याम बालक सिंह सेहो दरभंगामे डा. द्विवेदीसं ऑपरेशनक सलाह देलखिन।
१७.०७.१९८४ क' दरभंगामे जांघक ऑपरेशन भेलनि।
हम सिवानसं ३ अगस्तक' देखय गेलहुँ दरभंगा। द्विवेदी जीक क्लिनिकमे पता चलल जे रतनजी ठीक भ' क' बाबूक संगे काल्हिए गाम चलि गेलाह। मिश्र जी,उमाकांतजी, शशिकान्तजीसं गप-शप भेल।
क्लिनिकमे एक घंटा गीत-नाद भेलै। रातिमे मिश्रजीक आग्रहपर हम आ शशिकान्तजी हुनके डेरापर रहलहुं। बड़ी राति धरि खिस्सा आ गीत-नाद होइत रहलै। शशिकान्तजीकें तीनटा गीत लीखिक' देलियनि :
१. 'भरि गाम चोरे त चोर कहू ककरा'

२. 'जखन घरेबला छथि कसाइ, तखन सुख की बुझबै'
३. 'जे सोचैत छी से बजबाक समय आएल अछि'

४ क' गाम गेलहुँ, रतनजी ठीक छलाह। ६ क' गामसं सिवान वापस आबि गेलहुँ।

०४.९.१९८४ क' गामसं बाबू एलाह।

१२.०९ क' १७०० रु. मे गैस बला चुल्हा किनलहुं। १७.०९ सं गैसबला चुल्हापर
भोजन बनब प्रारंभ भेल।

एक अन्तरालक बाद बच्चीकें एकटा डॉक्टरक अनुसार उच्च रक्त-चापक समस्या भेलनि।
पटनामे प्रसिद्द चिकित्सक डा. शिव नारायण सिंह जी जांचक उपरान्त कहलनि उच्च रक्त चाप नहि छनि, एकटा दबाई लिखलखिन डिस्प्रिन, कहलनि बहुत माथ दर्दक शिकायत कहथि त दू टा टेबलेट एक गिलास पानिमे द'क' पी लेबय कहबनि। एकटा और सुझाव देलनि जे भ' सकय त नीक परिसरमे डेरा स्थानांतरित क' लेब।

सिवान घुरलाक किछुए दिन बाद ३०.०९.१९८४ क' कचहरी रोडमे प्रतिष्ठित अधिवक्ता श्री सुभाष्कर पाण्डेय जी क परिसरमे हुनक सभसं छोट अनुजक हिस्सा बला मकानमे आबि गेलहुँ। मकान मालिक पटना हाई कोर्टमे प्रैक्टिस करैत छलाह। सम्पूर्ण आवासीय परिसर बहुत आकर्षक छल आ ओहि परिसरमे श्रीमती कान्ति पाण्डेयक देख-

रेख मे सदिखन उत्सव जकाँ माहौलमे रहैत छल। श्रीमती पाण्डेय स्थानीय हाई स्कूलमे प्रधानाध्यापिका छलीह।

एतय मजिस्ट्रेट लाल साहेब,जेल अधिकारी पी के झा, अधिवक्ता रस्तोगी साहेब सभ गोटेक परिवारक आवागमन होइत रहैत छलनि। पी के झा जीक पत्नी सेहो गीत गबैत छलखिन। कान्तिजीक छोट दियादिनी किरणजीकें सेहो बहुत सुन्दर स्वर छलनि, समय-समयपर लोक अनुरोध करैत छलनि त सुनबैत छलखिन।

हुनका हॉलमे टी वी सेहो लागल छलै। हुनका सबहक संग बच्ची सेहो आनन्दित रहय लगलीह आ पटनासं जे डिस्प्रिन ल’क’ आएल रही तकर उपयोग कहियो नहि कर’ पड़ल।
एहि परिसरमे सप्ताहमे दू दिन संगीतक कक्षा सेहो चलैत छलै।
एक बेर कान्ति जी अपना स्कूल लेल पन्द्रह अगस्तक अवसर लेल एकटा गीत हमरासं लिखबौलनि आ एतहि ओकर समूह गानक अभ्यास बालिका लोकनिसं करबौलनि :
‘ पन्द्रह अगस्त का शुभ दिन हमको करता है आह्वान
हमें बनाना है बलशाली हिन्दुस्तान।’

ओकील साहेबक परिचयक क्षेत्र बहुत व्यापक छलनि।
कैंपसमे साँझक’ बहुत गोटे सभक जुटान होइत रहैत छल। हमरा एलाक बाद कॉलेजक मैथिल प्राध्यापक आ बैंक स्टाफ सभ सेहो कहियो-कहियो अबैत रहैत छलाह, सभ गोटेक स्वागत होइत छलनि ओकील साहेबक परिसरमे।

हमरासं छोट भाए ललनजी सिवानमे संगे रहिक’ डी ए वी कॉलेजसं

जूलॉजीमे प्रतिष्ठाक संग बी.एस.सी. उतीर्ण भए आइ आइ बी एम पटनामे एम बी ए कोर्समे दिनांक २०.०८.१९८४ क' नाम लिखौलनि।

सिवानमे हमरा सबहक सभसं प्रिय छलाह झा जी। स्पष्टवक्ता छलाह।

हुनक तामसोमे बाजल बातमे मनोरंजनक सामग्री खूब रहैत छल।

सिवानमे भांग आ रसगुल्लाक भोज सेहो एक-दू बेर केने छलाह। हम सभ एक दोसरक डेरापर जाइत-अबैत रहै छलहुँ।

हमरा ककरो नोत द'क' खुएबाक अभ्यास नै छल, आइयो नै अछि। मुदा, झाजी समय-समयपर नोत द' दैत छलाह। एक-दू बेर हमहूं सभ गोटे गेल छी। मुदा, अधिक काल हमर अनुज ललनजी जाइत छलाह। झाजी सभ गोटेक स्वभाव बहुत नीक छलनि, बड्ड आग्रह क'क' खुअबैत छलखिन जेना गाममे लोक खुअबैत छै।

ललनजी सिवानेमे छलाह त एक दिन झाजी डेरा पर एलाह आ ललनजीक विवाहक सम्बन्धमे चर्चा करैत कहलनि, हम अपना सारिसं ललनजीक विवाह करब' चाहैत छिऐ, अहाँ अपन स्वीकृति द' दियौ त भ' जेतै।

हम कहलियनि जे ललनजीक विचार हेतनि त हमरा स्वीकार करबामे कोनो दिक्कत नै हैत। झाजी कहलनि जे ललनजी अस्वीकार नै करत, अहाँ 'हं' त कहियौ।

हम कहलियनि जे ललनजीकें स्वीकार छै त हमरो स्वीकार अछि।

झाजी तुरत ललनजीकें बजेलखिन आ पुछ्लखिन जे ठाकुरजी तैयार छथि, अहाँ तैयार छी ने ललनजी?
ललनजी कहलखिन जे हम एखन विवाह नै करब, हमरा ऐ विषयमे त कहियो कोनो गप नै भेल अछि।
झाजी कहलखिन ' आ, हमर कनियाँ जे ओते तरि-तरिक' तडुआ खुअबैत छलीह से अहाँ नै बुझै छलिऐ?'

सभकें हंसी लगलै।
हमरो झाजीक बातसं ओहू दिन हंसी लागल रह्य।
इहो भेल जे झाजीक सोचब गलत नै कहल जा सकैछ।
कियो अहाँकें ओतेक प्रेमसं भोजन कराबय त अहूँक कर्तव्य किछु भ' जाइत अछि।

हरिमोहन बाबूक 'खट्टर ककाक तरंग'मे एक गोटेकें अबैत देखि कक्का तमसाक' कहैत छथिन ' हे..हे..कनी घूमिक' आबह, ओम्हर भांटाक गाछ रोपल अछि,' मुदा जखन ओ कहैत छनि, 'कका नोत दैले' आएल छी' त कहै छथिन ' तखन सोझे चलि आबह, दू-चारिटा धंगेबे करतै त की हेतै।'
मतलब जे नोत दैबलाक प्रति सम्वेदनशील हेबाक चाही।

हरिमोहन बाबू दोसर गोटेक चर्च केने छथि जिनकर कहब छलनि, जकर खेबै, तकर गेबै; जेहेन खेबै, तेहेन गेबै आ जाधरि खेबै ताधरि गेबै।
अहूमे भोजन करैबलाक प्रतिबद्धताक बात अछि।

अर्थात नोत खाइबलामे कृतज्ञताक भाव रहबाक चाही।

मुदा अधिक ठाम यैह होइछै जे भोजनक बाद लोक ऐ भोजनकें बिसरि जाइए। खेबा काल जे आनन्द अबैछै से एक दिनक बाद कहाँ?
सुनलिऐ जे एक गोटे कोनो अवसरपर अपना गामक लोककें लगातार दस दिन धरि दुनू समय भोजन करबैत रहलखिन, सभकें अपना घरमे भानस बन्द क' देबाक अनुरोध केने छलखिन। भोज खाएबला सभ गोटेकें एक जोड़ धोती, एक सेट थारी,लोटा,बाटी, गिलास आ दक्षिणा एक सै एक टाका सेहो देलखिन, पंडित जीकें हीरो हौंडा मोटर साइकिल देलखिन। लोक ओहि समय त गुणगान करै छलनि, मुदा एको बरख धरि मोन नहि रखलकनि। मुखियाक चुनावमे ठाढ़ भेलाह आ हारि गेलाह। दुख भेलनि, स्वाभाविक छै। एना नै हेबाक चाही।
जे कियो नोत अथवा भोज खुएबाकें निवेश मानि लै छथि, से दुखी भ' सकैत छथि कखनो नहियो भ' सकैत छथि। मुदा, रिस्क त छै।

हमरा लगैए अही दुआरे बहुत अवसरपर लोक जे कतहु भोजन करै छथि, से चलबा काल एकावन वा एक सै एक अथवा अपना विवेकसं किछु राशि आशीर्वाद कहिक' कोनो धिया-पुताकें अथवा कोनो नव कनियाँकें द' दैत छथि आ कृतग्यताक भावसं अपनाकें मुक्त क' लैत छथि। भ' गेल सद्धम-बद्धम।
मुदा की ई सभ नोतमे संभव छै?

किछु गोटे एहि सिद्धान्तकें मानैबला छथि :

'खेबै त खुएबै' बात ख़तम।

किछु गोटेक कहब छनि :

'जे खुएतै सबहक खेबै
करबै अपनहि मोनकेर'
एहि सिद्धांतक उपयोग बहुत गोटे चुनावक समय करैत छथि।

किछु गोटे एहि सिद्धान्तक समर्थक छथि :
'ने खेबै ने गेबै'

किछु गोटे ईहो मानैत छथि :

'ने खेबै ने ककरो खाए देबै'

की उचित, की अनुचित हम बड़ी काल धरि सोचैत रहि गेलहुँ।
आइयो सोचैत छी।
गुत्थी एखन धरि नहि फ़रिआएल अछि।
ओइ दिन झाजी हमरा बड़का टास्क द' क' चलि गेलाह।

हमरा आइयो कियो नोत दैए त झाजी आ हुनक ओ गप मोन पड़ि जाइए आ स्वीकार अथवा अस्वीकार करबामे सुविधा होइए। नोत आ भोजसं बचबाक कोशिश करैत छी आ तडुआसं त एकदम परहेज करिते छी।

भगवानक कृपासं हुनक सारिक विवाह अहूसं नीक दोसर ठाम भ' गेलनि।
आ किछुए दिनक बाद हमरा सबहक बीच स्थिति सामान्य भ' गेल।

ललनजी पटना रह्य लगलाह।
ओत' मामाक डेरामे रह्बाक व्यवस्था भ' गेलनि। ओतहिसं क्लास कर' जाइत छलाह। ओत' हमर ममिऔत मिथिलेश पहिनेसं रहिक' नोकरी करय जाइत छलाह। हुनकहि कोठलीमे इहो रह' लगलाह। मामाक बच्चा सभ छोट छलनि।

बच्चा सभक कारणे असुविधाक अनुभव करैत ललनजी एकबेर दोसर ठाम डेरा ठीक केलनि मुदा ओत' जे असुविधा भेलनि त ओहि ठामसं पड़ेलाह आ फेर मामाक डेरा आबि गेलाह, फेर जाधरि कोर्स पूर्ण भेलनि, ओही ठाम रहलाह।

बसन्ती, मैथिली आ शैलेन्द्र तीनूक नाम १८.१०.१९८४ (वृहस्पति दिन)क' सूर्या अकादमी (स्कूल)मे लिखाएल गेलनि।

अही साल ३१ अक्टूबरक' दुर्भाग्यसं प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधीक हत्याक खबरि एलै, १ नवम्बरक' शहरमे लूट-पाट भेलै आ तकरा बाद तीन-चारि दिन धरि कर्फ्यूमे लोक घेराएल रहल।

हमर माए कोनो अवसरपर हमर पितिऔत दिलीप संगे मिनी बससं नैहर (रुचौल) जा रहल छलीह। कैटोला आ तारसरायक बीचमे

बस पलटि गेलै, सामान्य चोट लगलनि, मुदा ठीक भ' गेलीह।

सिवानमे दरबार टाकीज कंपाउंडमे एकटा भांगक पेड़ाबला दोकान छलै।
साँझक' ओत' भीड़ रहैत छलै।
हमहूँ झाजी संगे ओत' साँझक' जाइ छलहुँ, एकटा पेड़ा खाइत छलहुँ।
एक दिन ओत' एक आदमीकें देखलियनि, एक दर्जन पेड़ा ल'क' टुप-टुप खाए लगलाह। हम हुनका दिस आश्चर्यसं तकैत रहलहुँ। हम एकटा पेड़ा लेबामे डेराइत छी, ई महाशय एक दर्जन सामान्य ढंगे ल' रहल छथि।
हमरा आश्चर्यमे डूबल देखि ओ कहलनि, क्या देख रहे हैं?
हम चुप छलहुँ।
'यही न कि मैं एक दर्जन कैसे पचा लेता हूँ?'
फेर कहलनि, 'बहुत दिन हो गया'
'साहब, जिसके घर छः-छः जवान अविवाहित लड़कियां हों, उसे नींद के लिए एक दर्जन भी कम पड़ जाते हैं।'
बादमे पता चलल ओ शासकीय अधिकारी छलाह। मुदा दोसर एहेन लोक हमरा फेर नहि भेटलाह।
भांगक पेड़ा बैंकक किछु सदस्य नियमित रूपसं लैत छलाह, किन्तु एक अथवा दूटासं बेशी नहि लैत छलाह।
हमहूँ बहुत दिन धरि साँझमे एकटा पेड़ा लैत छलहुं। भांगक व्यवस्था लाल साहेब आ पी के झाक ओत' सेहो रहैत छलनि।
गाम जाइ छलहुँ त ओतहु भांगक व्यवस्था भ' जाइत छल।

हम सी ए आइ आइ बीक पहिल पार्टमे पाँचमेसं एकटा विषय 'बुक कीपिंग' मे उतीर्ण नहि भ' सकलहुं। दोसर पार्टक कथे की?
बहुत कठिन काज सभ क' चुकल छलहुँ, मुदा ई काज हमरा लेल असंभव भ' गेल,
एहि कारण एकटा और हानि भेल।
हम आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्रमे फैकल्टी मेम्बरक लेल साक्षात्कारमे सम्मिलित भेलहुँ, मुदा असफल भ' गेलहुँ।

१९८५ क अन्तमे मुख्य धारामे एबाक लेल साक्षात्कारमे सम्मिलित भेलहुँ।

पूर्वी चम्पारण जिलाक आदापुर शाखामे शाखा प्रबंधकक कार्य भार ग्रहण करबाक आदेश प्राप्त भेल आ तदनुसार २३ नवम्बर क' सिवान शाखासं भारमुक्त भेलहुँ।

पटना / १२.०९.२०२१

(१९)
तीन बरख आदापुरमे
२५ नवम्बर १९८५ क' हम आदापुर शाखामे प्रवेश केने रही। आदापुर रेलवे स्टेशनक दोसर कात छल शाखा। ई स्टेशन नरकटियागंज-सीतामढ़ी-दरभंगा लाइनपर अछि ।
शाखामे निम्नलिखित सदस्य सभ छलाह अथवा बादमे एलाह :
रामजी चौबे जी __शाखा प्रबंधक
अरुण कुमार _कृषि वित्त अधिकारी

सुरेन्द्र कुमार द्विवेदी कृषि वित्त अधिकारी

राम एकबाल प्रसाद मुख्य खजांची

श्याम बिहारी प्रसाद'प्रमोद'-अधिकारी

त्रिलोकी नाथ प्रसाद-विशेष सहायक

नलिन विलोचन-लिपिक सह खजांची

वीरेंद्र कुमार लिपिक सह खजांची

डी. बी. अधिकारी-सुरक्षा प्रहरी

हरिमोहन ठाकुर चपरासी

शमीम अहमद-चपरासी

बीर बहादुर साह अंश कालीन कर्मचारी

शाखामे कृषि ऋण बेशी छलैक। कृषि वित्त अधिकारी ओहि विभागक काज सभ देखि रहल छलाह।

पेंशन-भुगतान काज सेहो बहुत छलै, त्रिलोकी बाबू ओकर भार उठौने छलाह।

खजाना विभागक काजक जिम्मेदारी राम इकबाल प्रसाद जीकें छलनि।

शाखामे जतेक सदस्य छलाह से दैनिके काजमे एतेक बाझल रहैत छलाह जे शेष-मिलानक काज नहि क' पबैत छलाह।

मियादी ऋणक शेष-मिलान सेहो तीन सालसं लंबित छल। एहिसं मांग ऋण आ डी आर आइ ऋणक शेष सेहो सामान्य बहीसं मिलल नै छल।

शाखा कार्यालय तारा बाबू (तारा चन्द प्रसाद)क मकानमे छल।

तारा बाबू अपने बिजली विभागमे काज करैत छलाह।

हुनक भ्राता अनूठा बाबू (अनूठा लाल प्रसाद) स्थानीय उच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापक छलाह आ हुनके मकानमे शाखा प्रबंधकक आवास छल।

शाखा प्रबंधक चौबेजी पूर्वमे हमर शाखा प्रबंधक रहि चुकल छलाह बसंतपुर शाखामे।

हुनक स्थानान्तरण सिवान जिलामे गोरियाकोठी शाखामे भेलनि।

हुनका गेलाक बाद ओही आवासमे हमहूँ रह' लगलहुं। हमरा अनुरोधपर मास्टर साहेब ओहि आवासमे एकटा कोठली और बढ़ा देलनि, ओही अनुपातमे किराया राशिमे सेहो वृद्धि कएल गेलनि।

मास्टर साहेब लग कहियोक' साँझमे बैसैत छलहुँ त बहुत तरहक जानकारी सेहो भेटैत छल जाहिसं बैंकक काज करबामे सेहो सहयोग भेटैत छल।

मास्टर साहेब पान खेबाक शौकीन छलाह। हमरो सभकें नीक पान खुअबैत छलाह।

मास्टर साहेब अपन एक पुत्रीक विवाह मधुबनी ठीक केलनि। लड़का बला सभ लडकी देखय आएल रहथिन त हमरो सभकें बजौलनि। बहुत शालीनताक संग सभ प्रक्रिया भेलै, से अनुकरणीय लागल।

मास्टर साहेबक सलाहपर हमर बेटीक नाम बसंत कुमारीसं वंदना कुमारी भेलनि।

मास्टर साहेब बहुत अनुशासनप्रिय छलाह आ व्यवहारमे अदभुत शालीनता रखैत छलाह।

ओहि ठामसं स्थानान्तरणक बादो बहुत बरख धरि पत्राचार होइत रहल।

शाखामे किछु बरख पहिने शाखा प्रबंधक, कृषि सहायक आ चपरासी- तीनटा सदस्य बैंकसं बाहर भ' गेल छलाह। ओहिमे सं एक गोटे (जे शाखा प्रबंधक छलाह) दोसर कोनो नोकरी कर' लगलाह, शेष दू गोटे उच्च न्यायालयमे अपील केने छलाह। केस

चलि रहल छलै। ओहि सिलसिलामे एक बेर ओहि समयक बादक शाखा प्रबंधक आ ओहि समयमे नियंत्रक कार्यालय मुजफ्फरपुरमे स्थित ग्रामीण विकास विभागक अधिकारीक संग हमरो (वर्तमान शाखा प्रबंधक) पटना बजाओल गेल छल। दू सप्ताह धरि सी बी आइ एस.पी.ऑफिस, सी बी आइक ओकील साहेबक ऑफिस आ उच्च न्यायालय दौडय पडल रह्य। बहुत रास कागज सभ सेहो जमा करय पडल रहय। पता नहि ओकर परिणाम की भेलै। सी बी आइ ऑफिसमे सेहो अधिकारी लोकनिकें बड़ी-बड़ी राति धरि काज करैत देखने छलियनि।

हमरो सभकें बहुत-बहुत राति धरि आ छुट्टीक दिन सेहो काज करबाक अभ्यास भ' गेल छल। मुदा, शेष मिलानक काज तैयो संभव नहि भ' पबैत छलैक।

एक रविक' (२४ अगस्त १९८६) किछु काज करय बैसल रही। किछु और सदस्य छलाह।

किछु कालक बाद पता चलल जे कोनो बाँध टूटि गेलै आ नेपालसं पानि आबि रहल छै। दूरसं पानिक आभास भ' रहल छलै।

जे सभ बैंक आएल छलाह, चलि गेलाह।

हमरा मोनमे संकल्प भेल जे आइ टर्म लोनक बैलेंस मिलाइए क' शाखासं जाएब।

बीर बहादुरकें तीन सालक वाउचरक बंडल हमरा लग राखि देबय कहलिऐ आ भीतरसं गेट बन्द कए हम एसगरे लागि गेलहुँ शेष मिलान कर'।

बैलेंस बुकमे एक तिमाहीक अंतिम तिथिक शेष उतारैत छलहुँ, टोटल करैत छलहुं। जनरल लेजरसं मिलान करैत छलहुँ, अंतर नोट करैत छलहुं। बहीक अनुसार जाहि-जाहि तिथिक' डेबिट-क्रेडिट भेल रहै छलै, ओहि तिथिक वाउचर देखैत छलहुँ, जाहि दिन जे गलती

देखाइत छल से नोट क' लैत छलहुँ।

एक तिमाहीमे भेल गलतीक समायोजन हेतु उपयुक्त वाउचर बना' क' देखैत छलहुँ। एहि गलती सबहक समायोजनसं बैलेंस मिलि जाइत छलै, तखन दोसर तिमाहीक लेल यैह प्रक्रिया अपनबैत छलहुँ।

ऑफिसक पाछाँ सड़क छलै।

सड़कपर चलैत लोक बाढ़िक स्थितिपर टिप्पणी करैत छल, जाहिसं स्थितिक पता चलैत छल।

करीब तीन बजे हम हाथ धोबय गेलहुँ त रस्तापर पानि अबैत देखलिऐ। टिफ़िनमे जे अनने रही, से जलखैक' क' पुनः लागि गेलहुँ शेष मिलानमे।

शेष मिलानमे आनन्द सेहो अबैत छै जखन गलती सभ पकडा जाइत छै आ शेष मिलान होमय लगैत छै ।

करीब साढ़े आठ बजे रातिमे तीन सालक बैलेंस मिलि गेल। बहुत खुशी भेल। सावधि ऋणक बैलेंस मिललासं मांग ऋण आ डी आर आइ ऋणक बैलेंस सेहो मिलि गेलै।

भीतरसं देखलिऐ पानि बैंकक हॉलमे प्रवेश करय बला छल।

हम सभटा वाउचरकें ऊंच स्थानपर राखिक' सुनिश्चित केलहुं जे कोनो बहुमूल्य चीज पानिमे नै भीजै।

सडकपर भरि डांड पानि रहै।

पैंट निकाललहुं, ब्रीफ़केसमे रखलहुं।

गेट खोलि बाहरसं ताला लगाय ब्रीफ़केस हाथसं ऊपर उठाय जंघिया पहिरने सडकपर उतरि गेलहुँ। डांड धरि पानि छलै।

डेरा पहुँचलहुं त देखलहुं डेरामे सेहो पानिक प्रवेश भ' चुकल छल। भोजन पहिने बनि चुकल छल। फ्रेश भ'क' भोजन क'क' बड़ी राति धरि जगले रहै गेलहुँ।

पानिक प्रकोप दू दिन धरि रहल मुदा बैलेंस मिलबाक खुशी बहुत दिन धरि रहल, एखनो सोचिक' आनन्द अबैत अछि।
बाढ़ि लगभग सभ साल अबैत छलै।
एक बेर सिवानसं अबैत रही। मोतिहारी पहुँचलहुं त पता चलल बाढिक कारणे आगूक रस्ता बन्द छै आ अनुमान छै जे चारि-पाँच दिन अहिना रह्तै।
मोतिहारीमे बैंक शाखाक लग एकटा होटलमे टिकलहुं। चारि-पाँच दिन होटलमे पडल रहब ठीक नै लागल।
ब्रांच गेलहुँ।
शाखा प्रबंधककें कहलियनि जे हम होटलमे टिकल छी, अहाँकें कोनो काज लंबित हो त कहू हम क' दैत छी।
हुनका पेंशनराशिक पुनर्भुगतान प्राप्त करबाक लेल दाबा प्रस्तुत करबाक काज बहुत दिनसं लंबित रहनि। मुदा मंगनीमे हमरासं काज कराएब ठीक नै लगलनि। क्षेत्रीय प्रबंधककें फोनसं पुछ्लखिन। ओ आदेश द' देलखिन। ओ स्टाफ हाजिरी-बहीमे हमर नाम लिखि देलखिन, हमर उपस्थिति बनल। माने हमरा छुट्टी नै लेब' पडल। हम अपना शाखाक बदला मोतिहारी शाखामे काज केलहुं चारि दिन। शाखाक एकटा लंबित काज पूर्ण भ' गेलै।
हम चारि दिन बाद बस चल' लगलै त मोतिहारीसं आदापुर चलि गेलहुँ।
स्टेशन मास्टर छलाह डी के झा (देव कान्त झा) जे सीतामढ़ीक छलाह, मैथिलीयो बजै छलाह मुदा हिन्दीसं प्रेम छलनि। हिन्दीमे पहिने किछु-किछु लिखैत छलाह। दिनकर जीक कृति 'रश्मिरथी', 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी' आ 'संस्कृति के चार अध्याय'क प्रशंसक छलाह। झाजीक ओत' प्रो. हरीन्द्र हिमकर जीसं परिचय भेल जे रक्सौल कॉलेजमे हिन्दीक प्राध्यापक छलाह। हिमकर जीक एकटा बाल गीतक

पोथी सेहो प्रकाशित भेल छलनि।

हिनका लोकनिक संगतिमे हमरो साहित्यिक भोजन सेहो भेटि जाइत छल।

हिन्दी दिवस अथवा आनो अवसरपर हिन्दीमे कवि गोष्ठी हुअ' लागल। दिनकर स्मृति पर्व सेहो मनाओल गेल।

हमरा शाखाक सदस्य सभ सेहो काव्य-पाठमे रूचि लैत छलाह।

प्रमोदजी, वीरेंद्र जी, द्विवेदी जी सभ गोटे विभिन्न अवसरपर कोनो साहित्यिक रचना अवश्य सुनबैत छलाह। द्विवेदी जी गीत सेहो नीक गबैत छलाह।

दुष्यन्त कुमारक किछु गजल सेहो ई सभ प्रस्तुत करैत छलाह।

डी के झा जी आ हिमकर जीक संगतिमे हमहूँ दिनकर जीक कृति 'रश्मिरथी', 'कुरुक्षेत्र' आ 'उर्वशी'क विषयमे बहुत किछु जानि सकलहुं।

हिमकरजी बच्चा सभकें सेहो कविता पढनाइ आ मंच संचालन केनाइ सिखबैत छलाह। दिनकर स्मृति पर्वमे हमरा ओत' शैलेन्द्रकें कहलथिन जे अहाँक नाम हम कार्यक्रममे द' देने छी, अहूँकें एकटा कविता मंचपर पढ़' पडत। शैलेन्द्र रश्मिरथीक चारिम कि पांचम सर्गक किछु भाग तैयार केलनि आ कार्यक्रम दिन जखन हिमकर जी शैलेन्द्रक नाम लेलखिन त मंचपर जाक' खूब सुन्दर काव्य-पाठ केलनि।

डी के झा जी सं वर्तमानमे सम्पर्क नै अछि।

प्रो. हिमकर जीक रचना त फेस-बुकपर देखि लैत छी। बहुत नीक लगैए। आशा करैत छी झाजी सेहो अहिना कतहु भें ट भ' जेताह।

आदापुरसं किछु दूर बेलदरबा गाममे छलाह शिवजी बाबू। हारमोनियमपर सुन्दर भजन गबैत छलाह। हुनकर गाएल गीत ' भरत

भाई, कपिसौं उरिन हम नाहीं' एखनो मोन पडैत अछि। हुनकोसं सम्पर्क नहि राखि सकलहुं।

सीतामढ़ीमे कतहु मोरारी बापूक कार्यक्रम भेल रहै। 'राम बन गमन' केर कैसेट उपलब्ध करौने छलाह ग्रामीण बैंकक शाखा प्रबंधक मिश्रजी। आह ! आनन्दक बरखा क' दै छल ओ कैसेट।

ओहि अवधिमे दूरदर्शनपर शुरू भेलै अत्यन्त लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण'। बहुत गोटे 'रामायण' देखबाक लेल टी. वी. किनलनि। हमहूँ एकटा श्वेत-श्याम टी.वी. नेल्को किनलहुं।

लगभग ओही समय 'रामायण'पर आधारित 'दीक्षा' आ अन्य अदभुत उपन्यास सभ एलनि नरेन्द्र कोह्लीक। बहुत प्रेरणा भेटल एहि तरहक उपन्यास सभ पढलासं।

एहि अवधिमे हम मैथिलीमे कोनो नव रचना नहि क' सकलहुं, पहिलुक लिखल एकटा रचना 'एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें' मिथिला मिहिरमे जून १९८७ केर पहिल पक्षमे प्रकाशित भेल ('मिथिला मिहिर' पाक्षिक भ' गेल रहै)। किछु नीक पोथी सभ पढबाक अवसर अवश्य भेटल।

हमर अनुभव अछि जे तन-मनकें स्वस्थ राखक लेल नीक साहित्यक अध्ययन करैत रहबाक चाही। तन-मन स्वस्थ रह्य तखने नोकरी सेहो नीक जकाँ क' सकैत छी आ पारिवारिक जिम्मेदारीक सेहो नीक जकाँ निर्वाह कएल जा सकैत अछि।

नीक चिट्ठी सेहो नीक साहित्यक काज क' सकैत अछि।

सिवानसं प्रो. गंगानंद झाक एकटा पत्र भेटल :

सीवान

३०.०४.८७
प्रिय ठाकुरजी,
नमस्कार।
पत्र भेटल, पत्र नहियों भेटलापर अहाँ स्मृतिसं विच्छिन्न नहि होइत छी। हमरा लोकनिक इच्छा रहैत अछि जे डिवीज़नल ऑफिस अयबाक प्रत्येक अवसरक उपयोग अहाँ अवश्य करी।
उपर्युक्त पांती स्पष्ट क' देने हएत जे अहाँ किएक महत्व रखैत छी। गंगानंद झा बिना ककरो आग्रहें, निस्संकोच मैथिलीमे लिखबाक प्रयास क' रहल छथि, ई संभव भ' गेल, जकर प्रमाण ई पत्र स्वयम अछि. अपन एहि लगनशील व्यक्तित्वक रक्षा अहाँ निश्चय करैत रहब जाहिसं परिवेश सकारात्मक तरीकासं प्रभावित हुए।
ई बात प्रायः अहाँकें आकर्षित नहि करत जे एहि पत्रक पूर्वहु हम एक कथाक प्रसंगमे मैथिलीमे पत्राचार कयलहुं और हमर स्थिति हास्यास्पद नहि भेल.
हमरा मोन पडैत अछि जे पृथ्वी राज कपूर अपना सम्बन्धमे कहैत छलाह जे हम हिन्दी नहि पढल रही, किन्तु तुलसी-जयन्तीक अवसरपर हमरा अध्यक्ष बना देल गेल. ओहि अवसरपर हमरा लागल जेना तुलसीदासक तस्वीर हमरा कहैत अछि जे अहाँ हिन्दी सीखू.
तस्वीरसं,किताबसं सिखनाइ अपेक्षाकृत सोझ छै, ई नहि बुझि पडैत छै जे कियो हमरापर अपनाकें स्थापित करबाक प्रयास क' रहल अछि.
जीवित मनुष्य सेहो अपनासं उमेरमे छोट, एहन लोकसं सिखलापर अहम (ego) कें चोट लगै छै, तें लोक लोकसं नहि सीखि पबैत

अछि. अहाँ एकरो संभव क’ देलिऐ, हमर अहमकें बिना आहत केने. अहाँ हमरा एक उपलब्धिसं युक्त करबामे सफल भेलहुँ. आब हमरा मैथिलीमे लिखैत काल ई संकोच बाधा नहि दैत अछि जे भाषा-व्याकरणक त्रुटिसं भरल अभिव्यक्ति हएत. हमर साधुवाद और धन्यवाद दुनू ग्रहण करब।

अहाँ जीवन संग्रामक आह्वानक स्वीकार और अंगीकार करैत रहब परन्तु अपन व्यक्तिगत विशिष्टतासं साहित्यक माध्यमसं जीवन देवताकें आहुति दैत रही,एकरो प्रति सजग रही, से हमर अनुरोध और आकांक्षा. संसारमे क्षुद्रता बहुत छैक और क्षुद्रताक वृद्धिक अनुकूल परिवेशो बराबर भेटैत रहैत छैक, तें अपनामे यदि किछु उच्चता, विशिष्टता पबैत छी त ओकरा जिएबाक भरिसक कोशिश अवश्य करी.

हमरा लोकनि ठीक-ठाक छी . कन्यादानक प्रयास सफलता मण्डित नहि भेल अछि. हम जुटल छी. अप्पू पटनेमे छथि.एहि सालक पटना प्रगतिशील लेखक संघक सम्मेलन कयने छलाह. पूर्ण रिपोर्ट एखन हमरो उपलब्ध नहि भेल अछि. बब्बू-बेबी स्वस्थानमे छथि.

बसन्ती, मैथिली और बौआजी नीके छथि ने?

हुनका सभकें तथा हुनका सबहक मायकें हमरा दुनूक आशीर्वाद कहबनि.

आब अहाँ खुश छी ने?

हमर ई मैथिलीक पत्र अहाँक अन्दर की प्रतिक्रिया उत्पन्न कयलक, जान’ चाहब.

पत्र देब.

शुभेच्छु

गंगानंद झा.

हम सौभाग्यशाली छी जे हमरा जगौने रखबाक लेल एहि तरहक संवादक प्रसाद एखनो धरि भेटैत आबि रहल अछि। मोन पडैत

अछि रवीन्द्र नाथ टैगोरक गीतक ओ पांती : ' अहाँ हमरा जगौने रहू, हम नीक-नीक गीत सुनबैत रहब।'

साहित्यक काज होइत छैक जागल लोककें जगाक' राखब।

जागल लोककें सूति रहबाक बहुत सम्भावना बनल रहैत छैक।

शहडोल (मध्य प्रदेश)क पारस मिश्र जीक एकटा कविताक दू पांती मोन पडैत अछि :

'अच्छे भले चले थे घर से लेकर नेक ईरादा लोग

जाने क्यों हो गए अचानक बिकने पर आमादा लोग'

आदापुरमे एकटा और बैंक छलै। एकदिन ओहि बैंकक लिपिक एलाह आ हमरा कहलनि जे हमर शाखा प्रबंधक अंधा-धुंध लोन देने जा रहल छथि, हम बुझै छिऐ जे बहुत गलती क' रहल छथि आ हमरासं वाउचर बनबा रहल छथि, हम नै चाहैत छी जे एहिमे हमहूँ शामिल होइ मुदा हमरा वाउचर बनयबा लेल ओ दबाब दैत छथि।

हम कहलियनि जे किछु दिन पहिने हमरा भेटल छलाह आ कय बेर भेटल छलाह, हमरा हुनकामे कोनो आपत्तिजनक बात नहि बुझाएल छल। ओ कहलनि जे ई कलकत्ताक रह'बला छथि, एते दिन एसगर रहैत छलाह त ठीक छलाह, दू सप्ताह पहिने हिनक परिवार एलनि अछि, तकर बादे हिनक ई नव रूप प्रगट भेल छनि।

हम कहलियनि जे अहाँक स्थानपर हम रहितहुं त अपन यूनियनक नेतासं एहि विषयमे उचित सलाह देब' कहितियनि।

ओ चलि गेलाह आ फेर की भेलै से हम नै बुझलिऐ।

करीब दस दिनक बाद एक दिन स्टेशन मास्टर झा जी कहलनि जे हम त फेरीमे पड़ि गेल छी।

झाजी कहलनि जे गाड़ी चल' लगलै तखन ओ मैनेजर साहेब हमरा आगाँ एकटा तौलियामे बैंकक बहुत रास हस्ताक्षर कएल डॉक्यूमेंट

राखिक' ई कहैत गाड़ीपर चढि गेलाह : ' हमारा दिमाग खराब हो गया है,हम ईलाज कराने कलकत्ता जा रहे हैं, हमारे बैंक से कोई आएगा तो दे दीजिएगा।'

बादमे पता चलल जे नव शाखा प्रबंधक ओत' आबि गेल छथि आ जांच चलि रहल छै। ओकर बाद की भेल हेतै से अनुमान कएल जा सकैत अछि।

संतोषक बात यैह अछि जे बैंकमे एहि तरहक घटना-दुर्घटनाक प्रतिशत बहुत थोड़ होइत अछि।

हमर पारिवारिक स्थिति :

हमर स्वास्थ्य मोटा-मोटी सामान्य रहल।

पत्नीकें यदा-कदा किछु चिकित्साक आवश्यकता पडैत छलनि। अधिक बेर ओतहि रामाश्रय बाबूक सलाह लैत छलहुँ, एक बेर दरभंगा डा.सत्यवती आ डा.ए.एम. झाक देख-रेखमे किछु दिन रहलीह।

छोट भाय ललनजी आइ आइ बी एम पटनासं एम बी ए क' क' दिल्लीमे अपन जीविकाक तलाशमे लागि गेलाह, जत' हमर छोट बहिन,बहिनो, दू टा भागिन आ एकटा भगिनी रहैत छलीह।

रतनजी आर के कॉलेज मधुबनीसं आइ एस सी क' क' बी एस सी मे गेलाह। कहियोक' आदापुर अबैत छलाह आ दू-चारि दिन रहिक' चलि जाइत छलाह।

बाबू दरभंगाक डॉक्टरक सलाहसं चलि रहल छलाह।

बच्चा सबहक नाम चिल्ड्रेन स्कूलमे लिखाएल गेलनि।

माएक स्वास्थ्य सेहो लगभग सामान्य रहलनि। हमर छोट भाए ललनजीक विवाह, लखनपट्टीमे हमर भगिनी कविताक विवाह आ हमर मामा गाममे हमर ममियौत बहिन मंजूक विवाह आदि शुभ अवसरक लेल विभिन्न काज सभ हुनका व्यस्त रखबाक लेल पर्याप्त

छल।

हम बैंकसं आवास-ऋण लेबाक हेतु मधुबनी-दरभंगामे कतहु उपयुक्त भूमि अथवा बनल आवासक खोज केलहुं। बाबूजी मधुबनीमे कय ठाम पता लगौलनि, मुदा जमीनक कागज ठीक-ठाक नै भेटलनि। दरभंगामे बेता चौक लग कोनो मकान बिकयबाक सूचना भेटल, मुदा ओ नीक नै लागल। गामपर धीरे-धीरे एकटा कोठली आ बाथ रूम बनेबाक मोन बनेलहुं। गामपर कोठलीयोसं बेशी जरूरी छल बाथ-रूम बनेबाक। किछु-किछुक' एहि दिशामे प्रयास शुरू केलहुं।

बच्ची किछु दिन आदापुर आ किछु दिन हमरा गाममे रहैत छलीह। शैलेन्द्र एक बेर गाममे रहथि त संगी सबहक संग खेलैत-दौड़ैत पडोसीक आंगनमे ऐंठारपर खसि पड़लाह। माथसं खून बह्य लगलनि। बाबू डिटोल आ टिंचरक उपयोग केलनि त खून बहनाइ बन्द भेलनि। भोला डॉक्टर लग ल' जाइ गेलखिन। उपचार किछु दिन चललनि। हमरा शनि दिन ई समाचार बाबूक चिट्ठीसं प्राप्त भेल। बैंक बन्द भेलाक बाद चिट्ठी पढने रही। सभ गोटे चलि गेल छलाह। तुरंत गाम जेबाक मोन भ' गेल। मुदा चावी लेबाक लेल कोनो अधिकारी उपलब्ध नै छलाह। निर्णय लेलहुं जे आइए जाएब आ काल्हि गामसं चलि देब। स्टेशनपर गाड़ी सीतामढ़ी जाए बला लागल छलै।

ब्रीफ़केस लेलहुं, जल्दी-जल्दी बैंकक गेट बन्द केलहुं, स्टेशन पहुंचि टिकट ल'क' गाड़ीमे चढलहुं कि गाड़ी चल' लगलै जेना हमरे लेल रूकल छल होइ।

सीतामढ़ीमे एकटा टैक्सी लेलहुं। साढ़े आठ बजे रातिमे घर पहुंचि गेलहुँ।

शैलेन्द्रकें हंसैत-बजैत देखिक' नीक लागल।

दोसर दिन स्नान-भोजन क' क' मधुबनी गेलहुँ, सीतामढ़ी बला बससं

सीतामढ़ी आ ओत’ सं ट्रेनसं आदापुर रातिमे पहुंचि गेलहुँ।
ललनजीक विवाह :
ललनजीक विवाहक लेल कन्यागत सभ बाबू लग गाममे पहुँचैत छलाह।
किछु कथाकें ओ अपनहि लग निष्पादन क’ दैत छलाह, किछु कथाकें हमरा लग पठा दैत छलाह।
हम चाहैत छलहुँ जे ललनजी स्वयं अपन विवाहमे निर्णय लेथि, मुदा एहि लेल ओ तैयार नै छलाह।
कयटा प्रस्ताव कटि चुकल छल। एकरा लोक कहैत छैक जे जत’ नै लिखल छलै तत’ नै भेलै, भावी एखन नै एलैए।
हम चाहैत रही जे हमर विवाह जेना भेल ताहिसं नीक जकाँ हिनक विवाह होनि।
२९ अप्रैलक’ ११.३० बजे रातिमे दू गोटे आदापुर पहुँचलाह। कन्यागत छलाह कटैया (बेनीपट्टी)क डा.ताराकांत मिश्र जे दानापुर कॉलेजमे हिन्दीक प्राध्यापक छलाह। हुनका संग एक गोटे हुनके टोलक छलखिन जिनका लोक गांधीजी कहै छलनि, ओ हमर ससुरक भागिन छलखिन। दुनू गोटे कहलनि जे भोजन नै करब, भोजन क’ क’ आएल छी। कतबो कहलियनि, नै मानलंनि।
दोसर दिन प्रोफेसर साहेबसं बहुत गप-शप भेल। हमरासं कथा स्वीकार करबाक अनुरोध करैत रहलाह। हुनकासं हम पुछलियनि जे अपनेकें ई कथा किए पसन्द अछि। ओ कहलनि, ‘हमरा मामाजीसं (हमरा ससुर कें ओ मामा कहैत छलखिन)अहाँ सबहक विषयमे सभ बूझल अछि, हम हुनका संगे अहांक गामपर एक बेर गेलहुँ त सभसं पहिने अहाँक अनुजकें देखलियनि, दरबज्जापर छलाह, हमरा ओहो नीक लगलाह, हमर जेठ जमाए सेहो एम बी ए क’ क’ नीक नोकरीमे छथि, अहू दृष्टिसं हमरा ई कथा पसन्द अछि।’

मिथिलामे ओहि समय लडकी देखबाक परम्परा नै छलै।

ई कतेक उचित आ कतेक अनुचित, एहि विषयपर बहुत गप्प भेल। विवाहमे भावी प्रवल होइछै, लोक कोनो आन माध्यमसं लडकीक विषयमे पता लगबैत अछि, कतेक ठाम लडकी देखयबाक क्रममे बहुत अनियमितता सेहो देखल जा रहल छै, एहि सभ विषयपर हमरा सबहक बीच गप्प भेल। हमर जिग्यासाक समाधान करबाक प्रयास केलनि प्रोफेसर साहेब।

प्रोफेसर साहेब ईहो कहलनि जे शास्त्रमे लिखल छै जे तीन ठाम झूठ बजलासं पाप नै होइछै : जखन जानपर संकट हो तखन, कियो गायकें मार' जाइत हो तखन आ कन्यादानक प्रसंगमे।

ओ अपन विचार कहलनि जे लोककें परिवारकें प्रधानता देबाक चाही, परिवारसं संस्कारक पता चलैछै, संस्कारसं आगांक जेनरेशन प्रभावित होइछै।

प्रोफेसर साहेब हमरासं बहुत बेशी अनुभवी छलाह, विचारवान छलाह, हमर सभ संदेह्क निराकरण करैत छलाह।

हमरा ललनजी आ बाबूसं विचार करब आवश्यक लगैत छल तें हम किछु समय चाहैत छलहुँ। हमरासं ओ स्वीकारोक्ति चाहैत छलाह। हम कहलियनि जे एहि लेल हमरा किछु समय चाही।

हम 'हं' नहि कहलियनि तें ओ हमरा डेरापर पानि आ चाहक अतिरिक्त किछुओ ग्रहण नै केलनि आ ३० क' १.३० बजे बला ट्रेन पकडि लेलनि। हुनक संगे आएल गांधीजी रहि गेलाह।

हमरा डेरापरसं हुनक भुखले जाएब हमरा बहुत कचोट देलक, मुदा हम बिना सभसं विचार केने कोना गछि लितियनि।

गांधीजी चारि-पाँच दिन रहलाह।

गांधीजी प्रोफेसर साहेबक कन्याक प्रशंसा करैत एक दिन बच्चीकें

कहलखिन जे तोरासं सै गुणा नीक छै। गांधी जी प्रोफेसर साहेबक परिवारक सभ गोटेसं खूब नीक जकाँ परिचित छलाह, सबहक प्रशंसा जाधरि रहलाह, करैत रहलाह।
गांधीजी हमरा ससुरक अपन भागिन छलखिन आ प्रोफेसर साहेबक निकटतम पडोसी छलखिन। ओहि समय अही तरहक लोकक माध्यमसं लोक कन्या आ कन्यागतक परिवारक विषयमे पता लगबैत छल। प्रत्यक्ष रूपसं पता लगेबाक परम्परा मैथिल ब्राह्मणमे नै छलै। कन्याक विवाहक लेल किछु झूठो बाजक आवश्यकता होइ त से करब लोक धर्म बुझैत छल। आ विवाह भ' गेलाक बाद लोक एकरा भावीक बात मानि संतोष क' लैत छल। हमर एकटा मित्र कहैत छलाह जे विवाहमे जौं किछु झूठ नै बाजल जाइ त एकोटा विवाह ठीक हएब असंभव भ' जेतै।
गांधीजी ४ मइ क' चलि गेलाह।
हम सभ किछु दिन धरि प्रोफेसर साहेब आ गांधीजीक बातक समीक्षा अपना स्तरसं करैत रहलहुं, फेर गाममे बाबूजी आ दिल्लीमे ललनजी आ ओझाजीसं सम्पर्क कय हुनका सबहक विचारसं ताल-मेल बैसयबाक प्रयास करय लगलहुं।
एक दिन भोरे-भोर हमर ससुर एकटा सज्जनक संग पहुँचलाह। ट्रेन एबाक समय नहि छलै, तखन एते भोरे कोना एलाह, से पुछलियनि त कहलनि जे दुइए बजे रातिमे एलहुं, ओते रातिक' जगाएब उचित नै लागल तें स्टेशनपर अखबार ओछाक' सूति रहै गेलहुँ।
ई जे कहलनि, से प्रोफेसर साहेबक सुपुत्र छलाह अशोक कुमार झा जे नागपुरमे कोलियरीमे इंजिनियर छलाह।
हमरा सभकें परेशानी नै हो, से सोचिक' रातिमे अखबार ओछाक' स्टेशनपर रहि जाएब, ई सोचिक' आ दू दिन धरि संगमे रहलापर हुनक आचार-विचार देखिक' हम सभ हुनक बुद्धि आ विवेकसं ततेक

प्रभावित भेलहुँ जे मोने मोन हम हुनक प्रस्तावक स्वीकृति द' देलियनि। हमरा लागल जे एहि परिवारक धिया-पूता सभ अवश्य नीक संस्कारसं युक्त हेथिन आ विवाहमे एहि पक्षकें प्रधानता देबाक चाही। अशोक जीक विचार भेलनि जे दानापुर हुनका घरपर चलिक' कन्याक निरीक्षण क' लेल जाए। ओ कहलनि, 'हमरा विश्वास अछि जे अहाँकें अवश्य पसन्द भ' जाएत, आ यदि नै पसन्द भेल त अहाँ एकरा रिजेक्ट क' सकै छी, हम सभ मानि लेब जे एत' लिखल नै छलै, हम सभ दोसर ठाम प्रयास करब।'

अशोक बाबूक प्रस्ताव सूनि हमरा मोनमे दू टा ओकील अपन-अपन तर्क देब' लागल :

'मैथिल ब्राह्मण समाजमे एना कतहु सुनलिऐए? लड़कीकें कोनो सार्वजनिक स्थानपर देखबाक कार्यक्रम बनाउ।'

'घरपर गेलासं किछु और जानकारी प्राप्त भ' सकैए, सार्वजनिक स्थानपर देखलासं और की बुझबै?'

'अहाँ लड़का बला छी, अहाँ किए जेबनि हुनका ओत'? हुनका जत' जै बेर बजेबनि, हुनका आब' पडतनि।'

'हमरो जाहि घरसं लडकी अनबाक अछि, से देखबाक चाही ने? ओ तीन बेर हरान भेलाहए, एको बेर हमरो सभकें कष्ट करक चाही ने?'

अशोक बाबूक जीत भेलनि।

हम तीनू गोटे दानापुरस्थित मिथिला कॉलोनीमे प्रोफेसर साहेबक अपन आवासपर छलहुँ।

शैलकें देखलियनि। ऊंचाइक दृष्टिसं जोड़ी बेमेल हएत, से साफ़ बुझाएल। चर्चा भेल। प्रोफेसर साहेब, इंजिनियर साहेब सभ गोटे कतेक उदाहरण द्वारा एहि अन्तरकें सामान्य अंतर मानैत एहि बातकें

ओतेक महत्व नहि देबाक अनुरोध केलनि। अशोक बाबू हमरा संतुलित करबाक लेल एक बेर फेर देखौलनि मुदा हमर राय वैह रहल।
हमरा मोनक भीतर दूटा ओकील फेर जिरह कर' लागल।
'लोक देखतै त अहींकें दोख देत।'
'बुद्धि-विवेक नमहर रहक चाही।'
'आ जौं ओहो छोटे होइन तखन?'
'एना भइए ने सकै छै, ककरोमे ने सभटा गुणे रहैत छै, ने सभटा अवगुणे रहैत छै।'
'एहेन जोड़ी ककरो देखलिऐए?'
'अवश्य, गामोमे कय गोटे छथि।'
'धोखामे भ' जाइ छै तकर छोड़ू, देखि-सूनिक' कियो एना करै छै?'
'अवश्य।'
'उदाहरण?'
'महानायक अमिताभ बच्चन आ जया भादुड़ी।'
विरोधी पक्ष हारि गेल।
'अपने कोना कर' चाहैत छी?' हम स्वीकारक स्वरमे पुछलियनि। तकर बाद पाँच मिनटमे सभ बात तय भ' गेल।
पंडित जी बजाओल गेलाह।
दिन तकाओल गेल।
तय भेल २४ मइ। पैंतीसटा वरियाती। खान पीन ख़तम। जे बर-वरियाती आन' जेताह, हुनकहिसं खान-पीन मानल जाएत।
२४ मइक' सलमपुरसं वरियाती दानापुर आएल। शुभ-शुभक' विवाह भेलै।
आइ प्रोफेसर साहेब नै छथि, इंजिनियर साहेब छथि, हुनक सुपुत्र सेहो नीक इंजिनियर छथिन । शैल आ ललनजीकें एकटा पुत्र आ एकटा पुत्री छथिन।

रश्मि आ शुभमकें देखिक' लगैत अछि जे निर्णय सही छल।

आदापुरमे तीन साल पूर्ण होमय जा रहल छल त ई सोचलहुं जे लगातार तीन सालसं बेशी लोककें शाखा प्रबंधकक कुरसीपर नै बैसबाक चाही।
तीन साल पूर्ण भेलापर फेर कोनो शाखाक प्रबंधक बना देल जाएत।
डिवीज़नल ऑफिस गेल रही कोनो मीटिंगमे त पता चलल जे मध्यम शाखा पचरुखीमे लेखापाल (एम)क पोस्ट खाली छै, हम तुरंत ओत' अनुरोधपर स्थानान्तरण लेल आवेदन पठा देलिऐ।
स्थानान्तरण आदेश प्राप्त भेल।
छपरा शाखासं आएल अशोक कुमार जीकें शाखाक कार्‌य-भार सौंपिक' १७ जनवरी (१९८९) क' शाखासं भार मुक्त भए पचरुखी शाखामे लेखापाल (मध्यम शाखा) बनबाक लेल आदापुरसं १८ क' विदा भ' गेलहुँ।
पटना / ३०.०९.२०२१

(२०)

गोली-बारूदक मौसममे

हम १८ .०१.१९८९ क' साँझमे सीवान आबि गेलहुं आ बैंकसं सटले राज होटलमे टिकलहुं। १९ क' जीपसं पचरुखी गेलहुँ आ शाखामे योगदान केलहुं। शाखा प्रबंधक छलाह आर. एन. मिश्र जी। और सदस्य सभ जे ताहि समयमे छलाह अथवा बाद मे एलाह से छलाह :

पी.दुबे ,ए. के. सहाय, मो.आलम,जे.बी. उपाध्याय, ओम प्रकाश स्वर्णकार,एस.के.तिवारी, आर. एम. प्रसाद आ मोहन राम। ७ अगस्त ९१ क' तीनटा नव लिपिक एलाह : चन्द्रमा मांझी, जमादार मांझी आ राजेन्द्र दास। बाद मे एकटा अधिकारी एलाह एस.डी.राम।

आर.एन.मिश्र जीक ट्रान्सफरक बाद किछुए दिन लेल एलाह एस.बी.तिवारीजी आ हुनका बाद १९.०२.९१ क'एलाह जनार्दन मिश्र जी।

शाखामे ऋण आवेदन सबहक निष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालयक आदेश पर ए.एफ.ओ. रामजीत सिंह जी किछु दिन लेल एलाह।

ई शाखा बहुत दृष्टिसं नीक छल मुदा अहू ठाम बैलेंसिंगबला समस्या छलै, आइ.आर.डी.पी. मे तीनटा लेजर छलै आ जून १९८४ तक बैलेंसक मिलान भेल छलै, फसल ऋणक दूटा लेजर छलै आ जून १९८२ तक बैलेंसक मिलान भेल छलै।

ई दुनू पहिने मिलयबाक प्रयास केलहुं। १० मार्च तक फसल ऋणक शेष मिलान दिसम्बर १९८८ तक भ' गेल। आइ.आर.डी.पी. बहीक मिलान दिसम्बर १९८४ तक भेल।

सभ गोटेक सहयोगसं बही मिलान स्थितिकें क्रमशः नीक सं नीक बनयबाक प्रयास करैत रहलहुं। बचत खातामे ३३ आ सावधि जमामे १० टा लेजर छलै। पेंशनक काज सेहो बहुत छलै।

सीवानसं लगभग १० किलोमीटरपर पचरुखी शाखा छलै, हम सीवानमे आवास राखक लेल क्षेत्रीय प्रबंधकक अनुमति हेतु आवेदन पठा देलिए। प्रतिदिन सीवानसं पचरुखी जाए लगलहुं। साँझमे घुरिक' सीवानमे राज होटल पहुंचि जाइ छलहुँ।

सीवानमे पाँच साल रहि चुकल छलहुँ, बहुत गोटे पूर्व परिचित छलाह। डी ए वी कॉलेज सीवानक प्राध्यापक डा. अमर नाथ टाकुर, प्रो. गंगानंद झा, आर एन चौधरी आ ओकील साहेब सुभाष्कर पाण्डेयजी सभ गोटेकें डेरा तकबामे सहयोग हेतु कहि देलियनि आ निश्चिन्त छलहुँ जे डेरा जल्दिए कतहु अवश्य भेटत। यैह सोचिक' परिवार संगे आबि गेल छलहुँ।

चारि-पाँच दिन भ' गेल छल। कतहुसं कोनो डेराक पता नहि भेटल छल।

एक दिन सबेरे होटलक बालकोनीसं नीचां तकलहुं त बाबूकें देखलियनि चल अबैत, आश्चर्य भेल, कत' सं आबि रहल छथि एते सबेरे, नीचां जाक' हाथसं सामान सभ ल' लेलियनि आ हुनका संगे ऊपर गेलहुँ।

गप-शप भेल त पता चलल, तिला संक्रान्तिक किछु सनेश ल'क' ट्रेनसं आदापुर एलाह, ओत' पता चललनि जे हम सीवान चल गेलहुँ। आदापुर शाखाक ए एफ ओ द्विवेदीजी हुनका अपना घरपर रक्सौल ल' गेलखिन, ओत' एकदिन राखिक' बस पर चढ़ा देलखिन आ कहलखिन जे बैंक लग जाक' होटलमे अथवा बैंक शाखामे पता करबै त भेंट भ' जेताह। बस स्टैंडसं पता लगाक' बैंक लग आबि गेल छलाह त हम देखि लेलियनि।
बाबू एलाह त' रस्तेसं हमर डेरा ठीक केने एलाह।
जेबीमे सं एकटा कागजक टुकड़ी निकाललनि, कहलनि जे ई सज्जन रक्सौलसं हमरा संगे बसमे एलाहे आ कहलनिहें जे हमर डेरा बैंकक लगेमे अछि आ हमहूँ कोनो बैंके स्टाफकें मकान भाड़ापर देब' चाहैत छी।
किछु काल बाद ठाकुरजी एलाह त कहलनि जे हम जनैत छियनि रामचंद्र सिंहकें, चलू ने एखने चलैत छी।
सभ गोटे गेलहुँ। घर देखलिऐ, शास्त्री नगरमे काली मन्दिरसं कनिएँ दूरपर सड़कक कातेमे।
राम चन्द्र सिंह जी सं भेंट भेल, गप भेल, डेरा ठीक भ' गेल।
हम सभ गोटे होटल छोड़ि डेरामे आबि गेलहुँ। स्टोव संगमे अनने रही, एकटा डेकची आ किछु थारी-बाटी-गिलास सेहो रह्य, डेरामे भोजन बनाएब शुरू भ' गेल।
डेरामे एकटा कमी छलै। कम वोल्टेज रहबाक कारणे पानि सदिखन ऊपर नै चढ़ि पबैत छलै, सबेरे एक बेर ऊपर आबि जाइत छलै। तें नहाए बला पानि स्टोर क'क' रखबाक लेल बाबूक संगे जाक' एकटा बड़का ड्रम किनलहुं आ एकटा पाइप सेहो। ड्रम लेल ढक्कन बनबौलहुं।
बाबू किछु दिन रहिक' गाम वापस चल गेलाह।

हम सभ १४ फरबरीक' आदापुरसं ट्रकमे सामान सभ ल'क' सीवानक डेरामे चलि एलहुं।

आदापुरसं चलबासं पहिने द्विवेदीजीक बहुत आग्रहक कारण रक्सौलमे हुनका घरमे चारि दिन पहुनाइ कर' पडल,से बहुत नीक लागल।

जहिया सीवान सभ गोटे सभ सामान ल'क' एलहुं, ओही दिन रातिमे ओकील साहेब सुभाष्कर पाण्डेय जीक प्रथम पुत्रीक विवाहक उत्सवमे सभ गोटे शामिल भेलहुँ।

वसन्त आ मैथिलीक नाम राजवंशी बालिका उच्च विद्यालयमे आ शैलेन्द्रक नाम सरस्वती शिशु मन्दिरमे लिखाएल गेलनि। आब शैलेन्द्र भ' गेलाह विवेक आनन्द।

सीवानमे क्षेत्रीय कार्यालय हमरा डेराक बहुत लग छल।

ओत' राजभाषा अधिकारी कर्णजी आ सुरक्षा अधिकारी मिश्र जी सं निकटता भेल।

कर्ण जी और मिश्र जी दुनू गोटे दू यूनियनक सदस्य छलाह मुदा दुनू गोटेमे अदभुत सामंजस्य छलनि । हम दोसर यूनियनक सदस्य छलहुँ, हमरापर कर्णजीक सहयोगसं यूनियन बदलबाक लेल बहुत दबाब पडल आ कर्णजी ई कहिक' एकर समापन केलनि जे ई दबाबपर एक मकानक किराया दू आदमीकें दैबला लोक छथि, तें हिनका दिक नै करै जैयनु।

मिश्र जी सभकें भोरे जगबाक आ टहलबाक अभ्यास लगौलनि।

अपना डेरासं अबैत छलाह , रस्तामे जकर-जकर डेरा छलै, सभकें जगबैत संग क' क' वी. एम. एच . ई. स्कूलक मैदानमे ल' जाइत छलाह। ओत' सभकें व्यायाम करबैत छलाह।

हमरो भोरे जगबाक आ व्यायाम करबाक अभ्यास लागल।

मिश्र जी साहित्यिक अभिरूचि सेहो रखैत छलाह।

अपन आवासमे दिनकर स्मृति संध्या २३ सितम्बरक' मनबैत छलाह।साहित्यिक गोष्ठी सभमे उपस्थित होइत छलाह आ भाग लैत छलाह।

हमर साहित्यिक क्रिया कलाप :

एहि बेर सीवानमे हमर साहित्यिक गतिविधि सीमित रहल।

कॉलेजक पूर्व परिचित प्राध्यापक लोकनिसं सम्पर्क बनल रहल। आदरणीय प्रो. गंगा नन्द झाक सलाहसं बंगला लेखक आशापूर्ण देवीक प्रथम प्रतिश्रुति,सुवर्ण लता आ बकुल कथा, शंकरक ए पार बांगला ओ पार बांगला, सीमाबद्ध आ विमल मित्रक इकाई दहाई सैकड़ा आ खरीदी कौड़ियों के मोल पढलहुं। एकर अतिरिक्त हरिवंश राय बच्चन, दिनकर आ नागार्जुनक किछु पोथी सेहो पढलहुं। ओशोक किछु पोथी सेहो पढलहुं। ओशो टाइम्स पत्रिका सेहो पढैत छलहुँ।

१९९२मे २६ जनबरी क' सीवान क्लब द्वारा आयोजित कवि सम्मलेनमे, २३फरबरीक' डी ए वी कॉलेजमे आयोजित कवि सम्मेलनमे आ शास्त्री जयन्तीक अवसरपर २ अक्टूबरक' सीवानक मिडिल स्कूलक प्रांगणमे आयोजित कवि सम्मलेनमे किछु मैथिली आ हिन्दीक रचना प्रस्तुत केलहुं। क्लबक कार्यक्रममे क्षेत्रीय कार्यालयक सुरक्षा अधिकारी, हरि शंकर मिश्र जी सेहो नजरुल इस्लामक रचना 'विद्रोही'क पाठ बहुत सुन्दर केने छलाह।

कतहु साहित्यिक कार्यक्रम होइत छलै, त अवश्य जाइत छलहुँ।

१९९२ मे २६ जनवरी क' पचरुखी मे इप्टाक नाटक 'जनता पागल हो गई है' देखलहुं।

२८ जनवरीक' सीवानमे इप्टा द्वारा प्रस्तुत नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' बहुत नीक लागल।

एहि साल ९-१० नवम्बर क' पटनामे विद्यापति पर्वक अवसरपर सियाराम झा 'सरस' सं हुनक किछु रचना सुनलहुं, 'डिगरी भ' गेलै

झुनझूना साढ़े छबे आनामे' नीक लागल रह्य।ई रचना ओहि समयमे बिहारमे शिक्षा आ परीक्षाक स्थितिक पोल खोलैत छल।
सीवान मे कवि सम्मेलन आ मुशायरा देखब नीक लगैत छल। एक बेर तंग इनायतपुरी(जे असलमे श्रीवास्तव छलाह)क संग डेरापर बैसार भेल। ओ एकटा पांती देलनि :
'लोग पहचाने गए हैं काम से किरदार से' एहि पांतीकें ल'क' एकटा गजल तैयार करबाक लेल कहलनि। हम तैयार त केलहुं,मुदा ओहिसं अपनो संतुष्टि नै भेल। हम गजल लिखबाक कोशिश त करै छलहुं, मुदा गजलक व्याकरणक ज्ञान नै भ' सकल छल।
बच्चन जीक 'मधुशाला' बहुत पहिने पढने रही आ 'की भेटल आ की हेरा गेल' आत्म गीत लिखबाक विचार मोनमे आएल छल, ताहि लेल किछु पहिनहुं लिखने रही आ किछु अहू समयमे लिखलहुं।
ओहि समय बिहारक जे स्थिति रहै, ताहिपर हमरासं एकटा रचना लिखाएल जे बादमे मैथिली पत्रिका 'भारती मंडन' मे प्रकाशित भेल :

गीत

गोली बारूदक मौसममे हम कविता केहेन सुनाबी
हाल देखि बेहाल भेल छी, गीत कोनाक' गाबी?

गाम-गाम आ शहर-शहरमे आतंकक अछि छाया
ठोहि पारिक' कानि रहल अछि गौतम बुद्धक काया
शब्द-शब्दमे चिनगी-चिनगी, शब्द-शब्दमे धधरा
अपनहि घर हम जरा रहल छी अप्पन-अप्पन बखरा

गामक गाम जरैए धह-धह ककरा कोना बचाबी
एहेन हालमे कानि सकै छी, गीत कोनाक' गाबी?

टूटल सरस्वती केर वीणा केर संगीतक धारा
मनुखक छुद्र स्वार्थ पर कनइत अछि विज्ञान बेचारा
पत्रहीन सभ गाछ नग्न अछि जेम्हरे देखू तेम्हर
कत' अलोपित भेल गामसं बरक गाछ झमटगर

थाकल-हारल लोक सोचैए कत' कने सुस्ताबी
एहेन हालमे अहीं कहू त गीत कोनाक' गाबी?

बेर-बेर उठबैए हाबा एखनहु वैह सवाल
बुद्ध महावीरक ई धरती एहेन किए कंगाल
द्रोण -भीष्मकेर चुप्पी आ धृतराष्ट्रक कुत्सित सपना
बेर-बेर दोहराएल जाइत अछि लाक्षागृह केर घटना

उचित यैह जे आमक खातिर आमक गाछ लगाबी
चलै-चलू हम सभ हिलि-मिलिक' अपन बिहार बचाबी।

शिशवा गामक महादेव ठाकुर हारमोनियमपर नीक गीत गबैत छलाह, हमरासं किछु गीत लिखबौने छलाह, करीब दसटा गीतक कैसेट बनबौलनि, एकटा प्रति हमरो देलनि।
ओहिमे निम्नलिखित गीत सभ छल :
'आउ आइ हम सभ हिलि मिलिक' मांक उतारी आरती'
'एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें'
'बौआ बनि गेल नेता दाढ़ी बढ़ाक'
'आइ धरतियो लगैछ नव कनियाँ जेना'
'सजाउ हे यै बहिना, मैथिलीक प्रतिमा सजाउ'

'आजुक राति कथीले' रे भैया, आजुक राति कथीले'
'छोटे-मोटे टूटल मडैयामे गौरी कोनाक' रहती हे'
आ किछु और गीत।
बादमे स्थानान्तरणपर बिहारसं बाहर जेबाक कारणे ने शशिकान्तजी-सुधाकान्तजीसं सम्पर्क राखि सकलहुं ने महादेवजीसं।

रामचंद्र बाबूक मकानमे :
मकान फ़ैल छलै, एकेटा कमी छलै, पानिक व्यवस्था नियमित नहि छलै, जाहि कारण असुविधा होइत छल तथापि एहि बेर सीवानमे जाधरि रहलहुं, अही मकानमे रहलहुं।

द्विरागमनक बाद एक बेर किछु दिन एहि ठाम हमर अनुज ललनजी सपत्नी रहलाह। एक बेर दू सप्ताह लेल हमर ससुर आ डुमरा बला साढ़ू पत्नी आ छोट बालक नीरजक संग रहलाह। ओहि समय हम सभ स्नान करबाक लेल विशेष उपाय करैत छलहुँ।
सड़कक पच्छिम प्रथम तलपर हमर आवास छल आ सडकक पूब अवकाशप्राप्त प्राचार्य महेन्द्र बाबूक पैघ हातामे एकटा इनार छलै, आदमी बढलापर पुरुष लोकनि स्नान करबाक लेल ओहि इनारपर जाइत छलाह।
ओहि हातामे एकटा चापा कल सेहो छलै, हम अधिक काल चापा कलक उपयोग करैत छलहुँ।
एक बेर पटनासं मामा सेहो सपरिवार दस दिन लेल एलाह आ जेना-तेना काज चलि गेल।
पान आ तमाकुल :
सीवानमे पान बहुत खाए लगलहुं। काली मन्दिर लग पानक दोकान

तेहेन सुन्दर पान खुअबैत छलै जे बेर-बेर खेबाक लेल प्रेरित करै छलै। दिन-दिन आदति पुष्ट भेल जा रहल छल।

क्षेत्रीय कार्यालयक सुरक्षा अधिकारी लोकक स्वास्थ्यक सेहो चिन्ता करैत छलाह। ओ कय बेर कहैत छलाह पान छोडि देबाक लेल। एक बेर बहुत दृढ़ संकल्प ल'क' छोडि देबाक निर्णय लेलहुं आ पान खाएब छोडि देलहुं, मुदा मोन विचलित होमय लागल। मोनकें ठकबाक लेल तमाकुल कखनोक' खाए लगलहुं। मुदा मोन कनीसं मानैत नै छल , तकर परिणाम भेल जे जेना पहिने पान खाइ छलहुँ, तहिना तमाकुल खाए लगलहुं। ई और खतरनाक छल।

एक दिन प्रो. गंगा नन्द झाजी कहलनि, 'अहाँसं शिकायत अछि, अहाँ पान खाएब छोडि देलहुं त तमाकुल किए खाए लगलहुं।'

हम बहुत गंभीरतासं विचार करैत एक दिन तमाकुल सेहो छोडि देलहुं।

तमाकुलक सेवन हमर पूर्वज सभ सेहो केने छलाह।

हमरा टोलमे एक-दू घर छोडिक' सभ घरमे जवान आ बूढ़ लोक सभ द्वारा तमाकुलक सेवन चलैत छल।

हमर बाबा (दादा) सेहो अपने बाड़ीमे तमाकुल उपजबैत छलाह, ओकरा सरियाक' रखैत छलाह आ साल भरि ओकर सेवन करैत छलाह।

बाबू कलकत्तासं एलाह त ओहो एकर सेवन करय लगलाह।

हम बी.एस.सी. पार्ट एक तक पान-सुपारी-तमाकुलसं दूर रहैत छलहुं। ढोली एग्रीकल्चर कॉलेजमे एक बेर एक संगीक जोरपर सिगरेट मुंहमे लेलहुं, मुदा चक्कर जकाँ आबि गेल। ओही दिन सिगरेटसं मुक्ति भेटि गेल।

बहुत पहिने एक बेर रातिमे हमरा दांतमे दर्द उठल। बेचैन भेलहुँ। रातिमे और कोनो उपाय नहि देखि हमर पिता कनी तमाकुल चुनाक' देलनि आ कहलनि जत' दर्द करैछह ओत' राखि दहक। हमरा तेहेन

निशा लागल जे सबेरे तक सूतल रहि गेलहुँ। तकरा बाद बहुत दिन धरि ने दांतमे दर्द भेल आ ने तमाकुल दिस तकबाक हिम्मति भेल। बादमे जखन कखनो दांतमे दर्द हुए त हम तमाकुलक उपयोग करय लगलहुं। धीरे-धीरे पानक विकल्प तमाकुल आ तमाकुलक विकल्प पान भ' गेल। क्यो एकर अधलाह पक्ष दिस सचेत नहि क' सकलाह। बहुत दिन बाद मिश्र जी आ प्रो. गंगानंद झा एहेन लोक भेटलाह जे पान आ तमाकुलसं मुक्तिक लेल प्रेरित केलनि आ हम अपनापर नियंत्रण क' सकलहुं।

किछु दिन त निमाहि लेलहुं, मुदा एकटा सम्बन्धी एलाह आ कहलनि जे एक-दू बेर खेबामे हर्ज नै छै, ओ खाइत छलाह, हमरासं ओ प्रभावित नहि भेलाह, हमहीं हुनक प्रभावमे आबि गेलहुं आ कखनो-कखनोक' लेब' लगलहुं। धीरे-धीरे फेर पूर्ववत तमाकुलक अधीन भ' गेलहुँ। एहिसं मुक्तिक लेल आवश्यक मंत्र तकबामे चौदह बरख लागि गेल। जबलपुर पहुंचलापर कारगर मंत्र भेटल जे एक संग पान, तमाकुल, माछ-मांस, पियाजु-लहसुन सभसं मुक्ति दिया देलक। ओहि मंत्रक चर्चा आगाँ समय एलापर करब।

देश आ प्रान्तक राजनीति :

१९८९ मे २ दिसम्बरक' केन्द्रमे राष्ट्रीय मोर्चाक सरकारमे विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधान मन्त्री भेलाह। १९९० मे ७ अगस्तक' प्रधानमन्त्री द्वारा मंडल आयोगक अनुशंसाकें क्रियान्वित करबाक घोषणा भेल। एहि घोषणाक विरोधमे पूरा देशमे छात्र-आन्दोलन शुरू भ' गेल , कतेक युवक द्वारा आत्मदाहक घोषणा हुअ' लागल।

२५ सितम्बरक' अयोध्यामे विवादास्पद बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमिपर मन्दिर निर्माण हेतु भाजपाध्यक्ष लाल कृष्ण आडवाणी द्वारा गुजरातमे सोमनाथ मन्दिरसं रथ-यात्रा आरम्भ भेल।

२३ अक्टूबरक' लाल कृष्ण आडवानीकें समस्तीपुरमे गिरफ्तार क' लेल गेलनि, भाजपा राष्ट्रीय मोर्चा सरकारसं समर्थन वापस ल' लेलक आ ७ नवम्बरक' राष्ट्रीय मोर्चा सरकार खसि पड़लै।

१९९१मे २१ मइक' राजीव गांधी बमसं मारल गेलाह, २१ जूनक' पी. वी, नरसिंहा राव प्रधान मन्त्री भेलाह।

बिहारक स्थिति दयनीय भ' गेल छल।

जे सरकार छलै से सरकार लेल छलै। अशान्ति आ असुरक्षाक वातावरण उपस्थित छलै। सीवानमे ई स्थिति बेशी कष्टकर भ' गेल छलै।शिक्षाक मन्दिर सभ अनाथ जकाँ भ' गेल छल। स्थिति एतेक जबदाह भ' गेल छलै जे पीड़ित लोक अस्पताल जेबासं, लोक लोकक जिज्ञासामे जेबासं आ अखबार सभ सही बात लोकक सोझाँ अनबासं डेराइत छल।

आर्यावर्त, इंडियन नेशन बन्द भ' गेल छल। माटि-पानि सेहो बन्द भ' गेल छल। सरकार द्वारा लोक सेवा आयोगसं मैथिली विषयकें हटा देल गेल। राज्यमे विरोधक स्वर दबल रहल।

असामान्य स्थितिक प्रभाव बैंक सभपर नहि छलै, तथापि सीवानक हवा विषाक्त लगैत छल। तैपर बिजलीक संकट आ ओहि सं उत्पन्न अनेक असुविधा बेर-बेर ई सोचबापर विवश क' रहल छल जे कतहु एहेन ठाम स्थानान्तरण होइत जत' बिजली सदिखन रहैत होइ आ वातावरणमे शान्ति होइ।

पारिवारिक स्थिति :

परिवार तीन ठाम भ' गेल छल, गाममे माए-बाबू छलाह, सीवानमे हम पाँच गोटे छलहुँ आ दिल्लीमे अनुज ललनजी आ रतनजी छलाह। बादमे ललनजीक पत्नी सेहो पहुँचलखिन।

हम गामपर एकटा बाथ रूमक आवश्यकताक अनुभव करैत छलहुँ, से ललनजीक द्विरागमनसं पूर्व भ' गेल, दूटा कोठली सेहो हुनक

द्विरागमनसं पहिने बनबाओल गेल।एहि लेल बैंकसं ऋण सेहो लेब' पडल।

ललनजी दिल्लीमे आजादपुर मंडीमे काज पकडलनि। बहुत दिन धरि ओत' एसगरे रहलाह।

रतनजी बी एस सी फिजिक्स प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण भेलाह। बाबूक विचार छलनि जे एम एस सी सेहो क' लेथि, मुदा हुनका दिल्लीमे जीविकोपार्जन दिस ध्यान छलनि।

माए आ बाबू बेरा -बेरी अस्वस्थ रहैत गेलाह।

बाबू मधुबनीमे डा.के. के. मिश्रसं देखौलनि, २५ दिनमे किछु लाभ नै भेलनि त दरभंगा जाक' डा. आर.बी.ठाकुरसं देखौलनि।

माएकें सूतलमे कोनो जंतु पैरमे नछोरि लेलकनि, इलाज भेलनि। माए ठीक भेलीह त बाबू दुखित पडलाह।

१९९२ के सितम्बरमे रतनजी एक बेर पटना मे कोनो परीक्षा दैत गाम गेलाह त बाबूक स्वास्थ्य ठीक नै लगलनि, १६ सितम्बर क' हुनका नेने दिल्ली चल गेलाह।

दिल्लीमे बाबू हमर सभसं छोट बहिन-बहिनोक घरमे रहलाह। ललनजी आ रतनजी सेहो लगेमे रहैत छलखिन।

ललनजी किछु मास एसगरे रहलाह,किछु दिन दुनू गोटे बहिन-बहिनो ओत' रहलाह आ फेर बादमे शैल संगे आदर्श नगर बला मियानीमे रह' लगलाह।

पटेल अस्पतालक डा. पालसं बाबूक इलाज शुरू भेलनि, एकटा आयुर्वेदक आ एकटा यूनानी डा.सं सेहो सम्पर्क कएल गेल।

बाबू किछु मास दिल्लीमे रहिक' स्वस्थ भ'क' गाम घुरलाह।

दिल्लीमे रतनजी सेहो पीलियाक शिकार भेल छलाह।

सीवानमे एक राति बच्चीकें बिच्छू डंक मारि देलकनि। डॉक्टरसं देखब' पडलनि, दबाइ खाए पडलनि।
मैथिलीकें एक बेर भरल गमला पैरपर खसि पडलनि।
एक बेर माता निकलि गेलखिन।
विवेक सेहो अस्वस्थ भेलाह। दरभंगाक डा. वीरेंद्र प्रसादक इलाजमे आ बादमे सीवानमे डा. डी. एन. श्रीवास्तवक इलाजमे रहलाह।
हमरा सेहो बोखार भेल, मिश्रजीक सलाहपर डा.निजामुल हसनसं सम्पर्क केलहुं। कहलनि फैलेरिअल फीवर अछि,पन्द्रह दिन दबाइ खाए पडल।
हमरा डेराक बगलमे एकटा आँखिक विशेषज्ञ एलाह डा. लाल बहादुर सिंह, हुनकासं आँखिक जांच कराय चश्माक उपयोग करय लगलहुं।
परम्परा आ आधुनिकताक समन्वय :
अही अवधिमे १९९० मे प्रो.गंगा नन्द झाजीक दुनू बालकक विवाह भेलनि। हमरा सभसं सभ बातक चर्च करैत छलाह। हुनक जेठ बालकक विवाह १ फरबरीक' जमालपुरमे भेलनि जाहि ठाम वरियातीमे सीवानसं डा.अमर नाथ ठाकुर जीक संग हमहूँ गेल रही। ओहि वरियातीमे किछु विशेषताक संग परम्परागत विवाह जेना मधुबनी-दरभंगाक गाम सभमे होइछै,तहिना अनुभव भेल, नीक लागल।
हुनक दोसर बालकक विवाह आधुनिक ढंगसं भेलनि जाहिमे वरियातीक स्थानपर दुनू दिससं किछु मित्र लोकनि उपस्थित भेलखिन आ दुनू दिससं माता-पिताक उपस्थितिमे आ हुनका लोकनिक आशीषक संग दू-तीन घंटामे विवाहसं द्विरागमनधरिक सभ कार्यक्रम आ सभ पावनि-तिहार पटनामे संपन्न भेल।
हमरा एहि दुनू विवाहसं सिखबाक लेल बहुत किछु भेटल।
माता-पिताकें अपन बालकक अनुरूप पुतोहु तकबामे कोन-कोन बातकें

प्राथमिकता देबाक चाही आ कोन-कोन बातपर अपन सहमति आ आशीर्वाद देबाक लेल अपनाकें तैयार रखबाक चाही, से हमरा सिखबाक अवसर भेटल। अपनो मोने विवाह करब त माता-पिता आ मित्र-बन्धुक आशीर्वाद आ शुभकामनाक संग करब, ईहो उदाहरण नव लोक सभ लेल बहुत अनुकरणीय आ प्रशंसनीय लागल।
एकमात्र योग्य पुत्रक पिता विश्व प्रसिद्द किडनी विशेषज्ञ डा.विवेकानंद झा आ एकमात्र योग्य पुत्रीक पिता साहित्यकार-चिन्तक आ दिल्ली विश्वविद्यालयक चर्चित प्रोफ़ेसर अपूर्वानन्द आधुनिक भारतीय समाज लेल सफल आ सबल दाम्पत्य जीवनक संग संतुलित पारिवारिक आ सामाजिक जीवनक अदभुत उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि। हमरा हर्ष अछि जे हिनका लोकनिकें लगसं देखबाक आ जनबाक अवसर प्राप्त भेल अछि।

माएक संग तीर्थाटन :
१९९१ के अक्टूबरमे रतनजी शान्ती बहिनकें गामपर राखि माएकें सीवान नेने एलाह। एल.टी.सी.क सुविधाक उपयोग करबाक विचार भेल। सिवानसं सभ गोटे दिल्ली गेलहुँ, बहिन-बहिनोक घर पर रहलहुं।
एक दिन दू टा ऑटो रिक्शा ल'क' सभ गोटे दिल्लीमे लाल किला,इंडिया गेट,राजघाट,विजय घाट,शक्ति स्थल,शान्ति वन,चिड़िया खाना,लोटस मन्दिर आदि बहुत ठाम घूमै गेलहुँ।
किछु दिनक बाद एक दिन एकटा गाड़ी ल'क' सभ गोटे हरिद्वार आ ऋषिकेशमे कय ठाम घूमै गेलहुँ। ऋषिकेशमे लक्ष्मण झूलापर द' क' दोसर कात मन्दिर सभ घूमैत रातिमे पुनः हरिद्वार पहुंचि श्री राम धर्मशालामे विश्राम करै गेलहुँ।

दोसर दिन हरकी पौरी गेलहुँ,ट्रालीसं मनसा देवी मन्दिर गेलहुँ। ओत'सं भारत माता मन्दिर,राम हनुमान मन्दिर देखैत पाँच बजे गाड़ीसं विदा भ' गेलहुँ।
फेर किछु दिन बाद एकटा गाड़ी ल'क' सभ गोटे आगरा, मथुरा, वृन्दावनमे कए ठाम घूमि अबै गेलहुँ।
ई यात्रा सभ गोटेक लेल बहुत आनन्द प्रदान करैबला रहल।
रतनजी नोकरीक लेल ओतहि रहि गेलाह आ हम सभ माए संग सीवान घूरि माएकें गाम पहुंचा देलियनि।
१९९२ मे वसन्त (वंदना)क दसमी बोर्डक परीक्षा भेलनि। द्वितीय श्रेणीमे उतीर्ण भेलीह,९०० मे ५३३ अंक एलनि, ५९.२ प्रतिशत।

पदोन्नति :
१९९२ मे स्केल II मे पदोन्नतिक प्रक्रियामे १७ जुलाइ क' साक्षात्कार भेलै, २१ अक्टूबर क' परिणाम घोषित भेलै, हमहूँ सफल भेलहुँ।
ओहि बेर किछु गोटेकें मध्य प्रदेश जाए पड़लनि, पैंतालीस बरखसं बेशी वयसबलाकें बाहर नै जाए पडलनि। हम पैंतालीसक भीतरे रही, तें आंचलिक कार्यालय,रायपुरमे योगदान देबक लेल जिनका सभकें आदेश भेटल रहनि, ओहिमे हमहूँ रही।३० नवम्बरक' हमरा सभकें रायपुर आंचलिक कार्यालय पहुँचबाक छल।
अही बीचमे जमशेदपुरसं वीणाक विवाहक सूचना भेटल। वीणा आ ममता दुनू बहिन नान्हिए टा रहथि त माए दुनियाँ छोडि देलखिन, किछु दिन गाममे रहलाक बाद दुनू गोटे जमशेदपुरमे जेठ भाए,भौजी,भातिज आ भतीजी सबहक संग रह्य लगलीह। साढ़ू समय-समयपर कलकत्तासं आबिक' भेंट क' जाइत छलखिन। वैह वीणा, हमर साढ़ूक जेठ पुत्री वीणाक विवाह भ' रहल छनि जमशेदपुरमे आ

हमरा जमशेदपुर होइत जेबाक अछि रायपुर। कार्यक्रममे कनी सामंजस्य केलासं हम विवाह दिन त नहि, विवाहक तेसर दिन भेंट क' सकैत छी हुनका सबहक।बच्ची अपन पिता लेल स्वेटर आ मफलर बुनने छथि सेहो द' देबनि आ सभ गोटे सं भेंट-घाँट सेहो भ' जाएत।

तदनुसार कार्यक्रम बनल जे पटनासं जमशेदपुर भोरे पहुंचब, सरोज स्टेशनसं हमरा डेरापर ल' जेताह, ओत' दिन भरि सभसं भेंट-गप करैत वर-कनियाँ कें आशीर्वाद दैत साँझमे जमशेदपुरसं रायपुर बला ट्रेन पकड़ि लेब। अही अनुसार ट्रेनमे आरक्षण कराओल।

२७ नवम्बरक' पचरुखी शाखासं भारमुक्त भए रायपुर जेबाक लेल सीवानसं २८ क' एसगरे प्रस्थान केलहुं।

सीवान स्टेशनपर तंग इनायतपुरी भेटलाह, हमरा विदा करैत ओ अपन कोनो मित्र-शायरक एकटा शेर सुनौलनि :

'मुझे थकने नहीं देता है जरूरतों का पहाड़
मेरे बच्चे मुझे बूढ़ा होने नहीं देते'

ई शेर भरि रस्ता हमरा बझेने रहल।

पटना / १४.१०.२०२१

(२१)

हम पहाड़पर

सीवान जमशेदपुर-रायपुर :

पटनासं रातिमे ट्रेनसं चललहुं, सबेरे टाटानगर पहुँचलहुं। हमर साढ़ूक पुत्र सरोज स्कूटर ल'क' आएल छलाह।हुनका संग थोड़बे कालमे आदित्यपुर हुनक डेरा पहुंचि गेलहुँ।

हमर सासुरक लोक सभ भेटलाह-ससुर,सार, सरबेटा। साढ़ू भेटलाह, सरोजक अनुज अशोक भेटलाह,साढ़ूक पुत्री वीणा आ जमाए मिश्रजीकें देखलियनि, दोसर पुत्री ममताकें देखलियनि। ससुरकें बच्चीक देल स्वेटर आ टोपी द' देलियनि।

सभसं परिचय आ गप-शप करैत, खाइत-पिबैत चारि बाजि गेल, हमर ट्रेनक समय निकट आएल त मिश्रजी भिलाइक अपन पता लिखा देलनि आ २ दिसम्बर क' ओत' रिसेप्शनक उत्सव दिन हमरा एबाक लेल आग्रह केलनि, अशोक बाबू हमरा स्कूटरसं स्टेशन पहुंचा देलनि। ट्रेनमे हमरे बर्थ लग भेटि गेलाह हरे कृष्ण वर्मा जे मोतिहारीसं जा रहल छलाह आ हमरे जकाँ रायपुर आंचलिक कार्यालय जेबाक छलनि। नीक लागल जे एकटा संगी भेटलाह।

दोसर दिन रायपुर पहुंचि हम सभ आंचलिक कार्यालयक लगेमे मयूरा होटलमे रूम ल' लेलहुं।

पता रह्य जे हमर यूनियनक महासचिव एम. के. अग्रवाल सदर बाज़ार शाखामे छथि, हुनकासं सम्पर्क केलहुं। आंचलिक कार्यालय गेलहुँ। आंचलिक प्रबंधक महोदय सभकें बजाक' कहलखिन जे अहाँ सभ बिहारसं छी, अहाँ सबहक सुविधाक ध्यान रखैत बिहारसं सटल शहडोल क्षेत्रक शाखा सभमे पोस्टिंग कएल गेल अछि अनूपपुर,

मनेन्द्रगढ़,चिरमिरी आ डोमनहिल। हमरा सबहक लेल त सभ स्थान अपरिचिते छल, नीक-अधलाह सोचबाक समय नहि रहि गेल छल, सभटा तय भ' गेल छलै, तें सभ गोटे अपन-अपन आदेश-पत्र लेलहुं जाहिमे तीन दिसम्बरक' शाखामे योगदान करबाक आदेश छल।

दू तारीखक' वर्माजीक संग भिलाइक स्मृति नगरमे मिश्रजीक ओत' गेलहुँ, द्विरागमन भ' गेल छलै, वीणा जमशेदपुरसं भिलाई आबि गेल छलीह। जमशेदपुरसं अशोक आ हुनकर एकटा पितिऔत भाए संजय सेहो आएल छलखिन। हुनका सभसं गप भेल त सूचना देलनि जे हुनक एकटा सम्बन्धी चिरमिरी लगमे सेंट्रल बैंकक कोनो शाखामे काज करैत छथिन, ओ पिंडारुचक छथि आ नाम सभापति चौधरी छनि। ई सूनिक' नीक लागल जे अपरिचित स्थानमे एक गोटे त मैथिली भाषी भेटलाह अपना दिसक।

मिश्रजीक पिता आ अनुजसं सेहो गप भेल, ई जानि नीक लागल जे भिलाई स्टील प्लांटमे मिश्रजीक पिता सेहो काज करैत छथिन आ मिश्रजी दुनू भाइ सेहो,दोसर भाए हिनकासं छोट छथिन, हिनका सबहक गाम कुशेश्वरस्थान लग छनि।

रिसेप्शनक उत्सव त रातिमे होइतइ,मुदा रातिए हमरा सभकें सारनाथ एक्सप्रेससं प्रस्थान करबाक छल, तें दिनेमे भोजनक बाद हुनका सभसं आज्ञा लए विदा भ' गेलहुँ रायपुर।

रायपुर अनुपपुर-चिरमिरी-डोमनहिल :

रातिमे रायपुर स्टेशनसं सारनाथ एक्सप्रेससं हम सभ पाँच गोटे विदा भेलहुँ। अनूपपुर जंक्शनपर दू गोटे उतरि गेलाह,सिंह जी आ वर्माजी। सिंह जी कें अनूपपुर शाखामे रहबाक छलनि, दोसर छलाह वर्माजी जिनका ओतसं बस अथवा जीपसं दस-पन्द्रह किलोमीटर दूर शाखामे

ज्वाइन करबाक छलनि।

ओत' चिरमिरी बला ट्रेन लागल रहै,हम सभ तीन गोटे ओहिमे जाक' बैसि गेलहुँ। ट्रेन भोरमे खुजलै आ किछु स्टेशनक बाद मनेन्द्रगढ़ पहुँचलै त ए.के. सरकार ओत' उतरि गेलाह,हुनका मनेन्द्रगढ़सं किछु दूर रामनगर कॉलरी शाखामे ज्वाइन करबाक छलनि । हम आ आर.पी.शर्माजी अंतिम स्टेशन चिरमिरी तक गेलहुँ।

चिरमिरी स्टेशनसं पहाड़ जकाँ चढ़ाइ देखबामे आएल। ब्रीफ़केस ल'क' चढ़ब कठिन लागल। भरिया सभकें देखलिऐ। दूर जेबाक लेल जीप जाइ छै, मुदा एखन त हमरा दुनू गोटेकें कोनो होटलमे एतहि रहबाक छल, तें भार बलाकें ब्रीफकेस द'क' पयरे धीरे-धीरे ऊपर चढ़लहुं। दीपक लॉजमे डेरा लेलहुं। शर्माजीकें त ओही ठाम रहबाक छलनि,हमरा ओत'सं जीपसं और चारि-पाँच किलोमीटर दूर जेबाक छल। पता छल जे डोमनहिलमे होटल नै छै, तें जाधरि आवासक व्यवस्था नै हएत ताधरि अही ठाम रहिक' एतहिसं गेनाइ आ साँझमे वापस एनाइ कर' पडत।

गर्म जलसं स्नान कए एकटा होटलमे दू टा सोन पापड़ी,एकटा समोसा आ एक कप चाह ल'क' एकटा जीपपर बैसलहुं, शर्माजी ओतहि अपन शाखा गेलाह।

जीप पन्द्रह-बीस मिनटमे पहाड़पर घूम-घुमौआ रस्तापर चलैत डोमनहिल स्टैंड पहुंचा देलक, ओत'सं पयरे घुमैत आ पुछैत पाँच मिनटमे बैंक शाखा पहुंचि गेलहुँ। हमरा हाथमे बैंकबला डायरी देखिक' सुरक्षा प्रहरी खडग सिंह अनुमान केलनि आ नव शाखा प्रबंधक बूझिक' नमस्कार केलनि, शाखामे खबरि त फोनसं पहिने आबिए गेल छलै। खडग सिंह सभ सदस्यसं परिचय करौलनि। जाएबला शाखा प्रबंधक पाण्डेय जी छलाह,अधिकारी छलाह प्रदीप सिंह पाल,लिपिक छलाह सोना लाल यादव आ योगेन्द्र सिंह सोरी,अंशकालीन कर्मचारी छलाह

राम कृपाल।

यादवजी कें छोडिक' सभ गोटे मध्य प्रदेशक छलाह। यादवजी बिहारक छलाह।

शाखामे किछु दिन बाद दूटा और लिपिक एलाह तेज राम साहु आ टी. हेम्ब्रोम।एकटा अधिकारी आलोक कुमार बनर्जी सेहो एलाह। शाखामे करीब एक हजार एक सय कालरी कर्मचारी-अधिकारी सबहक बचत खाता, सावधि जमा खाता आ मांग ऋणक खाता छलनि । मुख्यतः एस.ई.सी.एल.केर कर्मचारी-अधिकारी सबहक लेल ई शाखा खूजल छलै। ओहि ठामक अस्पताल,स्कूल आ अन्य सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्था सबहक स्टाफक विभिन्न खाता सेहो छलै।

शाखा भवन कॉलरी द्वारा मंगनीमे देल गेल छलै। मंगनीमे सभ बैंक स्टाफकें आवासक सुविधा सेहो देल गेल छलै।

शाखा प्रबंधक आ एकटा अन्य अधिकारीक लेल आवास कनिए दूरपर सेंट्रल स्कूल कैंपसमे देल गेल छलै, शेष सदस्य लेल आवास दोसर ठाम देल गेल छलनि। सभ सदस्य लेल पानि आ बिजलीक सुविधा मंगनीमे उपलब्ध छलनि। खुशीमे रहबाक लेल एते सुविधा पर्याप्त छलै।

दुखी रहबाक सेहो पर्याप्त कारण उपस्थित छलै।

पीबै बला पानि कीन' पडैत छलैक, भारपर दू टिन इनारक पानि प्रतिदिन लोक मंगबैत छल जकर दाम तीन रु. होइत छलैक। ओइ पानिकें पीबाक योग्य बनयबाक लेल ओकरा उबालिक' तखन फ़िल्टरमे छानब आवश्यक होइत छलैक। एकर मतलब ई जे स्वास्थ्यपर खर्च बेशी छलैक।

दोसर बात ई जे बाहर कतहु जेबाक लेल पहिने चिरिमिरी स्टेशन जाएब, ओत'सं ट्रेनसं अनूपपुर जंक्शन जाएब आवश्यक होइत छलैक

आ चिरिमिरीसं उपलब्ध ट्रेनक संख्या बहुत कम छलैक। स्थानीय भ्रमण हेतु अपन सवारी आवश्यक होइत छलैक।
एकर अतिरिक्त नीक शिक्षण संस्था सबहक अभाव छलैक। बारह्वीं तक के लेल सेंट्रल स्कूल नीक छलै, मुदा और नीक संस्था सबहक कमी छलैक।
चिकित्सा व्यवस्था सेहो बहुत नीक नै छलै।
मुदा अही सभ सुविधा आ असुविधाक बीच देशक विभिन्न प्रांतसं एत' आबिक' हजारो लोक कते-कते बरखसं अपन परिवार संगे जीवन-यापन करिते आबि रहल छलाह आ जिनका एत' समाधान नहि भेटैत छलनि ओ जबलपुर, बिलासपुर,रायपुर,भिलाई अथवा भोपाल दौड़ैत छलाह।
भिलाइमे जाहि चौधरीजीक विषयमे पता चलल छल, हुनकर चर्चा केलहुं त पता चलल जे ओ नार्थ चिरमिरी कॉलरी शाखामे काज करैत छथि। पता चलल जे एहि एरियामे सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडियाक सातटा शाखा छै : चिरिमिरी, नार्थ चिरिमिरी, वेस्ट चिरिमिरी,कुरासिया कॉलरी,डोमनहिल कॉलरी,कोरिया कॉलरी आ खडगवां।
इहो पता चलल जे सेंट्रल स्कूल कैंपसमे नार्थ चिरिमिरी शाखाक शाखा प्रबंधक आ एकटा अन्य अधिकारी लेल सेहो आवासीय सुविधा प्रदान कएल गेल छै जाहिमे शाखा प्रबंधक खुन्तवाल साहेब आ अधिकारी मिश्रजी एखन रहैत छथि, एतहिसं जाइत-अबैत छथि, ओहि शाखाक दूटा लिपिक चौधरीजी आ मिश्रजी सेहो डोमनहिलमे रहैत छथि आ सभ दिन सबेरे स्कूटरसं जाइत छथि आ साँझमे आबि जाइत छथि। ओ मिश्रजी सेहो मधुबनी जिलाक छथि, से पता चलल।
साँझमे हमरा शाखाक अधिकारी पी.एस.पाल अपन स्कूटरसं चिरिमिरी पहुंचा देलनि। ओत' दीपक लॉजमे शर्माजीसं गप-शप भेल, ओ सीतामढ़ी जिलाक छलाह।

आब हमर परिवार चारि ठाम भ' गेल छल, गाममे कोनो नातिन संगे माए छलीह,बाबू छलाह। दिल्लीमे ललनजी दुनू गोटे आ रतनजी छलाह, सीवानमे पत्नी, दुनू पुत्री आ पुत्र छलाह आ चिरिमिरीमे हम छलहुँ।

दिनमे कोनो होटलमे जलखै क' क' चिरिमिरीसं डोमनहिल जाएब, दिनका भोजन ओतहि करब आ साँझमे घूरिक' चिरिमिरी आएब, रातिक भोजन चिरिमिरीक होटलमे करब, करीब दू सप्ताह धरि अहिना चलल। ओहि ठाम पहाडपर दीपक लॉजमे बैसि ई गीत लिखाएल :

कोना कहू जे कोन हालमे जीबि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
 पर्वत केर कायासं निकलय
 कोयला कारी-कारी
 घूम-घुमौआ रस्तापर अछि
 चलइत मोटर गाड़ी
कारी-कारी गाछ-पात सभ देखि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
 ठाम-ठाम पर्वतक आँखिसं
 नोरक बहय टघार
 जहां-तहां मजदूर चलैए
 नेने पानिक भार
एत' आबिक' पानि कीनिक' पीबि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
 अछि पहाड़पर जहां-तहां
 माटिक सुन्दर घर

मुदा जखन नीचां तकैत छी
होइए सरिपहुं ड’र
आगाँ निहुरि-निहुरिक’ ससरब सीखि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
एत’ आबिक’ मोन पड़ैए
सीवानक संसार
मोन पड़ैए गाम-घ’र आ
हरियर खेत-खम्हार
हम कल्पना केर डारिपर झूलि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
मोन पड़ैए चूड़ा-दही
चीनी आओर अंचार
कविता-गीत-गजल केर खातिर
जहां-तहां बैसार
एत’ तपस्वी केर भोग हम भोगि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।
बिजली रानी सतत रहै छथि
तें त अछि किछु मौज
साधू केर कुटी-सन लागय
अनमन दीपक लॉज
एतहि ठाढ़ भए एस्टेसन दिस देखि रहल छी
हम पहाड़पर बैसल चिट्ठी लीखि रहल छी।

पूर्व शाखा प्रबंधक पाण्डेय जी अंबिकापुर चलि गेलाह आ २७ दिसम्बरक’ हम लॉज छोडिक’ डोमनहिलमे सेंट्रल स्कूल कैंपसमे शाखा प्रबंधक लेल निर्धारित आवासमे चलि गेलहुँ। पानि लेल बड़का तौला आ भोजन लेल किछु बर्तन आदि किनलहुं।

कृपाल पहिने पूर्व शाखा प्रबंधक पाण्डेयजीक भोजन बनबैत छल, आब हमर भोजन बनब' लागल।

१४ जनबरीक हम सीवान पहुँचलहुं।

राजवंशी देवी वालिका उच्च विद्यालयसं मैथिलीक आ महावीरी सरस्वती विद्या मन्दिरसं विवेकक स्थानान्तरण प्रमाण पत्र, वसन्त लेल पटना बोर्ड ऑफिससं प्रवजन प्रमाण-पत्र आ प्रोविजिनल प्रमाण-पत्र लेल दौड़-धूप केलहुं,डी.एस.ओ. कार्यालयमे राशन कार्ड जमा क'क' राशन कार्डक समर्पण प्रमाण-पत्र प्राप्त केलहुं,गैस कनेक्शन ट्रान्सफर करबौलहुं। टी. सी.आइ.बला ट्रक ठीक भेल।

एकटा कमी रहि गेल जे महावीरी सरस्वती विद्या मन्दिरवला विवेकक स्थानान्तरण प्रमाण-पत्रपर डी. ई.ओ. साहेब हस्ताक्षर नहि केलनि। चिरमिरीमे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्रपर डी. ई. ओ.क हस्ताक्षर अनिवार्य कहल गेल छल।

वनगमन :

हमर अनुज रतनजी दिल्लीसं सीवान आबि गेल छलाह। हुनका सामान संगे ट्रकसं पठाय हम सभ बनारससं ट्रेनसं जेबाक कार्यक्रम बनौलहुं। तदनुसार वनारस जाक' ट्रेनमे आरक्षण करा आएल छलहुँ।

१० फरवरीक' हम सभ बनारसमे ट्रेन पकड़बाक लेल सीवानसं बससं भोरे विदा भेलहुँ। जीरादेइ लग बसक एक्सिल टूटि गेलै त घूरि अबै गेलहुँ। ओही दिन साँझमे ट्रकपर सामान लोड भेल। ११ क' भोरे ट्रकपर सामानक संग अपनो सभ गोटे बैसि गेलहुँ।

१० बजे मनेरमे जलखै क' क' विदा भेलहुँ।

दूपहरक बाद घनघोर जंगलसं निकलैत अनुभव भेल जे हम सभ वनबासमे जा रहल छी। मुनहारि साँझक बाद घनघोर जंगल होइत जखन एकटा पुलपर गाड़ी रूकल त चेकिंग हुअ' लागल। रतनजी

मैथिलीमे किछु हमरा कहलनि कि चेकिंग अधिकारीक स्वर मधुर भ' गेलनि।
गप-शप भेल त कहलनि, अहाँ सभ बहुत रिस्क ल'क' एहि समयमे आबि रहल छी, एहि रस्तामे एते अबेरक' एबामे बहुत खतराक आशंका रहै छै, अहाँ सभ भागवंत छी जे सकुशल आबि गेलहुँ।
मातृभाषाक चमत्कारसं प्रभावित भेलहुँ।
नाहर घर छलनि चेकिंग अधिकारी सिंह जीक।
हुनका मूँहसं खतरोक बात मैथिलीमे सूनिक' आनन्दित भेलहुं।
सिंह जी कहलनि, अहाँ सभ खतरा बला क्षेत्र पार क' गेल छी, आगाँ आब कतहु चल जाएब त कोनो खतराक आशंका नहि अछि। हम सभ रामानुजगंज पहुंचि गेल रही, सिंह जीक बातसं आश्वस्त त भेल रही, मुदा राति ओतहि शिवम् लॉजमे विश्राम करै गेलहुँ, आगाँ बढबाक साहस नहि भेल।
१२ क' भोरे रामानुजगंजसं प्रस्थान कए अम्बिकापुर होइत एक बजे नागपुरमे भोजन कए ३.१५ बजे दिनमे डोमनहिल पहुंचि जाइ गेलहुँ। सीवानमे रहथि त बच्ची सोचथि जे नीचां बला डेरा रहितै त किछु फूल, गाछ अपना पसन्दसं लगबितहुं, एत' नीचां बला डेरा, पाछाँमे फूल आ अररनेबाक गाछ, आगाँमे आंगन देखि चकित भेलीह, मुदा पानि पीबाक लेल एतेक ताल-भजार करबाक बातसं व्यथित भ' गेलीह। मुदा ई दुनियाँ अहिना बनल छै जे कतहु जाउ, किछु वस्तु अहाँक मनोनुकूल भेटत आ किछु प्रतिकूल सेहो भेटत। अनुकूल आ प्रतिकूल स्थितिक बीच ताल-मेल बैसयबाक आवश्यकता होइत छैक जीवनमे।
जंगलमे मंगल :
जहिया परिवार संगे डोमनहिल पहुँचलहुं,ओकरा प्राते पिंडारूचक सभापति चौधरीजी परिवार संगे डेरापर एलाह, सभकें सभसं परिचय

भेलनि।

चौधरीजी जाहि शाखामे काज करैत छलाह,ओही शाखामे बेनीपट्टी लगक नवीन मिश्र जी छलाह, ओहो लिपिक छलाह, हुनकोसं भेंट भेल।

बैंकमे एक दिन खाता खोलब' लेल आएल एकटा आवेदन पत्रमे नामपर ध्यान गेल-चक्रधर झा, सेंट्रल स्कूलमे शिक्षक छलाह, घर दुलहा छलनि, डेरा सेंट्रल स्कूल कैंपसमे हमर डेराक लगे मे छलनि, हुनका परिवारमे हमर सरबेटीक बियाह भेल छलनि। परिचय भेल, नीक लागल।

झंझारपुर लगक ए.एन. झा सं परिचय भेल, जे कॉलरी ऑफिसमे काज करैत छलाह।

झंझारपुर लगक एकटा मंडलजी सेहो भेटलाह, जे कॉलरी ऑफिसमे चपरासी छलाह।

तरौनी गामक के.एन.झा भेटलाह, जे ठीकेदार छलाह।

विजय सलमपुर गामक एकटा झाजी भेटलाह जे कपड़ाक दोकान करैत छलाह।

हजारीबागक आर.के.रवि भेटलाह जे कॉलरी ऑफिसमे काज करैत छलाह संगहि कवि सेहो छलाह।

पलामूक दुबेजी भेटलाह जे स्कूलमे शिक्षक छलाह आ काव्य-प्रेमी सेहो छलाह।

सहारनपुरक रामेश्वर काम्बोज हिमांशु भेटलाह, जे सेंट्रल स्कूलक प्राचार्य छलाह आ नीक साहित्यकार सेहो छलाह , हिनक हिन्दी मे प्रकाशित काव्य संकलन छलनि 'अंजुरी भर आशीष', लघु कथापर सेहो बहुत काज क' चुकल छलाह। हिनका स्कूलक एकटा शिक्षक चन्द्र भूषण पासवानजी, जे बिहारेक छलाह, हिनके प्रभावमे काव्य

सृजन सेहो करैत छलाह। एकटा शिक्षिका 'भारती' सेहो नीक कविता लिखैत छलीह,ओ बिलासपुरक छलीह।

सेंट्रल बैंकक छोटा बाज़ार शाखामे शाखा प्रबंधक छलाह महेश प्रसाद शुक्ल, जे जबलपुरक छलाह आ हिन्दीमे नीक व्यंग्य रचना करैत छलाह।

मध्य प्रदेशक विभिन्न ठामक रहनिहार आ कॉलरी स्थित विबिन्न विभागमे काज करैबला किछु गोटे छलाह जे साहित्यकार सेहो छलाह, जाहिमे प्रमुख छलाह नरेन्द्र मिश्र 'धड़कन', राजेन्द्र 'धुरंधर', राजेंद्र तिवारी 'राही',सी.एल.मिश्र 'साहिल', इरशाद अहमद सिद्दीकी,अब्दुल सत्तार भारती आदि।

उत्तर प्रदेशक शफीक 'इलाहाबादी' छलाह जे कॉलरी कर्मी छलाह आ बहुत नीक गजल लिखैत छलाह।

डोमनहिल कॉलरीक अधिकारी अशोक दादा छलाह जे संगीत प्रेमी छलाह, हिनक पत्नी हारमोनियमपर बहुत सुन्दर रवीन्द्र संगीत, नजरूल गीत,लोक गीत आदि गबैत छलीह आ तबलापर अपने छोट बेटी संग दैत छलखिन।

चिरिमिरी कॉलरीमे इंजिनियर छलाह पलटू मुख़र्जी जे शास्त्रीय संगीतक प्रसिद्द गायक छलाह, हिनकोसं परिचय भेल।

छपराक रामजी सिंह भेटलाह जे कॉलरीमे काज करैत छलाह।

कोनो ठाम गेलापर यदि मैथिली भाषी क्यो भेटि जाथि,त मोन आनन्दित भ' जाइत अछि। यदि मैथिल नहि भेटथि, कोनो बिहारी भेटि जाथि, तैयो मोन प्रसन्न होइत अछि। यदि ओहो नहि भेटथि, कोनो प्रान्तक रह्यबला कोनो साहित्यकार अथवा गुणी कलाकार भेटथि, तैयो आनन्दित होइत छी। आ सेहो यदि नहि भेटथि, कोनो बैंक स्टाफ भेटि जाथि, तखनो आनन्दमे रहैत छी।

संयोगसं एहि ठाम मैथिली भाषी लोक सभ सेहो भेटलाह, अमैथिल

बिहारी सेहो भेटलाह, विभिन्न प्रान्तक साहित्यकार-कलाकार सेहो भेटलाह, पूर्व परिचित एग्रीकल्चर पृष्ठभूमिक प्रिय वरिष्ठ अधिकारी सेहो भेटलाह आ सज्जन बैंक स्टाफ सभ सेहो भेटलाह।

सीवानमे हम ए. एफ. ओ.(कृषि वित्त अधिकारी) रही, त आर.पी. शर्माजी एल.बी.ओ.(लीड बैंक अधिकारी) छलाह , वैह शर्माजी हमर सबहक शहडोल क्षेत्रक क्षेत्रीय प्रबंधक छथि, से हमरा बूझल छल। एकदिन ऑफिसमे ओ अनायास आबि गेलाह, बड़ी काल बैसलाह, सीवानक सभ परिचित लोकक हाल पुछैत गप-शप केलनि, मंगल दिन रहै,उपास केने छलाह, हमरा अनुरोधपर एकटा सेव आ एकटा केरा लेलनि, ऑफिसक लेल किछु जरूरी चीज खरीदक हेतु तुरत स्वीकृति-पत्र सेहो द' देलनि। ओ क्षेत्रीय कार्यालयक राजभाषा अधिकारीकें हमर साहित्य सृजनसं सेहो अवगत करौलखिन आ हमरा 'सेंट्रल रश्मि' पत्रिका लेल रचना पठयबाक लेल सेहो कहैत गेलाह। हुनका गेलाक बाद शाखाक सभ गोटे आश्चर्य प्रगट केलनि जे क्षेत्रीय प्रबंधक एते मिलनसार कोना भ' गेलाह।

हमरा अपना लेल किछु मांग करबाक हिम्मति नहि भेल। हमरा संगे जे हरे कृष्ण वर्माजी बिहारसं आएल छलाह से शर्माजीसं पैरवी क' क' अपन स्थानान्तरण शहडोल मुख्य शाखामे करा लेलनि आ हमरो सुचित केलनि जे कोनो आवश्यकता हो त कहब।

हम एक दिन छुट्टी ल'क' शहडोल गेलहुँ जे हमहूँ अपना लेल कोनो नीक शाखामे स्थानान्तरणक जोगार धराएब।

ओत' गेलहुँ त पहिने शहडोल शाखामे वर्माजीसं सलाह लेब' गेलहुँ। वर्माजीकें चिन्तित आ परेशान देखलियनि। पता चलल जे शर्माजी जे ट्रान्सफर आदेश देने छलखिन से यूनियनक दबाबपर वापस लेब' पडलनि आ वर्माजी पुनः ओही शाखामे वापस जा रहल छथि।

हमर बात मूँहेंमे रहि गेल। कथी लेल रुकितहुं। क्षेत्रीय प्रबंधकसं बिना भेंट केनहि डोमनहिल घूरि गेलहुँ।

किछु दिनक बाद, अम्बिकापुरक क्षेत्रीय प्रबंधक संगे शहडोलक क्षेत्रीय प्रबंधक शर्माजी एलाह त कहलनि, 'मैं बहुत नाराज हूँ ठाकुर, तुम शहडोल गए और बिना हमसे मिले चले आए?'

हम कहलियनि,'वर्माजी की हालत देखकर मैंने आपसे कुछ याचना करना उचित नहीं समझा सर।'

कहलनि, 'क्यों, वैसे नहीं मिल सकते थे?'

कहलियनि, 'वैसे मिलते और आप कहीं पूछ देते कि बिना आदेश प्राप्त किए क्यों मिलने आ गए, तों मैं क्या जबाब देता?'

कहलनि,'सीवान में जिन लोगों के साथ काम कर चुका हूँ,उनसे ऐसा क्यों पूछूँगा, वो तो यहाँ के लिए नियम है, यहाँ अगर छूट दे दूँ तो लोग शाखामे काम करने के बदले क्षेत्रीय कार्यालयमे ही जमा होने लगेंगे।'

बादमे हमर सबहक शाखा अंबिकापुर क्षेत्रमे आबि गेल। हमरा मोन मारिक' ओतहि रहि जेबाक अतिरिक्त कोनो आन नीक विकल्प नहि रहि गेल।एक सालक बाद अनुरोधपर स्थानान्तरण लेल आवेदन पठा देलिऐ, आदेश एबामे ततेक देरी भ' गेलै जे हमरा लेल काजक नहि रहल।

कॉलरीक किछु शाखा प्रबंधक सभ कृषि पृष्ठभूमिक छलाह। कहियो चिरिमिरी शाखामे, कहियो मनेन्द्रगढ़, शहडोल अथवा अम्बिकापुरमे मीटिंग होइत छलैक। अधिक काल सभ शाखा प्रबंधक एकहि जीपसं जाइत छलाह आ घुरैत छलाह।

सभ शाखामे फोन छलै, सभ शाखा प्रबंधक फ़ोनपर एक-दोसरसं सम्पर्कमे रहैत छलाह।

एहि ठाम विभिन्न प्रान्तक लोक छलाह, तें विभिन्न तरहक आयोजन

होइत रहैत छलै। बंगाली लोकनि द्वारा दुर्गा पूजाक बहुत उत्कृष्ट आयोजन होइत छल। रावण-दहनक उत्सवमे अपार भीड़ रहैत छलैक।

बिहारी तथा किछु अन्य प्रान्तक लोक सभ सेहो छठि पावनिक बहुत नीक आयोजन करैत छलाह। कॉलरी द्वारा कृत्रिम जलाशयक व्यवस्था कएल गेल छलै।छपराक रामजी सिंह आ तरौनीक के.एन.झा ओत' छठि पावनिमे खरना दिन प्रसाद पबैत छलहुँ।

१५ अगस्त आ २६ जनवरीक' कवि सम्मलेन होइत छलै।

सन्त सम्मेलनक आयोजन सेहो भेल छलै।

प्रपन्नाचार्यजी महाराजक मुखसं भागवत कथाक प्रवचन सेहो सुनबाक अवसर भेटल।

हल्दीबाड़ी स्थित काली मन्दिर सेहो कहियोक' जाइत छलहुँ।

कोरिया कॉलरीमे एकटा अवकाशप्राप्त कॉलरीकर्मी द्वारा योगासन सिखाएल जाइत छलै, सेहो सीख' रवि दिनक' कहियो-कहियो जाइत छलहुँ।

हल्दीबाड़ीमे ओशोक शिष्य स्वामी आनन्द सिद्धार्थक आगमन भेलनि, तीन दिनक लेल आयोजित ध्यान-शिविरमे सेहो भाग लेबाक अवसर भेटल।

कहियोक' अशोक चक्रवर्ती दादा ओत' हुनक श्रीमतीजीक गायन-रवीन्द्र संगीत,नजरुल संगीत, लोकगीत सुनबाक अवसर भेटैत छल।

कहियोक' रविजी आ दुबेजीक संग चिरिमिरीमे पलटू मुखर्जी दादा ओत' हुनक गायन सुनबाक लेल जाइत छलहुं।

पलटू दादा रविजी आ हमर किछु रचनाकें उपयुक्त रागमे अपन स्वर दय कैसेट तैयार केलनि। हुनक प्रस्तुति बहुत मनमोहक लागल। ओहि कैसेटकें करीब बारह साल सुरक्षित रखलहुं।

दुर्भाग्यवश आब ओ कैसेट किनको लग सुरक्षित अछि।
एक राति एकटा सूफी सन्तक आगमन पर आयोजित उत्सवमे पलटू दादाक आकर्षक गायन सुनबाक सौभाग्य भेटल।

साहित्यिक गतिविधि :
कादंबरी साहित्य परिषद्क सदस्य बनलहुं।
कहियो सेंट्रल स्कूल, कहियो गुदरीपारा, चिरिमिरी ,छोटा बाज़ार अथवा अन्यत्र कतहु कवि गोष्ठीमे सम्मिलित हुअ' लगलहुं।
पहिने किछु गोष्ठीमे हम अपन मैथिली रचना प्रस्तुत केलहुं। बादमे हुनका सबहक संग देखैत-सुनैत हमरोसं किछु रचना हिन्दीमे लिखाए लागल।
हम ३ दिसम्बरक' डोमनहिल शाखामे ज्वाइन केने रही, ६ दिसम्बरक' अयोध्यामे बाबड़ी मस्जिद ध्वस्त हेबाक समाचार अखबार सबहक मुख्य जगह नेने छलैक। हमरापर जे प्रतिक्रिया भेल ताहिसं धीरे-धीरे एकटा गीतक जन्म भेल :

मैं कभी मन्दिर न जाता
और न चन्दन लगाता
मंदिरों-से लोग मिल जाते जहां पर
बस वहीं पर
सर झुकाता
देर थोड़ी बैठ जाता
मुस्कुराता
गुनगुनाता, गीत गाता, मैं कभी मन्दिर न जाता।
ई रचना 'नवनीत'क दीपावली विशेषांकमे प्रकाशित भेल, एहि लेल

किछु पाठकक मधुर प्रतिक्रिया सेहो प्राप्त भेल।

एकटा बैंक प्रबंधकक रूपमे हम की अनुभव करैत छलहुँ से किछु अंशमे एहि गीतमे प्रगट भेल :

काजल की कोठरी में मैं
और मेरे साथ मेरा मन।

किछु और गीत सबहक पहिल दू पांती एना अछि :

'मै जगा तो
आज सूर्योदय हुआ
डालियों पे फूल भी खिलने लगे।'

'रास्ते दुकान हो गए
लोग परेशान हो गए।'

'तुम पहनो तो
शब्दों के कुछ
हार गूँथ कर लाऊं मैं।'

'जिन्दगी जब हुई जिन्दगी के लिए
हर घड़ी शुभ घड़ी आदमी के लिए।'

'मैं कहता हूँ चीज पुरानी घर के अन्दर मत रखो
वो कहती है कौन जानता बादल कब घिर आ जाए।'

'जंगलों के पार हो गई
मालती विचार हो गई।'

' सो गए तुम
    मैं जगा था रात भर।'

दैनिक भास्कर(बिलासपुर)मे रवि दिनक' एक पृष्ठमे एक कात साहित्यिक रचना रहैत छलैक। ओहिमे रचना पठबैत छलिऐक। कहियो-कहियो ओहिमे रचना प्रकाशित होमय लागल।

कहानी लेखन महाविद्यालय, अम्बाला छावनी द्वारा मासिक पत्रिका 'शुभतारिका' निकलैत छलैक। ओहिमे दू-तीन प्रयासक बाद दूटा लघु कथा 'रात और दिन','चन्द्रमा' और किछु गीत प्रकाशित भेल। 'हंस' पत्रिकामे सेहो एकटा लघुकथा 'संसार' प्रकाशित भेल। इंदौरसं प्रकाशित 'वीणा', मुंबईसं प्रकाशित 'नवनीत' आ लखनऊसं प्रकाशित पत्रिका 'सानुबंध'मे सेहो किछु रचना प्रकाशित भेल।
मैथिलीमे रचनाक सृजन बाधित भेल। मैथिलीक प्रसिद्द साहित्यकार जीवकान्त जी सं पत्राचार चलैत रहल।ओ मैथिलीक स्मरण दिअबैत रहैत छलाह।
सुपौलसं प्रकाशित मैथिली पत्रिका 'भारती मंडन' मे किछु रचना प्रकाशित भेल।
पहिनेक लिखल एकटा दीर्घ कविता छल, तकरामे किछु संशोधन केलहुं, ओ 'धारक ओइ पार' नामसं सुपौलसं प्रकाशित भेल। आदरणीय जीवकान्तजी ओकर भूमिका लिखने छलाह।
ओही अवधिमे किछु गजल हिन्दीमे लिखाएल आ 'तिरंगे के लिए' नामसं गजल संग्रह संवेदना प्रकाशन, अलीगढसं प्रकाशित भेल। सीवानक प्रोफेसर गंगानंद झा जी सेहो अवकाशप्राप्तिक बाद चंडीगढ़सं पत्राचारक माध्यमसं अपन पढ़ल कोनो प्रिय रचना आ ओहिपर अपन प्रतिक्रिया शेयर करैत छलाह, ताहूसं साहित्यसं जुडल रहबामे आनन्द प्राप्त होइत रहल।
बैंकक काज :
बैंक शाखाक मुख्य काज छलै कॉलरीक कर्मचारी-अधिकारी सबहक वेतन भुगतान। सभ मास एकसं पन्द्रह तारीख धरि बड्ड भीड़ रहैत छलै। बैंक बन्द होइत-होइत मुनहारि साँझ भ' जाइत छलै। शेष पन्द्रह दिन साँझमे ६ बजे धरि जरुरी काज भ' जाइत छलै।
सप्ताहमे एक दिन गैर-बैंकिंग कार्य दिवस होइत छलै, जाहिमे सभ

लंबित कार्यक निपटान क' लेल जाइत छलै।
बही सभ संतुलित रहैत छलै। किछु विवरण आदि बनयबाक लेल कहियो-कहियो अवकाशक दिन सेहो बैस' पडैत छलै।
शासकीय योजनान्तर्गत ऋण वितरणक किछु लक्ष्य सेहो रहैत छलै, ओहो पूर्ण करबाक रहैत छलै।
कॉलरीक करीब एक हजार एक सै कर्मचारी-अधिकारी लोकनिक वेतन भुगतान बैंक द्वारा होइत छलै। करीब ९०० कर्मचारी और बांचल छलाह जिनकर वेतन भुगतान बैंकक माध्यमसं करेबाक लेल कॉलरी प्रबन्धन द्वारा अनुरोध कएल जा रहल छलै।
शाखा द्वारा ई कहल जाइत छलै जे हमरा और स्टाफ भेटि जाएत तखने भ' सकैत अछि।
कॉलरी प्रबन्धन दुखी छल जे बैंक भवन, सभ स्टाफक लेल आवास,बिजली,पानि सभ निःशुल्क उपलब्ध करेबाक बादो बैंक शत प्रतिशत कर्मचारीक वेतन भुगतान करबामे सहयोग नहि क' रहल अछि।
हम स्टाफक बीच ई सुझाव देलिऐ जे हम सभ पाँच-पाँचटा कर्मचारीक खाता प्रतिदिन खोलि कॉलरी प्रबन्धनकें मदति करबाक आश्वासन द' सकैत छियनि, मुदा हमर अधिकारी एकरा उचित नहि बुझैत छलाह।
कॉलरी प्रबन्धन द्वारा खिसियाक' एकदिन हमर आ हमर अधिकारीक आवासक बिजली आ पानिक कनेक्शन कटबा देल गेल।
अस्थायी किछु जोगार लगाक' हम सभ दू दिन काज चलेलहुं,मुदा कॉलरी प्रबन्धनसं टकराव सेहो उचित नहि लागल, हमर अधिकारी सेहो कॉलरीक जी.एम.सं सम्पर्क करबाक सलाह देलनि। हुनका संगे जी.एम. साहेबक आवासपर गेलहुँ।
जी. एम. साहेब एहेन डेग उठ्यबाक लेल दुख प्रगट करैत अपनो

समस्याक निराकरणक अनुरोध केलनि जाहिसं बैंक द्वारा शत प्रतिशत कर्मचारीक वेतन भुगतानक लक्ष्य पूर्ण भ' सकनि।

अन्तमे यैह निष्कर्ष निकलल जे हम सभ प्रतिदिन कम-सं-कम पाँचटा नव खाता खोलि दियनि,जाहिसं ओहो अपन उच्चाधिकारीकें सूचित क' सकथि जे शत प्रतिशत भुगतान बैंक द्वारा करबाक दिशामे सहयोग प्राप्त भ' रहल अछि।

मैत्रीपूर्ण गप भेल आ हमरा सभकें डेरा घुरबासं पहिने डेरामे बिजली आ पानिक सुविधा आबि चुकल छल। ओकर बाद फेर कहियो कोनो तरहक व्यवधान नै उपस्थित भेल।

बैंकमे चोरी :

शाखाक स्ट्रांग रुमक दरबाजा बैंकक नियमानुकूल नहि छलैक। ई अनियमितता आरम्भेसं आबि रहल छलैक मुदा सक्षम अधिकारीक समुचित आदेशक अभावमे ओ कमी दूर नहि भेल छलैक।

एक राति चोर ताला तोड़ि स्ट्रांग रूममे प्रवेश क' गेल आ तिजोड़ीकें खोलबाक प्रयासमे तिजोड़ीक हैंडिल तोड़ि देलक,मुदा तिजोड़ी नहि खुजलै। नगद राशिक चोरी नहि भेलै, मुदा चोर सुरक्षा प्रहरी द्वारा राखल बन्दूक ल'क' भागि गेल।

सबेरे हमरा पता चलल त क्षेत्रीय प्रबंधककें सूचित केलियनि, थानामे एफ. आइ. आर. आ और जे किछु करबाक चाही, से शाखा द्वारा कएल गेलै।

जांच अधिकारी सभ एलाह, खोजी कुकुर आएल, नियमानुसार सभ किछु भेलै।

बन्दूक त नहि भेटलै, मुदा ओकर बीमाक नवीनीकरण भेल छलै, तें बीमित राशि शाखाकें भेटि गेलै।
तकरा बाद नियंत्रक कार्यालयक मार्गदर्शनमे बजटमे उचित संशोधन क'क' स्ट्रांग रूममे बैंकक नियमानुसार गेट लागि गेलै।
फेर कोनो अप्रिय घटना बैंक शाखामे नहि भेलै।

हमर दुपहिया वाहनक चोरी :
हमरा लग १९७९ क राजदूत मोटर साइकिल छल। ठीक रहैत छल त नीक जकाँ चलैत छल। तें एकरा हटबैत नै छलहुँ। तें नव गाड़ी नै कीनैत छलहुँ। भ' सकैत अछि जे लोककें हमर गाड़ी नीक नै लगैत होइ, भ' सकैए जे ककरो बर्दाश्त नै भेल होइ आ ओ हमर दुविधा समाप्त करबाक उद्देश्यसं एहेन डेग उठेने हो।
एक दिन हम स्नान करैत रही त पाल साहेबक पत्नीक आवाज सुनाइ पड़ल,'मैथिली,तुम्हारे पापा कल गाड़ी कहीं दूसरे जगह रख दिए थे क्या?
हमरा बुझैमे आबि गेल जे गाड़ी क्यो ल' गेल।
हम आरामसं स्नान-भोजन क' क' ऑफिस गेलहुँ।ओहिठाम किछु जरूरी काज सभ क'क' गेलहुँ थाना। एफ. आइ. आर. केर औपचारिकता पूर्ण क'क' आबि गेलहुँ। हमरा विश्वास छल जे हमर गाड़ी भेटि जाएत कारण दोसर क्यो ओकरा बहुत दूर धरि नै ल' जा सकैए।
एक बेर हम खडगवां गेल रही सरप्राइज चेकिंगमे। साँझमे वापस एबा काल ओहि शाखाक शाखा प्रबंधक सेहो संग भ' गेलाह, हुनका चिरिमिरी जेबाक छलनि। रस्तामे सात किलोमीटर लगभग जंगल आ

पहाड़ी क्षेत्र छै, ओही ठाम आबिक' चढ़ाइपर गाड़ी बन्द भ' गेल, ओहो बेचारे पाछूसं बहुत दूर धरि ठेललनि मुदा गाड़ी नै चलल।
अन्तमे ओ थाकिक' घूरि गेलाह, एकटा बस जाइत रहै, ओहीसं चलि गेलाह। हम कहुना क' ओकरा गुडकेने-गुड़केने बहुत देरीसं घर पहुँचलहुं। सभकें चिन्ता हुअ' लागल छलै, किछु गोटे हमरा तकैत आबि रहल छलाह,रस्तामे भेटलाह। दोसर दिन मिस्त्री ठीक क' देलक त फेर चल' लागल।
एक सप्ताह बाद बिजली मिस्त्री कहलक जे रस्तामे एकटा पुलियाक नीचाँ कोनो गाड़ी खसल छै,लोक सभक भीड़ लागल छै। हम बैंक गेलहुँ त थानासं सूचना भेटल जे गाड़ी भेटि गेल अछि, मुदा गाड़ी लेबाक लेल कोर्टमे किछु औपचारिकता करब' पडत।
ओकील साहेबक माध्यमसं किछु औपचारिकता पूर्ण करेलाक बाद गाड़ी हमरा भेटि गेल, किछु पार्ट्स ख़राब भ' गेल रहै से ठीक कराक' गाड़ी ल' अनलहुं।
ओ गाड़ी भेटि गेल ताहिसं लाभ ई भेल जे हमरा तत्काल दोसर गाड़ी लेबाक आवश्यकता नहि रहल आ हानि ई भेल जे नव गाड़ी नहि किनाएल आ बादमे ई गाड़ी एकबेर हमर बामा हाथक फ्रैक्चरक गबाह बनल।
ओ गाड़ी एखनो हमरा लग अछिए। यद्यपि कए बरखसं एकर उपयोग नै करैत छी आ गाड़ीपर चढ़ितो नै छी, मुदा कबाड़ी बला हाथें बेचियो नै पबैत छी, डर होइए जे कतहु कियो एकर दुरूपयोग क' क' हमरा जबाबदेहीमे ने फंसा दिए'।
२०.१०.२१
माएक संसार :
माएक संसारमे तीनटा बेटा,दूटा पुतोहु,एकता पोता,दूटा पोती,तीनटा बेटी,पाँचटा नाति आ सातटा नातिन, तीनटा भाए,तीनटा भाउज,आठटा

भतीजी, आठटा भतीजा, एकटा बहिन,पाँचटा बहिनपूत आ दूटा बहिनधी, ननदि,दूटा भागिन आ भगिनी सभ आ फेर हिनका सबहक आगू पीढ़ीक लोक सभ आ किछु पड़ोसिन सभ छलखिन।

माएक संसार सलमपुर,रुचौल,लखनपट्टी, शिशवा,घोंघौर,सोहराय ,नारायणपट्टीक अतिरिक्त दिल्ली आ मध्य प्रदेश धरि पसरल छलनि। जेठकी पुतोहु बहुत दिन धरि संगे छलखिन, फेर सालमे तीन-चारि बेर किछु-किछु दिन लेल आबि जाइत छलखिन। छोटकी पुतोहु सेहो थोड़े दिन संग रहलखिन। बादमे एसगर भेलीह त कोनो नातिनकें लखनपट्टी अथवा शिशवासं बजा लैत छलीह।

आब बेटा-पुतोहुक संगे रहती त गाममे बूढ़ा एसगर कोना रहथिन आ दुनू गोटे बेटा-पुतोहु संगे रहै जेताह त गामपर के रहत, घर-दुआरि के की हेतनि,ककरापर छोडिक' जाइ जेतीह। घरमे सांझो दै बला के रहतनि?

आब एसगर दिन बितयबाक समय आबि गेल छलनि। रातिमे बड़ी राति धरि मोन बौआइत रहैत छलनि दिल्ली, मध्य प्रदेश,गाम-गाम, भगवान-भगवतीसं प्रार्थना करैत रहैत छलीह, सभ धिया-पूता नीके ना रहै जाइ।

कखनो काल पेट आ कि माथ दुखाइत छलनि त चौकपर दबाइ दोकानसं दबाइ मंगाक' खा लैत छलीह। दू-चारि दिन ठीक रहै छलनि, फेर पुनरावृत्ति होइत छल।

एक दिन दोकान बला कहलकनि बाबूकें जे आब दबाइ ओना नै दियनु, जांच करबा दियनु बेर-बेर पेटमे दर्द किए भ' जाइत छनि। जखन जांच भेल त भ' गेल शुरू दैया-मैया, दौड़-धूप, चिट्ठी-पतरी,फ़ोन-फान।

हमरा ९ नवम्बर क' दिल्लीसं अनुज ललनजी द्वारा प्रेषित भागिन

अशोकक लिखल चिट्ठीसं आ तकरा बाद बाबूक चिट्ठीसं पता चलल जे माएक देह लीवर कैंसरक चपेटमे आबि गेल छनि आ गोरखपुरमे हनुमान प्रसाद पोद्दार कैंसर अस्पताल एवं शोध संस्थानमे इलाज सेहो शुरू भ' चुकल छनि।

मधुबनी शिक्षक संघक प्रेसमे प्रबंधक छलाह आशा भाइ, ओ गामसं समाचार पटना हमरा मामाकें दैत छलाह आ मामा हमरा ऑफिसमे फ़ोनपर सुचित क' दैत छलाह।

गोरखपुरमे माए लग हमर दूटा बहिन सच्ची आ बच्ची, दुनू छोट भाए ललनजी आ रतनजी और ललनजीक पत्नी छलखिन। बाबू गाम चल गेल छलाह, गाममे हुनक देख-रेख लेल नातिन विभा छलनि। किछुए मास पहिने हमरा टोलक एक गोटे अही बिमारीसं देह छोडि चुकल छलाह, माए हुनकर कष्ट देखिक' बहुत दुखी भेल छलीह, आब अपने एहि डकूबा बिमारीक चपेटमे आबि गेल छलीह।

हमहूँ एसगरे गोरखपुर पहुँचलहुं।

डा.ए.के. चतुर्वेदी सं सम्पर्क केलहुं, कहलनि जे एहि ठामसं नीक इलाज आनो ठाम कतहु नहि भ' सकैत अछि, तें टाटा मेमोरियल (मुंबइ) गेलासं कोनो विशेष लाभ नै भेटत।

सेकाइ चलैत छलैक। एकर प्रभाव सेहो देखाइत छल।

पटनासं मामी संग मामा सेहो आबि गेल छलाह।

माएक संग गोरखनाथ मन्दिर गेलहुँ।

ललनजी दुनू गोटेक संग हम गामो गेलहुं। वरंडापर माएक लेल एकटा कोठलीक व्यवस्था केलहुं।

घुरिक' हम फेर गोरखपुर एलहुं। माएकें खून चढ़लनि।

डॉक्टर साहेब ११ जनबरीक' आब' कहलकनि।

माएक संग सभ गोटे गाम गेलहुँ।

हम डोमनहिल वापस गेलहुँ।

एहि बीच माएकें ल'क' निर्धारित तिथिक' रतनजी गोरखपुर जाक' फेर गाम घूरि गेलाह।

१८ फरबरी क' पटनासं मामाक सन्देश भेटल जे माएक हालत खराब भ' गेल छनि।

२० क' जीपसं परिवार संग विदा भेलहुँ। २१ क' साँझमे ७ बजे गाम पहुँचलहुं। दिल्लीसं ललनजी एलाह, सच्ची एलीह।

दिन-दिन माएक हालत खराब होइत गेलनि आ ३ मार्चक' रातिमे लगभग ९ बजे देह छोडि देलनि।

वसन्तक १२ वींक परीक्षाक तिथि १२.०३ सं ४.४ धरि छलनि, ओ परीक्षा नहि द' सकलीह। ओ अपन माएक संग गामेमे रहि गेलीह।

मैथिली आ विवेकक परीक्षाक तिथि निकट छलनि। हिनका दुनू गोटेक संग हम २९ मार्चक' डोमनहिल पहुँचलहुं।

मैथिलीक बोर्ड परीक्षा भेलनि। परीक्षा केन्द्रपर जे अनुशासन देखलहुं, से ओहि समय बिहारमे दुर्लभ छल। नीक लागल।

बहुत दिन धरि पढ़ाइ लिखाइमे बाधा उपस्थित हेबाक अधलाह प्रभाव धिया-पुताक परीक्षा आ ओकर परिणामपर पडलै। धिया-पुतापर कोनो प्रभाव नहि पड़ै ताहि लेल कोनो दोसर व्यवस्था करब हमरा बूते नहि पार लागल।

२०/१०/२१

माएक बाद :

बच्ची नैहरमे भातिजक उपनयनमे सम्मिलित भेलाक बाद अपन बहिनपूत राजू कें संग क'क' वसन्त संगे १५ जूनक' डोमनहिल पहुंचि गेलीह।
गाममे बाबू आ रतनजीक संग बहुत दिन धरि हमर भावहु नहि रहि सकलीह, २४ जूनक' भाएक संग कहुनाक' सलमपुरसं दानापुर पहुंचि गेलीह।
गाममे बाबू आ हमर अनुज रतन जी रहि गेलाह।
हमर तीनू बहिन अपन-अपन संसारमे बाझल छल, ककरो पलखति नै छलै जे हिनका सबहक देख-रेख गाम आबिक' क' सकितनि। हमहूँ ओहि स्थितिमे नहि छलहुँ जे पत्नीकें गाममे छोड़ि दितियनि। हमरा गामसं किछु लोक पत्र द्वारा सुचित केलनि जे हिनका सभ लेल कोनो व्यवस्था सुनिश्चित करू। हम कोनो आदमी राखि लेबाक सुझाव देलियनि, मुदा गाममे से व्यवस्था नहि भ' सकलनि।
हमरा लग वसन्त अस्वस्थ भ' गेल छलीह, टाइफाइड भ' गेलनि,ओत' नहि ठीक भेलनि त हम पटना ल' गेलियनि।
ओही समयमे हम गाम जाक' बाबू आ रतनजीक हाल देखि एलहुं। दुनू गोटे दुखित पड़ि गेल छलाह, मुदा ठीक भ' भेल छलाह। हम पुनः गाममे कोनो आदमी तकबाक सुझाव दैत घूरि गेल छलहुँ।
माएक पहिल बरखीमे एक बेर फेर जुटान भेलै,मौसी एलीह, मामी एलीह,ललनजी एलाह, घर भरलै किछु दिन लेल, भोज-भात भेलै आ फेर चारि-पाँच दिन बाद स्थिति पूर्ववत भ' गेलै।
सभ क्यो अपन-अपन दुनियाँक दुख-सुखमे ओझरा गेल आ बाबू गाममे कोनो आदमीक समूल्य सेवा नहि प्राप्त क' सकलाह। एकटा एहेन समय एलै जे अपना संसारमे बाबू एसगर रहि गेलाह।
बच्चीक स्वास्थ्य :
एक दिन बच्चीकें बहुत घबराएल देखलियनि, कहलनि,'हमरा धिया-

पूताकें देखब।'

डॉक्टरसं सम्पर्क केलहुं। बी. पी. बढल छलनि। हिनका लेल दौड़-धूप शुरू भेल, किछु दिन होमियोपैथीसं आ तकर बाद अंगरेजी दबाइसं उपचार हुअ' लगलनि।

कहियो डोमनहिलक अस्पताल त कहियो रीजनल अस्पताल दौड़' लगलहुं। बादमे पटना आबि डा. अरुण तिवारीसं सलाह लेलहुं। ओ बी.पी.क दबाइ एमटास- ५ लीखि देलखिन। हुनकहि सलाहसं दबाइ लेलासं लाभ भेलनि। कय साल धरि अही दबाइसं ठीक रहलीह।

बाबूक संग डोमनहिलमे :

बाबू अपन अस्वस्थ शरीरक संग घरक ओगरबाही करबासं ऊबि गेलाह। हुनका लग दू टा विकल्प छलनि डोमनहिल चल जाथि जत' हम सभ छलहुँ अथवा दिल्ली जाथि जत'दुनू छोट पुत्र ललनजी, रतनजी छलखिन आ एकटा बेटीक परिवार छलनि।

दिल्लीमे एक बेर पहिनहुं रहि चुकल छलाह, ओहि ठामक रस्ता सेहो जानल छलनि, तें ओतहि जेबाक निर्णय लेलनि।

कैला खेतक काज क' दैत छलनि, ओकरा दरबज्जापर सुतबाक लेल कहलखिन। हमर पितिऔत भाए दिलीपकें कहलखिन, हमरा कहुनाक' दिल्ली पहुंचा दैह।

बाबू दिलीप संगे दिल्ली पहुंचि गेलाह।

फेर आश्रय-स्थल भेलनि छोट बेटीक घर जत' बेटी,जमाए,नाति,नातिन आ दूटा पुत्र सेहो छलखिन।

मोन ठीक रहै छलनि त ओशोक प्रवचन सुनैत छलाह, अस्वस्थ रहै छलाह त डा.पाल अथवा चड्ढा नर्सिंग होम जाक' किछु दिनमे ठीक भ'क' आबि जाइत छलाह।

हमरा सभटा पता रहैत छल। हम हुनक इलाज हेतु आर्थिक आवश्यकताक प्रतिपूर्ति करबाक प्रयास करैत छलहुँ।
बहुत दिन धरि एहि तरहें चलल।
मुदा, एकटा समय एलै जे चड्ढा नर्सिंग होम सेहो इलाज करबासं असमर्थ भ' गेल।
हमरा सूचना भेटल जे आब स्थिति ठीक नहि छनि आ कखन की भ' जेतनि तकर कोनो ठीक नहि।
फेर हमरा समक्ष प्रश्न ठाढ़ भ' गेल जे दिल्ली एसगर जाउ कि सभ गोटेक संग जाउ।
एसगर जाएब त हिनका सबहक सुरक्षाक की हेतनि आ सभकें संग ल' जाउ त हिनका सबहक पढ़ाइक की हेतनि।
जीवनमे कय बेर एहेन समय अबैत छैक जे लगैत छैक जेना परिवार समेत कोनो नावपर कोनो नदी पार क' रहल छी आ नाव ड़ूब' लागल अछि आ तत्काल निर्णय लेबाक अछि जे ककरा-ककरा आ कोन-कोन चीजकें बचाएब सुनिश्चित करू।
हम ओहि समय सभसं बेशी अपनाकें बचयबाक कोशिश करैत छी, परिणाम किछु नीक आ किछु अधलाह होइत अछि, किछु चीज बचि जाइत अछि, किछु चीज नहि बचि पबैत अछि, परिणाम जे अबैत अछि,तकरा अस्तित्वक निर्णय मानि संतोष क' लैत छी।
हम बैंकक नोकरीमे छलहुँ, खाजानाक एक सेट कुंजी हमरो लग रहैत छलैक। बिना क्षेत्रीय प्रबंधकक आदेशक ने हम ककरो ओ कुंजी द' सकैत छलहुँ ने ओ स्थान छोडि सकैत छलहुँ।
हम पिताक समुचित इलाजक हेतु दिल्ली जेबाक लेल क्षेत्रीय प्रबंधकसं अनुमति हेतु प्रार्थना केलहुं किन्तु अनुमति भेटि नहि रहल छल। क्षेत्रीय प्रबंधक महोदयकें कोनो अधिकारी उपलब्ध नहि भ' रहल छलखिन जिनका हमरासं चार्ज लेबाक लेल पठा देथिन। एना कय

दिन चलल।

एक दिन हमर बहिनो फोनपर सुचित केलनि जे डॉक्टरक अनुसार आब किछु घंटाक मेहमान छथि। हम दुखी भ’क’ क्षेत्रीय प्रबंधक महोदयकें कहलियनि जे एहि स्थितिमे हमरा की आदेश दै छी,तखन ओहो कहलनि जे कोनो सीनियर क्लर्क कें चावी द’क’ अहाँ निकलि जाउ, हम कोनो ने-कोनो अधिकारीकें आइ पठा देबै।

हम सपरिवार निकलि गेलहुँ विना आरक्षण के ट्रेनसं दिल्ली जेबाक लेल।

संयोग भेलै जे अनुपपुर जं. पर हमरा पाँचो गोटेक लेल आरक्षण भेटि गेल। हम सभ ४ मइ (१९९६)क’ साँझमे दिल्ली पहुंचि गेलहुँ, बाबू अचेत नहि भेल रहथि। हमरा सभकें देखि किछु सकारात्मक परिवर्तन भेलनि,से सभकें अनुभव भेलनि।

कहुना राति बीतल। सबेरे ऑटो रिक्शासं चड़्ढा नर्सिंग होम ल’ गेलियनि। डा. ई. सी. जी. रिपोर्ट देखि कहलनि हम सभ किछु नहि क’ सकैत छी।

पुछलियनि, ई विचार कहू जे कत’ ल’ जइयनु जत’ सुधारक किछुओ आशा क’ सकी, त कहलनि, सेंट स्टीफेंसमे देखि सकैत छी, ओना हिनका लग समय बहुत कम छनि।

तत्काल हम सभ ओही ऑटो रिक्शासं सेंट स्टीफेंस अस्पताल बिदा भ’ गेलहुँ।

हमर बहिनो स्कूटरसं चललाह,बहिन सेहो पाछाँ बैसलि। सभ गोटे जल्दी-सं-जल्दी अस्पताल पहुंच’ चाहैत रही।

दुर्घटना भ’ गेलै, कोनो स्पीड ब्रेकर लग हमर बहिन स्कूटरसं नीचां खसि पडलीह, सड़क पर घिसिया गेलीह,हाथ बहुत छिला गेल छलनि।

बाबू आ सच्ची दुनू गोटेकें इमरजेंसी वार्डमे भरती कराओल गेलनि। चिन्ता दुगुना भ' गेल।
सच्ची कें फ्रैक्चर नै भेल छलनि, तें प्लास्टरक'क' किछु दबाइ सभ द'क' छोड़ि देलकनि।
बाबू द' कहल गेल जे हिनका लेल २४ घंटा भारी छनि, २४ घंटा रहि गेलाह त बूझू एखन बचि जेताह।
बाबू बचि गेलाह। १५ तारीखक' बाबू अस्पतालसं मुक्त भेलाह। मुदा चलबा-फिरबा योग्य हेबामे समय लागि गेलनि। दू बेर पुनः जांच लेल जाए पडलनि। डॉक्टर दबाइ लीखि देलखिन आ कतहु ल' जेबाक सह्मति सेहो देलनि।
१७ जूनक' बाबूक संग हम सभ गोटे दिल्लीसं डोमनहिल वापस पहुंचि गेलहुँ।
ओत' बाबूकें आँखिक कष्ट भ' गेलनि। आंखिक डोक्टरसं सम्पर्क कय ड्रेसिंग लेल किछु दिन ल' गेलियनि।
तकर बाद किछु दिन डेरापर रहथि आ किछु दिन अस्पतालमे।
डेरापर रहथि त साँझक' बहुत गोटे भेंट करय अबैत छलखिन, रविजी आ दुबेजी नियमित रूपसं अबैत छलाह आ बाबू गीत-गजलक आनन्दमे लीन भ' जाइत छलाह। हमरो लिखबा लेल प्रतिदिन तगादा करैत छलाह, रविजीकें सेहो तगादा करैत छलखिन, रचनापर अपन प्रतिक्रिया सेहो दैत छलखिन।
बाबू कैसेटमे पलटू दादा द्वारा गाओल हमर लिखल गीत सभ सेहो सुनैत छलाह। चक्रधर झा,सभापति चौधरी,नवीन मिश्र,रामजी सिंह सेहो सभ अबैत रहैत छलखिन जिज्ञासामे।
एस ई सी एल केर क्षेत्रीय अस्पतालक डा.उमेश मिश्र जीक दबाइसं ठीक रहैत छलाह, हुनक प्रशंसक भ' गेल छलाह। कखनो डा. साहेब बजबैत छलखिन, कखनो हम जाक' स्थिति कहैत छलियनि त दबाइ

लीखि दैत छलाह, से कीनिक' देब' लगैत छलियनि। आवश्यकतानुसार डा.साहेबक सुझावपर किछु दिन लेल अस्पतालमे भर्ती सेहो कर' पडैत छल।

अपन लोक : अपन दुख :

एक दिन बाबू प्रसन्न स्थितिमे पोता-पोती सबहक संग गप करैत रहथि। छुट्टीक दिन छलै। हमहूँ डेरेमे दोसर कोठलीमे रही, किछु लिखैत-पढैत रही।

बाबू अपन किछु संस्मरण सुनबैत धिया-पूता लग बजलखिन जे एकटा समय छलै जे एम एल ए आ एम पी हमरा जेबीमे रहै छल।

बच्ची साल भरिसं बाबूक लेल , धिया-पूताक लेल आ हमरा लेल एसगरे बहुत रास काज करैत छलीह, कोनो काज लेल डेरामे नोकर चाकर राखब नीक नहि लगैत छलनि। एसगरे भोजन,जलखै, पथ्य, झाड़ू-पोछा, कपड़ा साफ़ करब आदि काजमे परेशान रहैत छलीह, बारह बजेसं पहिने चाह छोडि किछु मुंहमे नै दैत छलीह , बी.पी.क दबाइ सेहो समयपर नहि खाइत छलीह।

क्यो पूछि देलकनि, 'हं गे माए, एम.एल.ए.-एम.पी. बाबाक जेबी मे रहै छलनि?'

बच्ची जोरेसं कहलखिन,'ऊंह....हमरा सभटा देखल अछि।'

हम दूनू बात सुनने छलहुँ :

'एमेले एम पी हमरा जेबीमे रहै छल।'

'ऊंह....हमरा सभटा देखल अछि।'

हमरा हरिमोहन बाबूक कथा 'अलंकार शिक्षा' मोन पड़ि गेल छल।

बच्चीक बात अप्रिय हमरो लागल, मुदा हम ओहि एक पांती ' ऊंह...हमरा सभटा देखल अछि' मे बच्चीक मोनक वेदनाकें

देखलहुं...एकटा अभावक इतिहास...गोठुल्ला एतेक टा घरमे द्विरागमन, भरि टोलक लोकक करजा, घर लेल गहना बिकाएब,आवश्यकताक पहाड़ आ एकटा नोकरीपर सभटा व्यवस्थाक भार .....।
मुदा बाबूक लेल ई वाक्य एखन बड़ड असह्य पीड़ाक कारण बनि गेल छलनि,एकटा हलचल मोनमे उठि गेल छलनि, की करथि,एको पल आब एत' रहब कठिन लाग' लगलनि, अपन सभ कपड़ा,दबाइ आदि झोडामे रखलनि आ विदा भ' गेलाह। पोता-पोती रोकलकनि, नहि रुकलाह, डेरासं बाहर निकलि गेलाह।
हम उठलहुं, बाहर गेलहुँ, झटकारिक' हुनका लग पहुँचलहुं।
पुछलियनि, 'कत' जेबै?'
कहलनि,' हम दिल्ली जा रहल छी, हमरा नहि रोकू।'
पुछलियनि, 'ककरा संगे जेबै दिल्ली?'
कहलनि, 'विजय बला झाजी कहने छथि, हम दिल्ली जाइत अबैत रहै छी...हुनके संग जेबै, हमरा आब नै रोकू।'
हम कहलियनि,'दिल्ली जेबाक हएत त हमहीं पहुंचा देब, मुदा एखन किए? अपने संसारसं रूसिक' जाएब?' हम जनैत छी अहाँ आहत छी, मुदा ईहो त देखू जे साल भरिसं अहाँक सेवा जे क' रहल अछि तकरा एकटा वाक्य लेल क्षमा नहि क' सकैत छिएक?
बाबू ठाढ़ भ' गेलाह।
हम कहलियनि, ओकर की त्याग आ योगदान छै घरमे , से अहाँ त जनैत छी।
बाबूक आँखि डबडबा गेलनि।
'अहाँ देखै छिऐ जे आइ धरि नोकर चाकर नहि राखि, मोनो खराब रहै छै तैयो अपने सभ काज करिते रहै छै,बी.पी.क दबाइ सेहो समयपर नहि खाइत छै, एहेन स्थितिमे ओकर एकटा अप्रिय वाक्यक कारण ओकरा एतेक पैघ अपयश,एतेक पैघ दंड देबै, से उचित

लगैए?'

बाबू कान' लगलाह।

कहलनि, 'हमरा अहाँ बड़का अपराधसं बचा लेलहुं।'

बाबू घूरि एलाह।

घरमे बच्ची सेहो दुखी भेल पड़लि छलीह, हमरा सबहक आहट पाबि उठलीह, चाह बनौलनि।

सभ गोटे प्रसन्न मोनसं चाह पिबै गेलहुँ।

तकर बाद फेर कहियो एहेन स्थिति नहि आएल।

दुर्घटना :

बाबूक लेल निरन्तर डा.साहेबक सम्पर्कमे रहय पड़ैत छल।

एक बेर साँझक' डा.साहेबसं सम्पर्क क' क' घुरैत रही, रस्तामे मोटर साइकिलक आगाँ एकटा सुगर आबि गेलै, हमर गाड़ी खसि पड़ल आ हम सड़कपर गाडीक संग किछु दूर घिसिआइत गेलहुँ जाहिसं हमर बामा हाथमे फ्रैक्चर भ' गेल। एक आदमी हमरा डोमनहिल अस्पताल पहुंचा देलक।

बिलासपुर जाक' प्लास्टर कराब' पडल आ डेढ़ मास छुट्टीमे रह्य पड़ल। बाबूक इलाजमे दौड़-धूप लेल अनुज रतनजीकें बजब' पड़ल। जाधरि हमरा हाथमे प्लास्टर रहल रतनजी डेरा आ अस्पतालक चक्कर लगबैत रहलाह।

विवेकक उपनयन :

विवेकक उपनयन हेबाक छलनि।

गाममे जेना उपनयनक विधि-विधान छै, तेना करबामे बहुत खर्च आ बहुत समयक आवश्यकता छलै। गाम जाक' करू त कम-सं-कम पन्द्रह दिनक छुट्टी ल'क' जाउ, ओते दिन सभ धिया-पुताक स्कूल-

कॉलेजक पढ़ाइ सेहो छुटतै, से जानि हम विकल्पक खोज कर' लगलहुं।

हरिवंश राय 'बच्चन'क आत्म-कथा पढने रही, ओहिमे ओ लिखने छलाह जे तेजीक नैहरमे केश कटयबाक चलन नहि छलनि, मुदा बच्चन जीक परिवारमे बहुत विधि-विधानसं पहिल बेर लड़काक केश कटाएल जाइत छलैक, बच्चन जी हजामकें आवासपर बजाक' अमिताभ आ अजिताभक केश उतरबा देलखिन।

बच्चन जीक आत्मकथा पढ़िक' लागल रह्य जे समय आ परिस्थितिक अनुसार परम्परामे किछु परिवर्तन कएल जा सकैत अछि।

हम विचार केलहुं त लागल जे एखन जाहि तरहें गाममे उपनयन भ' रहल छै, आरम्भमे अथवा बहुत दिन पहिने एहेन नहि छल हेतै, ओहि समय स्त्रीक शिक्षा आवश्यक नहि मानल गेल हेतै अथवा गुरूक आश्रममे जाक' पढबाक चलन लड़केक लेल आवश्यक मानल गेल हेतै, तें लड़कीक उपनयन नहि करबाक आ लडकेक लेल गुरूक आश्रममे विद्याध्ययन करबाक लेल पूर्व तैयारीक ध्येयसं किछु विधि कएल गेल हेतै जाहिमे किछु-किछु समय-समय पर जुटैत चल गेलै आ वर्तमानमे जे स्वरूप, जे विधि-विधान चलि रहल अछि ताहिमे आवश्यक कम आ अनावश्यक बेशी भ' गेल छै।

कोनो एहेन संस्था नहि छैक जे अध्ययन करै जे कोन-कोन अवसरपर चालू विधि-विधानमे कतेक आ कोन प्रकारक संशोधनक आवश्यकता छै आ तदनुसार अपन सुझाव दै आ लोक ओकर पालन करय। एहेन स्थितिमे व्यक्तिगत रूपसं कियो आवश्यकतानुसार कोनो परिवर्तन करैत जाए, सैह व्यवहारिक लगैत छैक।

एक दिन दुबेजी आचार्य श्री राम शर्माक विषयमे किछु सूचना देलनि, से नीक लागल। श्री राम शर्माक कहब छलनि जे विवाह आ अन्य संस्कारक विधि-विधानमे अनावश्यक बहुत खर्च करब भ्रष्टाचारकें

जन्म दैत अछि। ओ कहैत छलाह जे कम-सं-कम खर्चमे सभ संस्कारक पालन करू। ओ एकरा व्यावहारिक रूपमे कोना कएल जाए सेहो देखबैत छलाह। हुनक अनुयायीक संख्या सेहो संतोषप्रद छलनि। जहां-तहां शिविर लगबैत छलाह,लोकक‌ें जगबैत छलाह,किछु लोक और जुटि जाइत छल। सीवानमे सेहो एक बेर हुनक कार्यक्रमक झलक देखने रही, मुदा ओहि समय ओतेक गंभीरतापूर्वक एहि विषयपर विचार नहि केने रही।

एक दिन दुबेजी सुचित केलनि जे आचार्य श्रीराम शर्मा जीक शिविर चिरिमिरीमे लागि रहल छनि। शिविरमे जाक' देखलहुं। नीक लागल। बच्चीकें सेहो ल' जाक' देखेलियनि। हुनको नीक लगलनि। बाबू त पहिने विरोध केलनि, मुदा जखन अपनो जाक' देखलखिन त नीक लगलनि। ओहिठामक व्यवस्थापकसं गप केलहुं।उपनयनक तिथि सेहो निर्धारित रहै। घरमे सभ गोटेक बीच सहमति भ' गेल। सभ गोटे जीपसं गेलहुँ। ओही शिविरमे ४ जनवरी १९९८ क' विवेकक उपनयन भ' गेलनि।ज्ञानक सभ बातक समावेश भेलै। अनावश्यक कोनो बात नहि भेलै। दान-पात्रमे स्वेच्छासं जे देलिऐ सैह, कोनो बन्धन नहि रहै, घर आबि साँझमे लगक पाँच-सात आदमीक संग भोजन करै गेलहुँ।

बहुत दिनक बाद गाम गेलहुँ त एक गोटे आबि सुचित केलनि जे अहाँ द' सुनलहुं त हमरो साहस भेल आ हमहूँ मधुबनीमे गायत्री शिविरमे उपनयनक संस्कार पूर्ण केलहुं। हमरा नीक लागल।

लीखसं हटिक' चलबामे अपन मोने नै मानैत रहै छै, मोनकें मजबूत बनयबाक लेल सत्संग अथवा महापुरुषक जीवनी अथवा आत्मकथा पढबाक चाही।

जे समस्या हमरा सोझाँ अछि से पूर्वमे सेहो किनको सोझां अवश्य

आएल हेतै, ओहि स्थितिमे ओ कोन रस्ता पकड़लनि, से जनलासं मोन मजबूत होइत छैक।
गाममे अधिक ठाम भोजकें प्रधानता देल जाइत छैक, ब्राह्मण भोजनक प्रधानता।एहिमे मुख्य उद्देश्य गौण भ' जाइत अछि।किछु गोटे करजा ल'क' अथवा खेत भरना ध' क' अथवा बेचियोक' भोजक परम्पराक पालन करब धर्म बुझैत छथि।
शास्त्र और परम्पराकें ठीकसं बुझबाक आवश्यकता छै। जाहि समयमे ब्राह्मण लोकनि विद्याध्ययन आ विद्यादान मात्र करैत छलाह, भविष्य लेल संचय नहि करैत छलाह, पाँच घर भीख मांगिक' जीवन-यापन करैत छलाह, ओहि समय ब्राह्मण भोजनक औचित्य आ महत्व बूझल जा सकैत अछि। वर्तमान समयमे ओ स्थिति नहि अछि, तें अपन-अपन विवेकसं आ परिस्थितिक अनुकूल नीक परम्पराक समावेश कएल जा सकैत अछि। जीवनकें सरल, सहज आ स्वस्थ बनयबाक प्रयास होइत रहबाक चाही।कोनहु आयोजनमे अनावश्यक भीड़सं आ अनावश्यक खर्चसं बचबाक चाही।
चिन्तक लोकनि कहैत छथि जे बच्चाकें तन-मनकें स्वस्थ रखबाक विधि सिखयबाक चाही, खूब श्रम करब आ सदिखन इमानदारी आ सत्यक मार्गपर चलबाक आ केहनो स्थितिमे गलत मार्गपर नहि चलबाक बात सिखेबाक आयोजनक उत्सव हेबाक चाही उपनयन।

बाबूक अंतिम अध्याय :

बाबू दिल्लीसं एलाक बाद डेढ़ सालसं बेशी धरि कहुना रहलाह। फेर एक बेर रीजनल हॉस्पिटलमे भर्ती भेलाह। पलटू मुखर्जी दादा आएल रहथिन भेंट कर' त अस्पतालेमे हुनका बाबू गीत सुनयबाक लेल जिद्द कर' लगलखिन। दादा हुनका भरोस देलखिन जे अहाँ अस्पतालसं डेरापर जाएब त हम अहाँकें एक दिन अवश्य आबिक'

गीत सभ साज-बाजक संग सुनाएब।
बाबू अस्पताल सं डेरापर आबियो गेलाह। अस्पतालमे ग्लूकोज बहुत चढल रहनि, बाबूकें भेलनि जे आब एकदम ठीक भ' गेल छी।
डॉक्टर कहने छलाह जे यदि एहि अवस्थामे फ्रैक्चरसं बाँचल रहथि त किछु मास अथवा सालो जेना-तेना जीबैत रहि सकैत छथि।
हम सभ सतर्क रहैत छलहुँ जे ओहेन स्थिति नहि आबनि, मुदा मृत्यु त कोनो-ने-कोनो रस्ता ताकिए लैत अछि, ओकरा के सभ दिन रोकि सकैत अछि !
एक दिन अपनेसं कुरसी ल'क' बाबू कोठलीसं बाहर निकलि गेलाह आ कुरसी नेने खसि पड़लाह। कमजोर देह, बिमारीसं टूटल देह छलनि, डांडमे फ्रैक्चर भ' गेलनि।

ओहि दिन जे बाबू खसलाह से फेर उठिक' ठाढ़ नहि भ' सकलाह, बिलासपुरमे डॉक्टरसं सम्पर्क केलहुं। डॉक्टर सड़नसं रक्षाक लेल किछु दबाइ लीखि देलनि आ कहलनि, आब पैघ सपना देखब छोड़ू। बाबू सेहो हिम्मति हारि गेलाह।
३० अप्रैलक' रातिमे स्थिति ख़राब देखि रीजनल अस्पताल ल' गेलियनि। हमरा संगे सेंट्रल स्कूलक किछु शिक्षक सेहो छलाह।
डॉक्टर आला ल'क' जांचिक' कहलनि, 'अब नहीं हैं।'
घर घुरबाक लेल साधनक व्यवस्था नहि भ' रहल छल।
अस्पतालक निदेशक मोहन्ती साहेब उडीसाक छलाह।
हमरा संग सेंट्रल स्कूलक शिक्षक छलाह शीत सर, ओहो उडीसाक छलाह। ओ कहलनि, रुकिए मैं मोहन्ती साहब को कहता हूँ, मेरा उनसे अच्छा सम्बन्ध है।
शीत सर मोहन्ती साहेबकें फोन क'क' कहलखिन सभ बात आ

एम्बुलेंसक व्यवस्थाक अनुरोध केलखिन।
मोहन्ती साहेब कहलखिन,आपने मुझे सूचित कर दिया, अब तो नियमानुसार कल पोस्टमार्टम के बाद ही डेड बॉडी दी जा सकती है, कल शाम हो जाएगा।
सभ विभागक अपन-अपन नियम होइ छै। मोहन्ती साहेब मजबूर छलाह, शीत सरकें कहलखिन, मुझे बिना कहे ले गये रहते तो अलग बात थी, मुझे कह दिया तब तो नियमानुसार चलना होगा।
शीत सर अपनाकें दोखी मानैत हमरासं क्षमा याचना कर' लगलाह।
हम कहलियनि, अहाँ त हमरा मदति कर' चाहैत छलहुँ,अहाँ अपनाकें दोखी किए मानैत छी, भ' सकैत अछि हमर पिता मरियोक' हमरा किछु सिखयबाक कोशिश क' रहल होथि।
डेड बॉडीकें आइस रूममे सुरक्षित रखबाक लेल शुल्क जमाक' क' बैसिक' भोरक प्रतीक्षा कर' लगलहुं।
शीत सर सेहो भरि राति हमरे संग रहलाह।
भोरे हम डेरामे खबरि क' क' रविजी ओत' गेलहुं।
रविजी दुबेजी ओत' ल' गेलाह।
दुबेजी गिरिजी ओत' ल' गेलाह।
गिरिजी कहलनि, चलै चलू अस्पताल।
तीनू गोटे विदा भेलहुँ।
रीजनल अस्पताल लग गिरिजी कहलनि, आप लोग चलिए,हम तुरंत आ रहे हैं।
हम सभ अस्पताल गेलहुँ।
किछुए कालमे कतहुसं फोन एलै।
डॉक्टर साहेब कहलनि, आप ले जा सकते हैं, एम्बुलेंस भी आ रहा है।
हम पुछलियनि,'और पोस्टमॉर्टेम?'

कहलनि, आदेश मिल गया है, आप ही चार लाइन लिख दीजिए कब से बीमार थे,अब पोस्टमॉर्टेम की जरुरत नहीं है। हम संक्षेप मे लिखिक' देलियनि, रवि जी,दुबेजी,गिरि जी तीनू गोटे गबाहक रूपमे हस्ताक्षर केलखिन।

गिरिजी सभ बात कहलनि।

ओ कोनो नेताजी लग गेल छलाह, हुनका सभ बात कहलखिन,ओ अस्पतालक सम्बन्धित अधिकारी सभकें कहलखिन, ठाकुर साहब से विवरण लिखाकर, उस पर गवाहों का हस्ताक्षर लेकर डेड बॉडी सुपुर्द कर दीजिए, प्रबन्धन आ थाना मानि गेलै।

एम्बुलेंस सेहो उपलब्ध भ'गेल।

किछु गोटे लकड़ीक प्रबन्ध केलनि।

रविजी,दुबेजी,गिरिजी ई तीनू गोटे त गत लगभग दू बरखसं बाबूक जिज्ञासामे अधिक काल अबिते रहैत छलाह, अस्पतालोमे जाक' देखैत रहैत छलखिन, ई सभ त रहबे करथि, विवेक छलाहे, नवीन मिश्रजी,चक्रधर झा जी,मायाकांत झा जी,दुबे जीक छोट भाए,दीक्षित जी,मुखिया जी, राजेंद्र अग्रवाल,अशर्फी मंडल,सुरेश प्रसाद साहु,विजय कुमार श्रीवास्तव, दल प्रताप,श्याम किशोर, मथुरा नाई, बैंकक स्टाफमे बालाकृष्णनजी,तिग्गाजी,खडग सिंह,राम कृपाल और बहुत गोटे संग आबि गेलाह। मुखिया जीक नेतृत्वमे औपचारिकता हुअ' लागल।

सभ औपचारिकताक संग आवाससं किछुए दूरपर अन्त्येष्ठिक प्रबन्ध कएल गेल।

साँझमे नवीन मिश्रजी हल्दीबाड़ी गेलाह। पी.सी.ओ.सं दिल्लीमे दुनू भाए, बहिन-बहिनोकें आ पटनामे मामाकें फोनसं सूचना द' देल गेलनि।

गयामे श्राद्धक व्यवस्था :

दिल्लीसं दुनू अनुज ललनजी आ रतनजी एलाह, बहिन सच्ची बुच्चीक संग एलीह।

बसंतक बी.ए.अंतिम वर्षक परीक्षा लग आबि गेल छलनि। चारि साल पहिने मायक श्राद्धक समय गाम मे रहबाक कारण हिनकर परीक्षा छूटि गेल रहनि आ दोसर साल बारहवींक परीक्षा देबामे बहुत कष्ट भेल रहनि। आब एहि बेर यदि गाम जाक' श्राद्धक सभ काज करै छी त फेर बहुत झंझट उपस्थित हएत, तें विकल्पपर विचार करै गेलहुँ।

कय गोटेसं विचार-विमर्श भेल।

अन्तमे गयामे श्राद्ध क्रिया संपन्न कय डोमनहिल आबि जते गोटे कठियारी गेल छलाह हुनका सभकें आमंत्रित कय भोजक औपचारिकता पूर्ण करबापर सहमति भेल। अस्थि सेहो ओतहि विसर्जित करबाक निर्णय लेल गेल।

पटनामे छोटका मामा छलाह, हुनका सभ बात कहि देल गेलनि।

हम सभ गोटे डोमनहिलसं एकटा जीप आरक्षित क' क' अंबिकापुर होइत गरबा रोड जंक्शन पहुँचलहुं। हम अपने संगमे अस्थि सेहो ल' नेने रही।

पटनासं मामा सेहो एलाह।

गयामे फल्गू नदी छथिन, हुनका गुप्त गंगा कहल जाइ छनि।

किछुए माटि हटेलासं जल निकलि जाइत छैक। ओना ओ नदी सूखल रहैत छैक।

विद्यापतिक ओ कथा पढने रही, सिमरियासं बहुत पहिनहि कहार सभकें रोकि देलखिन, सभ थाकि गेल छल, कहलखिन जे हम एतेक दूर धरि आबि गेल छी त माए अपन पुत्र लेल किछु दूर नहि आबि सकैत छथि? चमत्कार भेलै, भोरे सभ क्यो जागल त देखलक गंगा

ओत' धरि पहुंचि गेल छलखिन।

हमहूँ ओहि घटनाक स्मरण करैत मोने मोन कहलियनि, हे माँ गंगे, हमरा बूते से संभव भ' सकल से क' रहल छी, जे त्रुटि भेल होइ तकरा अहाँ पूर्ण क' देबै।

हम सभ ओतहि रही त एक आदमी एलाह कहैत, अहाँ सभ जल्दी हटू ओत' सं, गंगा हहाएल आबि रहल छथि। हम सभ ऊपर चलि गेलहुँ आ थोड़बे कालमे ओ सूखल नदी लबालब भरि गेलै। ओहि ठामक पंडा सभ कहलनि जे कहियो-कहियो एना होइ छै, फेर धीरे-धीरे पानि कम होमय लगैत छैक।

गया धाममे सभ गोटेक रहबाक व्यवस्था भ' गेल छल।

नीक जकाँ सभ काज संपन्न क'क' ट्रेनसं गरबा रोड जंक्शन आ ओत' सं बससं अम्बिकापुर आ ओत'सं बससं डोमनहिल पहुंचि जाइ गेलहुँ।

डोमनहिलमे जे सभ दाह क्रियामे सम्मिलित भेल छलाह, हुनका सभ गोटेकें निमंत्रण दए भोजनक व्यवस्था कएल गेल।

बसंत बी.ए. अंतिम वर्षक परीक्षामे सम्मिलित भेलीह, तैयारीमे बाधा त भेबे केलनि, मुदा साल बर्बाद नै भेलनि, बी.ए.उतीर्ण भेलीह।

गत कए बरखसं हमर प्राथमिकतामे अपने छलहुँ, हमर नोकरी छल,हमर पिता छलाह। धिया-पुताक शिक्षाक समुचित व्यवस्था करबामे हम असफल रहलहुं, एकर परिणाम हुनका सभकें भोग' पड़लनि।

बाबूक प्रस्थानक बाद हमर प्राथमिकतामे धिया-पुताक शिक्षाक समुचित व्यवस्था करब आएल, मुदा ताधरि बहुत देरी भ' चुकल छलै।

मैथिली आ विवेक भिलाइ गेलाह, कोचिंग संस्थानमे एक सत्र रहै गेलाह। वसन्त एम.ए. (अर्थ शास्त्र)मे नाम लिखौलनि।

स्थानान्तरण :

हमरा डोमनहिलमे पाँच सालसं बेशी भ' गेल छल। अनुरोधपर स्थानान्तरणक आदेश एक बेर तेहेन समय आएल छल जखन बी.ए.अंतिम वर्षमे छलीह। पता चलल जे एखन यदि बिहार जाइ छी त ओत' बी.ए.प्रथम वर्षसं शुरू कर' पड़तनि, अही कारण ओहि स्वीकृतिकें अस्वीकार कर' पड़ल।

तकर बाद एक बेर पदोन्नतिक अवसर आएल, मुदा हम सफल नहि भेलहुँ।

पाँच साल बाद हमरा मध्य प्रदेशक सिवनी जिलाक एकटा शाखामे स्थानान्तरणक आदेश प्राप्त भेल।

हम चाहैत रही जे एहेन स्थानपर होइतय जाहि ठामसं बिहार जेबाक लेल ट्रेनक सुविधा रहितइ।

रायपुर गेलहुँ। यूनियन क महासचिव एम.के.अग्रवाल साहेबसं सम्पर्क केलहुं। आंचलिक कार्यालय गेलहुँ। हमरा एकटा विकल्प देल गेल 'कोतमा' शाखा। कोतमामे रेलवे स्टेशन छै, ओत'सं अनूपपुर आ अनूपपुर जंक्शनसं पटनाक लेल ट्रेन उपलब्ध होइत छै।

हम स्वीकार क' लेलहुं।

चिरिमिरी आ कोतमाक बीच मनेन्द्रगढ़मे नीक कॉलेज छै आ नीक आवास सेहो उपलब्ध भ' सकैए, तें निर्णय लेलहुं जे परिवार मनेन्द्रगढ़मे राखि अपने मनेन्द्रगढ़सं कोतमा जाएब। जेबा-एबाक लेल ट्रेन छै, से पता चलल। कोतमा शाखाक लेल स्थानान्तरण आदेश ल' क' रायपुरसं डोमनहिल घुरलहुं।

१५.०६.१९९९ क' हम डोमनहिल कोलियरी शाखा सं भारमुक्त भेलहुँ।

पटना / १३.१२.२०२१

(२२)

एत' आबिक'

१५ जून १९९९ क' हम चिरिमिरीसं ट्रेनसं कोतमा आबि सेन्ट्रल बैंकक कोतमा शाखामे योगदान केलहुं।

पूर्व शाखा प्रबंधक छलाह मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव, ओ किछु दिनक बाद शहडोल स्थानांतरित भ' क' गेलाह।

शाखामे निम्नलिखित सहयोगी सबहक संग काज करबाक अवसर भेटल :

बी.एल.मीना,अधिकारी, जे छओ मासक बाद स्थानांतरित भ'क' जयपुर चल गेलाह आ दोसर शाखासं दिलावर सिंह एलाह उप-प्रबंधक भ' क'।

के.एन.कुमरे जी सेहो अधिकारीक रूपमे संग देलनि।

हिनका सबहक अतिरिक्त नेल्सन लकड़ा जी आ रंजीत बक्सला जी सेहो लिपिक-सह-खजांचीक रूपमे छलाह।

विनोद कुमार सोंधिया वरिष्ठ लिपिक सह खजांची छलाह।

दफ्तरी छलाह अशोकजी। सुरक्षा प्रहरी सेहो छलाह।

शाखा बजार क बीचमे छल। रेलवे स्टेशन सेहो बहुत दूर नै छलै। किछु दिन धरि डोमनहिलसं संपर्क बनल रहल। ओत'सं बस अथवा ट्रेनसं चिरिमिरी,मनेन्द्रगढ़ होइत कोतमा जाइत छलहुं। वापसीक लेल सेहो यैह बाट छल।

करीब एक मासक बाद डोमनहिलसं घरक सामान सभ मनेन्द्रगढ़मे खेड़िया काम्प्लेक्समे एकटा डेरामे स्थानान्तरित केलहुं। मनेन्द्रगढ़मे कोतमाक तुलनामे नीक कॉलेज छलै, तें मनेन्द्रगढ़मे आवास राखब उपयुक्त छल। हम किछु अवधि

तक बससं मनेन्द्रगढ़सं कोतमा जाइत छलहुं आ सांझमे ट्रेनसं मनेन्द्रगढ़ घूरि जाइत छलहुं।

मनेन्द्रगढ़मे जगदीश पाठक जी भेटलाह। ओ कोतमामे भारतीय स्टेट बैंकमे काज करैत छलाह, घर मनेन्द्रगढ़मे छलनि, मनेन्द्रगढ़सं बससं कोतमा आ कोतमासं ट्रेनसं मनेन्द्रगढ़ जाइत-अबैत छलाह। ओ हिन्दीमे व्यंग्य लिखैत छलाह। बस आ ट्रेनमे हम सभ बहुत दिन धरि संग भ' जाइत छलहुं आ कोनो साहित्य-चर्चामे प्रसन्नतापूर्वक समय बिता लैत छलहुं।

मनेन्द्रगढ़मे काशीम फूलवाला भेटलाह जे उर्दू आ हिन्दीमे गीत-गजल लिखैत छलाह। किछु और साहित्यकार सभसं परिचय भेल। ओत' श्रीराम मन्दिरक प्रांगनमे समय-समयपर कवि गोष्ठीमे भाग लेबाक अवसर भेटल।

किछु अंतरालक बाद हमरा प्रतिदिन यात्रा कठिन लाग' लागल।

कोतमामे एकटा छोट-छीन डेरा लेलहुं।

भोजन जैन भोजनालयमे करैत छलहुं।

शनि दिनक' मनेन्द्रगढ़ जाइ आ सोम दिन कोतमा आबि जाइ छलहुं। ओहि ठाम हमरा बगलक डेरामे भारतीय स्टेट बैंकक प्रबंधक कुमार साहेब सेहो रहैत छलाह। हुनक परिवार जबलपुरमे छलनि, एत' एसगर रहैत छलाह आ अपने भोजन बनबैत छलाह। हुनकासं प्रेरित भ' क' हमहूँ अपन डेरामे भोजन बनेबाक व्यवस्था केलहुं।

हमरा दूधवला दलिया बनाएब आ खाएब नीक लगैत छल।

से एक दिन हमरा भारी भ' गेल।

ऑफिससं घुरैत रही। मोटर साइकिलसं रही, हमरा पाछाँ उप-प्रबंधक दिलावर सिंह सेहो छलाह। किछु दूर गेलाक बाद हमरा चक्कर आबि गेल। हम तुरंत गाड़ी रोकि उतरि गेलहुं, सिंहजी सेहो उतरि गेलाह।

एकटा किरानाक दोकान छलै ओत'। दोकानपर जाक' पड़ि रहलहुं आ एकटा टेबुल पंखा हमरा माथ लग चला देब' कहलियनि। हम बेसुधि भेल बड़ी काल धरि रहि गेलहुं।

आँखि खूजल त उठबाक कोशिश केलहुं। उठबामे असौकर्य भ' रहल छल। हमरा एकटा डॉक्टर लग ओ सभ ल' गेलाह। डॉक्टर बी.पी. चेक केलनि। बी. पी. बहुत कम भ' गेल छल।

हमरा मनेन्द्रगढ़ जाक' चिकित्सा करेबाक आ आराम करबाक सुझाव भेटल।

सिंह जी तुरत एकटा जीप भाड़ापर ल'क' हमरा मनेन्द्रगढ़ ल' गेलाह, डॉक्टरसं संपर्क कराक', दबाइ ल'क' हमरा डेरापर पहुंचा देलनि। करीब डेढ़ मास धरि हमरा डॉक्टरक परामर्शक अनुसार दबाइ, पथ्य आ आरामक अधीन रह' पडल। बाइस दिन अवकाश मे रहलहुं। एहि अवधिमे किछु पत्रिका सभ कहुना पढ़ि लैत छलहुं।

पाठकजी आ किछु और साहित्यकार लोकनि अबैत रहैत छलाह। अही बीच हम मैथिली दीर्घ कविताक एक अंशकें हिन्दीमे अनुवाद क' क' समकालीन भारतीय साहित्यकें पठा देलिऐ।

साहित्यिक परिवेश :

कोतमामे सेहो साहित्यिक कार्यक्रम सभ होइत रहै छलै।

प्रगतिशील लेखक संघक मासिक बैसकमे कवि गोष्ठी होइत छलै। किछु लोक सभ एखनो खूब मोन छथि आ किछु गोटेसं एखनो संपर्क अछि।

जगदीश पाठकजी व्यंग्य लिखैत छलाह, एखनो लिखैत छथि, एखन फेस बुकपर हुनक व्यंग्य रचना आ कार्टून सेहो नीक लगैत अछि। नीहार स्नातक सेवा निवृत अध्यापक छलाह। नीक रचना करैत छलाह, गोष्ठीक आयोजन करैत छलाह, किछु पत्रिका मंगबैत छलाह, ओ सभकें किछु दिन लेल उपलब्ध करबैत छलाह आ ओहिपर गोष्ठीमे कोनो आलेख अथवा मौखिक प्रतिक्रिया देबाक लेल आमंत्रित करैत छलाह। हुनक स्मरण शक्ति एतेक तीक्ष्ण छलनि जे गप-शपमे सेहो परिलक्षित होइत छल। दस बरख पहिने कोनो साहित्यकारसं भेंट भेलनि तकर स्मरण करैत ओ इहो कहैत छलाह जे ओ साहित्यकार कोन रंगक वस्त्र पहिरने छलाह आ कोन मूहें बैसल छलाह आ की करैत छलाह।

हुनकहि जोर पर ११ नवम्बर २००० क' रीवाक महाविद्यालयमे आयोजित कवि गोष्ठीमे भाग नेने छलहुं जाहिमे प्रख्यात गीतकार सोम ठाकुर जी सेहो आएल छलाह,शैलेश जी सेहो छलाह,नीहारजी गोष्ठीक संचालन केलनि।

१२ नवम्बर क' हम सभ सतनामे साहित्यकार शैलेशजीक ओत' सेहो आयोजित गोष्ठीमे भाग नेने छलहुं।

एक दिन साहित्यिक टीम अमरकंटक गेल। ओत' एक दिन रहै गेलहुं। जैन मुनि सभक संग एकटा नीक कवि सम्मेलन भेल। हमहूँ ओहिमें सम्मिलित रही।

नीहार जीसं जबलपुर आ सिवनीमे सेहो भेंट भेल।

किछु मास पूर्व एकटा साहित्यकार मित्र कैलाश पाटकरक माध्यमसं नीहार जी सं संम्पर्क भेल। आब पचासी बरखसं बेशीक छथि, स्वाभाविक शारीरिक स्थितिक अधीन छथि।

धर्मेन्द्रजी नवगीत लिखैत छलाह। हुनकासं संपर्क नै अछि।

भरिसक आब ओ नै छथि।

शिव कुमार सिंह जी हास्य-व्यंग्य लिखैत छलाह। हुनकोसं संपर्क नै अछि।

कैलाश पाटकर जी सेहो नीक लिखैत छलाह। किछु मास पूर्व हुनकासं फेस-बुकक माध्यमसं संपर्क भेल।

कोतमा आ यमुना कोलियरीमे काज केनिहार रावजी आ किछु और साहित्यकार सभ सम्पर्कमे छलाह।

कोतमामे हमरा आवासपर एक जनवरी क' कवि गोष्ठीमे स्थानीय साहित्यकारक अतिरिक्त शहडोलसं प्रख्यात कवि पारस मिश्रजी सेहो एलाह।

२२ नवम्बर २००० क' शहडोलमे पारस मिश्रजी ओत' कवि गोष्ठीमे हमहूँ सभ भाग लेलहुं।

१९९९ मे १४ अगस्तक' क्षेत्रीय कार्यालय, शहडोलमे आयोजित काव्य गोष्ठीमे भाग लेलहुं। हम प्रस्तुत केने छलहु गीत 'मैं कभी मन्दिर न जाता...'

५ सितम्बर २००० क' आकाशवाणी,शहडोलसं मंजुल वर्माजी फोनपर संपर्क क' क' बहुत आनन्दित भेल टेप कएल हमर ओहि गीतक बहुत प्रशंसा केलनि आ कह्लनि जे कोनो काजसं जहिया शहडोल आबी त आकाशवाणी एबाक कष्ट करब, हम ओही दिन अहांक किछु रचना टेप करबाक' कार्यक्रम लेल राखि लेब।

आदरणीय वर्माजीक उद्गार हमरा आनन्दित केलक। हम अपन कार्यक्रम तेना नै बना सकलहुं, मुदा हुनक अनायास फोन क' क' रचनाक प्रति अपन सम्मान व्यक्त करबाक भाव हमरा सुख दैत रहल अछि। चिन्तक लोकनि कहैत छथि जे किनकहु कोनो काज अथवा कोनो व्यवहार अहाँकें जं नीक लागल अछि तं एहि लेल हुनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपसं धन्यवाद देब अथवा हुनक प्रशंसा

करब सेहो मानवीय धर्म थिक।

२००० मे २२ सितम्बर क' रातिमे कोतमा कन्या विद्यालयमे कवयित्री सम्मेलनक आयोजन भेलै। एहिमे डा. राजकुमारी 'रश्मि', जया जादवानी, डा. माधुरी शुक्ला आ डा. प्रेमलता नीलमक योगदान उल्लेखनीय आ स्मरणीय रहल।

मैथिली पत्रिका 'अंतिका' आ 'आरम्भ' अबैत छल।

आरम्भमे हमर निम्नलिखित छोट-छोट किछु कविता छपल।

समकालीन भारतीय साहित्यक मैथिली विशेषांकमे हमर एहि कविताक अनुवाद प्रकाशित भेल :

एत' आबि क'

एत' आबि क' हम
देखय लागल छी

मनुक्खक हड्डी
कोना चिबबैत अछि मनुक्ख
आ मनुक्ख कोना
मनुक्खक शोणित पीबि जाइत अछि

हम सोचय लागल छी
कोना चोराओल जा सकैत अछि
सूर्य आ चन्द्रमा
कोना कएल जा सकैत अछि
ग्रह आ नक्षत्रक संग बलात्कार
आ कोना भ' सकैत अछि
कोनहु स्वर्गक अपहरण।

एत' आबि क' हम
बूझ' लागल छी
किए कोनो लोकसं
लोक डेरा जाइत अछि
किए कोनो लोकमे
लोक हेरा जाइत अछि,

हम स्वीकार कर' लागल छी
एकटा चम्मचक महत्व
एकटा हथगोलाक कमाल
अश्रु-गैसक महिमा,
हमहूँ सम्मिलित भ' जाइत छी
एकटा नव आविष्कारमे ——
'कोना अनका पयरपर
लोक ठाढ़ भ' सकैत अछि (!)'
पटना / ३१.१२.२०२१

(२३)

परिवर्तन

हम एसगर कोतमामे छलहुँ, पत्नी तीनू बच्चा सभ संगे मनेन्द्रगढ़मे रहैत छलीह,दुनू छोट भाए दिल्लीमे लगेमे किन्तु अलग-अलग रहै

छलाह, गाममे क्यो नहि छल।
हमरा दाँतक कष्ट भेल।
मैथिलीके सेहो दाँतक कष्ट भेलनि।
मनेन्द्रगढ़मे डा. केशरवानीसँ आ बादमे पटनामे डा. ज्योति प्रसादसँ इलाज भेल।
बच्चीकें मनेन्द्रगढ़ आ बैकुंठपुरमे प्राप्त इलाज सँ लाभ नहि भेलनि। पटना गेलहुँ, डा.अरुण तिवारीसँ संपर्क केलहुँ। तिवारीजी तेल-नून-मसल्लाक न्यूनतम उपयोग करबाक आ रातिक' नून नहि खेबाक सलाह दैत प्रतिदिन एकटा Amtas-५ (Amlodipin ५ mg) लेबाक सलाह देलखिन। यैह दबाइ किछु बरख धरि बच्चीक रक्षा करैत रहलनि।
एहि यात्रामे हम बच्चीक संग गाम सेहो गेलहुँ।
बहिनक सासुर शिशवा आ अपन सासुर लदारी सेहो गेलहुँ।
रतनजीक विवाह :
हम सभ गाम-घरसँ दूर छलहुँ।
पटनामे मामा छलाह जिनकासँ जूनमे पता चलल जे मौसा-मौसी रतनजीक वियाह ठीक क' देने छथिन, अगहनमे विवाह हेतै।
दिसम्बरमे रतनजी दिल्लीसँ पत्र द्वारा सूचित केलनि जे ओ सभ सम्पर्क नहि क' रहल छलखिन तें गोरलगाइ जे भेटल छलनि से मौसाके वापस क' देलखिन, आब ओत' विवाह नै कर' चाहैत छथि। किछु दिनक बाद कन्याक नाना दिल्ली पहुँचि विवाहक गपपर जोर देलखिन। हमर बहिन-बहिनो अभिभावकक रूपमें सहयोग केलखिन। २००० मे १२ मार्चक' विवाहक दिन निश्चित भेल,से सूचना भेटल। पाँचो गोटे लेल आरक्षण करौलहुँ। पाँच दिन पहिने विवेक टाइफाइडसँ पीड़ित भ' गेलाह। १० क' चिकन पॉक्स निकलि गेलनि।
हम अपन यात्रा स्थगित कर' चाहलहुँ, रतनजी सुचित केलनि जे

हम सभ नै जेबै त विवाह नै हेतै।
अंततः यात्रा-कार्यक्रममे किछु सुधार कर' पड़ल।
तीनटा टिकट रद्द करौलहुँ।
विवेकके डॉक्टरसँ देखौलियनि।
डॉक्टर ५ दिन लेल दबाइ लिखलखिन।
बच्चीकें आवश्यक सुझाव दैत हम ११ क' वसन्तके संग नेने विदा भ' गेलहुँ।
गाममे घोंघौरसँ हमर मौसी आएल छलीह। हमर दुनू छोट बहिन शान्ती आ बच्ची आएल छलीह आ दिल्लीसँ ललनजी अपन परिवारक संग आएल छलाह।
१२ क' १२.३० बजे रातिमे वरियाती गेलै। विवाह भेलनि।
१६ क' चतुर्थीक भार साँठल गेल।
१७ क' द्विरागमन भेलनि।
२० क' भरफोरी भेलनि। रातिमे भगवानक पूजा कएल गेल।
फगुआ सेहो छलै।
हम २२ क' गामसँ विदा भेलहुँ।
२४ क' रातिमे मनेन्द्रगढ़ पहुँचलहुँ।
विवेकक स्थितिमे सुधार भेल छलनि।

आवास परिवर्तन :
मनेन्द्रगढ़क कॉलेजक पढ़ाइसँ मैथिली आ विवेक संतुष्ट नहि छलाह।
ओहिसँ नीक विकल्पक खोज शुरू भेल।
हम कोतमामे पहिनेसँ नमहर एकटा आवास तकलहुँ।
परिवार सेहो मनेन्द्रगढ़सँ कोतमा आबि गेल।
भिलाइसँ वीणाक संग मिश्र जी एलाह, हुनका सबहक संग अमरकंटक

सेहो गेलहुँ। ओहो सभ हमर सबहक खोजमे सहयोग केलनि।
तय भेल जे बिलासपुरमे एकटा आवास लेल जाए। ओत' रहिक' वसंत, मैथिली आ विवेक प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करथि, हम शनि दिनक' मनेन्द्रगढ़क बदला बिलासपुर जाइ।
वैह भेल।
बिलासपुरमे विवेक पी.ई.टी.क तैयारी लेल अक्षय गुरुकुल जाए लगलाह।
मैथिली पी.एम.टी.क तैयारीक लेल सचदेवा कोचिंग सेन्टर जाए लगलीह।
वसन्त बैंकिंग परीक्षाक तैयारीक लेल श्री कोचिंग सेन्टर जाए लगलीह।
एकटा आवासक प्रबन्ध भेल। एकटा लैंडलाइन फोन लेल गेल। कोतमामे हमरा आवास लग एकटा कालिंग बूथ छल।
ओहि ठाम जाक' हिनका सभसँ सम्पर्क करैत छलहुँ।
शनि दिन रातिमे कोतमामे गाड़ी पकड़ैत छलहुँ। भोरे बिलासपुर पहुँचैत छलहुँ। दिन भरि बिलासपुरमे रहि रातिमे ट्रेन धरैत छलहुँ। सोम दिन भोरे कोतमा पहुँचि जाइत छलहुँ।
कतेक मास धरि अहिना कोतमासँ बिलासपुर आ बिलासपुरसँ कोतमा करैत रहलहुँ।

पदोन्नति :

पदोन्नति हेतु २००१ मे २७ मइक' रायपुरमे लिखित परीक्षामे सम्मिलित भेलहुँ।
७ जुलाइक' सेन्ट्रल बैंक अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र, भोपालमे साक्षात्कारमे सम्मिलित भेलहुँ।
२७ जुलाइक' पता चलल जे हमहूँ सफल भेलहुँ आ हमर पोस्टिंग

सदर बाजार, रायपुर शाखामे भेल अछि।

हम शनि दिन ४ अगस्तक' दिलावर सिंह, प्रबन्धकके शाखाक प्रभार सौंपिक' शाखासँ भारमुक्त भेलहुँ।

५ क' कोतमासँ विदा भेलहुँ आ रातिमे रायपुर पहुँचि गेलहुँ।

होटल आलनियरमे तत्काल रहबाक व्यवस्था भेल।

ओत' जबलपुरसँ आर.के. साहू जी सेहो आएल छलाह, भेंट भेलाह।

पटना / १२ जनवरी २०२२

(२४)

स्वर्गक दुख : दुखसँ मुक्ति

२००१ मे ६ अगस्त क' हम वृहत शाखा सदर बाजार,रायपुरमे वरिष्ठ प्रबंधकक पदपर कार्य भार ग्रहण केलहुँ।

जबलपुरसँ जे साहू जी आएल छलाह, से आंचलिक कार्यालयमे वरिष्ठ प्रबंधकक पदपर कार्य भार ग्रहण केलनि।

शाखाक वरिष्ठ प्रबंधक जी. एल.राठी साहेब ८ क' भारमुक्त भेलाह।

कर्मचारी-अधिकारी सभक संख्या २० सँ बेशी छलै, एहिमे पाँचटा महिला छलीह।

दूटा प्रबंधक छलाह। परिचालनमे एन. के.ब्राहा आ अग्रिममे आर. शंकर प्रबंधक छलाह।अग्रिममे दूटा और अधिकारी छलाह। शेष

अधिकारी-कर्मचारी सभ परिचालन विभागमे छलाह। अधिकारी यूनियनक महासचिव एम.के.अग्रवाल साहेब सेहो ओही शाखामे छलाह। रायपुरमे हमर अभिभावक छलाह क्षेत्रीय कार्यालयमे क्षेत्रीय प्रबंधक आ आंचलिक कार्यालयमे दूटा मुख्य प्रबंधक आ आंचलिक प्रबंधक महोदय।
जहिया शाखामे योगदान देने रही, ओही दिन औपचारिकताक निर्वाह करैत क्षेत्रीय प्रबंधक आ आंचलिक प्रबंधक महोदयसँ भेंट कर' गेलहुँ। आंचलिक प्रबंधक महोदय पुछलनि,
'एम.के.अग्रवालसँ अहाँकें कोन सम्बन्ध अछि?
हम कहलियनि, ओ हमरा यूनियनक महासचिव छथि।
फेर पुछ्लनि, अग्रवाल जे कहता से अहाँ करब आकि जे बैंक कहत से करब।
हम कहलियनि, हमरा त हुनको सहयोग लैत बैंकक काज करबाक अछि।
बादमे पता चलल जे सदर बाजार, रायपुर शाखामे हमर पदस्थापनमे हमरा यूनियनक महासचिव अग्रवाल साहेबक जोर छलनि।
हमरा मोनमे जिज्ञासा भेल छल जे जखन अग्रवाल सहेबक जोरपर ओ हमर पदस्थापन कोनो शाखामे क' सकैत छथि तखन ई पुछबाक की अभिप्राय छलनि जे अग्रवाल साहेब जे कहता से अहाँ करब आकि जे बैंक कहत से करब।
बहुत बादमे हमरा एकर समाधान भेटल।
आवासक व्यवस्था :
साहूजी जबलपुरसँ अबैत काल एकटा डेराक चाभी ल'क' आएल छलाह। देवांगन जी जे जबलपुर क्षेत्रीय कार्यालयमे अधिकारी छलाह, हुनकर घर रायपुरमे समता कॉलोनीमे छलनि, ओही आवासक चाभी देवांगनजी हुनका द' देने छलखिन।

एक साँझ दुनू गोटे गेलहुँ देख'। साहूजी के ई डेरा आंचलिक कार्यालयसँ दूर लगलनि, ओ आंचलिक कार्यालयसँ कम दूरीपर अपना लेल आवास तकलनि आ ई आवास देवांगनजीसँ बात क' क' हमरा दिया देलनि।

एहि तरहें समता कॉलोनीमे आसानीसँ हमर आवासक व्यवस्था भ' गेल।

ओहि आवासमे हम दिसम्बर २००३ धरि रहलहुँ।

देवांगन जीक स्थानान्तरण जबलपुरसँ रायपुर भेलनि त ओ हमरा सुचित केलनि, हुनका अपने अपन आवासमे रहबाक छलनि। दोसर आवास तकबामे ओ सहयोग केलनि आ ओही मोहल्लामे सेन्ट्रल बैंकक अवकाशप्राप्त अधिकारी सोनकर जीक नवनिर्मित मकानमे रायपुरमे शेष समय धरि रहबाक लेल आवासक व्यवस्था भ' गेल।

चाकरीक दुख-सुख :

शाखाक दैनिक कार्यक निराकरण परिचालन आ अग्रिम विभागक प्रबंधक लोकनिक देख-रेखमे चलैत छल।

अग्रवाल साहेब सेहो अपन काज नियमित रूपसँ करैत छलाह। ओ शाखामे सभसँ पहिने आबि जाइत छलाह। यूनियनक काज ओ डेरेपर करैत छलाह।

हमर मुख्य काज छल क्षेत्रीय कार्यालय, आंचलिक कार्यालयक निदेशानुसार मीटिंग सभमे भाग लेब,क्षेत्रीय प्रबंधक,आंचलिक प्रबंधक महोदयसँ निरंतर सम्पर्क राखब,दुनू कार्यालयक कोनो पत्रक तुरन्त जबाब देब,ऑडिट रिपोर्टक अनुसार अनियमितताक निराकरण निर्धारित अवधिमे सुनिश्चित करब, कैश क्रेडिट खाता सबहक संचालनपर निगरानी राखब,कोनो अनियमितता देखलापर ओकर मालिक/पार्टनर/ निदेशक आदिसँ संपर्ककय खाताकें नियमित रखबाक लेल फोन-फान,

दौड़-धूप करब,अपन निर्धारित सीमाक अंतर्गत कोनो प्रकारक ऋण स्वीकृत करबाक लेल जांच-पड़ताल आदि सुनिश्चित करब, शाखाक विरुद्ध कोनो शिकायतक शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करब, पैघ-पैघ खाताधारक सभसँ सम्पर्क राखब आदि।

एहि काज सभमे मदति करबाक लेल प्रबंधक आ सहायक प्रबंधक सभ छलाह।

अंततः शाखाक कोनो त्रुटिक लेल जबाबदेही हमरेपर छल।

एहि शाखामे बहुत एहेन काज छलै जे हमरा लेल नव छल, एहि लेल अतिरिक्त समय देब' पड़ल। हम दोसरेक भरोसपर नहि रह' चाहैत छलहुँ, तें लागि-भीड़िक' सिखबामे आनन्द अबैत छल।

एत' कंप्यूटरक उपयोग करब सेहो सिखलहुँ।

सभ शाखासँ सभ शुक्र दिनक' शाखाक स्थितिक जानकारीसँ नियंत्रक कार्यालय सभकें अवगत करयबाक विधान छैक।

शाखामे एकटा खाता एहेन छलै जाहिमे कोनो सप्ताहमे दस-बारह करोड़ तक पाइ जमा भ' जाइ छलै त पूरा रायपुर क्षेत्र आ रायपुर अंचलक आँकड़ा बढि जाइ छलै आ कोनो सप्ताहमे दस-बारह करोड़ निकलि जाइ छलै त पूरा क्षेत्र आ अंचलक आँकड़ा कम भ' जाइ छलै।

बढि जाइ छलै त ठीक मुदा जखन घटि जाइ छलै त आंचलिक प्रबंधक आ क्षेत्रीय प्रबन्धकक फोन आब' लगैत छल, स्पष्टीकरण माङल जाइ छल, कोनो तर्कसँ सहमत नै होइत छलाह, तामस अन्तरित होइत रहैत छल।।हुनको सभ लग एकर निदान नै छलनि। सम्बंधित खाताक संचालककें अनुरोध करैत छलियनि त कहैत छलाह, हमरा खातामे त अहिना लेन -देन चलत, अहाँ सभकें नै नीक लगैए त कहू हम सभ दोसर बैंक खाता ल'क' चलि जाइत छी।

एहि महत्वपूर्ण खाताकें दोसर बैंक जाए देब सेहो ठीक नै छलै।

शाखामे एक-दूटा एहेन खाता छलै जाहिमे निर्धारित समयसँ किछु पहिने बहुत मात्रामे नकद राशि बड़का मोटामे आबि जाइत छलैक जमा करबाक लेल। बैंकक नियमक अनुसार ओकरा मना नहि कयल जा सकैत छलै। नोट गनबाक एकटा मशीन रहितो पूरा नकद गनबामे बहुत समय लागि जाइत छलै आ बैंक निर्धारित समयसँ दू-चारि घंटा बादो धरि खूजल रहैत छलै।

प्रबंधक,परिचालन अपन टीम संगे लागल रहैत छलाह, हमरा कहैत छलाह अहाँ चलि जाउ। ई एकटा परम्परा जकाँ बनि गेल छलै। हमरा चिंता होइ छल जे एतेक काल धरि बैंक खुजल रहबाक कारण कहियो कोनो अप्रिय घटना ने घटि जाइ, से हेतै त हमहूँ जबाबदेहीसँ बचि नहि सकब। हम एकर निदान तकबाक प्रयास केलहुँ मुदा निदान नहि भेटल।

शाखाक गेट भीतरसँ बन्द क' क' नोट गिनतीक काज करैत जाइत छलाह, तें सुरक्षाक दृष्टिसँ त खतरा नै छलै, मुदा एहिसँ किछु आन समस्या उत्पन्न होइत छलैक।

एक त नोटक गिनती मशीनसँ होइत छल मुदा पैकेट बहुत रहबाक कारण किछु गोटे हाथसँ सेहो गिनती करैत छलाह जाहिमे त्रुटिक आशंका रहैत छलैक।

दोसर समस्या ई छलै जे शाखामे धारित नगदी (Cash in hand) निर्धारित सीमासँ बहुत बेशी भ' जाइत छलैक कारण बहुत देरी हेबाक कारण आ किछु आन कारणसँ अतिरिक्त राशि करेंसी चेस्टमे ओहि दिन जमा नहि भ' पबैत छलै।

निर्धारित राशिसँ बेशी नकद राशि शाखामे रहि जेबाक खबरि क्षेत्रीय प्रबंधक आ आंचलिक प्रबंधककें सेहो पहुँचि जाइत छलनि आ ओकर परिणाम हमरा धरि पहुचैत छल से अप्रिय रहैत छल।

एक दिन एहि अनियमितताक एकटा परिणाम आएल।

एक आदमी (ग्राहक) नोटक एकटा पैकेट नेने आएल जे हमरे शाखा द्वारा देल गेल छलै, ओहिपर हमरे शाखाक दू गोटेक हस्ताक्षर छलनि। ओहि सौ के पैकेटमे किछु पचास आ किछु दसक नोट छलैक जे गिनती करबा काल सम्बंधित अधिकारी कर्मचारीक ध्यानमे नहि आएल छलनि। एना लगैत छलै जे ओ पैकेट कोनो दोसर बैंकसँ जारी भेल छलै आ हमरा शाखामे जमा भेल छलै। एत' अपना शाखाक स्लिप लगाक' हस्ताक्षर करबा काल चूक भेल छलै, फेर दोसर व्यक्तिकें देबा काल सेहो चूक भेलै आ ग्राहक सेहो ओहि दिन ई नहि बूझि सकलाह।

हम तुरन्त सम्बंधित प्रबंधककें कहलियनि जे खजाना विभाग द्वारा ओहि ग्राहककें

सही पैकेट दिया देथिन, ओ कहलनि जे प्रधान खजांची एकटा दोसर शाखामे गेल छथि, अबै छथि त हिनका दोसर सही पैकेट दिया दैत छियनि। हम ओहि ग्राहककें हुनकहि लग बैसाक' निश्चिन्त भ' क'अपना स्थानपर आबि दोसर काजमे लागि गेलहुँ।

दोसर दिन स्थानीय दैनिक पत्रमे ई समाचार प्रकाशित भेलै तखन सम्बंधित प्रबंधकसँ हमरा पता चलल जे खजांचीकें दोसर शाखासँ एबामे देरी भेलनि, ओ ग्राहक कखन चल गेलाह से हुनको नहि पता चललनि।

बात अखबारमे आबि गेलासँ भारी भ' गेलै। क्षेत्रीय कार्यालय हस्तक्षेप केलक।

जाँच भेलै। ग्राहककें तत्काल बजाक' हुनका दोसर पैकेट दियाओल गेलनि।

पैकेटपर हमरा शाखाक जाहि अधिकारी-कर्मचारीक हस्ताक्षर छलनि हुनका सभसँ स्पष्टीकरण लेल गेल। स्ट्रांग रूम बंद करबामे निर्धारित

समय-सीमाक पालन सुनिश्चित करबाओल गेल। सम्बंधित खातेदार सभकें एहि निर्णयसँ अवगत कराओल गेलनि। हमर तनाव किछु कम भेल।

एक दिन स्ट्रांग रूम बंद भेलाक किछु कालक बाद एकटा चपरासी आबि कहलक जे स्ट्रांग रूमक भीतरसँ किछु आवाज आबि रहल अछि। हमहूँ लग जाक' यैह अनुभव केलहुँ। प्रबंधक,परिचालनकें पुछलियनि जे अन्तमे लाकरक परिचालन लेल के आएल छलाह, त रजिस्टरमे देखल गेल जे एकटा अपने बैंकक सेवानिवृत अधिकारी आएल छलाह, हुनकर जेबाकालक समयक विवरण सम्बंधित रजिस्टरमे अंकित नै छलै। तुरन्त स्ट्रांग रूम खोलल गेल त ओ सज्जन घामे-पसीने तर-बतर भेल निकललाह। हुनका अपना चैम्बरमे बड़ी काल बैसौलियनि, सामान्य भेलाह तखन पुछलियनि जे जखन बंद हुअ' लगलै तखन ओ किए ने बजलखिन त कहलनि जे हमरा किछु ने बुझाएल कोना की भेलै। ओहि दिनक बाद दू दिन बैंक बंद रहबाक छलै। ओहि दिन यदि हुनका नहि निकालल गेल रहैत त की होइतै, से सोचि बड़ी काल धरि हम किछु-किछु सोचैत रहि गेलहुँ।

प्रबंधक,परिचालन सतर्क भेलाह। एहेन घटना दोबारा कहियो नहि घटलै।

हमरा ऋण स्वीकृत करबाक लेल कोनो दबाबक अनुभव नहि भेल, किन्तु जल्दी निर्णय लेबाक लेल अपनाकें आ अपना टीमके तैयार रखबाक आवश्यकता लगैत छल।अपन पवित्रताकें बचाक' रखबाक आ यथासंभव शीघ्र निर्णय लेबाक क्षमतासँ अपनाकें तैयार रखबाक लेल सतर्क रहैत छलहुँ।

एक बेर छप्पन लाखक एकटा प्रस्ताव क्षेत्रीय कार्यालयसँ हमरा शाखामे आएल।

प्रबंधक, अग्रिम किछु दिनक अवकाशमे छलाह। हुनका एबा तक प्रतीक्षा करितहुँ त देरी भ' जैतै। हम एकटा जीप भाड़ापर लेलहुँ। दिन भरि समय द' क' प्रस्तावित कार्यस्थलपर जाक' आवश्यक जाँच-पड़ताल केलहुँ।

ओ स्थान करीब चालीस किलोमीटरसँ बेसी दूर छलै, ओहि ठाम लगेमे भारतीय स्टेट बैंकक एकटा शाखा छलै, आवेदककें सम्बंधित काज करबाक लेल कोनो योग्यता अथवा अनुभव नै छलनि। हमरा लागल जे एते दूरसँ गतिविधिपर नियंत्रण राखब सेहो संभव नै छै। कोनो तरहें हमरा ई प्रस्ताव स्वीकृतियोग्य नहि लागल।

हम अपन निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करैत ओहि प्रस्तावक अस्वीकृतिक सूचना क्षेत्रीय कार्यालयकें सात दिनक भीतरे पठा देलियनि।

क्षेत्रीय प्रबंधक हमरा बजौलनि। हमरा लागल जे ओ हमर अस्वीकृतिसँ संतुष्ट नहि छथि। ओ टेबुलपर तबला बजबैत शोले फ़िल्मक एकटा डायलाग बजलाह : 'ठाकुर .... '

हम कहलियनि, हमरा जे ठीक लागल से हम रिपोर्ट केलहुँ, अहाँ चाही त हमरा अपन इच्छा अनुसार सलाह अथवा आदेश द' सकैत छी, हम ओकर पालन करब।

मुदा, फेर कहियो ओहिपर कोनो गप नै भेल।

अग्रिम बढ़तै त शाखाक लाभ बढ़तै आ अग्रिमक लक्ष्य पूर्ण हेतै तें नियंत्रक कार्यालय सेहो अपना स्तरसँ नीक प्रस्ताव कोनो शाखाकें उपलब्ध करयबामे सहयोग करैत छल, मुदा शाखा द्वारा प्रस्तावक गुणवत्ता सुनिश्चित करब अनिवार्य रहैत छलैक।

एक बेर हमर ओहि ठामक सभसँ पैघ अभिभावक कहलनि, हमर मकान मालिकक भागिनकें व्यवसायक लेल दस लाखक ऋणक आवश्यकता छनि, से जाथि त देखि लेबनि। ईहो कहलनि जे देखि-सूनिक' निर्णय लेब, आँखि मूनिक' ऋण स्वीकृत करबाक लेल हम

नै कहैत छी। हम कहलियनि, ठीक छै सर, जल्दीए भ' जेतै।
हम अपन शाखाक अग्रिम विभागक प्रबंधककें कहलियनि ई बात। दू-तीन दिनक बाद ओ व्यक्ति अपन आवश्यक कागज़ सभ ल' क' एलाह। हुनकासँ आवश्यक पूछ-ताछ,जाँच-पड़ताल क' क' हुनक पछिला तीन सालक लाभ-हानि आ तुलन पत्रक अध्ययन क' क' हुनका ओकर प्रातहि दू लाखक स्वीकृति-पत्र उपलब्ध करबैत कहि देल गेलनि, यदि अहाँ स्वीकृत ऋणक उपभोग कर' चाहैत छी त बैंकक दस्ताबेज सभपर हस्ताक्षर करू।
ओ सज्जन चल गेलाह, फेर नै एलाह।
किछु दिनक बाद हमरासँ ओहि विषयमे पूछल गेल त सभटा बात कहि देलियनि। कहलनि, हुनका दस लाखक आवश्यकता छलनि।कहलियनि, बैंकक नियमानुसार हुनका दू लाखसँ बेसीक स्वीकृति नै प्रदान कएल जा सकैत छलनि। ओ आगू नै किछु पुछलनि आ ओहि कारणसँ हमर कोनो अहित भेल हो से हमरा नै अनुभव भेल।
एक दीयाबाती दिन साहेब फोन केलनि :' हैप्पी दीपावली।' हम फोनपर नमस्कार केलियनि। ओ नाराज भ' गेलाह। कहलनि, तुम्हारे माँ-बाप ने यह संस्कार नहीं दिया कि अपने बड़े को 'हैप्पी दीपावली' बोलो?
हम 'सॉरी सर !' कहैत कहलियनि, सर हमें तो बुजुर्गों के चरण-स्पर्श करना, नमस्कार या प्रणाम कहना सिखाया गया है, फिर भी अगली बार से हम वही कहेंगे जो आप चाहते हैं।
ओकर बाद ओ सामान्य स्थितिमे आबि गेलाह आ पारिवारिक हाल-समाचार पूछ' लगलाह। ओकरा बाद नियत तिथिक' सभसँ पहिल काज हुनका फोनपर 'हैप्पी होली' आ 'हैप्पी दीपावली' आदि कहब नै

बिसरैत छलहुँ।

मुदा ताहिसँ की ! नाराज हेबाक लेल दोसर कारण भेटि जाइत छलनि।

उच्च अधिकारी लोकनिक डाँट-फटकार सुनबाक लेल बहुत तरहक स्थिति उत्पन्न होइत रहैत छलैक। एन.पी.ए.मे वृद्धि, लाभ-जमा-अग्रिम आदि मदमे लक्ष्यक पूर्तिमे

असफलता, कोनो विवरण प्रस्तुतिमे देरी, कोनो खातासँ बेशी मात्रामे निकासी, निर्धारित सीमासँ बेशी धारित नगदी (Cash in Hand) आदि किछु एहेन विषय छलै जे ऊपरसँ वरिष्ठ प्रबंधक धरि क्रोधक प्रवाहकें बल प्रदान करैत रहैत छलै।

एक दिन हमरासँ पूछल गेल जे हमरा शाखाक कोनो ग्राहक द्वारा हुनका विरुद्ध शिकायत किए कएल गेल छनि। हमरा एकर किछु अर्थ नै लागल। हमरा कहल गेल जे हमहीं ई शिकायत करबौने हेबनि। हम कहलियनि जे हमरा शाखाक कोनो ग्राहककें हमरासँ शिकायत भ' सकैत छै, हुनकासँ किए हेतनि। ओ पुछ्लनि, तखन हुनका विरुद्ध शिकायत किए कएल गेल छनि। हम कहलियनि जे हमरा किछु नै बूझल अछि, हमरा कही त पता लगाक' एकर सूचना दी। हुनकासँ शिकायतकर्ताक

नाम पूछि हम तत्काल ओहि ग्राहकसँ संपर्क केलहुँ।

हुनका पुछलियनि जे हमरा शाखासँ भेल कोनो त्रुटिक लेल हमरा विरुद्ध शिकायत क' सकैत छी, हमरा उच्च अधिकारीक विरुद्ध शिकायत किए केलियनि।

ओ कहलनि, बिना कारण हम त एकटा चुट्टी तककें दुख नै द' सकैत छी, कोनो व्यक्तिकें दुख देबाक प्रश्ने नै उठैत छैक, हमरा अहाँक शाखासँ कोनो शिकायत नै अछि, त अहाँक विरुद्ध किए शिकायत करब, जिनकासँ दुख भेटल अछि, हुनका विरुद्ध कएल

गेल छनि।

ओ आगाँ कहलनि, हमर प्रतिनिधि हुनकासँ कय बेर भेंट करय गेलाह मुदा सभ बेर ओ मना क' देलखिन,एहेन बात नै छै जे ओ ककरोसँ भेंट नै करैत छथि, यैह हमर शिकायत अछि।

ओत'सँ अपना शाखामे आबि हम अपन उच्चाधिकारीकें फोनपर कहि देलियनि।

ओ कहलनि, हमरा एते समय नै अछि जे हम सभसँ भेंट करैत रहू। हम कहलियनि, ओ हमरा शाखाक सम्मानित ग्राहक छथि, बहुत नीक लोक छथि,हुनका होइ छनि जे हमरे संग एना कएल जा रहल अछि तें दुखी छथि, हमरा लगैत अछि जे एक बेर किछु समय निकालिक' हुनकासँ भेंट क' लियनु त अहूँकें नीक लागत आ हुनकर सभ शिकायत खतम भ' जेतनि।

साहेब गेलाह। भेंट केलखिन। शिकायतकर्तासँ गप भेलनि। शिकायतकर्ताक दुख दूर भ' गेलनि। साहेबकें सेहो नीक लगलनि। हमरा फोनपर सुचित केलनि आ कहलनि जे हुनकासँ भेंट क' क' शिकायत निवारणक एकटा पत्र लिखबाक' हमरा फैक्स करबाउ।

हम तुरन्त गेलहुँ। ग्राहकसँ भेंट केलहुँ। ओ प्रसन्न छलाह। हुनकासँ उपयुक्त पत्र लिखबाक' साहेबकें फैक्स द्वारा उपलब्ध करबा देलियनि।

हम लोक सभसँ, शाखाक अधिकारी-कर्मचारी सभसँ गप-सप आ व्यवहारमे शालीनता रखैत छलहुँ, ऋण स्वीकृत करबामे बेशी देरी नै करैत छलहुँ, जिनका बैंकक नियमानुसार ऋण स्वीकृत नै कएल जा सकैत छलनि, हुनका विनम्रतापूर्वक अपन असमर्थता कहि दैत छलियनि, तें लोकक अथवा कोनो स्टाफकें हमरासँ शिकायत नै रहै छलै किन्तु हमरा उच्च अधिकारीक विचारक दर्पणमे अपन छवि नीक नहि लगैत छल।

मोबाइलक ज़माना आबि गेल छलै, किन्तु पैघे लोक सभ लग ओहि समय उपलब्ध छलै।
मोबाइल साहेब सभकें दिव्य दृष्टि प्रदान करैत छलनि। साहेब कतहु रहैत छलाह त हुनका पता चलि जाइत छलनि जे कोन शाखामे की भ' रहल छै।
एक दिन एकटा खातासँ खातेदार अपन व्यवसाय हेतु पाँच करोड़ राशि अन्तरित करबौलनि। साहेबक मुँहसँ आगि निकल' लगलनि। धधरा मोबाइलक माध्यमसँ हमरा कान धरि आएल।
सभ दिन एहि आगिसँ अपना मोनकें बचयबाक प्रयास करय पड़ैत छल।
'कुछ तो रहम करो यार, जरा ठीक-ठाक ब्रांच चलाओ, मैं समझता हूँ तुम शरीफ आदमी हो, मगर पिउनसे, क्लर्क से डरने की क्या जरूरत है,मैं हूँ न !'
'मुझे दुख होता है जब लोग कहने आते हैं कि तुम पिउन से भी डरते हो-ऐसे मैनेजरी से अच्छा है वी. आर. एस. ले लो। ज़माना बदल गया है, अब रिजल्ट अच्छा नहीं देनेवालों को बैंक लात मार कर बाहर कर देगा- मैं थोड़ा हार्स जरूर बोलता हूँ पर मैं जो कहता हूँ उसे अकेले में बैठकर सोचो।'
एकटा नीक बात ई छल जे सार्वजनिक रूपसँ कहियो कोनो अप्रिय बात नै बजैत छलाह, जे कहैत छलाह से फोनपर। तें ई लगैत छल जे सभ वरिष्ठ प्रबंधक सभकें हड़काक' राखब अथवा जगाक' राखब ओ अपन धर्म बुझैत छलाह, बैंकक हितमे बुझैत छलाह।
हुनक धर्मक समय निश्चित नै रहैत छलनि। कहियो १० बजे रातिमे, कहियो ८
बजे सबेरे अथवा दिनमे कखनो।
हम अपना कें संयमित आ संतुलित रखबाक लेल किछु काल

साहित्यक शरणमे जाइत छलहुँ।

ओशोक कोनो पोथीक एक-दू पृष्ठ अथवा हरिमोहन बाबूक कोनो रचना पढ़ब अथवा कैसेटमे दादा पल्टू मुखर्जी द्वारा गाओल अपन किछु गीत सूनब हमरा लेल संजीवनीक काज करैत छल। हमर आत्मबल बढ़ि जाइत छल।एहि लेल हमरा कहियो शराबक शरणमे जाएब पसन्द नहि पड़ल।

हम एसगरमे बैसिक' सोचलहुँ, हमरा हुनक टिप्पणीक कोनो अर्थ नै लागल।

हम निर्णय लेलहुँ जे साहेबसँ हुनका डेरा पर जाक' कहियनि जे हमरा कोनो अर्थ नै लगैए, अहीं हमरा कनी बुझा दिय' जे हमरासँ की गलती भ' रहल अछि आ हमरा की करबाक चाही।

हम एक दिन दू किलो सेव ल'क' साहेबसँ भेंट कर' विदा भेलहुँ। ओ जत' रहैत छलाह ओहि मोहल्लामे एकटा परिचित अधिकारीक आवाससँ हम फोन क'क' कहलियनि जे हम भेंट कर' आबि रहल छी।

साहेब कहलनि जे आइ किछु सम्बन्धी सभ आएल छथि तें आइ नै आउ।

हम घुरि गेलहुँ। फेर कहियो डेरा पर भेंट करबाक नियारक सुयोग नै बनल।

एक दिन हमरा ज्ञान भेल।

हम सोचलहुँ, साहेब जे सोचैत छथि ताहीमे बैंकक हित हेतै।

मुदा ओ की चाहैत छथि? एक दिस कहैत छथि तुम आदमी अच्छे हो, दोसर दिस कहैत छथि रिजल्ट अच्छा नहीं देनेवालों को बैंक लात मारकर बाहर कर देगा।

मतलब ओ हमरा नीक वरिष्ठ प्रबंधक नै मानैत छथि, मतलब हुनका

नजरिमे अवश्य कोनो एहेन लोक छनि जे हुनका मनोनुकूल आ बैंकक हितक लेल उपयुक्त रहतनि।
हम ईहो अनुभव केलहुँ जे जहिया हमरा अवकाशमे जेबाक होइए त ओ प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति द' दैत छथि, हम एहिमे हुनक उदारता अथवा कृपाक अनुभव करैत छलहुँ। कखनो-कखनो ईहो सोचैत छलहुँ जे हमर छुट्टीमे रहब बैंकक हितक कतेक अनुकूल होइत हेतैक।
हम कल्पना केलहुँ जे यदि हम एहि शाखामे एहि पदपर नै रही त शाखाकें कतेक लाभ हेतैक।
हमरा शाखाक कल्याणक सूत्र हाथ लागि गेल।
२००१ मे ६ अगस्तक' हम शाखामे आएल रही।
२००२ मे २० दिसम्बर क' हम ऑफिसमे अग्रवाल साहेबकें कहलियनि जे हमरा मदति करथि आ जहिना जोर लगाक' हमर पोस्टिंग एत' करबौने छलाह तहिना एत'सँ स्थानान्तरण करयबामे हमर सहयोग करथि,हम आभारी रह्बनि।
अग्रवाल साहेब हमरा बुझौलनि, एना किए परेशानीक अनुभव क' रहल छी, हम छी एहि ठाम, कियो अहाँक किछु नै बिगाड़ि सकैए, अहाँ निश्चिन्त भ' क' रहू।
हम जखन कहलियनि जे बैंकक हितमे आ अपनो हितमे ई हमरा आवश्यक लगैए, तखन अग्रवाल साहेब पुछलनि जे कत' जाएब, राजनन्दगाँवमे वरिष्ठ प्रबन्धकक पद खाली छै,ओत' जाएब?
हम कहलियनि जे रायपुरमे कोनो दोसर ब्रांच अथवा कोनो आन कार्यालयमे होइत त हमरा डेरा बदलबाक काज नै पड़ैत।
अग्रवाल साहेब कहलनि जे तखन जोनल ऑफिसमे भ' सकैए, मुदा ओत' त फेर हुनकासँ भेंट हैत।
हम कहलियनि जे हमरा हुनकासँ कोनो परेशानी नै अछि, ओहो हमरा

नीक लोक त कहिते छथि, एहि शाखाक लेल नीक वरिष्ठ प्रबंधक नै मानैत छथि, हम अपने जखन एहि ठामसँ हट' चाहैत छी त ओ जे चाहैत छथि से पूर भ' जेतनि आ ई बैंकक हितमे हेतै, हमरा जतेक वेतन एत' भेटैए से त भेटबे करत, एकटा मानसिक तनावसँ हम मुक्त भ' जाएब-से हमरो लाभ हैत।

२३ दिसम्बरक' अग्रवाल साहेब सूचित केलनि जे हमर स्थानान्तरण आंचलिक कार्यालयमे करबापर सहमति भेटि गेल अछि। हम बहुत आनन्दित भेलहुँ।

२६ दिसम्बर क' हमरा स्थानान्तरण आदेश प्राप्त भ' गेल।

२००३ मे २ जनबरी क' आंचलिक कार्यालयसँ बनर्जी साहेब एलाह हमरा स्थानपर काज करबाक लेल।

४ जनबरी क' हम सदर बाजार, रायपुर शाखासँ भारमुक्त भए ६ जनबरीक' आंचलिक कार्यालय, रायपुरमे योगदान केलहुँ।

पटना / २७.०१.२०२२

(२५)

सपता-विपताक कथा जिनगी (?)

रायपुरमे मैथिली :

समता कॉलोनीमे हमर आवासक लगेमे श्रीचन्द्र झाजीक आवास छलनि। झाजी बरदेपुर गामक छलाह, सासुर कटैया छलनि। शासकीय विभागमे इंजिनियर छलाह। हुनका सभसँ अधिक काल भेंट-घाँट भ' जाइत छल।

झाजीक बहिन-बहिनो कुशालपुर मोहल्लामे रहैत छलखिन। बहिनो छलखिन शोभाकान्त झा। शोभाकान्त बाबू सेवानिवृत शिक्षक छलाह आ साहित्यकार सेहो छलाह।हुनक मैथिली गीतक पोथी 'राजा जनक जी के बाग़मे' प्रकाशित छलनि। ओ मैथिली पत्रिका 'मिथिलायतन'क सम्पादक सेहो छलाह। मैथिलीक कार्यक्रम सबहक आयोजन करैत छलाह शोभाकान्त बाबू। हुनक पुत्र संदीपजी जे भिलाइमे इंजिनियर छलखिन सेहो मैथिली कार्यक्रम सभमे रूचि लैत छलाह। शोभाकान्त बाबूक एकटा बेटी-जमाय सेहो ओही मोहल्लामे रहैत छलखिन आ ओहो सभ मैथिली कार्यक्रममे रूचि लैत छलाह। हुनका सभसँ परिचय भेल, नीक लागल।

पुरानी बस्तीमे बहुत मैथिल छलाह। ओत' सरयूकान्त झा जीसँ परिचय भेल।

ओ सभ मधुबनी लगक भरिसक हरिपुर गामसँ बहुत पहिने गेल छलाह, ओ अवकाशप्राप्त प्राचार्य छलाह। हुनकर सबहक भाषा मैथिली नहि रहि गेल छलनि।

ओ सभ छत्तीसगढ़ी आ हिन्दीमे गप करैत छलाह। विधि-व्यवहारमे मिथिलाक संस्कार बचाक' रखने छलाह आ अपनाकें मैथिल कहैत-

बुझैत छलाह।

गणेश मन्दिरपर सप्ताहमे एक दिन भरिसक रविदिनक' साँझमे कीर्तन, रामचरित मानसक पाठ होइत छलैक, बहुत गोटे जुटैत छलाह, हरमुनियाँ, ढोलक,झालि बजैत छलै।कहियोक' अष्टियाम सेहो होइ छलै। एक बेर हमहूँ सम्मिलित भेल छी।

रायपुरमे बहुत मैथिल छलाह जिनकर पूर्वज बहुत पहिने आएल छलखिन, हुनकर मातृभाषा मैथिली नहि रहि गेल छलनि, ओ सभ छत्तीसगढ़ी,हिन्दी, अंग्रेजी बजैत छलाह। २००२ मे २४ फरबरीक' छत्तीसगढ़ मैथिल ब्राह्मण सभाक सम्मेलनमे हमहूँ उपस्थित छलहुँ। ओहि सभामे विद्यापतिक नामपर एकटा इंजीनियरिंग कॉलेज खोलबाक प्रस्ताव पारित भेल रहै। अशोक चौधरी अध्यक्ष चुनल गेल छलाह। ओ राजनन्दगाँवक छलाह।

ओहि सभामे क्यो कविवर सीताराम झाक कविताक उल्लेख केने छलाह :

'पढ़ि-लिखिक' जे नहि बजै छथि मातृभाषा मैथिली
मोन होइछ झुटकासँ हुनकर कान दूनू ऐंठ ली।'

सरयू कान्त बाबू कहलखिन ' इसे ठीक से समझने की जरूरत है,यह उनके लिए कहा गया है जिनकी मातृभाषा मैथिली है और मैथिली नहीं बोलते हैं।'

हुनका सभकेँ मैथिली बाजब आब बहुत कठिनाह लगैत छनि, तथापि ओ सभ अपनाकें मैथिल कहनाइ नै छोड़ने छथि, बल्कि ताहिसँ गौरवान्वित अनुभव करैत छथि। तें 'मिथिलायतन' पत्रिकामे मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे रचना सभ छपैत छलै। विद्यापति पर्वमे कार्यक्रम मैथिली आ हिन्दी दुनूमे चलैत छलै।एक बेर आकाशवाणी दरभंगाक गीत आ नाटक प्रभाग द्वारा मैथिलीमे बहुत आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत

भेल छलै। ई टीम भिलाइमे सेहो अपन प्रस्तुति देलक।
पंजाब नेशनल बैंकक प्रबन्धक छलाह उमा शंकर झा जे दुल्हा गामक छलाह। हुनकासँ परिचय भेल। ओ विशुद्ध मैथिलीमे एकटा पत्रिका निकालबाक विचार केलनि, किछु काज भेलै मुदा बादमे मैथिली भाषी आ अमैथिली भाषी सबहक बीच एकता प्रभावित हेबाक आशंकासँ ई कार्यक्रम स्थगित भ' गेल।
एत' मैथिल लोकनि पुत्र-पुत्री सभकें शिक्षाक समान अबसर दैत भेटलाह। पुत्रीक इच्छा-आकांछाक आदर करैत लोक भेटलाह। पुत्रीक इच्छानुसार विवाहक स्वीकृति देबामे उदारता देखबैत लोक सभ भेटलाह।
एकटा प्रतिष्ठित परिवारक मुखिया कहलनि जे हुनकर छोट पुत्री जे कृषि महाविद्यालयमे व्याख्याता छलखिन, एकटा बंगाली ब्राह्मण परिवारक लड़काक संग विवाहक अनुमति मंगलखिन, लड़का बिल्डर छलाह, कन्याकें ठीकसँ सोचि-विचारि लेबाक सलाह देलखिन आ अन्ततः कन्याक परिपक्व निर्णयकें स्वकृति द' क' सभकें सही सूचना दैत शुभ-शुभक' विवाह करा देलखिन।
ओ कहलनि जे दुनू परिवारक सलाहसँ बेटी जाधरि नैहरमे छलीह ताधरि मैथिल ब्राह्मणक रीतिसँ आ जखन सासुर गेलीह त ओहि समाजक रीतिसँ सभ कार्यक्रम भेलै।
हुनक जेठ कन्या इंजिनियर छलखिन। बादमे हुनकर विवाह भेलनि। ओ मैथिले ब्राह्मण परिवारमे विवाह कर' चाहैत छलीह, तें बिहारेक एकटा मैथिल ब्राह्मण इंजिनियर लड़कासँ हुनकर विवाह भेलनि। ओहि विवाहमे हमहूँ उपस्थित रही। दूधाधारी मठक सत्संग भवनमे २० जून २००२क' ओ समारोह आयोजित भेल छलै। बहुत विधि-व्यवहार परिचित लागल छल।लड़का पक्षक लोक सभ मैथिली भाषी छलाह। एकटा डेंटिस्टसँ सम्पर्क केलहुँ, मैथिल ब्राह्मण छलाह, नाममे झा

जोड़ल छलनि। पत्नी सेहो डेंटिस्ट छलखिन, हुनकर नाममे दोसर किछु जोड़ल छलनि। डॉक्टर साहेब कहलनि जे दुनू गोटे एके कॉलेजमे पढैत छलाह, बादमे पति-पत्नी बनि गेलाह,पत्नी गुजराती छथिन।

हमरा अपन जेठ कन्याक लेल ओतहु लड़का तकबाक मोन भेल।

एक दिन शरद बाबूक संग प्रसन्न कुमार ठाकुरजी ओत' गेल रही। हुनकर पुत्र एम आर छलखिन, अपने कोनो नोकरीसँ सेवामुक्त छलाह। ओ कहलनि जे अगिला साल बालकक विवाह करताह। हुनक टिप्पणी रहनि जे अधिकतर बिहारक मैथिल ब्राह्मण सभ अपन बेटाक विवाह बिहारेमे कर' चाहैत छथि, मुदा बेटीक विवाह एमहर कर' चाहैत छथि।

एक गोटे भेटलाह जे शिक्षक छलाह,हुनक पत्नी सेहो शिक्षा-सेवामे छलखिन। हुनक पुत्र कोनो खदानमे अधिकारीक पदपर काज करैत छलखिन। ओ अपने हिन्दी भाषी मैथिल ब्राह्मण छलाह, पत्नी ओही ठामक अग्रवाल परिवारसँ आएल छलखिन।

हुनका ओत' गेल रही। नीक लागल रह्य। हुनका फोटो आ बायोडाटा देने रहियनि। बादमे मैथिली-हिन्दीक कारण हमरा घरमे मतैक्य नहि भ' सकल। हुनका कहि देलियनि। ओहो फोटो आ बायोडाटा घुरा देलनि।

हमरा अनुभव भेल जे मैथिली-हिन्दी ल'क' आपसमे ठीकसँ गप नै भ' पबैत अछि।

असलमे जत' प्रेम उपस्थित भ' जाइत छैक,ओत' भाषा सेहो बाधा नै बनैत छै,मुदा प्रेम हेबाक लेल भाषाक योगदानक सेहो अधिक ठाम नीक भूमिका रहैत छैक।

रायपुरक निकट भिलाइ आ राजनंदगाँवमे सेहो मैथिल सभ रहैत

छथि।
एक बेर रायपुरसँ बरियातीमे राजनंदगाँव गेल रही।
ओहि बरियातीमे जे सभ गेल छलाह ओहिमे किछु गोटे ओहि ठामक चलनक अनुसार नचैत छलाह,से हमरा नीक नै लागल रह्य किएक त हम एना अपना सभ दिस नै देखने रहिऐ। भोजनमे दुराग्रह एम्हरे जकाँ देखल।
विद्यापति भवनमे आयोजित सभामे दू बेर गेलहुँ। बहुत गोटेसँ परिचय भेल।
ओतहु वैह। किछु गोटे मैथिली भाषी, किछु अमैथिली भाषी। अमैथिली भाषीमे मनीष कुमार झा युवा आ चर्चित नाम छलाह। मैथिली भाषी सबहक इच्छा होइत छलनि जे शेष मैथिल सभ सेहो मैथिली सीखथि, लीखथि आ बाजथि, मुदा हुनका सबहक लेल ई काज ओतबे कठिन भ' गेल छलनि जतेक कठिन हमरा सभमेसँ अधिक लोकक लेल आब मिथिलाक्षरमे लीखब भ' गेल अछि।
राधा कृष्ण झा,अरुण कुमार झा,जयेश झा(अरेड़क),अरविन्द कुमार मिश्र (भवानीपुरक),कवीन्द्र झा,विभाकर ठाकुर (समौलक),शशिकांत झा,कार्तिकेश झा,प्रफुल्लजी,सत्येन जी आदि लोकनि सभसँ सेहो भेंट-घाँट आ परिचय भेल। राधा कृष्ण बाबू संगीतक क्षेत्रमे पैघ नाम छलाह आ शासकीय सेवासँ अवकाश प्राप्त केने छलाह, तथापि दूरदर्शनमे सेवा दैत छलाह। अरुण कुमार झा जी रायपुर इंजीनियरिंग कॉलेजमे प्रोफेसर छलाह। अरविन्द कुमार मिश्रजी इंजिनियर छलाह। कवीन्द्र झाजी इंगलिश स्पोकन कोर्स चलबैत छलाह। कार्तिकेश झा शिक्षा सेवामे छलाह, बादमे मुख्य मंत्रीक कार्यालयमे चर्चित नाम भेलाह। विभाकर ठाकुरजी भिलाइमे सेन्ट्रल बैंकक कोनो शाखामे काज करैत छलाह। जयेशजी सभ सामाजिक काजमे सक्रिय रहैत छलाह, कोनो नोकरीमे छलाह आ

एकटा पुत्र इंजीनियरिंगक पढाइ क' रहल छलखिन। प्रफुल्लजी साहित्यकार-पत्रकार छलाह।

रायपुरमे किछु भोजमे सेहो सम्मिलित हेबाक अवसर भेटल।

१४,१५ अगस्त २००५ क' सुमनजीक पिताक एकादशा-द्वादशा छलनि, जयेश जी नोत द' गेल छलाह। उमाशंकरजीक संग भोजमे सम्मिलित भेलहुँ। ओत' मेघौलक चौधरीजी आ पनिचोभक चौधरी जीसँ सेहो परिचय भेल। मेघौलक चौधरीजी पंजाब एंड सिन्ध बैंकमे सहायक प्रबंधक छलाह।

अरुण कुमार झाजीक आवासपर सेहो कोनो भोजमे सम्मिलित भेल छी।

भोज सबहक विन्यास परिचित लागल,आकर्षक लागल।

हमरा गामक अनिल कुमार ठाकुरजी ओरिएण्टल बैंक ऑफ़ कॉमर्समे हेड केशियर छलाह,भेंट भेल, बहुत नीक लागल। ओ रायपुरमे घर बनौलनि, पिताजी एत' रहिक' बहुत सहयोग केलखिन। समय-समयपर हमरा सबहक भेंट-घाँट होइत रहैत छल।

वीर सावरकर नगरमे रतन मिश्रजीसँ भेंट भेल,परिचय भेल।ओ एक समय सिवान मे नोकरीमे छलाह,वर्तमानमे वूलवर्थ कम्पनीमे काज करैत छलाह।

आंचलिक कार्यालयमे हम :

आंचलिक कार्यालयमे हमरा दू टा विभागक देख-रेखक काज देल गेल छल :

ग्रामीण विकास आ योजना-विकास।

दुनू विभागमे आरम्भमे दू-दू टा अधिकारी छलाह।

दूनू विभागक मुख्य काज छलै : केन्द्रीय कार्यालयसँ प्राप्त सर्कुलरक अनुसार विभिन्न योजनाक क्रियान्वयन शाखा स्तरपर सुनिश्चित करबाक

लेल क्षेत्रीय कार्यालय सभकें आ अग्रणी बैंक कार्यालय सभकें उचित दिशा-निर्देश जारी करब, क्षेत्रीय कार्यालय सबहक माध्यमसँ शाखा सबहक प्रगतिक आँकड़ा प्राप्त कय ओहिसँ सम्पूर्ण अंचलक आँकड़ा तैयार क' क' केन्द्रीय कार्यालयकें प्रेषित करब, राज्य स्तरपर दुनू विभागसँ सम्बंधित बैसक सभमे (जाहिमे नाबार्ड द्वारा आयोजित बैसक सेहो छल) भाग लेब आ बैसकमे लेल गेल निर्णयसँ सम्बंधित सभ कार्यालय आ अधिकारी लोकनिकें सूचित करब आ ओकर क्रियान्वयन सुनिश्चित करबाक लेल आवश्यक पत्राचार आ सम्पर्क करब। दू टा मुख्य प्रबंधक आ आंचलिक प्रबंधक महोदय हमर अभिभावक छलाह। हुनका लोकनिक मार्गदर्शनमे सभ काज करबाक छल।

आंचलिक कार्यालयमे हमर समकक्ष तीन गोटे और छलाह जे कार्मिक,परिचालन आ विधि विभागमे छलाह।

रायपुर अंचलमे पाँचटा क्षेत्रीय कार्यालय छलै : रायपुर, शहडोल, अम्बिकापुर,जबलपुर आ छिंदवाड़ा।

एत' एलाक बाद वर्मा साहेबक मधुर पक्षसँ परिचित भेलहुँ। सभ अधिकारी-कर्मचारी लग जाक' हाथ मिलबैत छलाह, कुशल-क्षेम पुछैत छलाह। सेवा निवृतिक समय लग आबि गेल छलनि,मुदा अनुशासनप्रियता एखनहुँ ओतबे छलनि।

एक साँझ हुनका सम्मानमे आंचलिक कार्यालय स्टाफ मनोरंजन क्लब दिससँ छत्तीसगढ़ क्लबमे आयोजित भोजमे आंचलिक कार्यालयक अधिकारी लोकनिक संग हमहूँ रही। ठाढ़ भ' क' सभ गोटे प्लेटमे ल'क' भोजन करैत छलाह। सभ गोटेक भोजन समाप्त भ' गेल छलनि, हमरा आ साहूजी (वरिष्ठ प्रबंधक,कार्मिक विभाग)क हाथमे प्लेट रहबे करय। वर्मा साहेब आनन्दित भए चुटकुला सुना रहल छलाह। सभ गोटे चुटकुलापर ठहक्का मारिक' हँसैत छलाह।

वर्मा साहेब हमरा आ साहूजीकें कहलनि, नजदीक आओ यार, चुटकुला

सुनो और अच्छा नहीं लगे तब भी जोर से हँसो।
हम सभ कनी लग गेलहुँ।
हुनकर बातक समर्थनमे अति उत्साहमे आबि गेलाह वरिष्ठ प्रबंधक,राजभाषा आ हमरा हाथक प्लेट छीनिक' नीचाँ पटकैत बजलाह, 'हाँ सर, प्लेट तोड़कर हँसा जाय।'
प्लेट नीचाँ खसलै आ फूटि गेलै, खाए जोग्य त कनिएँ वस्तु बाँचल छलै, जे छलै से नीचाँ छिड़िया गेलै।
तकरा बाद वर्मा साहेबक तामस जागि गेलनि। बड्ड गन्जन केलखिन हुनका।
सभ कियो अबाक !
हम कहलियनि जे हम भोजन क' चुकल छलहुँ, हुनकर कहब रहनि 'ये लोग क्या समझेंगे कि इतने असभ्य होते हैं ये लोग !'
वरिष्ठ प्रबंधक,राजभाषा नीक लोक छलाह, मुदा चुटकुला सुनैत-सुनैत भावावेशमे
आबि गेल छलाह आ एक छण लेल बिसरि गेलाह जे चुटकुला सुनबै बला एखनो हमर आंचलिक प्रबंधक महोदय छथि।
ओ माफी मँगलखिन तथापि बड़ी काल धरि डाँट-फटकार सून' पड़लनि। जहिना सभ ठहक्का मारिक' हँसैत छलाह, तहिना ओत' एकदम मरघटक शान्ति उपस्थित भ' गेलै।
मुख्य प्रबंधक महोदय हुनका कार लग ल' गेलाह आ चुपचाप सभ कियो अपन-अपन घर गेलाह।
आंचलिक कार्यालयमे कंप्यूटरपर वर्ड आ एक्सेलमे काज केनाइ सीखि लेलहुँ। अपनेसँ चिट्ठी टाइप केनाइ आ क्षेत्रीय कार्यालय सभसँ प्राप्त कोनो विवरणक समेकित विवरण तैयार केनाइ सिखलहुँ। एहि लेल ऑफिस समयक बादो एक घंटा अथवा बेशी रहि जाइत छलहुँ।

एक दिन दूरदर्शनमे एकटा बैसकमे भाग लेबय गेलहुँ। गुप्ताजी, निदेशक महोदयसँ परिचय भेल। ओ भरिसक सहरसा जिलाक छलाह, रायपुरमे अपन घर बना नेने छलाह, मैथिलीमे हमरासँ गप केलनि त बहुत नीक लागल। हुनका अपन प्रकाशित पोथी देलियनि।ओ हिन्दी कार्यक्रमक लेल हमरा एकटा कॉन्ट्रैक्ट देबाक इच्छा व्यक्त केलनि। हमरा नीक लागल, मुदा हम कहलियनि जे हम त एखन तीन साल रहब, हमरा अवसर बादमे देब, हमर आंचलिक प्रबंधक महोदय अही मासमे सेवानिवृत होम' जा रहल छथि, हुनकासँ साक्षात्कारक एकटा कार्यक्रमक व्यवस्था करबाबी त हमरा नीक लागत।

ओ कहलनि जे अहाँक आंचलिक प्रबंधक दूरदर्शन लेल सेहो महत्वपूर्ण भ' सकैत छथि जँ ओ शासकीय योजनामे बैंक सभक योगदानपर बात करबाक लेल तैयार होथि। हम कहलयनि, तैयार भ' जेताह। ओ कहलनि जे एकटा महिला हुनकासँ छत्तीसगढ़ीमे प्रश्न पुछथिन, ओ हिन्दीमे जबाब द' सकै छथिन।

निदेशक महोदय आ सहगल मैडम २३ जनवरीक' साक्षात्कारक कार्यक्रमक रिकॉर्डिंगक तिथि निर्धारित केलनि।

मैडम हमरा एकटा रसीद पर हस्ताक्षर करबाक' पहिने जमा क' देबाक सलाह देलनि जाहिसँ चेक बनिक' तैयार रहनि आ साक्षात्कारक बाद हुनका उपलब्ध भ' जाइन।

हम जखन ऑफिसमे अपन साहेबकें एहि कार्यक्रमक सूचना देलियनि त हुनका नीक त लगलनि कारण भरिसक पहिल बेर एकर अनुभव होइबला रहनि। मुदा हमरा चेतावनी देलनि जे एहि कार्यक्रमक तैयारीक लेल अहीं जबाबदेह हएब।

जखन खाली रसीदपर हस्ताक्षर लेल कहलयनि त तमसा गेलाह। कहलनि, अहाँ बैंकमे वरिष्ठ प्रबंधक छी आ हमरा ब्लैंक रसीदपर हस्ताक्षर कर' कहैत छी।

हुनकर कहब छलनि जे बिना प्राप्त केने किए लीखिक' दियौ जे पन्द्रह सौ रुपैया प्राप्त केलहुँ। हम साहेबकें नै समझा सकलियनि जे किए आवश्यक छै। सभ ऑफिसक विधि-व्यवहार, परम्परा आ संस्कृतिमे किछु-किछु अन्तर होइत छैक।

हम कतबो कहलियनि, ओ हस्ताक्षर नै केलनि।

हम ओ पेपर दूरदर्शनकें घुरा देलिऐ।

साहेबकें साक्षात्कारक तैयारीक हेतु ग्रामीण क्षेत्रक सभ योजनाक सार कागजपर लीखिक' द' देलियनि। बहुत किछु त बुझले रहनि, फेरसँ देखिक' किछु चर्चा क' क' संतुष्ट भ' गेलाह।

रिकॉर्डिंग दिन हमरो चल' कहलनि।

संगे गेलहुँ।

स्टूडियोमे रिकॉर्डिंगसँ पहिने किछु मेक-अप सेहो कएल जाइत छै, से सभ भेलनि।

साक्षात्कार आरम्भ भेलै। प्रसन्न मुद्रामे छलाह।

हम कातमे रही, सुनैत रही जे की पूछल जाइ छनि आ की जबाब दैत छथिन।

मुदा सभ किछु ठीक रह्लै। साक्षात्कार नीक रहलनि। हमरो नीक लागल।

कार्यक्रममे कोनो व्यवधान नै होइ, से चिंता छल।

मगर एकटा व्यवधान त भइए गेलनि जे साहेबकें एक हजार पांच सय रुपैयाक चेक ओहि दिन नै भेटलनि।

कार्यक्रम अधिकारी कहलकनि जे पेपरपर हस्ताक्षर क'क' पहिने द' देने रहितिऐ त आइ चेक भेटि जाइत।

जाधरि चेक भेटलनि, साहेब कतेक बेर पुछलनि, 'दूरदर्शन को मुझे पंद्रह सौ देने के लिए पैसे नहीं हैं?'

वर्मा साहेब हिमाचल प्रदेशक छलाह। अवकाश प्राप्तिक बाद घर जेबाक लेल तिथि निश्चित भ' गेल छलनि, तें चिन्ता होइ छलनि। जहिया चेक आबि गेलनि, हुनकासँ बेशी खुशी हमरा भेल।
वर्मा साहेब ३१जनवरीक' सेवा निवृत भेलाह, ३० क' हुनक साक्षात्कारक कार्यक्रम दूरदर्शनपर प्रसारित भेलनि। अंचलमे सभ शाखाकें एहि कार्यक्रमक सूचना द' देल गेल छलै।
बादमे हमरा दूरदर्शनमे एकटा कवि गोष्ठीमे भाग लेबाक अवसर सेहो भेटल जाहिमे तीनटा और साहित्यकार छलाह। गोष्ठीक संचालनक भार सेहो हमरे देल गेल छल। ओहिमे सभ कियो हिन्दी रचना प्रस्तुत केने छलाह।
वसन्तक विवाह :
वसन्त अर्थशास्त्रमे एम. ए. क'क' लाइब्रेरी साइंसमे स्नातक भ' गेल छलीह आ ओहीमे एम.ए.क' तैयारी क' रहल छलीह।
बाहर रहबाक कारण गाम-घरसँ सम्पर्क नीक नहि रहि गेल छल। रायपुरमे सेहो उपयुक्त कथाक व्यवस्था नहि भ' सकल। २००२ मे दू-तीन सप्ताहक लेल गाम, सासुर आ किछु आन ठामक यात्राक विचार केलहुँ।
हमर नेताजी अग्रवाल साहेब एल.टी.सी.क उपयोग करबाक सुझाव देलनि,क्षेत्रीय प्रबंधक कतहु आन ठाम गेल छलाह,हुनकासँ फोनपर स्वीकृति प्राप्त करबाय रायपुरसँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटनाक प्लेनक टिकट उपलब्ध करबा देने छलाह। परिवारक संग पहिने दिल्ली गेलहुँ। ओत' हमर बहिन-बहिनो लक्ष्मीनगर आ किछु आन ठाम संपर्क करबाक सुझाव देलनि, ओत' ओझाजीक संग गेलहुँ।
दिल्लीसँ पटना आ ओत'सँ गाम गेलहुँ। गामसँ सासुर लदारी गेलहुँ।ओत'सँ राजू (हमर सादूक पुत्र) संगे मोटर साइकिलसँ डुमरा, देपुरा,बेलौंजा,मुरलिया चक घूमि साँझमे लदारी गेलहुँ।

लदारीसँ छोट सार, जे शिक्षक छलाह,हुनका संग दरभंगा गेलहुँ। दरभंगामे भारतीय स्टेट बैंकक सिटी ब्रांचमे सुशील कुमार झासँ संपर्क केलहुँ, हुनक बालक छत्तीसगढ़क भाटापारा शाखामे पी.ओ.छलखिन। ओ बायोडाटा आ फोटो राखि लेलनि, मुदा संतोषप्रद गप नै भेल। मास्टर साहेब बिन्देजीक संग मोटर साइकिलसँ नभहत आ मधुबनी गेलहुँ। गाम घुरलहुँ त हमर कक्का कहलनि जे एकटा कथा जँ अहाँके पसंद हो त भ’ सकैए।

हमरा ई अनुभव भेल अछि जे हम सभ जखन अनकहु पसन्दक सम्मान कर’ लगैत छी त काज कठिन नहि रहि जाइत अछि।

हम जखन पी. ओ. तकैत छलहुँ त कठिन छल, क्लर्क पर विचार कर’ लगलहुँ त आसान भ’ गेल। हम सोचलहुँ हमहूँ त कहियो बैंकमे कृषि सहायकक काज केने छी।

हम सभ गेलहुँ राघोपुर। संगमे ककाक अतिरिक्त पितिऔत दिलीप,भातिज सुशील आ मास्टर साहेब बिन्देजी सेहो छलाह। ककाक एक पुत्रीक विवाह सेहो ओहि टोलमे भेल छलनि। सुशीलक एकटा भौजी सेहो ओही टोलक छलखिन।

घर-दरबज्जा आदि देखि सभ गोटेकें कथा पसंद भेलनि।

लड़का द’ पता चलल जे बी. एस.सी. क’ क’ एस.एस.सी.क परीक्षा पास क’ क’ कर्मचारी भविष्य निधि संगठनमे मुंबइमे नोकरी करैत छथि।

पिता शासकीय सेवामे छ्लखिन ।

हुनकासँ गप भेल। कहलनि जे दुर्गा पूजामे बालक एताह तखने किछु गप भ’ सकैत अछि।

हमरो सभकें हुनका सबहक विषयमे जानब आसान भेल आ हुनको सभकें हमरा सभक विषयमे आसानीसँ बहुत जानकारी प्राप्त भ’

गेलनि।

दुर्गा पूजाक समय हमर अनुज रतनजी राघोपुर जाक' लड़काकें देखि एलाह।

हम मुंबईमे एकटा परिचित लोकक माध्यमसँ लड़काक विषयमे जानकारी प्राप्त केलहुँ, फेर अपनो जाक' देखि एलहुँ।

डोमनहिलमे रही त गुदरीपाड़ाक मनीषसँ परिचय भेल छल, ओ अँधेरीमे रहैत छलाह, कोनो सीरियलक लेल लीखि रहल छलाह। हुनके संगे गेलहुँ नवी मुंबइमे वाशी स्टेशनसँ जूइनगर स्टेशन लग।

अपना बैचक किछु गोटेक संग झाजी एक ठाम रहैत छलाह। सभ गोटेक पोस्टिंग सेहो लगे-लगेमे छलनि।

रवि दिन छलै।मनीष संगे पहुँचल रही। जलखै आ भोजन एतेक करबै गेलाह जे अगिला दू दिन धरि किछु खेबाक इच्छा नहि भेल। हमर छोट सार बिन्देजी आ हुनक छोट पुत्र आशुतोष राघोपुर जाक' शेष गप क'क' हमरा जना देलनि, विवाह तय भ' गेलै।

विवाहक तिथिसँ किछु दिन पहिने २००३ मे २५ फरबरीक' दरभंगा काली मन्दिरस्थानमे भेंट-घाँटक कार्यक्रम निश्चित भेल।

राघोपुरसँ ओझाजीक माए आ बाबू आएल छलखिन। एमहरसँ वसन्तक संग हम दुनू गोटे रही,हमर छोट सार, सरहोजि आ आशुतोष छलाह। ओकरा प्रात हमरा सूचना भेटल जे झाजीक माए बहुत दुखी छथिन। वसन्तक मुँहपर बर्रेक चेन्ह छलै, ओइ दिन ब्लीचिंग भेल रहै से कनी और पसरल लगै छलै, से हुनक चिन्ताक कारण भ' गेल छलनि जे बेटा ई ने कहय जे तों सभ की देखलहिन।

हम हुनका फोन क' क' कहलियनि जे चिन्ता नै करू, ई ठीक भ' जाइबला छै।

हुनका ईहो कहि देलियनि जे मोन स्थिर क' लिय', एखन देरी नै भेल छै, एत' नै हेतै त दोसर ठाम हेतै विवाह, अहाँ सबहक मोन नै

हएत त नै हेतै।

हमरा कहलनि जे एक बेर हमरा बेटीकें सेहो देखा देबाक व्यवस्था करू।

सैह भेलै।

मधुबनीमे हुनक पुत्री एलखिन। वसन्तक संग हम रही आ आशुतोष छलाह। वसन्तकें कृष्णादाइसँ भेंट-घाँटक संग खूब गप-सप भेलनि। कृष्णादाइक स्वीकृतिसँ सभ गोटे संतुष्ट भ' गेलाह।

विवाहक तिथि ओहिना रहलै।

विवाहसँ पहिने ६ मार्चक' किछु सामान सभ ल'क' नौ गोटे गेलहुँ खान-पीनक औपचारिकतामे।

बैंकसँ हम आवास ऋण नहि नेने छलहुँ। पी. एफ. आ एल.आइ.सी. पालिसीक विरुद्ध ऋण प्राप्त केने रही।एन.एस.सीक विरुद्ध ओ डी स्वीकृत छल।

हमर छोट भाए रतनजी गाममे छलाह। ओ शामियाना,टेबल,कुर्सी, हलुआइ आ अन्य बहुत रास सामानक व्यवस्था केने छलाह। बर आ बरियाती अनबाक लेल हमर ससुर आ हमर अनुज ललनजी गेल छलाह।

२००३ मे ७ मार्चक' विवाह कार्य संपन्न भेलै। ११ क' चतुर्थी भेलै,१३ क' ओझाजी विदा भेलाह।

द्विरागमन दू सालक बाद हेबाक छलै।

हम सभ वसन्तक संग २२ क' गामसँ रायपुर लेल प्रस्थान केलहुँ। रायपुरमे ४ अप्रैल क' ओझाजी मुंबइसँ एलाह आ २१ क' गेलाह। ३० मइक' बट-सावित्री पावनि भेलै। ओइ दिन हमरा गामक अनिल ठाकुरजी परिवारक संग डेरापर एलाह।

पंचमीसँ कोजगरा धरि :

बच्चीक (हमर पत्नीक) स्वास्थ्य ठीक नहि रहैत छलनि। सोनोग्राफी रिपोर्ट देखि चिकित्सक लोकनि ऑपरेशनक सलाह देलकनि।
१ जुलाइक' पाण्डेय नर्सिंग होममे बच्चीक ऑपरेशन भेलनि। पटनासँ हमर साढ़ूक माझिल पुत्र राजू आएल छलाह। बच्चीक ब्लड ग्रुपसँ राजूक ब्लड ग्रुप मिलैत छलनि। ओ एहि लेल २७ जूनक' माएक संग आबि गेल छलाह। हुनका संगे ब्लड बैंक गेलहुँ, राजू ३५० CC ब्लड देलखिन। ऑपरेशन २.३० बजे शुरू भेलै ४.१५ तक चललै।
१८ जुलाइक' पंचमी पावनि भेलै। २६ क' ओझाजी मुंबइसँ एलाह। राजू ९ जुलाइक' एसगरे पटना चलि गेलाह। साढ़ू २९ जुलाइक' एलाह आ ४ अगस्तक' पत्नीक संग पटना गेलाह। १ अगस्तक' मधुश्रावणी पावनि भेलै।
९ अक्टूबर क' कोजगरा छलै, ६ क' गाम पहुँचलहुँ। ७ आ ८ क' रतनजीक संग मधुबनी जाक' बजारक सामान कीनै गेलहुँ। ९ क' साँझमे ६ बजे राघोपुर पहुँचलहुँ।
१२ क' राघोपुरसँ गाम गेलहुँ। १४ क' गामसँ चलिक' १५ क' रातिमे ९ बजे रायपुर पहुँचलहुँ।
मुंबइ आ चंडीगढ़ देखल :
ओझाजीक सहमतिसँ २००४ मे २६ जनवरीक' रायपुरसँ प्रस्थान कय वसन्त २७ क' मुंबइ पहुँचलीह। ३ मार्चक' दुखित पड़ि गेलीह। ३ स ६ धरि अस्पतालमे रहलीह।
बेर-बेर दुखित पड़बाक समाचार आब' लागल।
सभ गोटे चिंतित भेलहुँ। ओझाजीक नव नोकरी। बेर-बेर छुट्टी ल'क' इलाज करेबाक व्यवस्थामे हुनकर परेशानीक अनुमान करैत हम अपन छुट्टी स्वीकृत कराय ९ अप्रैलक' मुंबइ लेल रायपुरसँ प्रस्थान केलहुँ। १० क' नवी मुंबईमे जूइनगर

आवासपर पहुँचलहुँ।

एम जी एम हॉस्पिटलमे डा.सुमित मेहतासँ संपर्क करै गेलहुँ। डॉक्टरक सलाहक अनुसार वसन्त १३ क' अस्पतालमे भर्ती भेलीह।१४ क' किछु जाँच भेलनि। १५ क' डॉक्टर रीनोग्राम टेस्ट करब' कहलखिन।

१९ क' हिन्दूजा अस्पतालमे रीनोग्राम टेस्ट भेलनि।

२३ क' एम.जी.एम. अस्पतालमे पुनः भर्ती भेलीह।

डा. कहलनि जे गर्भाशय लग एकटा नली टेढ़ भ' गेल छै,ओहि कारण बेर-बेर इन्फेक्शन भ' जाइ छनि आ तें बोखार आबि जाइत छनि, साधारण ऑपरेशन द्वारा ओकरा ठीक क' देल जेतै।

की भेलै, कोना भेलै आ किए भेलै ई सोचबाक समय नहि रहि गेल छल, समस्या सामने छल, समाधान आवश्यक छल।

डा, सुमित मेहता कहलनि जे मामूली खर्चमे सभ किछु भ' जाएत।

२४ क' वसन्तक ऑपरेशन भेलनि।

२९ क' रायपुरसँ विवेकक संग बच्ची (हमर पत्नी) सेहो मुंबइ पहुँचि गेलीह।

५ मइक' वसन्त अस्पतालसँ डेरापर एलीह।

१८ क' पुनः बोखारक कारण अस्पतालमे भर्ती भेलीह।

अस्पतालमे कय बेर मलेरियाक जाँच भेलनि, जाँचमे मलेरियाक पुष्टि नै होइत छलैक। २४ क' वसन्त अस्पतालसँ डेरा एलीह।

फेर बोखार एलनि, डॉक्टरसँ संपर्क करैत छलहुँ त कहैत छलाह, मलेरिया की दवा दे दीजिए। डॉक्टर लिखितमे ई आदेश नै दैत छलाह, मुँहसँ कहैत छलाह, जाँचमे नहीं आ रहा है,मगर मुझे लगता है कि मलेरिया है,इसलिए मलेरिया की दवा दे दीजिए।

हमरा सभकें आब अस्पतालपर विश्वास नहि रहि गेल छल।

डॉक्टर आरम्भमे कहने छलाह मामूली ऑपरेशन होगा, से सही नै भेल।
कहने छलाह जे मामूली खर्चमे सभ भ' जाएत सेहो गलत सिद्ध भेल। तें आब जे ओ विना जाँचक आधार नेने मलेरियाक दबाइ द' देब' कहैत छलाह, ई सलाह विश्वसनीय नै लागल।
नोकरी आ अस्पतालक चक्करमे जमाए सेहो परेशान भ' गेल छलाह। हम सभ मुंबइ छोड़ि देबाक निर्णय लेलहुँ आ २९ मइक' वसन्तक संग हम दुनू गोटे मुंबइसँ प्रस्थान कय ३० क' रायपुर पहुँचि गेलहुँ। राघोपुर आ मुंबइसँ वसन्तक समाचार जनबाक लेल संपर्क होइत रहल।
बोखार कहियोक' आबिए जाइत छलनि।
रायपुरमे १५ जूनक' डा. गोयलसँ संपर्क कएल गेल। ओहो मलेरियाक दबाइक प्रयोगक सलाह नै देलनि।
१७ जून क' यूरिन कल्चर टेस्ट तिवारी पैथोलॉजीमे भेलनि।
२१ क' यूरोलोजिस्ट डा.शाहसँ संपर्क कएल गेल।
चंडीगढ़मे छलाह प्रो.गंगानंद झा, हुनक जेठ बालक डा. विवेकानंद झा पी.जी.आइ.मे
छलखिन। हुनका सभसँ सेहो संपर्क करैत रहलहुँ। गंगा बाबू अधिक काल समाचार पूछैत रहैत छलाह आ प्रगतिक जिज्ञासा करैत छलाह। डा.साहेबक सलाहसँ नोफ्लोक्स देल गेलनि।
बोखार कम भ' क' फेर बढि जाइत छलैक।
रायपुरक डॉक्टर दिलीप झा आ डा. संदीप जैनसँ सेहो संपर्क कएल गेल।
डा.सांत्वना दास ओत' १ जुलाइक' मलेरियाक लेल जाँच भेलनि।रिपोर्ट निगेटिव एलै।
११ जुलाईक' रूपरेला एक्स-रे क्लिनिकमे आइ.वी.यू.टेस्ट कराओल

गेलनि।

एहि टेस्टसँ ई पता चलल जे मुंबइमे भेल ऑपरेशन सफल नै भेलनि आ जे समस्या छलै से ओहिना रहि गेल छै।

आब एना किए भेलै, से विचार करबाक समय नहि रहि गेल छल। अस्पतालक दोख ताकिक' किछु समाधान नहि भ' सकैत छल। शीघ्र विकल्पक खोज करबाक छल।

१४ क' गंगा बाबूसँ संपर्क केलहुँ आ अविलम्ब चंडीगढ़ जेबाक निर्णय लेलहुँ। हमरा लागल जे निदान लेल चंडीगढ़ पहुँचब आवश्यक अछि।

हम अपन मुख्य प्रबंधक आ नव आंचलिक प्रबंधक महोदयकें सभ बात कहलियनि, अवकाश स्वीकृत भ' गेल। मुख्य प्रबंधक आर.जी.अग्रवाल सर चंडीगढ़सँ किछु दिन पूर्व आएल आ कटनी शाखामे पदस्थापित प्रबंधक सरदारजीसँ गप क' क' किछु अवधि हेतु चंडीगढ़मे हमरा सभक आवासक व्यवस्था करबा देलनि।

हम सभ १८ जुलाइक' रायपुरसँ प्रस्थान क' क' २० क' चंडीगढ़ पहुँचि गेलहुँ।

हम सर्व प्रथम आवासपर जाक' गंगा बाबूसँ भेंट केलहुँ। हुनकासँ भेंट भेलाक बाद हम चिन्तामुक्त भ' गेलहुँ।

ओ हमरा संगहि पी. जी. आइ. गेलाह। अपन पुत्र डा.विवेकानंद झासँ भेंट करौलनि। डॉक्टर साहेब एकटा पत्र देलनि यूरोलोजिस्ट डॉक्टर सिंहजीसँ संपर्क करबाक हेतु।२२ क' डॉक्टर सिंहसँ संपर्क भेल। ओ सभ रिपोर्ट देखलनि आ सही निदानक दिशामे उपचार आरम्भ भ' गेल।

१३ अगस्तक' वसन्त अस्पतालमे भर्ती भेलीह।

२३ क' ऑपरेशन हेबाक छलनि किन्तु सबेरे १०३ डिग्री बोखार

रहबाक कारण ओहि दिन ऑपरेशन स्थगित कएल गेलनि।

३ सितम्बरक' ऑपरेशन भेलनि।

४ क' दुपहरमे डॉक्टर मंडल एलाह त कहलनि,'समस्या का निदान हो चुका है।'

चंडीगढ़ अस्पतालमे कम-सँ-कम लोकसँ काज चलाब' चाहैत छलहुँ। तें किनको एबाक लेल नहि कहैत छलियनि, तथापि दिल्लीसँ हमर भागिन पवन आ अमन बेरा-बेरी चंडीगढ़ पहुँचि हमरा सबहक सहायता केलनि।

हम २६ सितम्बरक' एसगर चंडीगढ़सँ प्रस्थान कय २८ क' रायपुर पहुँचलहुँ।

७ अक्टूबर क' वसन्त आ हुनक माए ट्रेनसँ अमनक संग चंडीगढ़सँ दिल्ली गेलीह आ १३ क' पवन संगे दिल्लीसँ रायपुर पहुँचैत गेलीह।

डॉक्टर साहेबक सलाहक अनुसार हम सभ फेर एक बेर चेक करयबाक हेतु २४ नवम्बरक' पी जी आइ चंडीगढ़ गेलहुँ, २५ क' डॉक्टर साहेबसँ संपर्क कएल गेल, आइ वी यू टेस्ट भेलनि। रिपोर्टक अनुसार दुनू किडनीक फंक्शन नार्मल छलनि।

२७ क' पी जी आइमे डॉक्टर मंडल ६ मास प्रिगनेंसी रोकबाक आ नीक डॉक्टरक देख-रेखमे बच्चाक जन्म सुनिश्चित करबाक सलाह दैत रायपुर घुरबाक अनुमति देलखिन।

हम २९ क' एसगर रायपुर पहुँचि गेलहुँ।

बसन्त माएक संग दिल्लीमे दू-तीन दिन सच्चीक (हमर बहिन) ओत' आ करीब एक मास हमर अनुज ललनजीक डेरापर रहलीह। २० दिसम्बर क' ललनजीक पुत्रक जन्म भेलनि।

विवेक(पुत्र) २२ क' भोपालसँ दिल्ली गेलाह आ २००५ मे २ जनवरीक' माए आ बहिनक संग रायपुर पहुँचलाह।

वसन्त जाहि समस्यासँ गत आठ माससँ पीड़ित छलीह ओहिसँ मुक्ति भेटलनि।

बोखार एनाइ बंद भ' गेलनि आ बहुत जल्दी सामान्य स्वास्थ्य प्राप्त क' लेलनि।

अपन दुख लोककें बड़ भारी लगैत छैक, लोक सोचैत अछि ई दुख हमरे किएक भेल, मुदा जखन अनकर दुख लोक देखैत अछि तखन अपन दुख छोट लाग' लगैत छै।

हमर सबहक दुख एहेन छल जकर निदान भेल, मुदा कतेक परिचित लोकक संग एहेन दुर्घटना भेलनि जे ककरो किछु करबाक अवसरे नहि भेटलै।

रायपुरक क्षेत्रीय प्रबन्धक अपन पत्नीक हड्डी सम्बन्धी रोगक इलाज हेतु भेलूर गेल छलाह, अस्पतालक वरंडापर पत्नीकें व्हील चेयरसँ नीचाँ खसैत देखि हुनक ह्रदय गति बंद भ' गेलनि, नहि बचि सकलाह (३०.५.२००३)। पुत्र मेडिकलमे पढैत छलखिन, एकटा बेटी कुमारि छलखिन।

आंचलिक कार्यालयमे चपरासी छलाह मोहन यादव। एक दिन ऑफिस नै एलाह, पता चलल बीमार भ' क' अस्पताल गेल छथि। दोसर दिन पता चलल नै बँचलाह(१३.०८.२००५)।घरमे पत्नी आ अबोध बच्चा सभ छलनि।

आंचलिक कार्यालयमे एकटा अधिकारी छलाह लाल मोहन पटेल। नीक कवि छलाह,चित्रकार छलाह,हमर प्रिय मित्र छलाह। भिलाइमे आवास छलनि, ओतहिसँ मोटर साइकिलसँ रायपुर अबैत छलाह आ साँझमे भिलाइ घुरि जाइत छलाह। एक साँझ एकटा बसक चपेटमे आबि गेलाह, नहि बाँचि सकलाह।

हमर साढ़ूक छोट भाए उदय चन्द्र झा रांचीमे डी.एस.पी. छलखिन।

एकटा आक्रोशित भीड़कें शान्त करबाक प्रयासमे गेल छलाह। क्यो पाथर चला देलकनि, माथमे लगलनि, नहि बाँचि सकलाह।

२६ दिसम्बर(२००४)क' सबेरे ६.३० बजे हिन्द महासागरमे विनाशकारी भूकंप एलै। एहिसँ उठल तूफानी लहरिक कारण दक्षिण पूर्व एशियाक भारत सहित आठटा देशमे तबाही मचि गेलै। सोलह हजारसँ बेसी लोक मरि गेलाह आ हजारो लापता भ' गेलाह। ४० फीट तक ऊँच समुद्री लहरि ७५० किलोमीटर प्रति घंटाक रफ़्तारसँ तटीय शहरमे घुसि गेलै।

जाहि समयमे हम सभ कोनो कष्टमे रहैत छी, ओही समय कतेक लोक केहेन-केहेन कष्टमे रहैत अछि तकर पता कहाँ चलि पबैत छै। किछु पता चलितो छै त ओहने लोकक जिनकासँ कोनो सम्बन्ध रहैत छैक। किछु लोकक स्थितिक पता अखबार आदिसँ चलैत छैक। बहुत लोकक दुर्दिनक विषयमे कमे लोककें पता चलि पबैत छैक।

सपता-विपताक कथा आ वसन्तक जीवन :

माएकें सपता-विपताक कथा कहैत सुनने छियनि।

कथा कहैत-कहैत कतेक बेर कनैत छलीह।

सुननिहारि सबहक सेहो एहने हाल रहै छलनि।

राजा-रानीक जीवनमे हर्ष-विषाद-हर्ष, सुख-दुख-सुख, सम्मान-अपमान-सम्मानक कथा अछि।

कथा कहै वाली कथाक अन्तमे ईहो कहैत छथि जे राजा-रानीक जीवनमे जे आरम्भमे आ अन्तमे भेलनि से सभकें होइ आ जेहेन बीचमे भेलनि तेहेन ककरो नहि होइ।

कथा ई कहैत अछि जे दुर्दिनमे अपनो लोक सभ संग छोड़ि दैत

छैक। मुदा हमरा लगैत अछि जे दुर्दिनसँ निकलबामे अपन आत्मबलक संग बहुत लोकक स्नेह,शुभकामना,सहयोग आ आशीर्वादक आवश्यकता होइत छैक।

मुंबइमे एक राति हमरा सभकें कना गेल, बोखार कम होइते ने छलै, भेल जे बेटी आब नै बाँचत। जमाए सेहो कान' लगलाह, मुदा फेर वैह हमरा सभकें भरोस देलनि, ई सभ किए कनैत छथि, हम हिनका मर' नै देबनि चाहे जे खर्च होइ। जमाएक बातसँ बल त भेटल, मुदा चिन्ताक बात छल जे जखन ऑपरेशन भेलाक बादो बोखार अबिते छै आ डॉक्टरकें सेहो नहि बुझा रहल छनि तखन ठीक हेतै कोना,ओहि राति दू बेर स्पोंजिंगक बाद बोखार कम भेलापर खून चढ़' लगलै। ओहि राति हम सभ अस्पतालेमे रहलहुँ, ओझाजीक दूटा संगी सेहो अस्पतालमे रहि हमरा सभकें सहयोग करैत रहलाह।

ओझाजी दिनमे ऑफिस आ रातिमे अस्पतालमे रहैत छलाह। पाइ सेहो बहुत खर्च भेलनि। चंडीगढ़ जेबाक निर्णय लेलहुँ त बीस हजार रुपैया पठा देलनि। किछु अवधिक बाद फेर पन्द्रह हजार पठा देलनि। अधिक काल संपर्क करैत हाल-समाचार पुछैत रहैत छलाह।

राघोपुरसँ समधि, समधिन,वसन्तक ननदि-ननदोसि सभ सेहो संपर्क करैत रहैत छलाह। समधि-समधिन बाबा धामक कबुला सेहो केलनि। हमर माझिल भाए ललनजी दिल्लीमे आजादपुर मंडीमे एकटा साधारण नोकरी करैत छलाह। छओ बरखक एकटा कन्या आ पत्नी संग रहैत छलाह। पत्नीकें सेहो मदतिक आवश्यकता छलनि, ताहि लेल माए आबि गेल छलखिन। ललनजी शारीरिक रूपसँ मदति कर' चाहैत छलाह, मुदा हम बुझैत छलिऐक जे ओ मदति करबाक स्थितिमे नहि छलाह। फोनपर समाचारसँ अवगत करबैत रहैत छलियनि।

सभसँ छोट भाए रतनजीक जीवन अस्त-व्यस्त भ' गेल छलनि।

विवाह क’क’ पत्नीक संग दिल्लीमे जीवन-यापन कर’ चाहैत छलाह। फिजिक्ससँ एम.एस.सी. आ बी. एड. केने छलाह। माएक नामपर एकटा कोचिंग सेण्टर खोलने छलाह। एक बेर रस्तामे किछु बदमास सभ किछु टाका छीनि लेलकनि।एक दिन पियासलमे कोनो फोटोकॉपीबला दोकानपर धोखासँ कोनो तेहेन चीज पिया गेलनि जे अस्पतालमे किछु दिन भर्ती हुअ’ पड़लनि। एहि सभसँ उबरलाह त पत्नी ख़तम भ’ गेलखिन। दिल्लीसँ मोह भंग भ’ गेलनि। किछु मास हमरा सबहक संग रायपुरमे रहि बादमे गाम ध’ लेलनि। अपनेसँ भानस-भात करैत जीवन-यापन लेल शिक्षकक नोकरीक प्रयासमे लागि गेल छलाह। बादमे दोसर ठाम विवाह भेलनि, ओहो पत्नी छतपरसँ खसि पड़लखिन। अपन दुखसँ उबरलाह त वसन्तक दुखक जानकारी प्राप्त भेलापर शारीरिक रूपसँ मदति करबाक इच्छा प्रगट केलनि। हम हुनका अपनहि लक्ष्य दिस सक्रिय रह’ कहलियनि। ओहो सभ अधिक काल हमरा सभ लेल चिन्तित रहैत छलाह, वसन्त स्वस्थ भ’ जाथि ताहि लेल दुर्गा महरानीसँ कबुला केने छलाह।

हमर मामा पटनामे नोकरी करैत छलाह, अपने तीनटा पुत्र-पुत्रीक पढ़ाइक खर्चमे परेशान रहैत छलाह, तथापि जेना-तेना पन्द्रह हजार रुपैया पठा देलनि। फोनसँ लगातार संपर्क रखैत शुभकामना, सहयोग आ आशीर्वाद प्रेषित करैत रहलाह।

पटनासँ साढ़ू, जेठ सारि, हुनक पुत्र,पुतोहु सभ गोटे सेहो संपर्क करैत रहैत छलाह।

लदारीसँ हमर ससुर, सार ,सरहोजि,हुनक पुत्र-पुत्री सभक शुभकामना प्राप्त होइत रहैत छल।

प्रो. गंगा बाबू अपन बैंकक ए. टी. एम. कार्ड द’ देलनि, पासवर्ड कहि देलनि।

ओ अपन आ अपन पुत्र डा.विवेकानंद झाक प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष

सहायतासँ निरंतर हमर आत्मबल बढबैत रहलाह। यूरोलोजिस्ट डा. सिंह आ डा.मंडल द्वारा विशेष ध्यान रखबयबामे सदैब हुनक सहयोग प्राप्त होइत रहल। ओ सभ दिन अस्पताल आबि वसन्तकें देखि जाइत छलाह, स्थितिक समीक्षा करैत छलाह आ वसन्तक मनोबल बढबैत रहैत छलाह। हुनक पुत्र डा. विवेकानंद झा एखन विश्व प्रसिद्द किडनी रोग विशेषग्य छथिन। हमर सबहक सौभाग्य अछि जे हुनका लोकनिक स्नेह, सहायता आ शुभकामना सदैव हमरा सभकें भेटैत रहल अछि आ एखनहुँ भेटैत अछि।

हमर आंचलिक प्रबंधक महोदय सेहो आवश्यकतानुसार अवकाश स्वीकृत करबामे उदारता देखौलनि। कहने छलाह, बेटी ठीक हो जाय तभी आना, यहाँ हम देख लेंगे। ओ उदारता नहि देखौने रहितथि त मुंबइमे ५२ दिन आ चंडीगढ़मे ७२ दिन अवकाशमे रहब संभव नहि होइत।

आंचलिक कार्यालयमे एकटा लिपिक छलीह प्रतिभा, हुनका भेलनि जे हमर बेटीक स्थिति असामान्य छनि, त हमरा फोन केलनि, 'सर बेटी को बचाने के लिए आपको पैसे की जरूरत हो तो मुझे कहिए।' हम प्रतिभाकें धन्यवाद देलियनि, मुदा हमरा हुनक आर्थिक सहयोगक आवश्यकता नहि पडल।

आंचलिक कार्यालयमे हमर मुख्य प्रबन्धक आर. जी. अग्रवाल सर कटनी शाखाक प्रबंधककें कहिक' चंडीगढ़मे हमर आवासक व्यवस्था सुनिश्चित करा देने छलाह।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया,चंडीगढ़ शाखाक वरिष्ठ प्रबंधक किछु दिन लेल एक कोठलीक आवास उपलब्ध करबामे सहयोग केलनि।

मधुबनीसँ मोद नारायण झाजी सेहो सम्पर्क केने छलाह।

एहि तरहें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपसँ बहुत गोटेक स्नेह,सहायता

आ शुभकामना प्राप्त भेल। एहिसँ सपता-विपताक कथाक ओ सन्देश जे दुर्दिनमे अपनो लोक सभ दूरी बना लैत छैक, हमरा सही नहि लगैत अछि।

हमरा लगैत अछि जे ओहि कथाक अभिप्राय ई भ' सकैत अछि जे यदि एहनो स्थिति जीवनमे आबय त निराश नहि हेबाक चाही, अपन कर्ममे लागल रही आ नीक दिनक आशा आ प्रतीक्षा करी।

बच्चन जीक एकटा गीत छनि, 'साथी, साथ न देगा दुख भी।'

चिन्तक लोकनिक एहि कथ्यक हम समर्थन करैत छी जे जखन एकटा कोनो रस्ता बन्द होइत छैक त अस्तित्व कोनो दोसर रस्ता खोलि दैत छैक।

वसन्तक इलाज हेतु एम.जी.एम. हॉस्पिटलक चुनावक निर्णय गलत सिद्ध भेल, मुदा पी. जी.आइ. चंडीगढ़ जेबाक निर्णय एकदम सही सिद्ध भेल।

वसन्तक दिन घुरलनि।

माए संगे ६.५.२००५ क' गाम पहुँचलीह।

सवा लाख महादेवक पूजाक आयोजन २२.०३.२००५ क' पूर्ण भेल। रतनजी जे कबुला केने छलाह से पूर्ण कएल गेल।

मुम्बइसँ ओझाजी गाम गेलाह आ वसन्तकें संग नेने १४.०५.२००५ क' मुंबइ पहुँचलाह।

ओही साल १५ अक्टूबरक' रायपुरमे दुनू गोटेकें प्रसन्न देखलियनि त हर्ष भेल।

दीयाबातीक प्रात २ नवम्बरक' भिलाइसँ वीणा आ मिश्रजीक संग अशोक बाबू (हमर जेठ साढ़ूक छोट पुत्र) पत्नी नीलम आ पुत्र अमनक संग डेरापर एलाह।

५ नवम्बरक' ओझाजी मुम्बइ गेलाह। विवेक भोपाल गेलाह।

हमर साहित्यिक गतिविधि :

हमर साहित्यिक गतिविधि रायपुरमे बहुत सीमित रहल।

राधाकृष्ण बाबू ओत' ३ फरबरी २००२ क' 'मिथिलायतन' गोष्ठीमे भाग लेलहुँ।

मैथिलीमे एकटा गीत लिखलहुँ जे 'मिथिलायतन' पत्रिकामे छपल।

२०.०९.२००३ क' प्रगतिशील लेखक संघक सभाक उदघाटन डा.नामवर सिंह द्वारा भेल छलै। हम उपस्थित भेल रही।

आदरणीय नामवरजीक दू पाँती मोन अछि :

'भाईचारा का तो मतलब ये न होना चाहिए

हम उन्हें भाई कहें और वे चारा मुझे।'

२१ क' सेहो कोनो सन्दर्भमे कहने छलाह :

' सब हमारे चाहने वाले हैं, मेरा कोई नहीं

मैं रह रहा हूँ देश में उर्दू की तरह।'

३०.०१.२००५ क' शोभाकान्त बाबू ओत'मैथिली दिवस मनाओल गेलै।

सरयूकांत बाबू मुख्य अतिथि आ जीवेन्द्र नाथ ठाकुर अध्यक्ष छलाह।

प्रो. अरुण कुमार झा,शोभाकान्त बाबू आ हम काव्य-पाठमे भाग लेलहुँ।

हम प्रस्तुत केने रही गीत :

घरेकें मन्दिर बनाउ

बनाउ हे यै कनियाँ

घरेकें मन्दिर बनाउ।

कखनहु घर अन्हार रह्य नहि

अखण्ड ज्योति प्रेमक जराउ।

गमकय भरि घर-आङन गम-गम

बातेकें बेली बनाउ।

हो सिनेह मनमे सभ जन लय
आसक अछिजल चढ़ाउ।
धूप-दीप-नैवेद्य हो करुणा
सेवाकें पूजा बनाउ।
सासु-ससुर छथि देवी-देवता
श्रद्धासँ माथा झुकाउ।

अध्यक्ष जी उद्‌गार व्यक्त केलनि जे एहि गीतक एक हजार प्रति छपाक' बेटीक द्विरागमन काल देबाक हेतु राखक व्यवस्था कएल जाएत।

१३ फरबरी २००५ क' सरस्वती पूजाक अवसरपर शोभाकान्त बाबूक ओत' हम दुनू गोटे गेलहुँ। हम आ शोभाकान्त बाबू कविता पढ़लहुँ, इंद्रकान्त जी गीत गौलनि।

१६ क'नेताजी सुभाष स्टेडियममे आयोजित पुस्तक मेलाक उदघाटनमे लेखिका तसलीमा नसरीनसँ अंग्रेजीमे हुनक भाषणक बाद हुनक बंगला कविता आ ओकर हिन्दी अनुवाद सुनलहुँ।

१८ जुलाइक' प्रफुल्लजी सपरिवार एलाह आ तीनटा पोथी देलनि जे दरभंगासँ अनने छलाह :

केदार नाथ चौधरी लिखित 'चमेली रानी' आ सोमदेवजी लिखित 'सहसमुखी चौकपर' और 'सोम पदावली'। नीक लागल। 'चमेली रानी'पर समीक्षा लिखलहुँ आ प्रफुल्लजीक माध्यमसँ लेखककें पठौलियनि।

हुनकासँ ३.९.२००५क' फोनपर गप सेहो भेल। ओ हमर समीक्षा पढ़िक' आ सूनिक' कहलनि, 'हमरा पुरस्कार भेटि गेल।'

जगन्नाथ धामक दर्शन :

८ जुलाइ २००५ क' करीब ३४ बरखक बाद प्राचीक शब्द

सुनलहुँ।काठमांडूमे एकटा गीतक पोथी (गीतक फुलवारी)मे हमर गीत सभ देखलनि।बड़ौदामे रहै जाइ छथि।
इंजिनियर पति अधिक काल विदेशमे रहैत छथिन। हुनक प्रथम विवाहक एकटा बालक आइ आइ टी क'क' हिन्दुस्तान लीवरमे शिकागोमे छथिन, अविवाहित छथिन। इंजिनियर कल्याणी विवाहित छथिन।
किछु दिनक बाद हुनक पति झाजीसँ सेहो गप भेल।
पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार प्राची १७.०९.२००५ क' १२.१५ बजे रायपुर जंक्शनपर उतरलीह। संगक यात्री सभ सामान उतारि देलकनि।
कपारपर त्रिपुण्ड चानन, बाँहिमे रुद्राक्ष,केसरिया रंगक वस्त्रमे नीक लगलीह प्राची।
दू पुत्री आ एक पुत्रक माए प्राची, भगवानक भक्तिक रंगमे रंगल प्राची।
जेठ पुत्री नन्दिनी विशाखापतनममे कोनो बैंकमे काज करैत छथिन। रायपुरसँ पुरी होइत विशाखापतनम जेबाक छनि।
आठटा ज्योतिर्लिंग दर्शन भ' गेल छनि। कखनो अयोध्या, कहियो नीलकंठ घुमैत रहैत छथि।
मैथिली सेहो स्टेशन गेल छलीह।
बड़ी राति धरि सभ गोटे गपमे बाझल रहलहुँ।
४ बजे भोरे उठि स्नान आदि कए पूजापर बैसि गेलीह।
रवि दिन रहै। १० बजेसँ हुनक पुत्री रागिनीक भरत नाट्यमक कार्यक्रम सी डी प्लेयरक सहायतासँ देखै गेलहुँ।
प्राचीक संगमे बड़का झोड़ा छलनि जाहिमे पूजा-पाठक बहुत सामानक संग एकटा हरमुनियाँ सेहो छलनि, ओहिपर गीत गाबि क' सेहो

सुनौलनि।

दोसर दिन मौनमे रहलीह भरि दिन। ऑफिससँ एलहुँ तकर बाद साँझमे बाजब शुरू केलनि आ २.३० बजे राति धरि गप होइते रहल।

२०क' स्नान कए पूजा पर छलीह त हमरो सभकें अपन पुरी यात्रामे संग चलबाक आग्रह केलनि।

दिव्यताक तेहेन आकर्षण प्राचीमे विद्यमान छलनि जे किछुए घंटामे आकर्षणक केन्द्र भ' गेल छलीह। एकटा पत्रकार सेहो आबिक' साक्षात्कार आ फोटो लेलकनि।

हमरा डी.जी.एम. साहेब धमतरी शाखा कोनो काजसँ किछु दिन लेल जेबाक हेतु कहने छलाह, हम प्राचीकें कहलियनि जे हमरा दोसर ठाम ऑफिसक काजसँ जेबाक अछि।

प्राची कहलनि,अहाँ फोन करियौ, छुट्टी भेटि जाएत।

हम वरिष्ठ प्रबंधक,कार्मिककें फोन केलियनि, ओ कहलनि अहाँ जा सकैत छी,हम कोशिश करब जे अहाँकें धमतरी नै जाए पड़ए।हमरा जे काज असंभव लगैत छल से एते आसान कोना भ' गेलै, पता नहि।एहिमे प्राचीक पूजा-पाठक अथवा विचार-तरंगक कतेक योगदान छल से नहि बूझि सकलहुँ।

ट्रेनमे आरक्षण नै भेल।

प्राची कहलनि,कोनो बात नै, हमर एकटा टिकट अछि, ट्रेनमे जगह भेटि जाएत। हम सभ हुनका आग्रहपर ट्रेनमे चढ़ि त गेलहुँ, मुदा डर रह्य जे बर्थ नै भेटत त कोना जाएब। मुदा प्राचीक भेष-भूषाक कमाल छल जे बिना कोनो पूर्व तैयारीके हम सभ आरामसँ पुरी पहुँचि गेलहुँ।

पूरीसँ पहिने एकटा पंडाजीसँ गपक'क' प्राची ओत'रहबाक, आरती देखबाक, दर्शन, प्रसाद,बिना प्याज-लहसुनके भोजन आदिक व्यवस्था

सुनिश्चित क' लेलनि।
नरेन्द्र कोना लग स्वस्तिक लॉजमे रहबाक व्यवस्था भेल।
दोसर दिन बससँ कए ठाम घूमै गेलहुँ।
तेसर दिन भोरे उठि स्नान आदिक बाद मन्दिर जाक' आरती देखलहुँ,लगसँ जगन्नाथ भगवान,सुभद्रा माता आ बलरामजीक दर्शन भेल।
९.३० बजे नीलांचल एक्सप्रेससँ खुरदा स्टेशन गेलहुँ।
मठ होटलमे बिना प्याज-लहसुनक भोजन नीक लागल। बच्ची ओहि दिन खीरा खाक' रहलीह। ८ बजे रातिमे प्राची विशाखापतनम लेल ट्रेन पकड़लनि। हम सभ बिलासपुर बला गाड़ी पकड़ि २४ क' रायपुर पहुचि गेलहुँ।
हम त एक बेर पुरी गेल रही, बच्ची नै गेल छलीह। भरिसक हुनके लेल इ यात्राक अकस्मात आयोजन भेल। अस्तित्वक लेल कखनो कोनो आयोजन असंभव नहि छैक।
प्राची कहने छलीह आब अहाँ अपन पुत्र आ दोसर पुत्रीक विवाहक चिन्ता छोड़ि दिय' किन्तु से कहाँ भेल।
बादमे चारि-पाँच बरख पहिने सेहो संपर्क केने रहथि,मुदा तकर बाद कए बरखसँ संपर्क नहि अछि।
की पता कोन स्थितिमे छथि प्राची, कोना छथिन झाजी आ सभ धिया-पूता।
नीकक आशा करबाक चाही।
आशा करैत छी सभ गोटे जत' छथि, नीके छथि,जहिया भेटतीह, प्रसन्न देखबनि।

रायपुरसँ जबलपुर :

रायपुरमे चारि बरख आ आंचलिक कार्यालयमे लगभग तीन बरख भ'

गेल छल। हमर स्थानान्तरणक समय आबि गेल छल। हमरा जबलपुरमे मिलौनीगंज शाखा अथवा अग्रणी बैंक कार्यालय दुनूमे एकटा चुनबाक छल।

शाखाक काजक अनुभव त भेल छल, अग्रणी बैंक अधिकारीक काजक व्यावहारिक अनुभव नहि छल। एकटामे शाखाक जमा-अग्रिम-लाभक लक्ष्यक पूर्ति सुनिश्चित करबाक काज दोसरमे वार्षिक साख योजना तैयार करब, जिलास्तरीय समीक्षा बैसक सबहक आयोजन करब, प्रखण्ड स्तरीय बैसक सभमे भाग लेब, सभ बैंक आ जिला कलेक्टरक बीच समन्वय सुनिश्चित करैत विभिन्न योजना अंतर्गत जिलाक लक्ष्य प्राप्तिमे बाधा दूर करबाय लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित करब आदि कार्य। संयोगसँ जबलपुर अग्रणी बैंक प्रबंधकक विरुद्ध जबलपुरक बहुत गोटेक शिकायतक प्रति आंचलिक कार्यालयमे आएल छल से देखि हमरा ई अनुमान भेल जे जबलपुरमे ई पद झंझटिया अछि। आंचलिक कार्यालयमे एकटा पूर्व परिचित अधिकारी छलाह मिश्र जी। ओ कहलनि जे एक शाखाको अपने हिसाब से चलाना आसान होगा, जिले के सभी बैंकों का संयोजन जबलपुरमे कठिन होगा। हमरा हुनक सलाह ठीक लागल। हम मिलौनीगंज शाखाक वरिष्ठ प्रबंधकक पद चुनि लेलहुँ। ई पद कतेक झंझटिया सिद्ध हएत से त बहुत बादमे पता चलल।

जबलपुर स्थित मिलौनीगंज शाखामे २४.११.२००५ क' वरिष्ठ प्रबंधकक पद भार ग्रहण करबाक लेल आंचलिक कार्यालयसँ भारमुक्त भेलहुँ।

एहि अवधिमे वसन्त एम.लिब.क' नेने छलीह, मैथिली बी.एस.सी.क'क' पी.जी.डी.सी.ए. केलनि, एम. बी.ए. करबाक तैयारी क' रहल छलीह। विवेक भोपालक एन आर आइ इंस्टिट्यूटसँ कंप्यूटर साइंसमे इंजीनियरिंग केलनि।

धिया-पूताक शिक्षाक लेल त हमर सक्रियता रहल किन्तु आत्मनिर्भरताक लेल सेहो आरम्भसँ ध्यान रखबाक दिशामे हम उचित व्यवस्था नहि सुनिश्चित क' सकलहुँ, एकर परिणाम धिया-पूताकें भोग' पड़लै।

हमरा लगैत अछि, हम जे क' सकलहुँ से हमर सीमा छल।

सभकें आँखिसँ देखैत छिऐक हमरा ईहो एकटा उपलब्धि लगैत अछि, ओहिसँ बेशी जे किछु देखैत छी तकरा अस्तित्वक प्रसाद बुझैत छी।

पटना / १४.०२.२०२२

(२६)

मिलौनीगंजसँ गोरखपुर धरि

२४.११.२००५ क’ हम जबलपुर स्थित मिलौनीगंज शाखामे कार्य-भार ग्रहण केलहुँ।

पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक पी.जी.कांगे दू दिन पहिने भारमुक्त भ’क’ चलि गेल छलाह।

शाखामे दूटा सहायक प्रबन्धक(कर्ण जी आ गोपालजी) एकटा प्रधान खजांची(वीरेंद्र सिंह),तीनटा सी.टी.ओ.(रीना चक्रवर्ती,प्रतिभा पटेल आ अनीता जाधव)आ कुशल सिंह राठौर सहित तीनटा अधीनस्थ कर्मचारी छलाह।

गोपालजीक स्थानान्तरणक बाद बी.पी.पटेल, प्रबंधकक पदपर एलाह आ कर्णजीक स्थानपर आर.के.कपूर एलाह।कर्णजी बिहारेक छलाह, पटेलजीक घर जबलपुरसँ किछुए दूर छलनि।कपूरजीक घर जबलपुरमे छलनि।सी टी ओ सभ सेहो जबलपुरमे रहैत छलीह।

शाखा बजारक बीच प्रथम तलपर छलैक।

क्षेत्रीय कार्यालय गेलहुँ। गोरखपुरमे छलै। चाहर साहेब (क्षेत्रीय प्रबंधक), जैन साहेब (सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक) और अन्य अधिकारी ओझाजी,नन्देश्वरजी,वर्माजी,चमोली जी,अनिल सिन्हा सभ गोटेसँ भेंट भेल।

ओझाजी हमर पूर्व परिचित अधिकारी छलाह। सदर बाजार रायपुर शाखासँ स्थानान्तरित भ’ क’ आएल छलाह।

जबलपुरमे बैंकक अन्य शाखा सभ छलै नेपियर टाउन, गढ़ा, सिटी,एम.आइ.सी.आइ.,एम.पी.एच.बी.गोकलपुर,बिलहरी आदि। समय-समयपर समीक्षा बैसकमे सभ शाखा प्रबंधक एक ठाम जमा होइत

छलाह।

पन्द्रह अगस्त आ छब्बीस जनवरीक' क्षेत्रीय कार्यालयमे सभ शाखाक प्रबंधक आ अन्य अधिकारी-कर्मचारी सभ सेहो जमा होइत छलाह आ झंडोत्तोलनमे भाग लैत छलाह।

आवास व्यवस्था :

हम एसगर पन्द्रह दिन रसल चौक लग होटल समदरियामे रहलहुँ। दिनमे भोजन मिलौनीगंज लग कोनो होटलमे आ रातिमे होटल समदरियामे अथवा पंचवटीमे करैत छलहुँ।

बादमे दमोह नाका लग शान्तिनगरमे एक कोठलीक एकटा डेरा लेलहुँ।

ई डेरा बैंकक गढ़ा शाखाक प्रबन्धक अग्रवाल साहेबक बहिन-बहिनोक छलनि। परिवार रायपुरमे छल,हमरा एसगर जाधरि रहबाक छल, ताधरि अही आवासमे रहलहुँ।

बादमे विजयनगरमे परिवारक संग रह' लेल एकटा घर भेटल।

ओ घर भारतीय स्टेट बैंकक सदस्य ओम राज बुलबुलक छलनि। ओ डुप्लेक्स छलैक। जबलपुरमे जाधरि रहलहुँ ओही घरमे रहलहुँ। ओहि ठाम कनिए दूरपर महादेवक एकटा विशाल मूर्ति छनि। कहियोक' ओहि ठाम जाइत छलहुँ, नीक लगैत छल।

ओहि घरसँ किछु दूरपर हमरा शाखाक प्रधान खजांची वीरेंद्र सिंह जीक अपन घर छलनि। एसगर छलहुँ त ओ अधिक काल अपने ओत' भोजन करा दैत छलाह, होटल नै जाए दैत छलाह।भोजनक बदला कोनहुँ रूपमे हम हुनका उपकृत कर' चाहलहुँ त ओ विनम्रताक संग अस्वीकार क' देलनि।

प्रथमेशक जन्म :

रायपुरमे पाण्डेय नर्सिंग होममे २००६ मे २४ जनवरीक' वसन्त भर्ती भेलीह। २६ क' ५ बाजिक' एक मिनटपर सांझमे प्रथमेशक जन्म भेलनि। हम जबलपुरमे रही। ओहि समय रायपुरमे प्रफुल्लजी आ हुनक पत्नी आवश्यकतानुसार उपस्थितिसँ सहायता केलखिन।
३१ जनवरीक' बच्चाक छठिहार भेलै। हमहूँ जबलपुरसँ रायपुर पहुचलहुँ। जमाए मुंबइसँ एलाह। विवेक भोपालसँ एलाह। ओहि अवसरपर ओझाजीक खर्चसँ आ प्रफुल्लजीक निदेशनमे आवासक छतपर भोजक आयोजन भेल जाहिमे ५२ गोटे सम्मिलित भेलाह।
वसन्तक द्विरागमन :
हमरा पुत्रीक द्विरागमनक अवसरपर गाम जेबाक लेल अवकाश स्वीकृत नहि भेल। हम नहि जा सकलहुँ।
विवेक शेष सभ गोटेक संग गाम गेलाह।
हमर अनुज रतनजी गाममे छलाह। हुनका किछु पाइ पठा देलियनि, ओ फर्नीचर आदिक व्यवस्था क' नेने छलाह। हम मास्टर साहेब (अपन छोट सार) कें कहलियनि जे आवश्यतानुसार किछु पाइ उपलब्ध करा देथिन, बादमे प्रतिपूर्ति भ' जेतनि। ओ सहयोग केलखिन। हमरा मोबाइलसँ संपर्क होइत छल। जेना-तेना ६ मार्चक' वसन्त प्रथमेशक संग सासुर गेलीह। संगमे विवेक गेलखिन।
मैथिलीक स्थिति :
मैथिली जबलपुरक शाम्भवी कॉलेजसँ बी.एड. केलनि। एम. बी. ए. करबाक लेल भोपालमे मैट(MAT) मे सम्मिलित भेलीह।
बैंकसँ ऋण स्वीकृत करौलहुँ।
संग गेलहुँ। पुणेमे आइ.बी.एस.ए.आर मे २००७-२००९ सत्रमे नामांकन भेलनि।

विवेकक स्थिति :

विवेक कंप्यूटर साइंसमे इंजीनियरिंग केलाक बाद सी-डैक कोर्स केलनि।

मुंबईमे वेब एक्सेस कम्पनीमे सेलेक्शन भेलनि। नोकरीसँ पहिने जबलपुर एलाह।ओही राति पेटमे बहुत दर्द भेलनि, बेचैन भ' गेलाह। एकटा नर्सिंग होम ल' गेलियनि, किछु दबाइसँ तत्काल दर्द बंद भेलनि, मुदा आइ वी यू जाँचसँ पता चललै जे युरेटर आ ब्लैडर के जॉइंट पर ७ mm के स्टोन छनि। डॉक्टर ऑपरेशनक सलाह देलनि।

दिल्लीसँ हमर बहिन आ भागिन दिल्लीक एकटा होमियोपैथ डा.डोगरासँ सम्पर्क करबाक सलाह देलनि, सम्पर्क नम्बर देलनि आ फोनपर सलाह ल'क' दबाइ लेब' कहलनि। सैह केलहुँ। ऑपरेशन नहि भेलनि।

फोनपर डॉक्टर डोगरासँ संपर्क भेल।

डॉक्टर साहेब पुछ्लनि लड़का पतला है कि मोटा, स्टोन बाएं साइडमे है कि दाएं साइडमे, सभ विवरण देलियनि। दबाइ सबहक नाम लिखा देलनि :

(१)licopodium ३० (liquid)

(२) Ocimum Can -३०

दुनूक पांच-पांच बूंद आधा कप पानिमे मिलाक' दिनमे चारि बेर दस दिन तक देबा लेल कहलनि।

दस दिनक बाद Epigea mother tincture दस दिन देबा लेल कहलनि।

भात बंद करबाक सलाह देलनि आ प्रतिदिन पानि कम-सँ-कम २-३ लीटर देब' कहलनि।

एक सप्ताहमे प्रगतिक सूचना देब' कहलनि। जबलपुरक दोकानसँ दबाइ कीनिक' देब' लगलियनि। लाभ भेलनि।

बादमे दू टा दबाइ (१)licopodium ३० (liquid)

(२) Ocimum Can -३०

और पन्द्रह दिन देब' कहलनि, सेहो लेलनि। स्वस्थ भेलाह। मुंबई जाक' वेब एक्सेसमे नोकरी शुरू केलनि।

नोकरी अन्धेरीमे छलनि। ओत' लगमे कतहु डेरा नहि भेटलनि। नवी मुंबइमे कोपरखैरना स्थित बहिन-बहिनोक डेरासँ भोरे जाइ छलाह, जाएमे तीन घंटा लगैत छलनि रातिमे दस बजे घुरैत छलाह। ई जाएब-आएब ततेक कष्टप्रद भेलनि जे तीनो मास नोकरी नहि क' सकलाह।

ओ नोकरी छोडिक' लगमे दोसर कोनो नोकरी ताक' लगलाह। बादमे किछु अवधि धरि एकटा पॉलिटेक्निक कॉलेजमे आ तकर बाद ओतहि एकटा इंजीनियरिंग कॉलेजमे अध्यापनक काज केलनि।

ललनजीक स्थिति :

ललनजी दिल्लीमे आजादपुर सब्जी मंडीमे नोकरी करैत छलाह। पत्नी, पुत्री रश्मि आ पुत्र शुभमक संग रहैत छलाह।

रतनजीक स्थिति :

सबसँ छोट भाए रतनजी २८.०२.२००७ क' मिडिल स्कूल,बेलाही (जिला मधुबनी) मे शिक्षकक नोकरी शुरू केलनि। दू टा पुत्र ऋतुराज आ धनञ्जय आ पत्नीक संग गाममे रहैत छलाह।

किछु मास साइकिलसँ गामसँ स्कूल जाइत छलाह। बहुत बादमे एकटा मोटर साइकिल लेलनि।

रोग-शोक-संताप :

दिनकर जीक 'उर्वशी'मे एक ठाम अछि :

'रोग-शोक-संताप धरा पर आते ही रहते हैं

पृथ्वी के प्राणी विषाद नित पाते ही रहते हैं।'

भरिसके कोनो परिवार एकर अपवाद हुए। हमहूँ सभ एकर अपवाद नहि छलहुँ।

अपने दाँतक पीड़ा जखन-तखन भोगैत छलहुँ।

दहिना गालपर मसुबृद्धि जकाँ भेल। दाढ़ी बनबैत काल बेर-बेर कटि जाइत छल, खून बह' लगैत छल। दबाइसँ ठीक नै भेल। बादमे एक बेर गाम गेलहुँ त रतनजी कहलनि जे गाममे ककरो भेल छलै आ ठीक भ' गेलै। ओ जेना कहलनि तहिना जरैत अगरबत्ती ल'क' दू-तीन दिन ओइमे सटा देलिऐ। ओ

मसुबृद्धि अलोपित भ' गेल।फेर कहियो नै भेल।

पत्नी उच्च रक्त चापसँ पीड़ित छलीह। अधिक काल डॉक्टरक संपर्कमे जाए पड़ैत छल। जबलपुरमे डा. बहरानीक इलाजसँ लाभ भेलनि।

पुत्र थोड़े दिन पथरीक उपचारमे बाझल छलाह।

२००७ मे हमर ससुर सेहो कोनो बिमारीक चपेटमे पड़लाह आ ५ अप्रैलक' हुनक देहान्त भ' गेलनि।

एहिसँ भारी दुखक बात ई भेलै जे हमर छोट सार मास्टर साहेबक छोट बालक आशुतोषकें कष्ट भेलनि। पहिने संदेहपर बबासीरक दबाइ करौलनि, बहुत बादमे कैंसरक पहचान भेलनि।

मुंबइ टाटा मेमोरियल अस्पताल गेलाह, मुदा लाभ नहि भेलनि, बादमे पटना आबि किछु दिन इलाजमे रहलाह, गाम गेलाह आ ओही साल अक्टूबरक अन्तमे हुनकहु देहान्त भ' गेलनि। हुनक देहावसान हुनक परिवार आ शुभचिंतक लोकनिक लेल बज्रपातसँ कम नहि छल। हुनक पिता एतेक प्रभावित भेलाह जे बहुत कष्टकर स्थितिमे मोनकें चौदह बरख धरि कहुनाक' घिसियबैत रहलाह।

आशुतोष अपन बुद्धि-व्यवहारसँ ह्मरहु सभकें अपन प्रशंसक बना नेने छलाह।
हुनक देहावसान ह्मरहु सभकें बहुत व्यथित केलक।
हमर पत्नीक स्वास्थ्यपर सेहो एहि दुनू देहान्तक असरि पड़लनि।
दुखक बात ई छलै जे हम सभ फोनेपर संवेदना व्यक्त क' सकैत छलहुँ,ओत' उपस्थित हएब संभव नहि भ' सकल कारण हमर प्रबंधन हमरा कोनो स्थितिमे तीन दिन सँ अधिक अवकाशमे रहबाक अनुमति देबाक लेल तैयार नहि छल आ हमर पत्नी एसगर यात्रा करबाक लेल तैयार नहि छलीह।
हमर जीवनलेल नोकरी परम आवश्यक छल आ ताहिलेल प्रबंधनक आदेशक पालन करब आवश्यक छल, तें हम अपना लेल ई अनुशासन सुनिश्चित केलहुँ जे आब ओतहि जाएब जाहि ठाम हमर जाएब अनिवार्य होइ।
हम बेटीक द्विरागमनमे गाम नहि जा सकलहुँ।
जेठ सारक पौत्रक उपनयनमे सासुर नै जा सकलहुँ।
हमर साढ़ूक पौत्रीक विवाह भेलनि जमशेदपुरमे, हम नहि गेलहुँ।
गाममे भातिजक मूड़न आ यमसम गाममे भागिनक विवाहमे नै गेलहुँ।
ससुरक श्राद्ध-कर्मक समय सासुर नहि गेलहुँ।
आशुतोषकें मुंबइमे टाटा मेमोरियल अस्पतालमे देखने रहियनि, ओत'सँ घुरैत काल जबलपुर स्टेशनपर भेंट केने रहियनि,फोनसँ संपर्क करैत छलहुँ, मुदा हुनक देहान्त भेलापर संवेदना प्रगट करबाक लेल सासुर नहि गेलहुँ। बच्चीकें एसगर जेबाक साहस नहि भेलनि, तें ईहो नहि गेलीह।
बिहाड़िक बाद :
समधियानमे नातिक मूड़नमे आ मैथिलीक विवाहक प्रसंगमे जमशेदपुर जाएब अनिवार्य भेल त गेलहुँ।

२००८ मे १८ अप्रैलक' राघोपुरमे नाति प्रथमेशक मूड़नक अवसरपर हम दूनू गोटे १७ क' गाम पहुँचलहुँ, १८ क' हम भातिज विकासक संग राघोपुर गेलहुँ, १९ क' ओत'सँ गाम पहुँचि बहिन सबहक सासुर लखनपट्टी, शिशवा घूमिक' गाम पहुँचलहुँ।

२० क' गामसँ विदा भ क' हम दुनू गोटे मधुबनी स्टेशनपर 'गंगासागर एक्सप्रेस' पकड़ि आसनसोल होइत २१ क' टाटानगर पहुँचलहुँ। ओत' साढ़ूपुत्र सरोजक आवासपर रहलहुँ। मैथिलीक विवाहक प्रसंगमे एकठाम संपर्क करबाक उद्देश्यसँ पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार ओत' गेल रही।

सरोजक संग टाटा स्टील ऑफिसमे प्रशांतजीसँ भेंट केलहुँ, हुनक आवासपर हुनक पिताजीसँ सेहो संपर्क कएल। २२ क' जुबली पार्कमे पुनः कुमरजीसँ गप-सप भेल आ २३ क' हम सभ जमशेदपुरसँ प्रस्थान कय २४ क' जबलपुर पहुचै गेलहुँ।

नोकरीक दुख-सुख :

हम जबलपुरमे बहुत झंझटसँ बचबाक लेल एकटा शाखाक वरिष्ठ प्रबंधकक पद चुनने रही। मुदा जाही डरे भीन भेलौं सैह पड़ल बखरा बला स्थिति भ' गेल।

शाखाक मुख्य काज छलै जमा, अग्रिममे बृद्धि आ एन पी ए मे कमी करबाक लक्ष्य पूर्ण करब। जाहि ऋण खातामे ऋणक किश्त जमा नहि होइत छैक तकरा एन. पी. ए. (नन परफोर्मिंग एसेट माने गैर-निष्पादित आस्ति) कहल जाइ छै।जे खाता सभ एन पी ए भ' गेल छलै, ताहिमे वसूली आ जे खाता नव छै तकरा एन पी ए हेबासँ बचयबाक काज आसान नहि होइत छै। ई काज बहुत सावधानी,समय आ समर्पण मंगैत छैक।

शाखामे सेहो एहेन खाता सभ छलै आ बहुत ठामसँ जे कपट आ

धोखाधडीक समाचार प्रकाशमे अबैत छलैक से आतंकित करैत छल। सभ ठाम सभ समाजमे नीक आ अधलाह दुनू तरहक लोक रहैत छथि, ऋण लेबाक समयमे सभ कियो बहुत शालीनता देखबैत छलाह, किन्तु एक साल बाद हुनक असली रूप प्रगट होइत छलनि।

किछु लोक एहनो होइ छथि जे आकस्मिक विकट परिस्थितिक कारण समयपर ऋणक वापसी करबामे असमर्थ भ' जाइत छथि।किछु लोक समयपर बैंकक ऋण-क़िस्त जमा करैत अपन उन्नति करबाक प्रयास करैत छथि।

विभिन्न योजनामे लक्ष्य प्राप्त करब आवश्यक छलैक, किन्तु कपट आ धोखाधड़ीसँ बचब सेहो आवश्यक छलैक तें बैंकक दिशा-निर्देशक पालन सुनिश्चित करब अनिवार्य छलै।

एतहु हम निश्चित केलहुँ जे बैंकक दिशा-निर्देशक पालन करब, कखनहुँ ककरो दबाबमे कोनो निर्णय नहि लेब, अपन पवित्रता बचाक' राखब आ ककरो कटु वचन नहि कहब।

कोनो प्रस्तावपर शीघ्र निर्णय लेबाक आदति छल। आवश्यकतानुसार जाँच-पड़तालमे कोनो अधिकारीक संग अपनहुँ संलग्न होइत छलहुँ।अवकाश दिन सेहो बैंकक काजमे लगबैत छलहुँ।

एतेक समय आ सावधानीमे तनाव सेहो अनुभव करैत छलहुँ।

तनावसँ मुक्तिक उपाय साहित्यमे तकैत छलहुँ।

ओहि समयमे बाबा रामदेवक जबलपुर आगमनसँ हमहूँ लाभान्वित भेलहुँ।

भिलाइसँ हमर साढ़ूक पुत्री वीणा आ जमाए मिश्र जी आएल छलाह योग-शिविरमे भाग लेबाक हेतु। हमहूँ सभ शामिल भ' गेलहुँ। चारि बजे भोरसँ सात बजे धरि होइत छलै, तें बैंकसँ छुट्टी लेबाक काज नै पड़ल। २००६ के नवम्बरमे २५ सँ ३० धरि शिविर चललै।

ओहि शिविरमे भाग लेबाक बाद भोरे उठबाक, आसन-प्राणायाम

करबाक तेहेन अभ्यास लागल जे संकल्प-शक्ति दृढ़ भ' गेल आ आत्मबल और मजबूत भेल। एहिसँ बड़का लाभ ई भेल जे कतेक बरखसँ कखनो कखनो तमाकुल लेबाक अभ्यास छल, से सभ दिन लेल छुटि गेल। कहियो-कहियो अशाकाहारी भोजन क' लैत छलहुँ, सेहो दुनू गोटेक छुटि गेल।

सबेरे ३० मिनटमे ९०० बेर कपालभाति आ १०० बेर अनुलोम-बिलोम करय लगलहुँ।

सूर्य नमस्कार सेहो करैत छलहुँ। एकर नीक असरि स्वास्थ्यपर पड़ल।

जे नीक अभ्यास सभ लागल से एखनो अछि आ सभ परिस्थितिमे अपनाकें संतुलित रखबामे सहयोग करैत आबि रहल अछि।

बाबा रामदेव आसन-प्राणायाम सिखबैत-सिखबैत नैतिक, शारीरिक आ मानसिक अनुशासनक लेल यम आ नियमक जे पाठ पढबैत छलाह, से अद्भुत छल। यमक अंतर्गत अहिंसा,सत्य,अस्तेय,ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह आ नियमक अन्तर्गत शौच,सन्तोष,तप,स्वाध्याय,ईश्वर-प्राणिधानक हुनक व्याख्या प्रशंसनीय छल।

उपनयनक समय भोजक स्थानपर जँ एहि ज्ञान दिस ध्यान देल जाए त समाज आ देशमे अद्भुत सकारात्मक परिवर्तन भ' सकैत अछि।

बच्ची ओही साल अगस्तमे २१ सँ २७ धरि 'आर्ट ऑफ़ लिविंग'क कार्यक्रममे भाग नेने छलीह,मुदा हिनका ओहिसँ कोनो लाभ नहि भेल छलनि।

ऋण-वसूली कथा :

जाहि ऋण-खातामे समयपर किश्त जमा हएब बंद भ' जाइत छैक

तकरा गैर निष्पादक आस्ति (Non-performing Asset) कहल जाइत छैक। एहि तरहक खाताबला लोक सभ दू तरहक होइत छथि : किछु लोक एहि तरहक होइत छथि जे किछु परिस्थितिक कारण ऋणक किश्त जमा करबामे असमर्थ भ' जाइत छथि आ किछु एहन होइत छथि जे लाचार नहि रहैत छथि अथवा ई बूझल जाए जे ओ जानि-बूझिक' किश्त नै जमा करैत छथि।

किछु ऋणक खातेदारक लगमे कोनो संपत्ति नै रहैत छनि जाहिकें जप्त क'क' आ बेचिक असूली क' लेल जाए, किछु लोक लग संपत्ति रहै छनि जाहिसँ ऋणक असूली क' लेल जाए।

सभ तरहक स्थितिक लेल अलग-अलग प्रक्रियाक विधान छैक।

शाखामे एहि तरहक खातामे बृद्धिसँ बैंकक लाभमे कमी अबैत छैक। तें एहि तरहक खाता बैंकक लेल चिंताक विषय होइत छैक, ओहि खातामे वसूली करबाक लेल बैंक द्वारा समय-समयपर विभिन्न उपाय करबाक लेल निर्देश देल गेल छैक। एकरा अंतर्गत सम्बंधित खातेदारकें नोटिस पठाएब, व्यक्तिगत रूपसँ सम्पर्क करब आ एहि सभसँ काज नै चलै त कानूनी प्रक्रियाक पालन सुनिश्चित करबाक नियम छै।

कानूनी प्रक्रियामे लोक मांग वसूली एक्टक अन्तर्गत तहसीलदार कार्यालयमे सम्बंधित खातेदारक आवश्यक विवरणक संग प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करब आ विशेष स्थितिमे अधिवक्ताक सलाहसँ न्यायालयमे मोकदिमा दायर करब अबैत छैक।

लोक मांग असूली अधिनियमक अंतर्गत सम्बंधित तहसीलदार राजस्व वसूली अधिकारी होइत छथि। शासकीय नियमानुसार तहसीदार कार्यालयमे विभिन्न बैंकसँ प्राप्त केसमे वसूलीक लेल नोटिस जारी करब आ साधारण प्रयाससँ काज नै चलै त असूलीक लेल कठोर उपाय कएल जाइत अछि। समय-समयपर बैंक अधिकारी सबहक

संग तहसीलदार साहेबक बैसक आयोजित होइत अछि। तहसीलदार लोकनिकें सेहो बैंक ऋण वसूलीक लक्ष्य देल जाइत छनि, जिला स्तरपर एकर समीक्षा सेहो होइत छैक।

तहसीलदार साहेब सब कोनो चूककर्ताक संग वसूलीक लेल कठोर कारबाइ करबाकाल स्थानीय प्रभावशाली लोक सभसँ बचबाक प्रयास करैत छथि।

एक बेर हमरा शाखाक एकटा एहेन चूककर्ताकें चुनलनि जे कते बरखसँ ऋण नै जमा करैत छलाह। शाखासँ हुनका कयटा नोटिस देल गेल छलनि, ओ कोनो संतोषजनक जबाब नै दैत छलाह। हुनक दबाइक दोकान खूब चलै छलनि, बैंकक अधिकारी तगादामे जाइत छलाह त किछु कहिक' घुरा दैत छलखिन। हम स्वयं एक बेर गेलहुँ, मुदा कोनो लाभ नै भेल। तहसीलदार साहेबकें कहलियनि। ओ कहलनि, अहाँ सभ दूटा ताला आ जीपक व्यवस्था केने रहू, हम जखन फोन करी त जल्दी आबि जाएब ताला ल' क'। हम सभ से व्यवस्था केलहुँ।

किछु दिनक बाद एक दिन ओ फोन केलनि। हम एकटा अधिकारीक संग जीपसँ गेलहुँ ताला ल'क'। तहसीलदार किछु सिपाही सबहक संग दोसर जीपसँ विदा भेलाह। ओहि दोकान पर सभ सिपाहीक संग पहुँचिक' दोकानपर जे स्टाफ छलाह सभकें बाहर क'क' दोकानमे ताला लगाक' दोकानके सील क' क' ओत'सँ बहुत तेजीसँ निकलि गेलाह।

बादमे एकटा प्रभावशाली व्यक्तिक नाम कहलनि जे ओ हबाइ जहाजसँ कतहु निकलि गेलाह,तें एहि कार्यवाहीक लेल ई उपयुक्त समय छल। साँझमे बैंक बन्द भेलाक बाद हम सभ अपन-अपन डेरा चल गेल रही। हमरा फोन आयल, हम पाइ एखन जमा कर' चाहैत छी,

हमरा दबाइ दोकान बंद भेलासँ बहुत नोकसान हएत, कृपया पाइ जमा करबा लेल जाए। हम कहलियनि जे हमरा संगमे खजानाक कुंजी नहि रहैत अछि, जिनका संग छनि ओ काल्हि दस बजे भेंट हेताह, काल्हि दस बजे आबि जाउ,सभसँ पहिने अहींक काज कएल जाएत।
दोसर दिन ओ बैंक आबि सभटा बकाया जमा क' क' बैंकसँ अदायगीक रसीद ल'क' तहसीलदार साहेब कें देखाक' अपन दोकानक सील हटबौलनि। एहि तरहें कए बरखसँ बाँकी राशिक असूली भ' गेल।
एकटा दोसर तहसीलदार एलाह जे दोसर तरहक प्रयोग केलनि। ओ सभ बैंकसँ किछु एहेन चूककर्ता सबहक सूची तैयार करबौलनि जिनका लग दोकान अथवा दोसर चल संपत्ति छलनि। ओ एहि सूचीकें अखबारमे प्रकाशित करबा देलनि।
प्रकाशित सूचीमे हमरा शाखाक एकटा एहेन चूककर्ताक नाम छलनि जिनकर नीक दोकान छलनि आ हुनकर दूर धरि पहुँच सेहो छलनि। सबेरेसँ फोन आब' लागल। हमरा आएल, हमरा क्षेत्रीय प्रबंधक कें एलनि। अखबारमे चूककर्तामे नाम प्रकाशित भेलासँ अपमानित अनुभव क' रहल छलाह। भरिसक एकर असरि हुनका सबहक सम्बन्धी लोकनिक राजनीतिक भविष्यपर पड़ैबला लगैत छलनि।
सांझमे कलेक्टर साहेब हमरा बजौलनि, हुनको लग किनको फोन प्राप्त भेल छलनि।
हम एकटा अधिकारी संगे सम्बंधित फाइल ल'क' गेलहुँ। कलेक्टर साहेब पूरा फाइल देखलनि। शाखा द्वारा कयटा नोटिस देल गेल छलनि, हम व्यक्तिगत रूपसँ सेहो संपर्क केने रहियनि। सभटा रिपोर्ट फाइलमे छलै। कलेक्टर साहेब कहलनि 'गो अहेड'।
दोसर दिन हुनका घरक एक टा सदस्य एक गोटेकें संग क'क'

एलाह, अपन परिवारक विशिष्टतासँ परिचय करौलनि, ईहो कहलनि जे हम सभ चाहितहुँ त अपन गाड़ीसँ अहाँकें ठोकर लगाक' निकलि जैतहुँ, ककरो पतो नै चलितै, मुदा अहाँक विषयमे जे लोक सभ कहलक ताहिसँ हम सभ ओइ स्तरधरि नहि गेलहुँ।फेर ओ ऋण चुकयबाक लेल एकटा चेक देलनि आ ऋण अदायगीक प्रमाणपत्र जारी कर' कहलनि। हम ओहि चेकक विवरण दैत अदायगीक प्रमाण पत्र द' देलियनि।

हुनका कहलियनि जे बैंक अपन ग्राहककें अपमानित करबाक उद्देश्यसँ कोनो डेग नहि उठबैत अछि,बैंक अपन ग्राहकक सुख आ समृद्धिक कामना करैत अछि, सामर्थ्य रहैत कर्जक अदायगी नहि करब पाप थीक, बैंक अपन ग्राहककें पापसँ बचयबाक प्रयास करैत अछि, हम सभ त अपन कर्तव्यक पालन मात्र करैत छी।

हुनका दुनू गोटेकें चाह पियाक' विदा केलियनि।

एहि तरहें ओहि बकाया ऋणक असूली बैंककें प्राप्त भ' गेलै।

एहि तरहक कारबाइक असरि किछु और चूककर्ता लोकनिपर सेहो पड़लनि।

बादमे पता लागल जे सम्बंधित तहसीलदार साहेबक बदली भ' गेलनि।

पूर्व जन्मक कर्जक अदायगी :

धर्म शास्त्र कहैत अछि, जे किछु नीक-अधलाह हमरा भोग' पड़ैत अछि,से हमरे एहि जन्मक अथवा पूर्व जन्मक कर्मक फल थिक।

बहुत किछु त साफ देखाइत अछि जे अपने कर्मक फल थिक, किछु साफ-साफ नहि देखाइत अछि।

शास्त्रमे हजारो बरखक अनुभवक ज्ञान अछि।

शास्त्र कहैत अछि जे अज्ञान थिक सभ दुखक जड़ि। अज्ञानताक कारणे समयपर लोक उचित निर्णय नै ल' पबैत अछि आ जे निर्णय

लैत अछि से अंततः दुखमे परिवर्तित भ' जाइत छैक।
अपन कर्ममे पूर्व जन्मक संस्कारक कतेक योगदान रहैत छैक आ एहि जन्ममे घटैत घटना सभकें देखि-सूनिक' जे अनुभव करैत अछि ताहिसँ की निर्णय लैत अछि अथवा ओहि सबहक जे असरि ओकर जीवनपर पड़ैत छैक से गम्भीर चिन्तनक विषय अछि। अपना जीवनमे एहि सबहक खोद-बेद करबाक चाही।
हमरा अपनहु जीवनमे अज्ञानताक दुष्परिणामक प्रमाण भेटैत अछि।
हम जखन तिरहुत कृषि महाविद्यालयमे पहिल बेर नामांकन लेलहुँ त हमरा नहि बूझल छल जे हमरा आइ.सी.ए.आर. द्वारा एक सय टाका मासिकबला छात्रवृति
भेटत। हम जनैत रहितहुँ त ओ छोड़िक' नै जैतहुँ आ हमरा पढ़ाइक लेल विवाह करब आवश्यक नै होइतय।
मधुबनीमे बायोलॉजी पढबाक लेल गेलहुँ त ट्यूशन पढ़ि नेने रहितहुँ त प्रैक्टिकल मे कम-स-कम पांच अंक अवश्य बेशी आएल रहैत आ मेडिकलमे हमर नामांकन भ' गेल रहितय।
एहि पोस्टिंगक समय हम अग्रणी बैंक प्रबंधकक पदपर काज कर' चाहितहुँ त हमरा भेटि जाइत किएक त हम आंचलिक कार्यालयमे छलहुँ आ हमरासँ पूछल गेल छल । पूर्व अग्रणी जिला प्रबंधकक विरुद्ध किछु लोकक शिकायत देखि हम डेरा गेलहुँ।मुख्य बात ई छलैक जे हमरा अग्रणी जिला प्रबंधकक पदक कार्यक जानकारीक अभाव छल।
आब जत' आएल छलहुँ ओतहु अज्ञानताक कारण एकटा गलती भ' गेल।
शाखाक एकटा नीक ग्राहक छलाह। अनाजक व्यवसाय करैत छलाह। ओ एक दिन एन.एस.सी.क विरुद्ध ऋण लेबाक लेल पुछलनि। ओ कहलनि कतेक ब्याज आदि लागत। हम कहलियनि जे ब्याज

मात्र लागत, कोनो सर्विस चार्ज नै लागत। हुनक ऋण स्वीकृत भेलनि। हुनका ऋण खातामे पांच हजार सर्विस चार्ज डेबिट भ’ गेलनि।

ओ अपन खाता देखलनि त परेशान भ’ गेलाह।

दोसर दिन दौगल एलाह। हमरा कहलनि, हमरा रातिमे नीन नै भेल, हम एक-एकटा रुपैयाक हिसाब रखैत छी, हमरा बूझल रहैत जे पाँच हजार सर्विस चार्ज लागि जाएत त हम किन्नहु लोन नै लीतहुँ, अहाँ कहलहुँ जे नै लागत तें हम लोन लेलहुँ।

हमर अधिकारी हमरा सर्कुलर देखौलनि,हम पहिने नै देखने छलिऐ। ओ कहलखिन, नियमानुसार चार्ज लागल अछि। ग्राहकक कहब रहनि जे मैनेजर साहेब पहिने नै कहने छलाह ने त हम लोन लेबे नै करितहुँ।

हम परीक्षा छल। हम देखलहुँ नियमानुसार सर्विस चार्ज लागल छलनि आ हम हुनका नै कहने छलियनि जे सर्विस चार्ज लागत दूनू बात ठीक छलै। एहिमे दोखी हमहीं छलहुँ।हमर जानकारी अद्यतन नहि छल।

हमरा लागल जे दोख हमर अछि,तें दण्ड हमरे भोगक चाही।

हम सोचलहुँ भ’ सकैए पछिला कोनो जन्ममे हिनकासँ किछु उधार नेने हेबनि आ वापस नै केने हेबनि, आइ वापस करबाक समय आबि गेल अछि, एहिमे विलम्ब करब उचित नहि।

हम पाँच हजार के चेक द’क’ हुनका चिन्तासँ मुक्त क’ देलियनि आ एकरा पूर्व जन्ममे लेल कर्जक अदायगी मानिक’ हमहूँ दुखी नै भेलहुँ आ ने हुनका प्रति मोन मे कोनो शिकायत रहल।

एहेन स्थितिमे प्रसन्न रहबाक लेल चिन्तक लोकनि द्वारा देल गेल सूत्र बड काजक अछि :

'ध'न गेल त किछु नै गेल

बूझू करजा चुकता भेल'

सावधानीपूर्वक काज करबाक चाही, कोशिश करबाक चाही जे गलती नै हुअए, मुदा जँ गलती भइए जाए त परिणाम जे आबय ताहिसँ सन्तोष करबाक चाही, ओहिसँ

शिक्षा ग्रहण करैत आगाँ बढ़ि जेबाक चाही, यैह त धर्मशास्त्र सभक सन्देश अछि। जे एहि सन्देशक पालन नहि करैत छथि से भारी गलती करैत छथि कारण ओहिसँ

स्वास्थ्य आ चरित्रक क्षरण हेबाक संभावना बढि जाइत छैक।

स्वास्थ्य आ चरित्रक क्षरण अशान्ति उत्पन्न करैत अछि।

शास्त्र कहैत अछि जे मोनक शान्ति सभसँ बड़का धन थिक।

जबलपुरमे मैथिल आ मैथिली :

जबलपुरमे सेहो मैथिल सभ छलाह, मुदा हमरा किछुए गोटेसँ परिचय भेल।

आरम्भमे जखन होटलमे रहैत रही त होटलक हेल्थ-क्लबमे अरविन्द झा नामक व्यक्तिसँ भेंट भेल। ओ नोकरी करैत छलाह। हम मैथिलीमे हुनकासँ गप कर' चाहलहुँ। पता चलल ओ मैथिली नै बुझैत छथि।

हमरा शाखामे कर्णजी मैथिल छलाह, हुनकासँ मैथिलीमे बात करबामे आनन्द अबैत छल। हुनका ओत' कोनो बच्चाक जन्मदिनक भोजमे गेल रही, ओत' सेहो किछु मैथिल सभ भेटलाह,गप भेल, नीक लागल।

विजयनगरक आवाससँ कनिए दूरपर डी. के. झाक आवास छलनि। हुनक पुत्री आ जमाए लन्दनमे रहैत छलखिन। पुत्र सेहो लन्दन कि अमेरिकामे रहै छलखिन।

झाजी पत्नीक संग लन्दन गेल छलाह। ओहि ठामक विधि-व्यवस्थाक वर्णन करैत छलाह। समय बदलि गेल छैक, हमरा सबहक भूमिक लोक लन्दन जाक' गौरवक अनुभव करैत छथि।

एक बेर कोनो अवसरपर सभ गोटे जुटल छलखिन त बहुत गोटेकें भोज खुएबाक आयोजन केने छलाह। ओहि अवसरपर किछु गोटेसँ परिचय भेल।

हमर बैंक शाखामे एकटा खातेदार छलाह जय कान्त झा। हुनकासँ ज्ञात भेल जे जबलपुरक सभ मन्दिरपर एक समय मिथिलाक पंडित लोकनि छलाह, एखन कम छथि। ओहो पंडित छलाह। एक दिन कोनो अवसरपर हमरा आ डी.के.झाजी कें नोत द' क' बहुत विन्याससँ भोजन करौने छलाह, पुतहु सभ सेहो मिथिलेक छथिन।

छठि पावनिमे ग्वारीघाटपर मैथिल लोकनिक बहुत भीड़ देखबामे अबैत छल।

ओहि ठामक राजन झा आ मनीष झासँ सेहो परिचय भेल।

एक बेर राजन झा जी सेहो अपना ओत' नोत द' क' विलक्षण भोजन करौलनि।

मैथिलीक कोनो आयोजन कतहु नहि देखलिऐ। हमहूँ अपना काजमे एतेक बाझल रहैत छलहुँ जे स्वयं कोनो आयोजन नहि करबा सकलहुँ।

साहित्य पढ़ि लैत छलहुँ, किछु लिखल नहि भेल।

एक बेर जमाए एकटा सी डीमे नेपालमे बनल मैथिली फिल्म अनने छलाह, से देखलहुँ।

आदरणीय प्रो. गंगानंद झाजीसँ पत्राचारक क्रममे साहित्य संसारक माधुर्य आकर्षित करैत छल।

पदोन्नति-स्थानान्तरण :

पदोन्नतिक लेल भेल साक्षात्कारमे सम्मिलित भेलहुँ।कार्य निष्पादन द्वारा पदोन्नतिक लेल अपन योग्यता प्रमाणित नहि क' सकल छलहुँ, तें सफल नहि भेलहुँ।

२००८ मे ३१ मार्चक' जबलपुरक अग्रणी जिला प्रबंधक थावरानी साहेब सेवानिवृत भ' रहल छलाह। मार्चक अंतिम सप्ताहमे हमरासँ क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय पुछ्लनि जे हम अग्रणी जिला प्रबंधकक पदपर काज करबा लेल इच्छुक छी कि नहि, हम अपन सहमति प्रगट केलियनि।

७ अप्रैलसँ १० मई धरि जबलपुर अग्रणी बैंक कार्यालयमे अग्रणी जिला प्रबंधकक पदपर रहलहुँ। ओही अवधिमे एक सप्ताहक अवकाश भेटल जाहिमे नातिक मूड़नमे गाम आ राघोपुरक यात्रा करैत छोट पुत्रीक विवाहक प्रसंगमे एकठाम संपर्क करबा लेल जमशेदपुर गेलहुँ। जबलपुरमे अग्रणी जिला प्रबंधकक पदपर काज करैत अनुभव भेल जे मनपसन्द वस्तुक आकर्षण सेहो किछुए दिनमे समाप्त भ' जाइत छैक।

बैंक शाखा सभमे स्टाफ-शक्ति कम रहबाक कारण बैंक सभ जिला कलेक्टर आ जिला पंचायतक सी. ई. ओ.क अपेक्षाक अनुसार चलबामे असमर्थ छल तें ओ सभ बैंक सभपर खबखबाएल रहैत छलाह आ बैंक सभकें अपना वशमे करबाक लेल अग्रणी जिला प्रबन्धकक सहयोग चाहैत छलाह।

बैंक प्रबंधन सभ अग्रणी जिला प्रबंधककें अपन बुझैत छलाह तें हुनकासँ अपेक्षा करैत छलाह जे बैंकक सहयोग करथि आ कलेक्टर-सी.ई.ओ.कें हाबी नै होम' देथि।

जिला बैंक प्रबन्धकक काज छलनि जे जिला प्रशासन आ बैंकक बीच मजबूत कड़ीक काज करथि आ विभिन्न शासकीय योजनाक अन्तर्गत जिलाक निर्धारित लक्ष्य प्राप्तिक हेतु दुनूक सहयोग प्राप्त करथि।

कोनो योजनाक अंतर्गत प्रगतिक आंकड़ा प्राप्त करबाक लेल जिला भरिक सभ बैंक सबहक नियंत्रक कार्यालय सभसँ निरन्तर सम्पर्कक आवश्यकता होइत छैक। फोनपर संपर्क करैत रहबाक अतिरिक्त व्यक्तिगत रूपसँ सेहो संपर्क करब आवश्यक होइत छैक।

ओहि समय अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालयकें जीप नहि उपलब्ध कराओल गेल छलैक, जिला स्तरपर समीक्षाक लेल किसान क्रेडिट कार्ड आ अन्य योजनाक अन्तर्गत बैंक सबहक प्रगतिक आंकड़ा प्राप्त करबामे मास दिनक मोटर साइकिलसँ दौड़-धूपक अनुभव कटु रहल।

ओही पदपर १२ मइसँ मध्य प्रदेशक सिवनी जिलामे काज करबाक लेल १० मइक' जबलपुर कार्यालयसँ भारमुक्त भेलहुँ।

पटना / २८.०२.२०२२

(२७)

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

२००८ मे १२ मइक' हम एसगरे जबलपुरसँ बस पकड़ि करीब तीन घंटामे सिवनी पहुचलहुँ। होटल आनन्दमे अपन संगक सामान सभ राखि बैंक गेलहुँ।

एकटा पुरान मकानमे बैंक छलै। बैंक भवनक एक कातमे एकटा नमहर कोठलीमे लीड बैंक सेल छलै। लीड बैंक सेलमे एकटा कंप्यूटर, नमहर टेबुल, किछु कुर्सी,तीन टा आलमारी छलै। एकर अतिरिक्त एकटा वाहन आ ड्राइवर सेहो छलै।

किछुए अवधिक बाद बैंक आ अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय नवनिर्मित भवनक प्रथम तलपर स्थानांतरित भेल। ओहू भवन आरम्भेमे एकटा कोठलीमे अग्रणी बैंक कार्यालय आबि गेल।

बैंकक हॉल फ़ैल छलै।

बैंकमे शाखा प्रबंधक बी.एम.अग्रवाल हमर पूर्व परिचित छलाह, ओ जबलपुरक गढ़ा शाखासँ स्थानांतरित भ' क' गेल छलाह। शाखामे पी.ओ. अर्चना मैडम छलीह जे बिहारक छलीह, हुनकर पिता पटनामे प्राध्यापक छलखिन।

दोसर अधिकारी श्रीनिवासजी छलाह। और सदस्य सभ छलाह गौतमजी,शर्माजी,राम नारायण,इमरान आदि।

सिवनी मध्य प्रदेशक एकटा जिला छलै। सेन्ट्रल बैंकक रायपुर जोनक छिंदवाडा क्षेत्रमे सिवनी, बालाघाट आ छिन्द्वाडा तीन टा जिला छलैक। छिंदवाडामे अग्रणी जिला प्रबंधक छलाह विजय कुमार जे बिहारक छलाह।

समय-समयपर छिंदवाड़ा क्षेत्रक सभ शाखा प्रबंधक आ तीनू अग्रणी जिला प्रबंधक छिंदवाड़ा क्षेत्रीय कार्यालयमे समीक्षा बैसकमे जमा होइत

छलाह।

सिवनी जिलामे सेन्ट्रल बैंकक आठ टा शाखा छलै : सिवनी, अर्री, कान्हीवाडा, छुई, केवलारी, डुंगरिया छपारा,गणेशगंज आ लखनादौन। सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडियाक आठ शाखाक अतिरिक्त निम्नलिखित बैंक सबहक ८२ टा शाखा छलै :

भारतीय स्टेट बैंकक ८, बैंक ऑफ़ महाराष्ट्रक ९,यूनियन बैंक ऑफ़ इंडियाक ५,केनरा बैंकक १, इलाहाबाद बैंकक १, बैंक ऑफ़ इंडियाक १,पंजाब नेशनल बैंकक४ ,सतपुरा नर्मदा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकक २६, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकक १६, जिला सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंकक ७,आइ सी आइ सी आइ बैंकक एकटा आ एच डी एफ सी बैंकक एकटा शाखा छलै।

जिलाक लेल वार्षिक साख योजना तैयार करब, ओकरा जिला स्तरीय समन्वय समितिमे स्वीकृत कराएब, ओकर क्रियान्वयनक हेतु जिलाक सभ बैंक शाखा आ जिला प्रशासनक सहयोग प्राप्त करैत विभिन्न योजनान्तर्गत जिलाक वार्षिक लक्ष्य प्राप्त करबाक लेल जिला स्तरपर तिमाही बैसकक संयोजन करब अग्रणी जिला प्रबन्धकक मुख्य काज छलनि।एकर अतिरिक्त आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय प्रबन्धकक सलाह अथवा आदेशसँ ऋण शिविर, वसूली,जाँच अथवा ऋण माफ़ी योजनासँ सम्बंधित कार्य सेहो समय-समयपर करबाक रहैत छलैक। आरम्भमे क्षेत्रीय प्रबंधक छलाह श्री शिवेश प्रसाद, हुनका बाद एलाह दिनेश चन्द्र आ हुनका बाद एलाह खंडेलवाल साहेब।

जिला स्तरीय बैसकमे सभ बैंकक जिला अथवा क्षेत्रीय स्तरक नियन्त्रक अधिकारी, अग्रणी जिला प्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंकक प्रतिनिधि,नाबार्डक प्रतिनिधि आ कलेक्टर समेत विभिन्न विभागक जिला स्तरक अधिकारी रहैत छलाह। विभिन्न योजनाक अंतर्गत

विभिन्न बैंकक लक्ष्य आ उपलब्धिपर चर्चा होइत छलै। जाहि ठाम आवश्यकता होइत छलैक, कलेक्टर अथवा भारतीय रिज़र्व बैंकक प्रतिनिधि आवश्यक सलाह दैत छलाह। अग्रणी जिला प्रबंधक संयोजक आ कलेक्टर अध्यक्ष होइत छलाह।

बैसकक कार्यवाही नोट कयल जाइत छल, ओकर कार्यवाही-विवरण तैयार क'क' अग्रणी बैंक कार्यालय द्वारा विभिन्न बैंकक नियंत्रक कार्यालय आ विभिन्न शासकीय कार्यालयकें प्रेषित कयल जाइत छलै। बैसकमे लेल गेल निर्णयक क्रियान्वयनक समीक्षा अगिला तिमाही बैसकमे होइत छलै।

कलेक्टर कार्यालय सभा कक्षमे सप्ताहमे एक दिन टी एल मीटिंग होइत छलै जाहिमे विभिन्न विभागसँ सम्बंधित शिकायतक निवारणक समीक्षा होइत छलै। बैंकसँ सम्बंधित शिकायतक निराकरण हेतु अग्रणी जिला प्रबंधक द्वारा सम्बंधित बैंकक सक्षम पदाधिकारीसँ संपर्क कयल जाइत छल। एकटा नियत अवधिमे शिकायतक निराकरण सुनिश्चित कयल जाइत छल।

समय-समय पर जिला स्तरपर उद्योग कार्यालयमे आ जिला पंचायत कार्यालयमे सेहो स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, प्रधान मन्त्री रोजगार योजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजनाक क्रियान्वयन आ प्रगतिक लेल बैसकक आयोजनमे सेहो अग्रणी जिला प्रबन्धक उपस्थित रहैत छलाह।

सिवनी जिलामे सिवनी,बरघाट, कुरइ, छपारा, गणेशगंज, लखनादौन, धनोरा,घन्सोर,केवलारी आदि जनपदमे तिमाही बैसक आयोजित होइत छलै जाहिमे अग्रणी जिला प्रबंधक अध्यक्ष होइत छलाह। ओहि बैसकमे जिला स्तरक शासकीय अधिकारी परियोजना पदाधिकारी अथवा सहायक परियोजना पदाधिकारी सेहो उपस्थित होइत छलाह।

हमरा समयमे परियोजना पदाधिकारी छलाह टी. गणेश कुमार आ

सहायक परियोजना पधाधिकारी छलाह एम. के. जैन। हम सभ सिवनीसँ अपन-अपन विभागक वाहनसँ अथवा एकहि वाहनसँ सिवनीसँ जाइत छलहुँ आ संगहि घुरैत छलहुँ। ओहि बैसक सभमे जे निर्णय लेल जाइत छलै, तकर सूचना कार्यवाही विवरण द्वारा सभ सम्बंधित अधिकारी सभकें ओहि बैसकक संयोजक द्वारा प्रेषित कयल जाइत छलै।ओहि बैसक सभक संयोजक लीड बैंकक स्थानीय शाखा प्रबंधक होइत छलाह।

जिला स्तरीय समीक्षा समिति एवं जिला परामर्शदात्री समितिक बैसकक सूचना जिलाक विधायक आ सांसद लोकनिकें सेहो देल जाइत छलनि जाहिसँ

हुनको सभक माध्यमसँ क्षेत्रक समस्या सभ प्रकाशमे आबय, ओहि पर चर्चा होइ आ ओकर निराकरणक लेल समुचित समाधान ताकल जाए।

विभिन्न योजनाक अंतर्गत वार्षिक लक्ष्यक प्राप्ति आ शिकायतक निराकरण हेतु जनपद आ जिला स्तरपर बैसक सभक आयोजन होइत छल।

हमरा समयमे आरम्भमे सिवनी जिलाक कलेक्टर छलाह पी. नरहरि जी। हुनक स्थानान्तरणक बाद एलाह मनोहर दुबे जी। जिला पंचायतक मुख्य कार्यपालन पदाधिकारी छलाह राकेश सिंह जी।

सामान्य लोककें सरकारी अथवा बैंकक अधिकारी-कर्मचारी सबहक प्रति की धारणा बनैत छलैक से पता नहि, मुदा जनपद पंचायतसँ जिला पंचायत धरि आ कलेक्टर सभा कक्षमे विभिन्न बैसकमे भाग लैत हम अनुभव करैत छलहुँ जे गाम आ शहर सभ ठाम लोकक जीवन-स्तर ऊपर उठाबक लेल, देशक समृद्धिक हेतु विकासक यज्ञमे सरकार आ बैंकक विभिन्न योजना चलि रहल छल : स्वर्ण

जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना, प्रधानमन्त्री रोजगार योजना, दीन दयाल रोजगार योजना,किसान क्रेडिट कार्ड योजना, आर्टीजन क्रेडिट कार्ड,लघु उद्यमी क्रेडिट कार्ड आदि। शासकीय अनुदानक प्रक्रिया सरल भेल जा रहल छलैक, गामे-गामे स्वयं सहायता समूह बनि रहल छल, महिला लोकनि सेहो एहि विकास यज्ञमे सक्रिय योगदान द' रहल छलीह। बैंकमे भीड़ बढ़ि रहल छलै। बैंकक अधिकारी-कर्मचारी बैंकसँ आवास घुरबाक लेल घड़ी देखनाइ छोडि देने छलाह। सभ बैंक प्रबंधन अपन-अपन लक्ष्य पूर्ण करबाक लेल बहुत श्रम क' रहल छल। जाहि उद्देश्यसँ १९६९ आ १९८० मे बैंक सबहक राष्ट्रीयकरण भेल छलै से पूर्ण भ' रहल छलै।

हम जतेक दूर धरि देखैत छलहुँ, हमरा बैंक कदाचारमुक्त देखाइत छल।

असंयमी लोक सभ कतेक तरहक अशांति आ मानसिक अथवा आर्थिक प्रताड़नाक शिकार होइत छलाह।

देशक एहि विकास-यज्ञमे एकटा छोट-छीन किन्तु महत्वपूर्ण भूमिकामे अपनाकें संलग्न पाबि हर्षक अनुभव क' रहल छलहुँ। ऑफिसमे रहैत छलहुँ त काजमे लागल रहैत छलहुँ। किछु काज डेरोपर करबालेल ब्रीफ़केसमे नेने अबैत छलहुँ।

सुतबासँ पहिने अथवा सबेरे डेरापर सेहो किछु काज क' लैत छलहुँ। काजकें अपन धर्म बूझिक' करैत छलहुँ, ओहिमे डूबि जाइत छलहुँ, तें थकानक अनुभव नहि होइत छल।

ऑफिसक काज करैत घर, बजार,अस्पताल आदिक काज सेहो करैत छलहुँ।

आवास आ अध्यात्म :

सिवनीमे आरम्भमे किछु दिन होटल आनन्दमे, किछु दिन सिवनीक शाखा प्रबंधक बी.एम. अग्रवालजीक आवासमे आ तकर बाद जखन

परिवारक संग रह’ लगलहुँ त बारापत्थरमे बाबूजीनगरमे नामदेवजीक मकानमे प्रथम तलपर आवास छल। नामदेवजी भूतलपर एकटा शिव मन्दिर बनौने छलाह। बच्ची सभ दिन पूजा करैत छलीह। ऑफिससँ आवासक बाटमे ब्रम्हाकुमारी संस्थान छलैक। दूरदर्शनपर बी.के.शिवानीक कार्यक्रम देखि उत्सुकता भेल। एक दिन दुनू गोटे गेलहुँ। सात दिनक कोर्स केलहुँ।

एक दिस समाजमे लोक कन्यादानक लेल गामे-गाम कि एहि शहरसँ ओइ शहरक यात्रा करैत रहैत छथि, कन्या सभ मन पसंद घर-बर लेल महादेवक पूजा करैत छथि, बूढ़ी सभ कबुला-पाती करैत रहैत छथि, दोसर दिस एहि संस्थानमे कुमारि कन्या सभ उज्जर दप-दप वस्त्रमे सात्विक जीवन जीबैत लोककें सात्विक जीवन जीवाक प्रेरणा दैत ज्ञान-दान मंगनीमे क’ रहल छथि आ जीवन भरि सात्विक जीवन जीवाक व्रत नेने छथि।

हिनका सबहक मूहें एहि संस्थानक संस्थापक दादा लेखराजक पवित्र जीवन आ एहि संस्थानक स्थापनाक कथा अद्भुत लागल। ई सभ बुझबैत छथि जे हम सभ आत्मा छी आ दिन भरिमे जिनका-जिनकासँ भेट होइत अछि सभ आत्मा छथि आ सभ हमरे जकाँ ओही परम पिता परमात्माक संतान छथि, हम सभ परम धामसँ आएल छी, फेर ओतहि घुरिक’ जेबाक अछि, ककरोसँ राग आ द्वेष नहि राखू, संसारमे एना रहू जेना थालमे कमल रहैत अछि, सृष्टिक एक चक्र पांच हजार बरखमे पूर्ण होइत अछि, सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग सभयुग एक हजार दू सय पचास बरखक, कलियुगक अन्त लग आबि गेल अछि,सतयुगक आगमनक तैयारी चलि रहल अछि, एहि ज्ञान यज्ञमे सभ क्यो शामिल होथि से आह्वान क’ रहल छथि ई साध्वी लोकनि। एहि संस्थानक प्रधान कार्यालय राजस्थानक माउंट आबूमे अछि आ

दुनियाँक बहुत देशमे हजारो शाखाक माध्यमसँ दिव्य ज्ञानक बरखा भ' रहल अछि, उल्लेखनीय बात ई जे सभ शाखाक मुख्य बहिने लोकनि छथि। ई बहिन लोकनि सभ ठाम निर्भय रहैत छथि, हिनका सबहक सोच ई छनि जे सभसँ शक्तिशाली परमात्मा पिता सदिखन संगमे रहै छथिन तखन भय कथीक।

एहि संस्थानक विशेषता इहो अछि जे ई लोकनि ककरोसँ चन्दा नै मंगैत छथि, जे हिनका सबहक ज्ञान नहि प्राप्त करैत छनि ओ स्वेच्छासँ किछु देबय चाहैत छथि त स्वीकार नहि कएल जाइत छनि।

हम ओशोक किछु पोथी पढने छलहुँ, हुनक तर्क सभ बहुत प्रभावित करैत छल। जबलपुर स्थित देवताल गढ़ामे ओशो संन्यास आश्रममे तीन दिनक एकटा आयोजनमे सम्मिलित भेल छलहुँ, चिरिमिरीमे सेहो तीन दिनक शिविरमे भाग नेने छलहुँ, पुणेमे हुनक संस्थानमे गेल रही, देखने-सुनने रही। हमरा नीक लागल, मुदा हमरा शिष्य बनबाक मोन नहि भेल। एखनहु कोनहु रूपमे हुनका पढ़ब नीक लगैत अछि।छोट-छोट कथाक माध्यमसँ ज्ञानक पैघ-पैघ बात कहबाक अद्भुत कौशल हुनक वक्तव्यमे रहैत अछि। हुनका माध्यमसँ संसारक विभिन्न धर्मक अनेक दार्शनिक लोकनिक परिचय प्राप्त करबाक आनन्द उपलब्ध होइत अछि।

जबलपुरमे बाबा रामदेवक शिविरमे भाग नेने छलहुँ, देह आ मोनकें शुद्ध रखबाक लेल आसन-प्राणायाम आ यम-नियमक पालन करबाक लाभसँ परिचित भेल छलहुँ, टी.भी.पर हुनक कार्यक्रम सेहो देखबामे-सुनबामे नीक लगैत अछि। वैदिक चैनलक माध्यमसँ सनातन धर्मक अंतर्गत योग आ आयुर्वेदकें केन्द्रमे रखैत ऋषि लोकनिक ज्ञानसँ लोककें लाभान्वित करबाक हुनक प्रयास प्रशंसनीय अछि। हमहूँ वैदिक चैनलपर वेद आ उपनिषदक ज्ञानक गंगामे स्नान कय आनन्दित

होइत छी।

ब्रम्हाकुमारी संस्थान सेहो नीक लगैत अछि। सिवनीमे जाधरि रही, समय-समयपर जाइत छलहुँ। मुरली सुनैत छलहुँ। संस्थानमे बहिन द्वारा प्रतिदिन मुरलीक माध्यमसँ लोककें भगवानक ज्ञानक प्रसादक वितरण नियमित रूपसँ होइत रहैत अछि। समय-समयपर संस्थानक प्रधान कार्यालय माउंट आबूमे आयोजित कार्यक्रममे भाग लेबाक अवसर सेहो भेटैत छैक। हम कोनो कार्यक्रममे माउंट आबू त नहि गेलहुँ, मुदा टी.भी.पर ओहिठामक कार्यक्रम आ 'पीस ऑफ़ माइंड' चैनलपर बहुत रास कार्यक्रम देखलहुँ, नीक लागल। पटनामे सेहो एहि संस्थानसँ परिचित भेलहुँ। कहियो-कहियो जाइत छी। नियमित रूपसँ जाएब नहि पार लगैत अछि।

टी.भी.पर सभ कार्यक्रम उपलब्ध भेलासँ केन्द्रपर जाएब आवश्यक सेहो नहि लगैत अछि।

ओशो, रामदेव बाबा आ ब्रम्हाकुमारी संस्थान सभ ठाम 'परमात्मा आ पुरुषार्थ'क महिमाक प्रचार-प्रसार अलग-अलग ढंगसँ भ' रहल अछि। सबहक शिक्षा अछि जे तन आ मोनकें पवित्र राखू, तखने जीवनक आनन्द प्राप्त भ' सकैत अछि। हमरा लगैत अछि जे तन आ मोनकें पवित्र रखबाक लेल कतहु बौएबाक काज नहि छैक, जतहि जे छी, से यम आ नियमक पालन करैत रही, सैह पर्याप्त अछि आनन्दित जीवन जीबाक लेल।

मैथिलीक विवाह :

मैथिलीक विवाहक उद्देश्यसँ कय ठाम यात्रा करबाक अवसर भेटल। जमशेदपुर,पटना, राँची, बिलासपुर, नवसारी, अहमदाबाद गेलहुँ। गाम जाक' छोट भाए रतनजीक संगे सेहो चानपुरा,पंडौल डीह टोल, गनौली

आदि गामक यात्रा कयलहुँ।
दिल्लीसँ हमर छोट बहिन आ बहिनो एकटा सूचना देलनि। फोनपर अरविन्द जीसँ संपर्क भेल, डेरी टेक्नोलॉजीमे बी.टेक. छलाह, गुजरातमे पालनपुरमे 'अमूल'मे काज करैत छलाह। गाम गेलहुँ। गनौली गेलहुँ। ओतहु हुनक पिता, कक्का आ किछु अन्य लोक सभसँ संपर्क केलहुँ।
दिल्लीमे हमर बहिन-बहिनोक पड़ोसी छलखिन हुनक जेठ भाए आनन्दजी, ओत' कोनो व्यवसाय करैत छलाह। ओहि ठाम अरविन्दजीक आवागमन होइत छलनि, सभ क्यो देखने छलखिन। हुनका सभकें पसंद छलनि। हमरा फोनपर गप भेल, हमहूँ संतुष्ट भेलहुँ।
२००९ मे मैथिलीक विवाहक संयोग बनलनि।
हमर छोट भाए ललनजी पत्नी आ दू पुत्र-पुत्रीक संग दिल्लीमे छलाह, पूर्व परिचित ज्योतिषी जीक ओत' कोनो पूजाक लेल सुझाव देने छलखिन। हुनके सबहक सलाहपर मैथिली पुणेसँ दिल्ली गेल छलीह। ललनजीक डेरासँ मैथिली दीदीक घर गेलीह। ओत' आनन्दजीक बहिनो मैथिलीकें देखलखिन, गप केलखिन,ओ कोनो कम्पनीमे काज करैत छलाह। हुनका सभकें विवाहक प्रस्ताव स्वीकार भेलनि।
आनन्दजी निर्णायक छलखिन। दिल्लीमे बैसार भेलै। हमर छोट भाए ललनजी, हमर बहिन-बहिनो हुनकासँ गप केलनि। हम फोनपर छलहुँ। विवाह तय भ' गेलै। विवाहक दिन आदि तय भेलै।
गाम गेलहुँ।
निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार विवाहसँ चारि दिन पहिने मधुबनी स्टेशनपर अरविन्द जी आ हुनक अग्रज आनन्द जीसँ पहिल बेर भेंट भेल।
रतनजी बहुत रास व्यवस्था क' क' रखने छलाह।
२६ क' ललनजी आ हमर छोट सार बिन्देजी गनौली गेलाह।

पटनासँ हमर साढ़ू, जेठ सारि आ प्रमोद बाबू एलाह।
दिल्लीसँ हमर छोट बहिन सच्ची आ भगिनी पूनम आएल छलीह।
लखनपट्टी आ शिशवासँ दुनू बहिन शान्ती आ बच्ची एलीह।
रुचौलसँ हमर मझिला मामा एलाह,छोटका मामा पटनासँ कोइलख गेल छलाह, कोइलखसँ हमरा गाम एलाह।लदारीसँ गोपालजी सेहो एलाह। नारायणपट्टीसँ हमर दीदी एलीह।

२७ क' गनौलीसँ भरिसक ६० गोटे बरियातीमे एलाह। विवाह भेलै। चारि बजे भोरमे बरियाती प्रस्थान केलनि।
३० क' चतुर्थी भेलै।
२ क' द्विरागमन भेलै।
५ क' हम सभ गामसँ प्रस्थान केलहुँ, ६ क' १० बजे रातिमे सिवनी पहुँचलहुँ।
सिवनीमे मैथिल आ मैथिली :
सिवनीमे भारतीय स्टेट बैंकक मंगलीपेठ शाखाक प्रबंधक देवघरक छलाह। हुनका सँ परिचय भेल। ओ एक गोटेसँ परिचय करौलनि। ओ जजुआरक छलाह। ओ सिवनी अस्पतालमे एकटा मैथिलसँ परिचय करौलनि।हुनका सभसँ कहियोक' भेट होइत छल।
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्रक शाखामे मुंगेर जिलाक सिंहजी छलाह। ओ जबलपुरमे सेहो हमर पड़ोसी छलाह, एतहु भेटलाह।
बैंक ऑफ़ इंडियाक एक शाखाक प्रबन्धक मिश्र जी सहरसाक छलाह, ओ जबलपुरमे सेहो भेटल छलाह। हुनका सभक संग सिवनी लग बैनगंगाक तटपर छठि पावनिमे जाइत छलहुँ। छठि पावनिमे सिवनी शाखाक पी.ओ. मैडम अर्चना सेहो परिवारक संग बैनगंगाक तटपर गेल छलीह। एकटा होटलक मालिक सेहो छठिमे संग रहैत छलाह, ओ गोरखपुरक छलाह।

सिवनीमे हमर साहित्यिक गतिविधि :

सिवनीमे हमर साहित्यिक गतिविधि लगभग शून्य रहल।

क्षेत्रीय कार्यालयमे राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रममे भाग लैत छलहुँ।

अधिक काल रातिएमे घर घुरैत छलहुँ।

टेप रिकॉर्डरपर चिरिमिरीक पल्टू दादाक स्वरमे अपन रचना सुनैत छलहुँ :

'जिन्दगी जब हुई जिन्दगी के लिए
हर घड़ी शुभ घड़ी आदमी के लिए'

....

'सूर्य बनकर जियो
उनकी खातिर जियो
जो तड़पते अभी रोशनी के लिए।'

थकान दूर होइत छल, आनंदित होइत छलहुँ। पल्टू दादा मोन पड़ैत छलाह।

सिवनीक साहित्यिक समाजसँ हम नुकाएल रहलहुँ। एक बेर एकटा कवि गोष्ठीमे श्रोताक रूपमे उपस्थित भेल छलहुँ।

अवकाश प्राप्तिक बाद ८ जनवरीक' नटराज होटलमे शाखा प्रबंधक अग्रवाल साहेब एकटा कवि गोष्ठीक आयोजन करौलनि जाहिमे अरविन्द मानवक संग और किछु साहित्यकार उपस्थित भेलाह। काव्य पाठमे हमहूँ भाग लेलहुँ।

रोग-शोक संताप :

मइ २००८ सँ नवम्बर २०१० धरि हम सिवनीमे पदस्थापित छलहुँ। एहि अवधिमे स्वास्थ्य सम्बन्धी किछु समस्याक समाधानक लेल डा. बघेलसँ संपर्क करैत छलहुँ, दाँतक कष्टक निदान डा. चौधरीजीसँ प्राप्त होइत छल।

२००९ मे १९ जनवरीक' बडका मामाक देहान्तक सूचना भेटल, २५ दिसम्बरक' हमर सारक पुत्री नीलमक दुर्घटनाक पता चलल, आइ सी यू मे भर्ती भेल छलीह, सामान्य स्थितिमे एबामे समय लगलनि। २९ दिसम्बरक' बड़का साढ़ू कोरियाही गाममे देह त्यागि देलनि, से पता चलल। १३ दिसम्बरक' फोनपर संपर्क भेल छल। देश-दुनियाँक विषयमे सेहो अखबारक माध्यमसँ किछु सूचना भेटैत छल। अपन दुख सभकें भारी लगैत छै किन्तु कतेक ह्रदय विदारक घटना देखि-सूनि लगैत छै जे हमर दुख त बहुत कम अछि।
२०१० मे १२ जनवरीक' 'हैती'मे भूकंपसँ करीब दू लाख लोक ख़तम भ' गेलाह। ११ अप्रैलक' हबाइ दुर्घटनामे पोलैंडक राष्ट्रपति आ हुनक पत्नी समेत सभ ९६ गोटे समाप्त भ' गेलाह।
सेवानिवृति :
२९ नवम्बर(२०१०)क' हमरा द्वारा कलेक्टर सभा कक्षमे अंतिम जिला स्तरीय समन्वय आ समीक्षा समितिक बैसकक संयोजन भेल। बी.एम.अग्रवाल,शाखा प्रबंधक आ नाबार्डक प्रतिनिधि श्रीराम अप्पुलिंगम द्वारा ३० क'हमर सेवानिवृतिक सूचना देल गेलनि, कलेक्टर महोदयक हाथें हमरा शाल आ श्रीफलक संग शुभकामना प्रदान कयल गेल।
३० क' बैंकमे नोकरीक हमर अंतिम दिन छल।
बैंकमे ६ बजे साँझमे हमर बिदाइक औपचारिकताक कार्यक्रम भेल। ९ बजे होटल 'वाटिका'मे कार्यक्रम आयोजित छल। बैंकक शाखा प्रबंधक आ अन्य अधिकारी सभ छलाह।वीरेन्द्र सिंह जी लखनादौन शाखासँ आएल छलाह।
क्षेत्रीय कार्यालयसँ किछु अधिकारी लोकनि शेखरजी,मंडलजी,सत्येन्द्रजी, साहूजी आ सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक डे साहेब आएल छलाह।

जिला पंचायतक मुख्य कार्य पालन पदाधिकारी राकेश सिंह साहेब सेहो छलाह।
शुभकामनाक संग हमरा दुनू गोटेकें शाल आ श्रीफलसँ सम्मानित कएल गेल।
बैंक द्वारा अवकाश नगदीकरण आ मोमेंटोक चेक ओही दिन भेटि गेल।
हमर विदाइ समारोहमे अग्रवाल जी चर्चा केलनि जे हम बैंकमे पैंतीस बरख नोकरीक अवधिमे अपन आवासक व्यवस्था नहि क' सकल छलहुँ।
बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे :
ओहि साँझ हम स्मरण केलहुँ जे दस दिसम्बर १९७५ क' बैंक ज्वाइन केने रही, हमरा परिवारकें ओहि समय हमर नोकरीक बहुत खगता छलैक।
बैंकमे समयपर वेतन भेटबामे कहियो कोनो व्यवधान नहि भेल, हमरा निरीक्षण,वसूली,मीटिंग आदिमे भाग लेब' जेबाक अवसर भेटैत छल, एहि लेल नियंत्रक कार्यालयसँ यात्रा-बिलक स्वीकृतिमे कोनो व्यवधान नहि होइत छल। वेतन वृद्धि, स्थानान्तरण,पदोन्नति आदिमे सेहो पारदर्शिता आ पवित्रताक स्वस्थ परम्परा बैंकमे भेटल।
नोकरी भेटल त माएक लेल जे कर्ज छलनि, से ब्याज सहित सभकें द' देल गेलनि,
बाबूक लेल जे कर्ज छलनि, से वापस कएल गेल।खेत सभ जे भरना छल से छूटल, बाबूक बिमारीमे गाम,दिल्ली आ डोमनहिल-चिरिमिरीमे इलाज आ पथ्य-पानिक व्यवस्था भेल, दूटा छोट भाए छलाह,हुनका सभक पढाइक व्यवस्था भेल, गाममे दू कोठलीक घर, चापा-कल आ लेट्रिनक व्यवस्था भेल। दू पुत्री आ एकटा पुत्रक शिक्षा आ दुनू पुत्रीक विवाहक आयोजन भेल। अपन जे साहित्यिक सौख

छल ताहू लेल पत्रिका सभ मंगयबाक आ तीन टा पोथी छपयबाक व्यवस्था भेल। हमर साहित्यक गतिविधिक लेल सेहो हमरा बैंकमे समय-समयपर प्रशंसा आ अतिरिक्त सम्मान भेटल।

बैंक सेवामे एल.टी.सी. ल'क' माएक संग मथुरा,वृन्दावन,आगरा,हरिद्वार,ऋषिकेश आदि ठाम तीर्थाटनक अवसर भेटल।

परिवारक संग एल.टी.सीक अन्तर्गत रायपुरसँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटना हबाइ जहाजसँ यात्रा करबाक अवसर भेटल।

बैंकक नोकरीक कारण बिहारक सीवान आ पूर्वी चंपारण,छत्तीसगढ़क अम्बिकापुर आ रायपुर और मध्य प्रदेशक शहडोल, जबलपुर आ सिवनी जिलाक बहुत रास गाम आ शहर घुमबाक अवसर भेटल आ रंग-विरंगक लोक, अधिकारी आ साहित्यकार लोकनिसँ परिचय आ आत्मीयता भेल।

समय-समयपर बैंक द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रममे पटना, मुंबई, भोपाल आ लखनऊमे देशक विभिन्न प्रान्तक रहनिहार आ विभिन्न शाखामे काज केनिहार लोक सभक संग रहबाक आ विभिन्न प्रतिभासँ परिचित हेबाक अवसर भेटैत छल।

स्थानातरणसँ किछु परेशानी त होइत छलै, मुदा विभिन्न परिस्थितिमे रहबाक आ विभिन्न स्वभावक लोक सबहक संग काज करबाक अनुभवक लाभ छलै।

बैंकक सेवामे छलहुँ, तें हजारो लोककें बैंकक नियमानुसार ऋण उपलब्ध करयबामे अपन विवेकक उपयोग करबाक आ अपनामे स्थित छुद्रता अथवा दिव्यताक अनुभव करबाक अवसर भेटल।

हमरा विश्वास छल जे सेवा निवृतिक बाद जे राशि प्राप्त हएत ताहिसँ आवश्यकता भरि आवासक व्यवस्था सेहो भ' जाएत।

एहेन प्रियतम संस्थासँ पृथक हेबाक कारण दुख त भ' रहल छल, मुदा पेंशनक माध्यमसँ बैंकसँ जीवन भरि जुड़ल रहबाक एकटा आश्वस्ति सेहो छल।

आँखिमे चित्र हो मैथिलीकेर :

हमर ममियौत डा. शशिधर कुमर 'मिथिला दर्शन' पत्रिकाक जुलाई-अगस्त आ सितम्बर-अक्टूबर (२०१०) अंकमे हमरासँ सम्बंधित लेखक विषयमे सुचित केलनि। बादमे देखलहुँ।

जुलाई-अगस्त अंकमे भाइ सियाराम झा 'सरस'क लेख छपल छलनि जाहिमे हमर रचनाक उपेक्षा कएल गेल छल।

सितम्बर-अक्टूबर अंकमे पाठकीय प्रतिक्रियामे भाइ उमाकान्तजी द्वारा 'संकल्प लोक' आ 'शशिकान्तजी-सुधाकान्तजी'क चर्चा करैत हमर रचना सभक प्रशंसा कएल गेल छल, से जानिक' नीक लागल। सेवा निवृतिक बाद मैथिली दिस उन्मुख हेबाक प्रेरणा सेहो भेटल।

चंडीगढ़सँ आदरणीय प्रो. गंगानन्द झा जीक शुभेच्छा प्राप्त भेल : आब इन्टरनेटपर मैथिली पत्रिका 'विदेह'मे अहाँक रचना देखय चाहैत छी। हमरा 'विदेह'मे अपन रचना देखबाक आ एकटा नव जीवनमे प्रवेश करबाक कल्पना आनन्दित केलक। मोन पड़ल 'मिथिला मिहिर','माटि-पानि', 'भारती-मंडन','आरम्भ', 'मिथिला दर्शन', 'कर्णामृत' आ मैथिली कार्यक्रम 'भारती'।

मोन पड़लाह हरिमोहन बाबू, मधुपजी,किरणजी,शेखरजी,जीवकान्तजी, सोमदेवजी,गुंजनजी,रमणजी,रवीन्द्रजी,उदय चन्द्र झा'विनोद'जी,विभूति आनन्द जी,छत्रानंद सिंह झाजी,प्रदीपजी।

मोन पड़लाह महेन्द्रजी,शशिकान्तजी, सुधाकान्तजी,उमाकान्तजी,कमलाकान्तजी।

मोन पड़ल कोइलख,रामपट्टी,रहिका,हाजीपुर,सीवानक विद्यापति-पर्व।

मोन पड़ल शशिकान्तजी-सुधाकान्तजीक स्वरमे अपन गीतक ई पाँती

:

‘आँखिमे चित्र हो मैथिलीकेर
ह्रदयमे हो माटिक ममता
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस यैह एकटा सिहन्ता।’

ओहि राति एकटा मीठ-मीठ दर्दक अनुभव भेल।

पटना / १३.०३.२०२२

(२८)

घर घुरबाक सुख

आवास यज्ञ :

२०१० मे ३० नवम्बरक’ हम सेवा निवृत भेल रही, ३ दिसम्बरक’ भविष्य निधिमे जमा राशि एगारह लाख छियासठि हजारक चेक भेटि गेल। तखन आवास लेल सोचब प्रारम्भ केलहुँ।

हमरासँ छोट भाए ललनजी दिल्लीमे एकटा छोट छीन घर ल’क’ एक पुत्री,एक पुत्र आ पत्नीक संग रहैत छलाह,एखनहु ओतहि रहैत छथि। सभसँ छोट भाए दूटा पुत्र आ पत्नीक संग गाममे रहि ओतहिसँ स्कूल जाइत-अबैत छलाह,एखनहु गामेमे रहि स्कूल जाइत-अबैत छथि।

हम नोकरीमे बिहारक सिवान,पूर्वी चम्पारण, छत्तीसगढ़क सरगुजा,रायपुर आ मध्य प्रदेशक शहडोल,जबलपुर आ सिवनी जिलामे रहैत आबि रहल छलहुँ।

विवेक नवी मुंबइक कोपरखैरनामे रहिक’ किछु मास पॉलिटेक्निक कॉलेजमे नोकरी केलनि, तकर बाद इंजीनियरिंग कॉलेजमे पढौनी क’रहल छलाह।

हमरा सोझाँ तीनटा विकल्प छल : पहिल, मुंबइ चल जाइ,दोसर मधुबनी,दरभंगा अथवा पटना जाइ; तेसर, गाम जाक’ रही।

बुढ़ारीमे चिकित्सा-सुविधाक आवश्यकता बेशी होइत छैक आ धिया-पूता लगमे नै रहत,से ध्यानमे राखि निर्णय लेबाक छल।

विवेक,वसन्त आ बड़का जमाएसँ सम्पर्क केलहुँ। हुनका सभ गोटेक सलाह भेलनि जे हम पटनामे रहबाक व्यवस्था करी, दिल्ली,मुंबइ आ गामक बीच रहत पटना। यैह निर्णय भेल।

पटनामे साहित्यकार लोकनिसँ संपर्क नै छल। फुलवारी शरीफ लग साढ़ू रहैत छलाह,सगुना मोड़,दानापुर लग मामा रहैत छलाह आ मिथिला कॉलोनी,दानापुरमे छोट भाएक ससुर रहैत छलाह। तीनू गोटेकें कहलियनि जे पटनामे कतहु एक कट्ठा जमीन लेबामे सहयोग करथि।

सभसँ पहिने साढूक ओत'सँ सूचना प्राप्त भेल : बिक्री योग्य पन्द्रह धुर जमीन कनिए दूरपर छै।

७ दिसम्बरक' गप भेल, ८ क'हम सहमति देलियनि आ जमीनबलाकें अग्रिम देबाक लेल किछु राशि पठा देलियनि।

२३ क' पटना पहुचलहुँ, २४ क' प्लाट देखलिऐ। राजूक निर्देशनमे हमर आवास यज्ञ चलय लागल। लगमे एकटा डेरा ताकिक' रखबाक भार हुनका सभकें द'क' २९के रातिमे पटनासँ प्रस्थान कए ३० क' सिवनी पहुँचि गेलहुँ।

३ जनवरीक' ग्रेच्युटीक दस लाखक चेक भेटि गेल।

सिवनी छोड़बासँ पहिने दूनू बेटी आ जमाए ओत'सँ घूमि एबाक विचार भेल।

१० जनवरीक' जबलपुरसँ सोमनाथ एक्सप्रेस पकड़ि ११ क' ८.५० बजे अहमदाबाद आ १ बजे पालनपुर (गुजरात) पहुचलहुँ।पालनपुरमे छोटका जमाए अमूल कम्पनीमे काज करैत छलाह, मैथिली ओतहि छलीह।

१५ क' बनास डेरी १,२,३ घुमलहुँ, २.३० बजे बससँ यात्रा कए ४ बजे गब्बर आ ६.३० बजे अम्बाजीक दर्शनार्थ पहुचलहुँ।

१६ क' १ बजे माउंट आबू पहुचलहुँ। ओत' घूमिक' रातिमे ८.३० बजे पालनपुर वापस भेलहुँ।

१७ क' रातिमे रणकपुर एक्सप्रेससँ पालनपुरसँ प्रस्थान कए १८ क' २ बजे बड़का जमाएक नवी मुंबइमे कोपरखैरना स्थित आवास पहुचलहुँ।

२२ क' मुंबइसँ प्रस्थान कए २३ क' ११ बजे सिवनी पहुचलहुँ। २४ क' विवेकक शिक्षा ऋण खातामे ८५०३४ रु. जमाक'क' ऋण खाता बंद करौलहुँ।

मैथिलीक शिक्षा ऋण खातामे ३५००० रु. जमा केलहुँ।
३० क' सबेरे ट्रक आएल। ट्रकपर सामान सभ लदाएल। ३१ जनवरीक' हम दुनू गोटे ११.१५ बजे सिवनीसँ प्रस्थान कए जबलपुरसँ ट्रेन पकड़ि १ फरबरीक' ११ बजे दिनमे फुलवारी शरीफ लग वृन्दावन कॉलोनी आवास पहुचलहुँ।ट्रकसँ सामान सभ ओही दिन बादमे आएल।
९ क' इन्डेन ऑफिस जाक' कागज आ ९५० रु. कौशन मनीक संग कुल २०७४ रु. जमा केलहुँ।
१० क' दू टा गैस सिलिंडर आबि गेल।
राजूक निर्देशनमे हमर आवास-यज्ञ चलि रहल छल।
शहरमे जमीन कीनब सेहो एकटा पैघ यज्ञ थिक। एहि यज्ञमे आवश्यकतासँ बहुत बेशी समय,श्रद्धा, विश्वास, साहस आ धैर्यक आवश्यकता होइत छैक। ई हमरा लेल एकटा नव आ नीक अनुभव छल। भूमि किनबा काल महग लगैत छैक, बादमे ओकर मूल्य बढि जाइत छैक।
साढ़ू, राजू, प्रमोद बाबू, रंजीतजी,रामजनम महतो आ मंजू देवी आदि लोकक सहयोगसँ हमर ई यज्ञ २२ फरबरीक' दानापुर रजिस्ट्री ऑफिसमे संपन्न भेल।
वृन्दावन कॉलोनीक रोड न.१ ईमे लाल बहादुर सिंह जीक घरमे किरायाक आवासमे रह' लगलहुँ। किछु दूरपर स्थित छलै जमीन। २०११ मे १४ जूनक' इंजिनियर रामजी सिंहजीक माध्यमसँ मंजूर ठीकेदारसँ संपर्क भेल आ हुनका द्वारा ८३ रु.प्रति वर्गफीटक दरसँ घर बनयबाक काज शुरू भेल।
पानिक व्यवस्था भेल। तकर बाद छओ मास धरि चिन्तनक मुख्य विषय छल ईंटा,बालु,सीमेंट,गिट्टी,लोहक छड़ आदि।
दौड़-धूपमे दस बरखक स्कूटी काज दैत छल।

२०१२ मे १६ जनवरीक' छत ढलायल,२९ फरबरीक' गृह प्रवेश भेल। ओहि दिन विवेक सेहो मुंबइसँ आबि गेल छलाह। गृह प्रवेशक अवसर पर संक्षिप्त भोजक व्यवस्था कयल गेल, साढ़ूक पुतोहु सभ भोजनक व्यवस्था केलनि। ओही दिन हम सभ किरायाबला घर छोड़ि नव घरमे सामान सभ आनिक' रह' लगलहुँ आ रहिएक' शेष काज पूर्ण करेलहुँ।

१५ अप्रैलक' बिजलीक काज आ ८ मइक' बढ़हीक काज संपन्न भेल।

घरक निर्माण काज सेहो बड़का यज्ञ थिक। हम तय केने छलहुँ जे कोनो स्थितिमे कखनो ककरोपर बिना तामस केने काज पूर्ण करब, से पार लागल।एहिस लाभ अपने होइ छै। शान्त चित्तस काज करबामे आनन्द अबैत छैक। अशान्त चित्तक परिणाम शुभ नै भ' सकैत छैक, काज भारी लाग' लगै छै, मोन उबि जाइ छै।

काज करबाक लक्ष्य शुभ चिन्तनक संग पूर्ण भ' सकय से सुनिश्चित करबाक चाही।

गाम-घरक यात्रा :

पिसिऔत भाएक पुत्रीक कन्यादानमे सम्मिलित हेबाक लेल २७ फरबरीक' गाम गेलहुँ। २८ क' गामसँ सोहराय गेलहुँ।बर आ बरियातीक अगवानीमे सात गोटेक समूहमे मौआही (बाबू बरही लग)गेलहुँ।

रातिमे बरियाती एलै सोहराय (पंडौल लग)। एक गोटे मोटर साइकिलसँ आबि रहल छलाह, दुर्घटनाग्रस्त भ'क' दरभंगासँ पटना गेलाह इलाजक लेल। बरक पिता आ दादा दुख आ चिन्तासँ भोजन नहि ग्रहण केलनि। बरियातीक ई रूप हमरा लेल नव छल।

एतेक संख्यामे बरियाती, एतेक फटक्का छोड़ब हमरा असहज केलक।

एहि असहजतासँ बादमे एकटा गीत जन्म लेलक : नब्बेटा बरियाती एलै, हल्ला भेलै गाममे ......।

गामक एहि यात्रामे रतनजी (छोट भाए)क संग मामा गाम रुचौल, बहिनक सासुर शिशवा, समधियान राघोपुर आ गोनौली, दीदीक सासुर नारायणपट्टी सेहो गेलहुँ। घुरती काल अपन सासुर लदारी होइत पटना मामाक घर पहुचलहुँ। हुनका संगे विजेता (ममियौत बहिन)क विवाहक प्रसंगमे १३ मार्चक’ टाटानगर गेलहुँ। विजेता बायो इन्फार्मेटिक्समे बी टेक छलीह,नोकरी करैत छलीह। लड़का सेहो इंजिनियर छलखिन। बिना कोनो दहेजक माँगक विवाह तय भेलै, से नीक लागल।

एहि विवाह सँ ई भावना दृढ़ भेल जे बेटीकें समुचित शिक्षा द’क’ सबल आ सक्षम बनाओल जा सकैत अछि जाहिसँ ओ अपना बलपर उचित सम्मान प्राप्त क’ सकय।एहि चिन्तनसँ एकटा गीत जन्म लेलक :

बुच्ची बढती, लिखती-पढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के,
भाग्य अपन अपनेसँ गढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के।
रेप-दहेजक दानवकेर
उत्पात मचल अछि भारतमे,
महिषासुरलय दुरगा बनती
हमरा चिन्ता कथी के।
ज्ञान और विज्ञानक सम्पति
अर्जित करती जीवनमे,
नव सुरुज आ चान बनेती
हमरा चिन्ता कथी के।

लोकक मोल बुझै छै एखनो
लोक बहुत छै दुनियाँमे,
संगी अप्पन अपने चुनती
हमरा चिन्ता कथी के।
अपनहि श्रमसँ बाट बनेती
एहि बबूरकेर जंगलमे,
'किरण' 'सुनीता''मीरा' बनती
हमरा चिन्ता कथी के।

हमरा भरोस भेल जे जतेक चिन्ता लोक बेटीक बियाहक लेल करैत अछि, से बेटीक समुचित शिक्षा दिस लागि जाइ त युग-युगसँ चल अबैत ई 'पराधीन सुख सपनहु नाही' बला धारणाक अन्त भ' सकैत अछि। सेवा,अनुसन्धान,राजनीति आदि सभ क्षेत्रमे बेटी लोकनिक प्रशंसनीय काज हमरा सभकें आश्वस्त करैत अछि।

१७ जूनक' मामाक सगुना मोड़ लगक आवासमे कन्या निरीक्षणक औपचारिता भेलै आ १० जूनक' मामाक गाम रुचौलमे विजेताक विवाह भेलनि, हमहूँ दुनू अवसरपर उपस्थित भेलहुँ। गाम-गाम घुमैत बहुत रास पोखरि, दारूक दोकान आ आनो कतेक देखल आ सूनल बात सभ मोनमे घुरिआइत रहल आ चिन्तनक विषय बनल जाहिसँ एकटा गीत जन्म लेलक :

पोखरिमे मखान गामे-गामे
दारूके दोकान गामे-गामे।
दिनक' पूजा राति बिताबय चोरीमे
रावणकेर खरुहान गामे-गामे।
कबुला केलक पूर मनोरथ भेलै लोकक
गेल छागरक जान गामे-गामे।

ठाढ़े-ठाढ़े लोक मुतैए बाटेपर
टाका के मचान गामे-गामे।
परिणयकें उद्योग बनौलक मिथिलामे
अयाचीक संतान गामे-गामे।
कि हेतै अइ बेर बाढ़िमे के जानय
छटपट कोटि परान गामे-गामे।
बाट-घाटसँ काँट-कूशकें दूर करू
अन्नाकेर अभियान गामे-गामे।
(ओहि समय बिहारोमे शराब-बंदी नहि छलै)।
मैथिली जगतसँ सम्पर्क :
विजेताक विवाहमे मामा मैथिलीमे कार्ड छपयबाक भार देलनि।
हमरा लेल पटना नव छल। तीस बरख पहिने मुसल्लहपुरमे मुरलीधर प्रेस देखने छलहुँ, ओत' पहिल पोथी 'तोरा अङनामे' छपल छल। ओहि स्थानपर गेलहुँ त पता चलल जे बहुत पहिने बंद भ' गेलै, घुरि एलहुँ।
जीवकान्तजीसँ संपर्क भेल त ओ शेखर प्रकाशनक पता कहलनि आ शरदिंदु चौधरीजीक मोबाइल न. देलनि।
चौधरीजीसँ संपर्क भेल, न्यू मार्केट गेलहुँ। कार्डक काज हुनका देलियनि।
हुनकासँ मैथिली जगतक पर्याप्त सूचना प्राप्त भेल। हुनका लग मैथिली पोथीक भण्डार देखि नीक लागल। हुनका लग हमर पोथी 'तोरा अङनामे'क एक प्रति सेहो भेटल जे तीस बरख पहिने मिथिला मिहिर / आर्यावर्तमे समीक्षाक लेल
जमा केने रही, हमरा लग एकहुटा प्रति नहि रहि गेल छल, नीक स्थितिमे हुनका ओत' भेटल,से नीक लागल। ओ पढबाक लेल तीनटा पोथी सेहो देलनि जाहिमे एकटा आदरणीय मन्त्रेश्वर झाजीक 'चिनवार'

उपन्यास सेहो छल। 'चिनवार' पढलहुँ, नीक लागल, ओहिपर समीक्षा सेहो कवितामे लिखलहुँ जे 'पूर्वोत्तर मैथिल'पत्रिकामे प्रकाशित भेल। शेखर प्रकाशनमे मैथिलीक सभ पत्रिकाक अद्यतन स्थितिसँ परिचित भेलहुँ, बहुत साहित्यकार लोकनिसँ सेहो संपर्क भेल। डा. कमल मोहन 'चुन्नू', डा.योगानन्द झा,श्याम दरिहरे,मधुकान्त झा, वैद्यनाथ'विमल',डा. बासुकी नाथ झाजीसँ परिचय भेल, बच्चा ठाकुर आ बटुक भाइ भेटलाह। दूरदर्शनपर एकटा कार्यक्रममे बटुक भाइ डा.बासुकी नाथ झा आ शरदिंदु चौधरीक सङ हमरो सम्मिलित केलनि,हम प्रस्तुत केने रही :

पोखरिमे मखान गामे-गामे

दारू के दोकान गामे-गामे।

बादमे 'समय-साल' पत्रिकाक सम्पादकीयमे एहि गीतक चर्च भेल, आदरणीय जीवकान्तजी सुचित केलनि।

ई रचना 'विदेह'क १ जून २०११ केर अंकमे प्रकाशित भेल छल।

'शेखर प्रकाशन'सँ बहुत रास पोथी पढबाक लेल सहजतासँ उपलब्ध भ'गेल।

विजय नाथ झाक गीत-गजल संग्रह 'अहींक लेल'क अतिरिक्त हुनक मैथिली पोथी 'कन्दर्प कानन' आ 'कामायनी'(छन्दानुवाद) सँ परिचय भेल।

बच्चा ठाकुरक 'मैथिली आलोचना साहित्यक दिशाबोध' आ मैथिली गीत-कविता संग्रह 'गौरी-गिरामृता'देखल।

मधुकान्त झाक पोथी 'क्रान्ति-रथी' आ 'ममता-जोगी', वैद्यनाथ 'विमल'क पोथी 'खण्ड-खण्ड पाखण्ड',मन्त्रेश्वर झाक पोथी 'शिरोधार्य','द्रुत विलंबित' 'टोंटानाथक चिट्ठी' और 'कतेक डारि पर',

कामिनीक पोथी ‘समयसँ संवाद करैत’,’परती परहक फूल’आ ‘खण्ड-खण्डमे बँटैत स्त्री’,डा.बासुकी नाथ झाक ‘बोध संकेतन’,कीर्ति नारायण मिश्रक ‘ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप’,जीवकान्त जीक ‘छाह सोहाओन’,’खीखिरिक बीअरि’,’गाछ झूल-झूल’,’अधरतियामे चान’,’हमर अठन्नी खसलइ वनमे’ आ ‘पंजरि प्रेम प्रकासिया’,सुधांशु ‘शेखर’ चौधरीजीक ‘भफाइत चाहक जिनगी’,‘जिनगीक बाट’,’निवेदिता’,’लेटाइत आँचर’,’हस्ताक्षर’,’अंगरेजी फूलक चिट्ठी’,’साक्षात्कारक दर्पणमे’,’गीत ओ गजल’ और ’हम साहित्यकार ओ सम्पादक’,शरदिंदु चौधरी जीक ‘जँ हम जनितहुँ’,’बड़ अजगुत देखल’,’गोबरगणेश’,’करिया कक्काक कोरामिन’,’बात-बातपर बात’,’हमर अभाग : हुनक नहि दोष’,’साक्षात्’,उषा किरण खानक पोथी ‘काँचहि बाँस’,’गोनू झा क्लब’आ ‘भामती’,डा. शेफालिका वर्माक ‘मोहपाश’,गोविन्द झा कृत ‘सुबोध मैथिली व्याकरण’,भीमनाथ झाक ‘भनहि भीम कर जोड़ि’,मधुप जीक ‘मधुप गीतिका’,मणिपद्मजीक ‘अनंग कुसुमा’,अशोक कुमार दत्तक ‘झिझिरकोना’,डा.योगानन्द झा द्वारा संकलित संपादित ‘गहबर गीत’, किशोर केशव आ वंदना किशोर द्वारा संपादित पोथी ‘अक्षर पुरुष’ आदि सेहो शेखर प्रकाशनसँ उपलब्ध भेल।

शेखर प्रकाशनसँ ‘घर-बाहर’ अनलहुँ।

पाण्डेयजीसँ ‘मिथिला दर्शन’ अनलहुँ।

इन्टरनेट पत्रिका ‘विदेह’कें ३० मइक’ एकटा गीत आ एकटा गजल पठौलियनि।

रातिमे आशीष अनचिन्हारजीसँ गप भेल।

३१ मइ क’ निर्मलीसँ उमेश मंडलजी गप केलनि।

‘अनचिन्हार आखर’ साइटपर गजलपर पर्याप्त सामग्री देखि हर्ष भेल, लागल जेना हम कते बरखसँ जे तकैत छलहुँ, से भेटि गेल।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार द्वारा प्रस्तुत गजल शास्त्रक

अध्ययन मैथिलीमे गजल लेखन दिस आकर्षित केलक।
हमरा गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत सरल वार्णिक बहर सोझ लागल, गजल लिखय लगलहुँ आ 'विदेह'कें प्रेषित करय लगलहुँ।
'विदेह'कें सदेह सेहो देखल। विदेह मैथिली शिशु उत्सव,विदेह मैथिली विहनि कथा,विदेह मैथिली पद्य सेहो प्रकाशित भेल जाहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा महत्वपूर्ण आलेख 'शिशु,बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र','गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र' और 'पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षा शास्त्र'क संग अनेक नव-पुरान साहित्यकार लोकनिक रचना प्रकाशित भेल। अंगरेजी-मैथिली शब्द कोष प्राप्त भेल।
'विदेह' अपना ढंगक एसगर पत्रिका अछि मैथिलीमे। एकर कोनो अंक देखिएक' ककरो आश्चर्य लगैत छैक जे कतेक विविधता आ कतेक विषय समेटने रहैत अछि ई पत्रिका।
सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर अपनो खूब लिखलनि। हिनक चर्चित पोथी 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' सेहो अपना ढंगक एसगर पोथी अछि जाहिपर सेहो मैथिली साहित्य गर्व क' सकैत अछि।
हमर बेसी गजल 'विदेह'मे छपल।
'विदेह' लेखक आ पाठक वर्गक विस्तार बहुत सुन्दर ढंगसँ क' रहल छल।
हाइकू, गजल,विहनि कथा,बाल साहित्य,नाटक,बाल गजल,भक्ति गजल,आलोचना-समालोचना-समीक्षा आदि विशेषांक 'विदेह'मे प्रकाशित भेल। १ जनवरी २०१५ क'मधुपजीपर विशेषांक निकलल, १ नवम्बर २०१५ क'अरविन्द ठाकुर विशेषांक निकलल। १ दिसम्बर २०१५ क' जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक निकलल।
राजनन्दन लाल दास आ रामलोचन ठाकुर विशेषांक निकलि चुकल

अछि। आदरणीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर आ केदार नाथ चौधरी विशेषांक निकल'बला अछि। आगाँ और विशेषांक सभ विदेहमे प्रकाशित हएत। बहुत चर्चित लेखकक बहुत रास चर्चित पोथी सभ उपलब्ध अछि 'विदेह'क साइटपर, क्यो कखनो अपना सुविधानुसार एहि सभक मङनीमे उपयोग क' सकैत छथि।

आशीष अनचिन्हार 'अनचिन्हार आखर'नामक मैथिली गजलक प्रथम स्वतन्त्र वेबसाइट बनाक' ओहि पर गजल शास्त्र प्रस्तुत क'क' बहुत लोकक़ें गजल लेखन लेल प्रेरित करैत, मार्गदर्शन दैत, पुरस्कारक योजना चला रहल छलाह,बाल-गजल,भक्ति-गजल आदि विशेषांक प्रस्तुत क' रहल छलाह, गजलकारक परिचय श्रृंखला प्रस्तुत क' रहल छलाह। अपनो बहुत रास गजल लिखलनि।

हिनक गजल संग्रह 'कुमारि इच्छा','जंघाजोड़ी','अनचिन्हार आखर' आदि आ पोथी 'मैथिली गजलक व्याकरण आ इतिहास','मैथिली वेब पत्रिकाक इतिहास','मैथिली गजलक रेडी रेकोनर','शब्द-अर्थ-शक्ति' आदि उल्लेखनीय अछि।

मैथिली गजलक सामर्थ्य,दिशा आ दशा आदि जनबाक लेल ई पोथी सभ पढ़ब आवश्यक अछि। एहि अभियानसँ बहुत गोटे लाभान्वित भेल छथि।

किछु झिझकके बाद हमहूँ एहि अभियानमे शामिल भेलहुँ।हमर गीत लेखनक प्रयास गजल लेखन दिस अग्रसर भेल। हमरा जे कहबाक अछि से गजलक रूपमे कहबामे सुविधाजनक लागय लागल।

आशीष अनचिन्हार जी हमरो काफिया बुझबामे आ अरबी बहरमे गजल लिखबामे बहुत सहयोग केलनि।गजलक सम्बन्धमे हुनका द्वारा प्रस्तुत आलेख सभक मनन केलहुँ।'विदेह'मे प्रकाशित गजल सभक अध्ययन केलहुँ।

हमर ममियौत भाए डा.शशिधर कुमर हमरा लेल दू टा ब्लॉग बना

देलनि :

१.आँखिमे चित्र हो मैथिली केर : मैथिली रचना सबहक लेल।

२.तिरंगे के लिए : हिन्दी रचना सबहक लेल।

हमर मैथिली रचना सभकें मैथिली ब्लॉगपर पोस्ट करबामे सेहो मदति केलनि।

हरिमोहन बाबूक आत्मकथा पढ़ल छल। सुधांशु शेखर चौधरी,जीवकान्त आ मन्त्रेश्वर झाजीक आत्मकथा पढ़लहुँ। जीवकान्तजीसँ पटनामे हुनक छोट पुत्र वरुणजीक आवासपर भेंट केलहुँ।

आदरणीय जीवकान्तजी कहने छलाह जे पटना आबि गेल छी, त गोष्ठी सभमे जाउ, बजाबय त जाउ, नहियो बजाबय तैयो जाउ।

गोष्ठी सभमे जाए लगलहुँ। गणेश झा,विजय नाथ झा,बच्चा ठाकुर आदि साहित्यकार सभक संग मैथिली गोष्ठीक अतिरिक्त हिन्दी गोष्ठीमे सेहो जाए लगलहुँ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवनमे बड्ड गोष्ठी होइत छलैक। दूरसँ जेबाक कारणे किछुए दिनमे हम हिन्दी गोष्ठीमे जेबासँ थाकि गेलहुँ।

मध्य प्रदेशमे रही, तखने हिन्दीमे लिखबाक अभ्यास भेल छल, आब हिन्दीमे लिखब हमरा लेल कठिन भ' गेल छल। हम मैथिलीपर ध्यान केन्द्रित केलहुँ, हिन्दीक गोष्ठी सभमे जाएब बंद भ' गेल।

मैथिलीक गोष्ठी सभमे जाएब पटना धरि सीमित रखलहुँ।

२०१८ मे मिथिला विभूति पर्वमे दरभंगा गेलहुँ जाहिमे १४ गोटेकें मिथिला विभूति सम्मान देल गेलनि जाहिमे हमहूँ छलहुँ। आदरणीय उदय चन्द्र झा 'विनोद'जीक अध्यक्षतामे आयोजित कवि सम्मेलनमे हमहू एकटा गजल प्रस्तुत केलहुँ।

चेतना समिति द्वारा आयोजित आ राजीवनगरक विद्यापति पर्वक कवि

गोष्ठी सभक अतिरिक्त अकादमी आ मैथिली लेखक संघ द्वारा पटनामे आयोजित गोष्ठी सभमे भाग लेलहुँ।
चेतना समितिक आयोजनमे आदरणीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर,उदय चन्द्र झा 'विनोद', बुद्धिनाथ मिश्र,तारानंद वियोगी,मधुकान्त झा,अशोक,रमानंद झा 'रमण',विद्या नाथ झा'विदित',गणेश ठाकुर,बच्चा ठाकुर,छत्रानंद सिंह झा (बटुक भाइ),डा. गंगेश गुंजन,सरस,चंद्रमणि,कामिनी,सदरे आलम गौहर,कमल मोहन 'चुन्नू', स्वयंप्रभा झा,कुमार मनीष अरविन्द,रमेश,शारदा झा, मनोज शांडिल्य,मेनका मल्लिक,रानी झा,संस्कृति मिश्र,रघुनाथ मुखिया, नवलश्री पंकज,गुंजनश्री आदि पुरान आ नव साहित्यकार लोकनिकें देखबाक आ सुनबाक अवसर भेटल। 'क्यो नहि दै अछि आगि' बुद्धि नाथ मिश्र जीक नीक गीत संग्रह छनि। हिन्दी आ मैथिली दुनूमे लीखि रहल छथि।
चन्द्रमणिजीक सैकड़ो गीत सभ अनेक पोथीमे छनि, करीब पचास बरखसँ मैथिली मंचपर लोकप्रियता प्राप्त करैत आएल छथि।गीतक अतिरिक्त आनो विधामे सक्रिय छथि।
'काव्य-द्वीपक ओहि पार','यथास्थितिक बादक लेल','निकती' आदि रमेश जीक पोथी छनि। 'निकती'मे रमेशजी द्वारा मैथिलीक गजल शास्त्रपर असंतुलित टिप्पणी कयल गेल अछि।
कुमार मनीष अरविंदक पोथी 'निछ्च्छ बताह भेल'नीक कविता संग्रह अछि।
राजीवनगरक गोष्ठीमे विनोद कुमार झा, गणेश झा,किशोर केशवजी,अखिलेश कुमार झा आ जीवानंद 'निराला'जीसँ सेहो परिचय भेल। अखिलेशजी आकाशवाणी,पटनामे छलाह, आकाशवाणीक लेल 'आधुनिक कविता एबं ओकर उपयोगिता' विषयपर १७.१२.२०११ क' विजयनाथ झा जीक आवासपर गोष्ठीक आयोजन केलनि जाहिमे डा. इंद्र कांत झा, दिनेश झाक संग हमहूँ छलहुँ।

अखिलेशजी 'नवतुरियाक हाथमे मैथिली साहित्यक भविष्य' विषयपर ६ जून २०१२ क' हमरा आवासपर गोष्ठीक आयोजन केलनि जाहिमे विजयनाथ झा, अखिलेश कुमार झा, दिनेश झाक अतिरिक्त हमर साढ़ू शुभ चन्द्र झा आ हुनक पुत्र कुमार प्रमोद चन्द्र,राजीव कुमार झाक संग मिथिलेश झाजी सेहो छलाह।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' २००८ सँ अपना आवासपर मासे-मासे कवि गोष्ठी आयोजित करैत छलीह,हुनका ओत' सेहो जाए लगलहुँ।हुनका ओत' डा.इंद्र कान्त झा, बटुक भाइ,डा. रमानंद झा 'रमण', गणेश झा, बच्चा ठाकुर,विजय नाथ झा,अजित आजाद, मनोज 'मनुज',बैद्य नाथ मिश्र,कमलेन्द्र झा 'कमल', धीरेन्द्र नाथ झा, राम नारायण सिंह,कुमार गगन,गायक आशुतोष मिश्र, रवीन्द्र बिहारी'राजू' आदि साहित्यकार आ रंग कर्मी लोकनिसँ भेंट भेल, किछु नव लोक सभसँ सेहो परिचय भेल।

गणेश झाक काव्य संग्रह 'नवाद्या' देखलहुँ।

ओत' हिन्दीक किछु रचनाकार मृत्युन्जय मिश्र'करुणेश',आर.पी.घायल,नगेन्द्र मेहता,श्री राम तिवारी आ अन्य साहित्यकार सभसँ सेहो परिचय भेल।करुणेश जी आ घायल जीक हिन्दी गजल नीक लागल, मेहताजी पर्यावरण सम्बन्धी नीक रचना सुनबैत छलाह।

प्रेमलता जीक नीक कथाकारक रूप हुनक पोथी 'ओ दिन ओ पल','एगो छली सिनेह' आ 'शेखर प्रसंग'मे भेटल।ओ पावनि जकाँ सांध्य गोष्ठीक आयोजन मासे-मासे अपना ओत' करैत आबि रहल छथि। सालमे एकटा पत्रिका 'सांध्य गोष्ठी'क प्रकाशनक लेल आनन्द आ उत्साहसँ सभसँ रचना प्राप्त करैत छथि, छपबैत छथि आ बिलहैत छथि।

धीरेन्द्र कुमार झाक कविता संग्रह 'अपनाकें अकानैत', 'कनिए टा बात','अही सभमे कतहु', कथा संग्रह 'एहि मोड़ पर' आ उपन्यास 'उत्तरार्ध' पढलहुँ।हिनक कविता,कथा,उपन्यास सभ नीक लगैत अछि।

हम मैथिलीमे गीत आ गजल प्रस्तुत करैत छलहुँ। हमर गीत लेखन कम भ' गेल, गजल सिखबाक आ लिखबाक प्रवृति बढल गेल। सरल वार्णिक बहरमे गजल लिखैत छलहुँ आ 'विदेह'मे पठबैत छलहुँ।

'विदेह' एकटा नव लेखक आ पाठक वर्ग तैयार क' रहल छल, से उत्साहबर्धक लागल, ओहिमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना बहुत नीक लगैत छल। बादमे पटनामे एक बेर 'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रममे मंडल जी, हुनक पुत्र उमेश मंडल जीसँ भेट भेल, हुनक पोथी 'गामक जिनगी' भेटल। 'गामक जिनगी'अद्भुत कथा संग्रह लागल। मंडलजीक कथा सभक संग हुनक परिवारक समर्पण कहैत अछि 'मैथिली अमर रहतीह'।

ओहि गोष्ठीमे नव-नव कथाकार लोकनिक कथा सुनबाक आनन्द भेटल। ओत' विशिष्ट पाठक आदरणीय श्यामानंद चौधरीजी भेटलाह जे 'तोरा अङनामे' मे प्रकाशित गीत 'छोटे-मोटे टूटल मड़ैयामे गौरी कोनाक' रहती हे'क

स्मरण केलनि। ओहिठाम तारानन्द 'वियोगी'जी सेहो भेटलाह। हुनक पोथी 'तुमि चिर सारथि' पढने छलहुँ,एकटा गीत मिथिला दर्शनमे पढलहुँ 'मदना माएकें रहै सिहन्ता खैतहुँ पूरी खीर,मगर मन लगले रह्लै'-से नीक लागल। ओहो बहुत विधामे लिखबाक सामर्थ्य रखैत छथि।

उमेश जी 'सगर राति दीप जरय'क आयोजनक सूचना दैत छलाह,किन्तु ई आयोजन हमरा स्वास्थ्यक अनुकूल नहि लगैत छल,तें आन ठाम कतहु एहि आयोजनमे नहि जा सकलहुँ, मुदा पता रहैत

छल जे एहि कार्यक्रमसँ बहुत काज भ' रहल अछि, खूब लीखल जा रहल अछि,खूब प्रकाशित सेहो भ' रहल अछि।

पटनामे आयोजित मैथिली साहित्य उत्सवक आयोजनमे सेहो कवि गोष्ठीमे शामिल भेलहुँ। ओहि अवसरपर आदरणीय उदय चन्द्र झा 'विनोद'जीसँ बहुत रास कविता सुनवाक सौभाग्य प्राप्त भेल। हुनक कविता-संग्रह 'अथ उत्तरकथा'क रचना सभ बहुत आकर्षक अछि। हुनक एकटा गीत हमरा नीक लगैत अछि ' लोक एके छै सभठाँ अनेक छैक गाम, अहाँ करबै जँ नीक त अबस्स लेत नाम।'

२५.११.२०१२ क' आइ एम ए हॉलमे गौरीनाथक उपन्यास 'दाग'पर विचार गोष्ठी आ नाटक देखलहुँ।

विद्यापति भवनमे यात्री जयंती,मधुप जयंती,हरिमोहन झा जयंती,मणिपद्म जयंतीमे भाग लेलहुँ।२७.११.२०१२ क' मणिपद्मजीपर विचार गोष्ठीमे भाग लेलहुँ।आदरणीय रामानंद झा 'रमण'जीक समर्पण आकर्षित केलक।हुनका द्वारा संकलित संपादित बहुत रास पोथी सबहक पता चलल।

गांधी संग्रहालय परिसरमे १८अगस्त २०१३क' आ डाक बंगला चौराहा लग 'झा एसोसिएट्स'मे ४ जनवरी २०१४ क'अजित आजादक एकल काव्य पाठ कार्यक्रममे उपस्थित भेलहुँ।'पेन ड्राइवमे पृथ्वी' हिनक चर्चित कविता संग्रह अछि। पटनासँ मधुबनी गेलाक बाद हिनक बहुमुखी प्रतिभाक चमत्कार लोक देखि रहल अछि।

लेखन,सम्पादन,प्रकाशन,आयोजन आदि सभ दिशामे प्रशंसनीय काज क' रहल छथि।

बहुत बादमे ए.एन कॉलेजक सभागारमे सुकान्त सोमक एकल पाठ सेहो सुनबाक अवसर प्राप्त भेल। ओ एकल पाठ आब हुनक स्मृति भ'गेल।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर, केदार नाथ चौधरी आ कीर्ति नारायण मिश्रक प्रबोध साहित्य सम्मान समारोहमे उपस्थित भेलहुँ।

'प्रेमलता मिश्र 'प्रेम',कामिनीक लेल 'आखर'द्वारा आयोजित कार्यक्रम देखलहुँ। श्याम दरिहरे जीक पोथी 'घुरि आउ मान्या'क विमोचन समारोह देखलहुँ।

किछु पोथी सभ पढ़लहुँ।हिनक पोथी 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कॉम' नीक कथा-संग्रह अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल, उषा किरण खान,श्याम दरिहरे,प्रदीप बिहारी,अशोक,शिव शंकर श्रीनिवास,अमरनाथ मिश्रजीक बहुत रास कथा हमरा आकर्षक लागल। मंडल जीक 'गामक जिनगी' अशोकजीक 'डैडीगाम', शिवशंकर श्रीनिवासक 'गुण कथा',अमरनाथ मिश्र जीक 'इजोत दिस',प्रदीप बिहारीक 'सरोकार' आदि विलक्षण कथा संग्रह अछि।

विद्यापति पर्वक अवसरपर आ आनो अवसरपर मैथिली नाटक देखिक' आनन्दित भेलहुँ।कुशल रंगकर्मी कुमार गगन और मनोज'मनुज' आब नहि छथि, हिनका लोकनिक कृतिकें अमरता प्रदान करबाक लेल किशोर केशवक नेतृत्वमे 'भंगिमा' द्वारा हिनके सबहक लिखल नाटक 'सपथ ग्रहण' आ 'नदी गोंगियाएल जाय'क उत्कृष्ट प्रस्तुति द्वारा बहुत स्मरणीय कार्यक्रमक आयोजन ३० आ ३१ दिसम्बर २०२१ क' कयल गेल।

मैथिली साहित्य उत्सवमे किरण जीक कथा 'मधुरमनि' कें लघु फिल्मक रूपमे देखब नीक लागल।

विद्यापति भवनमे फिल्म 'बबितिया' देखलहुँ जकर बहुत रास काज मधुबनीएमे भेल छै।

चेतना समिति द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी देखबाक-सुनबाक अवसर भेटल।

८ अगस्त २०१५ क' पटनामे आरम्भ भेल 'साहित्यिक चौपाड़ि' कार्यक्रममे दू बेर भाग लेबाक सुअवसर भेटल जाहिमे नव लेखक-कवि सभकें देखबाक-सुनबाक आनन्द प्राप्त भेल,नवलश्री पंकज आ बालमुकुन्दक सम्पादनमे एकटा पोथीक रूपमे सेहो 'साहित्यिक चौपाड़ि'मे दू बरखक मध्य प्रस्तुत रचना सभकें देखल। नवलश्री पंकज आ बालमुकुन्दक संग सुमित मिश्र गुंजन,पंकज प्रियांशु,श्याम झा,मनीष झा बौआभाइ,आनन्द मोहन झा,अमित पाठक,प्रियंका मिश्र,सुमित झा,अनिमेष मिश्र,रजनीश प्रियदर्शी,सत्यम कुमार झा,विकास वत्सनाभ,नारायण झा,इंद्रकांत लाल,अशोक कुमार दत्त,दयाशंकर मिथिलांचली,मुकुंद मयंक,अखिलेश कुमार झा,घनश्याम घनेरो,अविनाश श्रोत्रिय,सागर नवदिया,रंजीत राज आ और बहुत गोटेक सहभागिता आ सक्रियता नीक भविष्यक सूचना दैत अछि।
'उपमान'क गोष्ठीमे श्याम दरिहरे, अशोक,प्रदीप बिहारी,अमरनाथ मिश्र आदि कथाकारसँ हुनक बहुत नीक-नीक कथा सभ सुनबाक-गुनबाक लेल अवसर भेटल।
विजयनगरमे दरिहरे जीक आवासपर आयोजित गोष्ठीमे अनिल कुमार सिंह जीक गजल सूनल। धीरेन्द्र नाथ झा आ मोहन भारद्वाजजीक आवासपर सेहो गोष्ठीक आयोजन भेल। कोरोनाक कारणे स्थगित 'उपमान'क गोष्ठी आब पुनः शुरू भेल अछि आ स्थान विद्यापति भवन भेल अछि। दरिहरेजी नहि छथि मुदा, 'उपमान'हुनक मधुर स्मृति अछि।
जनकपुरसँ प्रकाशित पत्रिका 'आँजुर',हैदराबाद-सिकंदराबादसँ प्रकाशित 'प्रवासी',पटनासँ 'भंगिमा'द्वारा प्रकाशित छमाही पत्रिका 'भंगिमा' आ पटनासँ प्रकाशित 'पकठोस'सँ सेहो परिचित भेलहुँ।
भावना मिश्र 'हैप्पी फॉर यू'क माध्यमसँ मैथिलीक सेहो सेवा क' रहल

छथि। हुनकहु द्वारा आयोजित साक्षात्कार कार्यक्रममे शामिल हेबाक अवसर भेटल अछि।
दीपा मिश्र सेहो बहुत सक्रिय छथि। पत्रिका 'वाची'क माध्यमस हिनक मैथिली सेवा आनन्दित करैत अछि। और बहुत गोटेक सक्रियता फेस बुक,यू-ट्यूब आदिपर देखैत छी रंग-विरंगक कार्यक्रमक आयोजनक माध्यमसँ।
फेस-बुक पर आदरणीय उदय चन्द्र झा 'विनोद'जीक समसामयिक रचना प्रतिदिन पढैत आबि रहल छी। बिनोद कुमार झाक नीक-नीक कविता सभ सेहो पढबा लेल उपलब्ध भ' रहल अछि।किछु माससँ दीपा मिश्रक नीक कविता सभ पढबाक लेल भेटैत अछि।
भाइ विजय नाथ झा जी खूब लीखि रहल छथि,हुनकासँ रचना सुनबाक अवसर भेटैत रहैत अछि।
अजय नाथ झा शास्त्री द्वारा पत्रिका 'मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश'क माध्यमसँ मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसारक अभियान चलैत आबि रहल अछि, अही नामसँ दैनिक अखबारक प्रकाशन सेहो गत २६ दिसम्बरसँ भ रहल अछि। हम साढ़ूक परिवारक सक्रियता सेहो एहि अभियानमे देखि रहल छी। अखबारक पटनाक संस्करण लेल बहुत श्रम क' रहल छथि प्रमोद बाबू।
प्रकाशन आ प्रसारण :
हमर रचना सभ इन्टरनेट पत्रिका 'विदेह'मे १ जून २०११ (८३ म) अंकसँ प्रकाशित होमय लागल। 'मिथिला दर्शन'मे पहिल बेर सितम्बर-अक्टूबर२०११मे रचना प्रकाशित भेल, एहिमे दूटा गीत आ दूटा गजल छपल छल। फेर बादमे किछु और अंकमे गजल प्रकाशित भेल।
'समय-साल'क मइ-जून २०११, जुलाई-अगस्त२०१३,सितम्बर-दिसम्बर २०१३अंकमे, 'पूर्वोत्तर मैथिल','अंतिका'क अक्टूबर

२०११- मार्च २०१२ अंकमे सेहो रचना सभ छपल। 'सांध्य गोष्ठी' पत्रिकाक २०१२के अंकसँ रचना सभ प्रकाशित भेल। 'कर्णामृत', 'घर-बाहर'मे सेहो जनवरी-मार्च २०१३ अंकमे दूटा गजल प्रकाशित भेल आ तकर बादो समय-समयपर किछु रचना प्रकाशित भेल।
'एजिंग नेपाल' द्वारा प्रकाशित काव्य संग्रह 'पियर आमक अमृत रस'मे दूटा कविता 'हमर संसार' आ 'लत्ती' प्रकाशित भेल।
२०१३ मे डा. रामानन्द झा 'रमण'द्वारा संपादित पोथी 'मणिपद्म चेतना'मे हमर कविता 'मणिपद्मक काव्य-संसार एक झलक' प्रकाशित भेल।
आकाशवाणी,पटनाक मैथिली कार्यक्रम 'भारती'मे २०१२ मे २३ मार्चक' रिकॉर्डिंग भेल आ सालमे दू बेर ई अवसर प्राप्त होइत रहल।
पटना दूरदर्शनमे २१.०६.२०११ आ ०२.०१.२०१४ क' रिकॉर्डिंग भेल,कार्यक्रमक प्रसारण क्रमशः ०४.०७.२०११ आ १४.०१.२०१४ क' भेलै।
गीत गंगा :
नवम्बर २०१३ मे शेखर प्रकाशनसँ ९६ पृष्ठक पोथी 'गीत-गंगा' प्रकाशित भेल।
एहि संकलनकेर निम्नलिखित गीत सभ शशिकान्त-सुधाकान्तजीक स्वरमे विभिन्न मंचपर प्रस्तुत कएल गेल छल आ लोकप्रिय भेल छल :
'तीन कोटि मैथिल ताल ठोकिक' कहैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए।'
'सजाउ हे यै बहिना, मैथिलीक प्रतिमा सजाउ'
'समधि एला बनि-ठनिक'
धोती-कुरता पहिरिक'

एला डहकन सून' बेटाके बियाहमे'
'आँखिमे चित्र हो मैथिली केर
ह्रदयमे हो माटिक ममता
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस यैह एकटा सिहन्ता।'
'पटनाक मजा लीय'
दिल्लीक मजा लीय'
बेकार छी अहाँ त बम्बइक मजा लीय'.....
किछु गीत महादेव ठाकुरक स्वरमे कैसेटमे आबि चुकल छल :
'आउ आइ हम सब हिलि-मिलिक' माँक उतारी आरती,
गाउ जय मिथिला,जयति मैथिली,जय भारत जय भारती।'
'नोरेके जिनगी कतेक दिन उघबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें'
किछु गीत आदरणीय उदय चन्द्र झा 'विनोद' आ विभूति आनन्द द्वारा संपादित पत्रिका 'माटि-पानि'मे प्रकाशित भेल छल।
'चल घूमैलय मेला, दुरगाजीके मेला'
'आउ बाउ आउ, रूसिक' ने जाउ.....'
'उठ-उठ बौआ भेल परात'
'देशज'२००१मे ई गीत छपल छल :

(१)

'भरि गाम चोरे त चोर कहू ककरा
कोतबालो सैह तखन सोर करू ककरा'

(२)

'करजेमे जीवें आ करजेमे मरबें
एना रे बिल्टू कतेक दिन रह्बें'
'मिथिला मिहिर' मे ई गीत सभ प्रकाशित भेल छल :

२६.०२.१९८४

'तीन कोटि मैथिल ताल ठोकिक' कहैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए।'

२०.०९.१९८४

गूर-चाउर मोने-मोने फँकै छी
बात लाखो करोड़क करै छी
राखि छाती पर हाथ कनी सोचू अहाँ
मैथिलीले' अहाँ की करै छी।

जून ८७ पहिल पक्ष

'नोरेके जिनगी कतेक दिन उघबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें'

'भारती-मंडन' मे निम्नलिखित गीत सभ प्रकाशित भेल छल :

(१) (अंक जुलाइ९६ जून९७)

'गोली-बारूदक मौसममे हम कविता केहेन सुनाबी
हाल देखि बेहाल भेल छी गीत कोनाक' गाबी'
(एहि गीतमे नब्बेक दशकक बिहारक स्थितिक वर्णन छल)

(२) (अंक जुलाइ९६ जून९७)

'हम नहि जायब मास करैलय, हम नहि करब उपास
अपनहि मन मन्दिर बनि पाबय तकरहि करब प्रयास'

(३) (अंक ५)

'आएल पानि, गेल पानि,बाटहि बिलाएल पानि'

'समय-साल' मइ जून २०११ मे निम्नलिखित गीत सभ प्रकाशित भेल छल :

(१)

ओहिना त मोन धह-धह जरिते रहैत अछि
फाटि जाए करेज तेहेन बात नै कहू।

(२)

पाथरकें भगवान बुझै छी धन्य अहाँ,
भगवानक अपमान करै छी धन्य अहाँ।

(३)

पत्रिका नै किनै छी
अखबार नै पढै छी
बुझिएक' हम की करबै
समाचार नै सुनै छी।

'विदेह'मे पोथीक ई गीत सभ प्रकाशित भेल छल :

(१)

'बुच्ची बढती, लिखती-पढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के?
भाग्य अपन अपनेसँ गढती
हमरा चिता कथी के?'(विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह-सदेह ९)

(२)

'मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर'(विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह-सदेह ९)

(३)

हमरहि खातिर सुरुज उगै छथि
हमरहि खातिर चान

हमरहि खातिर कोटि तरेगन

हमरहि ले' आसमान।(विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह-सदेह ९)

(४)

'पोखरिमे मखान गामे-गामे

दारूके दोकान गामे-गामे' (१.६.२०११)

(ओहि समय बिहारमे शराब-बन्दी नहि भेल छल)

(५)

भूख अशिक्षा आ अन्हार अछि मिथिलामे

गर्म बहुत ब्याहक बजार अछि मिथिलामे। (१५.०१.२०१२)

निम्नलिखित गीत रायपुरसँ प्रकाशित पत्रिका 'मिथिलायातन'क दिसम्बर २००५ अंकमे प्रकाशित भेल छल :

'बनाउ हे यै कनियाँ

घ'रेकें मन्दिर बनाउ।'

'गीत-गंगा' संकलनक आदिमे आत्म-गीत देल गेल अछि जे हमरा विषयमे बहुत किछु कहैत अछि।

एहि संग्रहक निम्नलिखित सहित किछु और गीत हमरा नीक लगैत अछि :

'हम आङन छी अहाँ अरिपन छी'

१६.११ क' विद्यापति पर्वक अवसरपर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमक मंचपर पोथीक विमोचन भेल।

१४ दिसम्बरक' फ्रेजर रोडमे मैथिली लेखक संघक बैसारमे पोथीपर चर्चा भेल। डा.कमल मोहन चुन्नू पोथी पर समीक्षा-आलेख पढलनि। चर्चामे कथाकार अशोक, सुकान्त सोम,डा.रामानंद झा 'रमण',अजित आजाद आ मोहन भारद्वाज आ किछु और साहित्यकार लोकनि अपन-अपन विचार रखलनि।

रमनजीक कहब छलनि जे हमर पहिल पोथी'तोरा अङनामे'क तुलनामे 'गीत-गंगा'मे गाम कम अछि।
सुकान्त सोमक कहब छलनि जे रवीन्द्रजीक गीत सूनिक' जेना लगैत अछि जे ई मैथिली गीत अछि, से आकर्षणक कम अछि एहि संग्रहक गीत सभमे।
अजित आजाद गोष्ठीक संचालन केलनि, आदरणीय मोहन भारद्वाज अध्यक्ष छलाह।
अध्यक्षजी मैथिली आन्दोलनक दृष्टिसँ पोथीकें देखबाक विचार रखलनि।
डा.कमल मोहन चुन्नू जी एहि संकलनक रचना सबहक किछु दुर्बल पक्षक सेहो चर्च केने छलाह। हम चाहलहुँ जे हुनक आलेख प्रकाशित होइ कोनो पत्रिकामे, आ हम आगाँ रचनामे ओहि दुर्वलतासँ बचबाक ध्यान राखि सकी, परन्तु चुन्नू जीसँ ओ आलेख प्राप्त नहि भ' सकल। ओहि गोष्ठीमे हम आत्मगीतक किछु भाग प्रस्तुत केने छलहुँ।हमहूँ किछु 'होम वर्क'क'क' नहि गेल रही, तें अपन गीत सभक नीक पक्षकें सबहक सोझाँ नहि राखि सकलहुँ।

'विदेह'मे विशेषांक :
'विदेह'क १९१ म (१.१२.२०१५)अंक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक छल।
हमर मैथिलीक प्रकाशित तीनू पोथीक पी.डी.एफ.विदेहक साइटपर छल। विशेषांकमे तीनू पोथीपर समालोचना प्रकाशित भेल।
'तोरा अङनामे'क समीक्षक छलाह डा.अजित मिश्र, दीर्घ कविताक पोथी 'धारक ओइ पार'क समीक्षक छलाह आशीष अनचिन्हार।
'गीत-गंगा'क समीक्षा डा.अमरनाथ ठाकुर, कामिनी, छत्रानंद सिंह झा, परमानन्द प्रभाकर आ केदार कानन केने छलाह,अरविन्द

ठाकुरजीक आलेख सेहो छनि।

विशेषांकमे 'गजल गंगा'क अंतर्गत सरल वार्णिक बहरमे ६१ टा आ अरबी बहरमे २० टा गजल प्रकाशित भेल। एहिपर जगदानंद 'मनु'जीक समीक्षा सेहो प्रकाशित भेल।

बालमुकुन्दजीक आलेख सेहो सम्मिलित छल।

अपन सम्पादकीयमे गजेन्द्र ठाकुर सेहो गजल-गंगाक रचना सभ पर सेहो टिप्पणी केने छलाह।

हमर जीवनीक रूपमे डा. शशिधर कुमरक आ संस्मरणक रूपमे प्रो. गंगानंद झाजीक आलेख सेहो छल विशेषांकमे।

हमर आत्मकथाक किछु अंश, संस्मरण'एकटा छलाह ननू कका', एकांकी 'कोराँटी',

आलेख 'हमर तीर्थ यात्रा गीतसँ गजल धरि',किछु दोहा आ चतुष्पदी, किछु चिट्ठी आ किछु अप्रकाशित रचना सभ सेहो छल एहि विशेषांकमे।

'गजल-गंगा'क रचना सभ पर जगदानंद 'मनु'क समीक्षामे जे त्रुटि सभ देखाओल गेल छल, ओहि सभक निराकरण कय हम संशोधित 'गजल-गंगा' 'विदेह'क बादक अंकमे प्रस्तुत केलहुँ, मुदा ओहो सुधार अंतिम नहि छल।

फेस बुकपर :

१५ दिसम्बर २०१७ सँ २७ मार्च २०१८ धरि प्रतिदिन पोस्ट करैत १०१ टा गजल आ किछु गीत फेस बुकपर पोस्ट केलहुँ। पाठकीय प्रतिक्रियाकें ध्यानमे रखैत पुनः किछु गजलमे सुधार केलहुँ।

यू-ट्युबपर :

हमर गीत संग्रह 'तोरा अङनामे'क निम्नलिखित गीत सभ यू-ट्युबपर विभिन्न गायक लोकनिक स्वरमे विभिन्न तिथिक' प्रसारित कयल गेल अछि, तकर संक्षिप्त विवरण देल जा रहल अछि :

गीतक नाम	गायक
अन्य सूचना	
मोन होइए अहाकें देखिते रही	(i)सुरेश पंकज (ii)हेमकांत झा
बौआ दुनू हाथ जोरि करू माटिकें प्रणाम	सुरेश पंकज
भौजी आइ ने छोड़ब	सुरेश पंकज एवं अन्य
ई जुनि पूछू अहाँ बिना	(i) हरिनाथ झा (ii) बिजय सिंह
तोरा अङनामे वसन्त नेने आएब सजना	राजेश ठाकुर
फगुआ आएल,फगुआ गेल	राजेश ठाकुर
आधा अंगक मालिक छी अहीं	सुरेश पंकज
जुनि कान जुनि कान जुनि कान रे	अशोक चंचल
छोटे-मोटे टूटल मड़ैयामे गौरी	(i) मैथिली ठाकुर गीतकारक नाम अंकित नै केने छथि,सूचना देल गेल छनि। (ii) रजनी पल्लवी गीतकार महाकवि विद्यापति अंकित केने छथि।

गीत संग्रह 'गीत-गंगा'क निम्नलिखित गीत सेहो यू-ट्युबपर देखल अछि :

गीत : समधि एला बनि-ठनिक'
स्वर : अरविन्द कुमार झा
'कविता कोष' पर प्रकाशित हिन्दीमे लिखल हमर दस टा गीत- गजल राजा शर्माक स्वरमे काव्य पाठक रूपमे यू-ट्युबपर अछि।
गीत :
'मैं कभी मन्दिर न जाता'
'मालती विचार हो गई'
'मैं जगा तो आज सूर्योदय हुआ'
'काजल की कोठरी में मैं और मेरे साथ मेरा मन'
'मै कहता हूँ चीज पुरानी घर के अन्दर मत रखो'
गजल :
हर जगह बस दीनता-ही-दीनता है / एक भिखारी दूसरे से छीनता है
अपनी इच्छाओं का ही विस्तार है / जिन्दगी जैसी भी है स्वीकार है
कभी ख़ुशी मिली तो कभी गम कहीं मिला/ जो भी मिला किसी से कभी कम नहीं मिला
गुल ही गुल है खार नहीं है / ऐसा तो संसार नहीं है
यूं दिल में अरमान बहुत हैं / अक्षत कम भगवान बहुत हैं
ई हिन्दी रचना सभ १९९३ स १९९९के बीच डोमनहिल, चिरिमिरी(मध्य प्रदेश/ छत्तीसगढ़)मे रही, तखने लिखाएल रह्य।

पर्यावरण गीत :
किशोर केशव जीक सूचनापर वन विभाग द्वारा पर्यावरण गीत-मालाक लेल प्रेषित रचनामे ह्मरहु एकटा मैथिली आ एकटा हिन्दी गीत चुनल गेल, २०१४ मे १३ फरबरी आ १७ जूनक' सी.डी. प्राप्त भेल।

अनुवाद कार्य :

कन्नड़ भाषाक छओटा संत सभक चौरानवेटा (१३७५-१४६९) वचनक अनुवाद कार्य हमरा किशोर केशव जीक माध्यमसँ भेटल छल, से पूर्ण कएल। 'वचन' नामक संकलनमे विभिन्न कन्नड़ सन्त सभक २५०० वचनक अनुवाद लेल १४ टा मैथिली साहित्यकारमे हमहू शामिल भेलहुँ।

अनुवाद कार्य लेल दिल्लीक कर्नाटक भवनमे आयोजित कार्यशालामे भाग लेबाक हेतु पटनासँ किशोर केशव जीक संगे गेल रही, ओत' उदय नारायण सिंह 'नचिकेता',प्रो.देव शंकर नवीन,प्रो.विद्यानंद झा,अरुणाभ सौरभ आ चन्दन कुमार झा भेटलाह।

'वचन'क मैथिली अनुवादक सम्पादक आदरणीय नचिकेता जी छलाह। मूल कन्नड़ सम्पादक छलाह स्व.डा.एम.एम.कलबुर्गी। बसव शताब्दी(१९१३-२०१२) जयंतीक अवसर पर ई कार्य भेल छलै।

समीक्षा आ आलोचना :

आदरणीय मन्त्रेश्वर झा लिखित 'चिनवार' उपन्यासपर कविताक रूपमे समीक्षा लिखलहुँ जे 'पूर्वोत्तर मैथिल' पत्रिकामे छपल।

चन्दन कुमार झाक काव्य-संकलन 'धरती सँ अकास धरि'केर समीक्षा सेहो 'समय-साल' अथवा कोनो दोसर पत्रिकामे छपल।

'विदेह'मे प्रकाशित अरविन्द ठाकुर विशेषांक लेल अरविन्द ठाकुर जीक गजल संग्रह 'बहुरुपिया प्रदेशमे' पर समीक्षा प्रस्तुत केलहुँ : अरविन्द जीक आजाद गजल।

सियाराम झा 'सरस'जीक गजल संग्रह 'थोड़े आगि थोड़े पानि' पर प्रस्तुत केलहुँ : प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल।

शरदिंदु चौधरीजीक पोथी 'गोबर गणेश' आ मधुकान्त झाजीक पोथी 'क्रान्ति रथी'पर सेहो समीक्षा लिखलहुँ।

डा.कमल मोहन चुन्नूजीक गजल संग्रह 'आबि रहल एक हाहि' आ एहिपर आशीष अनचिन्हारजीक आलोचनापर पाठकीय प्रतिक्रिया फेस-बुकपर प्रस्तुत कयल गेल।
अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह 'मीन तुलसी पातपर' आ एहिपर आशीष अनचिन्हारजीक आलोचनापर पाठकीय प्रतिक्रिया सेहो हमरा द्वारा फेस-बुकपर प्रस्तुत कयल गेल अछि।
आदरणीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर जीक गीतक लेल समीक्षात्मक आलेख 'भरि नगरीमे सोर' आ हुनक गजलक पोथी 'लेखनी एक रंग अनेक'क लेल समीक्षा 'विदेह' द्वारा प्रस्तावित 'रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक'लेल प्रस्तुत कयल गेल अछि।
समय-समयपर फेसबुकपर सेहो किछु पोथी सभपर अपन उद्‌गार प्रगट करैत आएल छी।
पटना / ३१ मार्च २०२२

(२९)
प्रीति-विवेक-आर्षभ
हमर विचार छल जे विवाहमे लड़का-लडकीक पसंदकें प्राथमिकता देल जाए, दूनू एक-दोसरकें पसिन्न क' लेथि त कन्याक पिताकें स्वतंत्रता देल जाइन, हुनका कोनो लक्ष्य नहि देल जाइन,वरियातीमे कम-सँ-कम लोक रहथि,द्विरागमन जतेक जल्दी संभव हो,से ध्यान राखल जाए।
'गीत-गंगा'क प्रकाशनक समय शेखर प्रकाशन कए दिन गेलहुँ। चौधरीजीसँ गप होइत छल।साहित्यिक चरचाक अतिरिक्त पारिवारिक गप सेहो होइत छल। एक दिन चौधरीजी कहलनि जे एकटा कन्यादान

करबाक अछि,कोनो उपयुक्त कथा ध्यानमे आबय त कहब। हम कहलियनि, हमरा फोटो आ बायोडाटा द' दिय',हमरा ध्यानमे आएत त अवश्य कहब। हमरा चौधरीजी फोटोयुक्त बायोडाटा देलनि।
हम घर आबि पत्नीकें कहलियनि जे चौधरीजी सेहो कन्यादान करताह,फोटो आ बायोडाटा देलनिहें। बच्ची सेहो फोटो आ बायोडाटा देखलनि आ किछु सोच' लगलीह। हम सभ विवेक लेल ई कथा उपयुक्त
हेतनि कि नहि, एहिपर विचार केलहुँ। विवेककें सेहो फोनपर एहि सम्बन्धमे पुछलियनि। प्रीति राजनीति विज्ञानमे एम.ए. छलीह आ पटनेमे कोनो नोकरीमे छलीह। विवेक नवी मुंबइमे एकटा प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज मे कंप्यूटर विज्ञानमे सहायक प्राध्यापक छलाह।
बादमे शेखर प्रकाशन गेलहुँ त चौधरी जीकें कहलियनि जे एखन यदि बहुत पाइ कमाए बला लड़काक प्राथमिकता नहि हो त एहि प्रस्तावपर विचार क' सकैत छी। दीयाबातीक अवसरपर विवेककें एबाक छलनि। हम चौधरीजीकें कहलियनि जे आबि जेताह त हम सुचित करब, अहाँ आबिक' देखिक' गप करू,यदि ठीक लागय त बात आगू बढाएब हम सभ।
विवेक दीयाबातीमे एलाह। चौधरीजीकें सुचित केलियनि।
चौधरीजी अपन साढ़ूक संगे ५.११.२०१४ क' हमरा आवासपर एलाह। दुनू गोटे दू घंटा करीब समय देलनि। बात आगाँ बढयबाक संकेत देलनि।
हम प्रस्ताव देलियनि जे एक दिन हम दूनू गोटे अपन-अपन परिवारक संग कतहु भेंट-घाँट करी, सभ गोटे एक दोसरसँ परिचित होथि।
१० क' पटनामे महावीर मन्दिरक आङनमे हम सभ जमा भेलहुँ। ओत' गप केनाइ कठिन छल। ओत' सँ इको पार्क जाइ गेलहुँ। हम दूनू गोटे, हमर साढ़ू दुनू गोटे आ साढ़ूक माझिल पुत्र राजू

छलाह। राजूक गाड़ीसँ हम सभ गोटे गेल छलहुँ। चौधरीजी सेहो अपने दुनू गोटे दुनू पुत्रीक संग छलाह,हुनक साढ़ू दुनू गोटे सेहो छलखिन।

करीब चारि घंटा सभ गोटे ओहि ठाम छलहुँ।

सभ गोटे एक दोसरसँ गप केलनि।

विवेक १३ क' मुंबइ गेलाह।

दुनू गोटेक परिवार सहमत भेल। आगाँक काज आसान भ' गेल।

७ दिसम्बरक' चौधरी जी अपन साढ़ूक संग २.३० बजे एलाह।

हमहूँ अपन साढ़ूकें बजा नेने रहियनि। ओ २ बजे आबि गेल छलाह। हुनका संग हम विचार क' नेने छलहुँ।

निम्नलिखित बातपर सहमति भेल :

५ मार्चक' विवाह हएत।

हमरा बजार-हाट करबाक काज नै रहत।

हुनका बेटी-जमाएक लेल जे पार लगतनि, से करताह, हुनका कोनो लक्ष्य नै देल गेलनि, कोनो शर्त नहि राखल गेल।

वरियातीमे करीब २५ गोटे रहताह।

वरियातीक भोजन शाकाहारी आ पियाजु-लहसुन रहित रहतनि।

६.१५ बजे धरि गप भेलै।

१७ फरबरीक' शेखर प्रकाशन जाक' कार्ड ल' एलहुँ।

१८ क' एकटा कार्डपर श्री सीताराम आ दोसरपर भगवती लीखिक' पूजा घरमे राखल गेल।

२४ क' चौधरीजीसँ कोबरक चित्र आ गाड़ीपर साट' लेल नामबला कागत अनलहुँ। ३ मार्चक' गुआ माला आ पाग-घुनेशल' एलहुँ।

५ क' चौधरी जीक इन्द्रपुरी आवास परिसरमे विवाह-कार्य संपन्न भेल।

वरियातीमे २६ गोटे छलाह। गामसँ ८ गोटे आएल छलाह जाहिमे हमर छोट भाए अपन दुनू पुत्रक संग छलाह,दूटा भातिज बच्चा बाबू आ मिथिलेश,एकटा पित्ती शिव नारायण कका,एकटा ग्रामीण सिंहजी आ ड्राइवर छलाह। हम दुनू बेटी,दुनू जमाए,एकटा नातिक संग छलहुँ, साढ़ू तीनू पुत्र, दू पुत्रबधू, दू पौत्री आ एक पौत्रक संग छलाह।

३ बजे भोरमे दिल्लीसँ हमर सबसँ छोट बहिन,बहिनो आ भगिनी एलीह। हुनका सभकें स्टेशनसँ आनल गेलनि, ओहो सभ इन्द्रपुरी गेलीह आ विवाह देखलनि।

१० मार्चक' द्विरागमन भेलनि।

रिसेप्शनक जे आयोजन शहर सभमे होइ छै, से हमरा उपयुक्त नहि लगैत अछि। हमरा लगैत अछि जे दाम्पत्य जीवनक बाटपर हँसी-खुशीसँ चलबाक लेल एकटा मार्ग दर्शक आयोजन हो जाहिमे अनुभवी लोक सभ अपन अनुभवक आधारपर किछु सूत्र देथि वर-बधूकें जे हुनका जीवनमे काज अबनि। हमरा मोनमे ई विचार त छल मुदा, कोनो रूपरेखा स्पष्ट नहि छल जे कोना हो। हम एकटा प्रयोगक रूपमे पाँचटा साहित्यकार सभकें एहि लेल मित्रवत आमंत्रित केलियनि। एहिमे कोनो भोजक आयोजन नहि भेलै। एकर नाम आशीर्वाद गोष्ठी रखलहुँ।

११ क' आशीर्वाद गोष्ठी भेल। गोष्ठीमे आदरणीय बटुक भाइ,प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' ,रमानन्द झा 'रमण', कथाकार अशोकजी,आ किशोर केशव जी शामिल भेलाह। चौधरीजी अपन पुत्र राजा शेखर, दुनू पुत्री स्वाती शेखर आ दीप्ति शेखर और जमाए सुशीमजीक संग एलाह। हमरा दिससँ हमर साढ़ूक परिवारक अतिरिक्त जेठ साढ़ूक पुत्र अशोक कुमार झा , हमर दुनू बेटी-जमाए आ राघोपुरबला समधि सेहो छलाह। एकर आयोजन अपनहि घरक छतपर भेल।

आदरणीय बटुक भाइ, प्रेमलता जी, अशोक जी, रमणजी,किशोर केशव

जी, सुशीमजी, चौधरीजी, हमर राघोपुर बला समधि वैद्यनाथ झाजी, जमाए राजीव रंजन झाजी, हमर साढ़ू,हमर पड़ोसी मास्टर साहेब गोपी सिंहजी, आ जेठ साढ़ूक पुत्र अशोक बाबू सभ गोटे अपन-अपन सफल दाम्पत्य जीवनक अनुभवसँ किछु सूत्र आ मार्गदर्शनक संग शुभकामनाक प्रसाद वर-बधूकें देलखिन से हमरो नीक लागल।

हमरा लागल जे कार्यक्रम नीक रहल। ओना हम इहो समीक्षा केलहुँ जे कार्यक्रमक समापनमे हमर कंजूसी उचित नहि छल।

एहि कार्यक्रमक प्रभाव वर-बधू पर कतेक पड़लनि से कहब एखन कठिन अछि, किन्तु एखन धरि ई देखलहुँ जे कखनहुँ मतान्तर भेबो केलनि त बहुत जल्दी स्थिति सामान्य भ' गेलनि। सिद्ध पुरुषक आशीर्वाद कोनो-ने-कोनो रूपमे जीवनमे अवश्य काज अबैत छैक।

२८ मइ क' बट-सावित्री पूजा भेलै।

७ जुलाइक' विवेक प्रीतिक संग पटनासँ प्रस्थान कए ८ क' मुंबइ पहुँचलाह।

१६ जुलाइक' पंचमी पावनि भेलै, प्रीति मुंबइमे वसन्तक घरमे पूजा शुरू केलनि। ३० क' ओतहि मधुश्रावणी पावनि भेलनि।

७ अक्टूबरक' कोजगरा छलै।

विवेक नोकरीक विवशताक कारण पटना एबासँ असमर्थ छलाह। हुनक विचार भेलनि जे मुंबइएमे घरमे किछु संगी सभकें ओहि राति भोजन कराक' कोजगरा ओतहि मना लेताह, हम सोचलहुँ जे परम्परा सभ लोकक हितक लेल बनल छै, तें यदि बदलल परिस्थितिमे परम्परामे किछु संशोधनक आवश्यकता होइ त करबामे कोनो हर्ज नै छै।

विवेक आ प्रीतिक सुविधाकें ध्यानमे रखैत कोनो पावनिक कोनो विधिमे जखन जत' जे किछु परिवर्तनक आवश्यकता भेलै से होइत

चल गेलै।
चौधरीजी सभ पावनिमे अपन तन-मन-धनक संग अवश्य उपस्थित होइत रहलाह।
२०१७ मे १२ नवम्बरक' पटनाक सहयोग अस्पतालमे प्रीति माए बनलीह।
ओहि समय नैहरेक संरक्षणमे छलीह।
हम सभ सेहो उपस्थित भेल रही।
हम छठिहार दिन पौत्रकें आशीर्वाद देबाक लेल इन्द्रपुरी गेल छलहुँ।
विवेकक चुनल किछु नाममे 'आर्षभ' नामपर हमहूँ सहमत भेलहुँ।
विवेक ५ दिसम्बरक' सासुर गेलाह।
चौधरीजी ओत' ९ दिसम्बरक' पूजा आ भोज केलनि।
विवेक १७ क' एसगरे मुंबइ गेलाह।
२४ जनवरी २०१८ क' प्रीति बच्चाक संग सासुर एलीह।
४ फरबरीक' एकटा छोट-छीन भोजक आयोजन भेल जाहिमे मात्र साढ़ूक परिवारक सभ सदस्य छलाह, कनियाँ सभ भोजनक तैयारीमे सेहो सहयोग केलखिन।
१९ मइक' प्रीति हाजीपुरसँ ट्रेनसँ मुंबइक लेल प्रस्थान केलनि। ओही ट्रेनसँ वसन्त सेहो अपन धिया-पूताक संग मुंबइ जा रहल छलीह।
विवेक कुर्लासँ बोईसर ल' गेलखिन।
विवेक किछु बरख बोईसरक इंजीनियरिंग कॉलेजमे सहायक प्राध्यापक रहलाह। बादमे कोनो कम्पनीमे नोकरीक लेल तैयारी कर' लगलाह, परिवार पटना छोड़ि गेलाह।
२०२० मे २६ जनवरीक प्रीति नैहर गेलीह।
११ फरबरीक' ए.एन. कॉलेजक सामने डा. के.के.कंठक अस्पतालमे गाल ब्लैडरमे पथरी हटयबाक लेल ऑपरेशन भेलनि।
तकर बाद कोरोनाक कारणे नैहरमे तेना घेरा गेलीह जे आर्षभक मूड़न

सेहो ओतहि करब' पड़लनि।

२९ अप्रैलक' भेलनि आर्षभक मूड़न। चौधरी जी ओत' भगवानक पूजा भेलनि। हम अपना घरमे रामायणक सुन्दर काण्डक पाठ केलहुँ।

आवश्यतानुसार प्रीति सासुर आ नैहर जाइत-अबैत रहलीह।

विवेक कोनो कम्पनीमे किछु दिन काज केलनि, मुदा मुंबइमे कोरोनाक कारण २३ दिसम्बरक' पटना आबि गेलाह।

विवेक पटनामे नोकरीक प्रयास केलनि, नै ताकि सकलाह।

२०२१ मे २० नवम्बरक' विवेक नोकरीक लेल पुनः पटनासँ मुंबइ लेल प्रस्थान केलनि,२२ क' ओत' पहुँचलाह।

२७ मार्च २०२२ क' प्रीति सेहो आर्षभक संग मुंबइ गेलीह।

आर्षभ एहि ठाम किछु मास स्कूल गेल छलाह, शेष समयमे हमरो सबहक मनोरंजन करैत रहैत छलाह, दादीसँ बेशी निकटता छलनि। मुम्बइ गेलाह त एहि ठामक स्मृति कम भ' गेलनि।

पटना / १४.०३.२०२२

(क्रमशः)

-जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (सम्पर्क : ८७८९६१६११५)